

अर्थेश.कुथ.टच.रचट.चेचेश.ता अर्थेश.कुथ.टच.रचट.चेचेश.ता

प्राथ में ब्रेट किया के किया के प्राथम हैया Publication of Drepung Loseling Educational Society

Losel Literature Series Volume XXXXIX First Print Febuary, Year 2000 1000 Copies

072399

the rakshita Library

Price: 90/-

Compiled & Published by

Drepung Loseling Educational Society PO Tibetan Colony -581411 Distt Karwai, Karnataka State INDIA

Printed at: Photo Offset Printers

Drepung Loseling Printing Press
PO Tibetan Colony - 581411

Distt Karwar Karnataka State
INDIA

र्हेथ.ग्रेट.।

७ हे र्<u>द्ध</u>र वि.तपु. र्वाचा विषर त्या वर्षा सपु वि विषय स्त्रा वि विषय हिं वि प्रता है व ०भविषाचीयःवस्तर्भः १८ सियायास्तरं तर्तरं यभ्नेत्रः भूता के सक्के विषर् क्षेट.ग्रू.पर्देश.त.क्ष.वी.वपु.भय.टय.विर.तर.२य.बु.रश.त.वभग.वी.क्ष्येश.क्रिट.री क्षेच,त्रर.वर्शेट.वर्टेश.वश्चेट.ह्वाका.ग्री.ज्याथ.वर्चट.वर्ट,वध्य.क्ष्या.श्चेर.त्य.शेश. क्रूचोबा.ता.कैंट.ची.क्षत्राचीप्रेबा.चीर्द्रबा.चोटच बाट्टा.ह्रबा.श्रट.क्रिंच.चोप्रेच.चाक्र्यः.च.क्रा.ता.श. हिंगमायरे प्रत् अया मामवा की विर क्रमाण्ट पासा अर्थ हिंगमा की व्याद के दें मा यायग्राण्यादावयान्ते स्वापित्रम् स्वाप्त्रम् म्याप्त्रम् म्याप्त्रम् स्वाप्त्रम् स्वाप्त्रम्यस्यम्यस्यम्त्रम् स्वाप्त्रम् स्वाप्त्रम् स्वाप्त्रम् स्वाप्त्रम् स्वा नाबर पार्श्वी प्रेर मेर्न पर्छर माणी मानुसमा येव पार् स्वये मुना मानिया की का के व र्रा वसर्वेटिन्नमवास्त्रम्दिन्निर्भविषायदेरम्निन्नम् स्त्रेन्नम् स्त्रम् स्त्रम् चारुचा मृत्य स्वर्धा विश्वेषा के क्षेत्रा के विष्यु मार्च स्वर्ध के विषय स्वर्ध स्वर्ध के विषय स्वर्ध विषय स्वर गुर व्यवस्था के पत्रदर्गिरम कुन सुनिय वेट सहस्य द्ये देव ले पकु द्या वर्दे विव गानव विवेचका नु : ह्या देव विदेवे गा विशेष अवका है है ट र र रेग का शुर्यात्राह्न स्वावन मुं श्रीट सिवा महूर सेवस र्वी तर उद्देश मुच के उद्देश होया जाक्षरार्वेशवयाद्येवायाह्राचेषव्यात्री। रत्रात्रीयावयाव्यात्राच्याया चिरातविरा. जर्मार प्रामकृषा हो, तंत्रु र हुवा, तु. हुवा, तु. हुवा, तु. हुवा । हु। तु. १००० ब्रास्टेश १ स्टेंश ११ हेन्या

क्रिय.हीय.ता

,			

5ग्र-क्रव	EMELOS CARACTER MANAGE ESTA CARACTER CARACTER CARACTER CARACTER CARACTER CARACTER CARACTER CARACTER CARACTER C
ष्पर्। केंग्राकंत्र।	-विवाधान्यास्या
वान्याव्यावश्चित्रहेव्याविष्याची सहत्याचेत्रस्या स्रा	9
न्ययाम्बर-पायनुबाधदेग्वक्केन्द्रसम्बन्धःयायाः इ	4
१२ श्रुपःपंमित्राष्ट्रीः सळव दिन्।	3
१ रे हिन्य रे अ की मिट र् पश्चित रे अ क्षेत्र र में या परे के असंक	
१ मट्रिय्झुयपदिमान्यां अळन्तेन	પ
८) हे सूर बुव यंदे अर्दे के निषा ग्री क्या मानवा या याने।	
गरे रटायें हैं राया या महिषा	ч
व्या रे सम्बर्ध्याका की मुंदर प्रवास विवाद मा	ч
ष्याने सर्देन हैंग्यान्टेयायम्न यायायावी	99
र्टाम्रे वक्के.व.क्क्रम.सीम.विम.ववु.सवा.ववुम.ववर.ता	७ ५
व्यक्षितात्री वर् द्रिक्ट्यासीर विषेत्र विष्टा देवा वर्षेर विष्	न्या यय
वार्षेत्राता रे क्रि.य.क्रिया स्थेता स्थित व्हिस्ताव हिस्ताव हिस्ताव हिस्ताव हिस्ताव हिस्ताव हिस्ताव हिस्ताव हिस	1 44
वित्या रे देवड वर्ष सुनासुस्य यह वर्षे द सुना की किया है	1.9.
ह्मियाम्य पहुन्न प्रति द्विम सेवाम पर्नु पुर्वि	900
विरे र्गीवाविर क्वा अक्व	906
मर् वाद्यास्त्रकेवा	997
८रे वर्भेर रुषाकी रश्चामाना लरा लांचे वर्ड से र स्थित है र स्	ह्या १२७
५ रे.ज.चश्चचश्चमश्चम्ब.चश्चेर.पुष्ट्रश्चम्य.सुष्ट्र.च्यू	976

७२ अवर धुन नगर्देश गुरा सुरा परे ते अपनिष 179 कुन्नसम्बद्धाः क्षेत्रक्षाः क्ष्याः विषया विषदः वायत् वायवे हिन् मान्यस्य वक्षन् यायाः कु 176 १ कुर हिर ग्री इस मान्य नर् वर्षायवे के पहें १ र्वेट्यायम्याम् रेया 134 6) तलवाता. सूर वार्टर तार्वा 134 4} देव अन मणर्चि पुर खुर खुंवा クタリ ५) ग्रम्भरायात्रेवायाक्ष्या ८८री वस है व हैं व हैंव 136 ब्रिशमा व्रे.चेबा.पे.वर्शमतु.जश्राजमस्य.क्वाजायधी गरि देशचंदेशची हैं र उट र विवा 136 मिरे हूँन रू. रू. रू. द्वार र अ. क्रिया र ट. हूँ अ. य. र या यर र छ या १ रेअमिक्सिंस्प्रिंद्र में रेअ। クタヤ न रेअपिक्षाः क्षेत्राः क्षेत्राः व्यापापिक्षा クラン ग्रेशता रूगमा द्वामा द्वामा स्वा クライ १ रेअपिक्शयार्वेषशाय्त्रेक्याये हुन्यवे। र्र वर्षेत्रात्त्वत्वत्रातिहास्य तह्नास्य त्यात्राहिता

१) ग्रिन्द्रियं प्रमुक्षः सुवाद्रा	900
३ वाषात्रमूर्त्रयात्रात्राह्म्बार्यात्रस्त्रास्त्रयास्त्रयात्वास्या	The second of th
१) ह्निशःर्स्यानी मार्स्टिका संमित्र भागी हिन सहिर पक्ष्य पा	200
१ दे.ब्रिक.ट्रेंब.केंब.त्र.त्वर.त्वंबेंबा	
गरे वरे केंट रहेर बेर केर के प्राचन र या	264
षि चेत्रविक्षप्ति । प्रेन्से प्रेन्से प्रेन्से प्रम्पू	995
गरे दे.पश्चेद.त.स्वायाग्री.ख.स्.जीयाज्याचेषट.टी.पश्चेष.	
ন্বীৰায়ম'বাঙ্গৰ'ঘটো	949
१ में निया में किर पर्त वर्ष हैं यह कर मार्थ मार्य मार्थ मार	
শা ৢ য়য়ৼয়৽ড়ড়ৼৼ৸৽ঀ৾৾য়ৢৼ৽ড়ৢ৾য়৽য়য়য়ৼয়ৢঀ৽য়৽ঢ়ঀৼ৽য়	946
पि व सामान्यसम्भागी,भन्नरमान्यविष्यात्रः दे दिरावक्षेत्रः सूम्यात्रा	946
यो र्हेन्यान्द्रसान्त्रम्यान्त्रम्	
१२ हेन्यारेसमी ५३ व	944
२२ में देअद्राम्हरा देवा	गुप्छ
१२ ध्रेप्य से से दे देव प्यापिका	
गरे रवेब ग्रुं अ की हिट दे वहें ब व व स्वाप सुव प्राप्त	
विर् यदेव यमिक्षाणी किरादे यदिव या यञ्चय स्वार्थी	and the second s
गरे रवेब गर्य राष्ट्री हिंदारे प्रहेंब या वश्चव सुवाया गर्य राष्ट्र	
न्दारी युषान्वेब सुद्धि है दे निर्दे पद्दे व या पश्च पर्सुय।	વૃત્વ

	DEMOCRATICANT SERVICE CHEMICAL
महिशाय। त्यान्तेवन मण्टाहे हे वे कि ते वह व पश्च पर्वेव।	ŋĿĿ
विश्वभाग श्रमम् र्यम् विवयः हे हे ते हित हित ति व ता व स्वयं सुवा	909
परे चरेष ता चरिषा श्री हिंग था देश ता च स्व स्वा वा चिर्षा	
न्दार्या यदेव या गहिका के	
महिषाया यदेव महिषाद हो र से द गी हिम ष देश	
रटार्चा वरेष पामहिषाग्री हिंग्या देशाया वस्त्रवास्त्रया या महिषा	
रटार्चा गुन्हेच कुं सर्व हें नहार देश	704
विष्ठेशाया देव दशार्येट वाशवाची हैवाश देश	777
महिषाया यदेव महिषाद छेर से द ग्री हैं में ष देश	770
गसुसाया परेक गहिसायार्यम्याय विक ग्री मयस र्श्वेर या	734
यविष्या वस्यक्षिंस्यस्य वस्य वस्य वस्य वस्य वस्य वस्य वस्	790
्र क्रम.टेब.ह्र.हुय.क्र्ब.भट.क्रम.तर.चचट.ता	300
० मुस्य केष रामा नियम माना सारा सह न	
अस्तरावरायवान्स्रमाद्यावान्स्रमाद्याः	
वेषान्य पत्राषार्थी	340
थकें 'तृब 'वृत्य' रुट 'वीय' सहिं।	
ॷ धर,विट,ब्रैंब,क्रुव	341

का । जनक कुष मून चर कूथ केष थु तादर रूट अक्षा केष देव देवा देश थे सुर. र्माबालवार्मुब्रक्रम्गावर्मावर्मावार्मुम्। लेश्राश्रक्क् क्रिश्मानुबर्गी ब्रह्मान् रवार्चेरावरीयात्राक्षाः मुख्या १५०० व्यावाविद्या देवराक्षां विषया पश्चर दर पहें ते श्री र श्रेण शामा वर । द्रम् र जिंग कु मा श्वर हिंग द्रोत के श्री के श गर नर्वे वे वा वर्ष दे के वर्ष वर्ष के कुषाणानेषागु दुर्दु रूपा पुराहेशाया विषा अळव के प्राचार केषा कुव दु विषया न्गुर र्वेप्यु प्रदेश वार्षे र केन् प्रमा निष सुद र्वेर स्वया न्गुर विषेत्र महिषा ह्मी किया ता क्षेत्र हिमा के विश्व किया के प्रताय के का किया के प्रताय किया न्गृत्ये हेर पन्त वाके शामा गार्श उद के शाय वेया मी हिर पत्न गार्श न्गृत्ये स्यादुवः श्रीयसायगाः विसाञ्चन येवे द्विन येवे विरायवावरा विसाय साद्वीन देरावे विराद्धिर केस वर्तिवार्श्चेष् वाषाक्ष्य श्राक्षियाशक्षिव श्रीवायाप्टी । विवाश मेवु वार्यवायापट हेष. रटायहेब.तर.पश्चातायब्टमा र्चीट.ज्.ज्.चच्चात्वसःस्टिमास्.त्रेचावमा कितातात्त्र्यात्रेयाक्ष्यात्र्येत्रात्र्येयाक्ष्याक्ष्यात्रात्र्येत्रात्रात्त्र्यत्। देवीतात्त्रात्त्रात्त्रात् चर्याश्चित्र कुर् प्राम् कर्मा सर वह नास सहर। र्गुर सिन महिन किया र्वर स्यार्ष्ट्वित्वर्कुः अक्टेवे पदुनायुन्य युन् पत्रित्र विष्य । दिन् दिन् विष्य विष्य विषय । स्रित्र स्था

वन्यान्देयान्ते यान्ति विदाविद् वया द्वारा क्षेत्र वया क्षेत्र वया क्षेत्र वया क्षेत्र व्याप्त व्याप्त व्याप्त र्गट.क्.ट.चक्रेट.क्.स्यार्थार्थार्थिट.क्ष्य.वेट.क्य.पे.द्वेर.पथ.द्रय.स्य.क्ष्य. क्वान्याहे से दाकित के वा तर त्वे द्वेषाचाव वय खेवया या सर हिर हित्व या कु. चर क्रियं व ब र भव तहार हुट वयु तयर या वें बा देव से या सूच र भव ही. नुर-५-कुन्याद्वयाचि प्रमानय्य प्राम्यव द्वया श्रुप्य स्वयं प्रम्य प्रमान्य न्वायनमान्यराधेनशाब्धार्थमार्थियः निर्वायन्त्राचार्युवायाः कुनिर्देशाधान्याः अन् ग्रीमार्थियाः रशः ह्रेन विषय नेवर विश्व राष्ट्रिया देश प्रमा की विषय पुरा देश पर हिंगा विश्व सुवस् । देश र वि र्नेत्र निहेश या में 'में पहन पदेन केंबा कुया मुबा पें र र पर्मेर न बारे वे 'में 'ये पर्र र याकुवार्यायम् प्रमा नग्राचित्रं स्थाप्त प्रमान्य । विद्याप्त प्रमान्य । के.स्.इ.र्डव् के.ब्रिंच वाबर पर्वटश श्च.तत्तर्थ वट जवबत्तर वीता विट वी त्या. विश्वः द्वार्येवे द्वो पद्वारे र विरेष्ठ श्वर पद्वा विषय वक्क द्वे दिवेश विव श्वर हिंगः विराद्यान्त्रायान्त्रयास्य स्थान्त्रेत्रा स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र वर्गेर्न्ब के पर्व मृत्र क्व अर में प्रस्थ अया यर अहर पा अ अर्क र में से गुरिवर्द्यर्थे सहदः प्रकार प्रतिकृत्र केट के व्यवस्ति ने नासुस पर्दि प्रति दिन पर्दे । नार्व सामना वायाव देव के वमाया अवर र्नाट वार्म देना के स्ना है वा १००१ विवायमा निवायि अळव अप्टायठवाया तुवा मुना वहें व उव व समक्रीया व सुवा ववे क्षेत्र ने विवाद के रिकाय वालव द्वा वाहरी

देश.चे.सश्चर-देश.चेव.ग्री.के.शकुष्ट.श्रंट.ग्र. हेश.चे.सश्चर-देश.चेव.ग्री.के.शकुष्ट.श्रंट.ग्र. हेश.चे.सश्चर-देश.चेव.ग्री.के.शकुष्ट.श्रंट.ग्र.

०८० के में प्राप्त किया में जिल्ला के में का सही।

तत्रत्रेत्र्याची दश्याचन्द्रद्धायाचा त्री का अक्षेत्र हिरायाचे पात्र प्रमान्य प्रमान्य प्रमान्य प्रमान्य प्रमान म्यान्याम्याम्याम् अवर्षाणास्यास्य । क्षेत्र म्यान्य स्व क्षेत्र मायायास्य । म् अदे विषय प्रति देवा विषय पदे वेषाय प्रति गुर्वे की अर्केष विदेश है व ग्रुय गुःरेब क्रेब गरेन । रमया स्वामायर प्रत्याया । रेसामार र में रेस मानना वन्ता दिःवःवदेरःद्ववःग्राह्यःवद्रुषःवदेःवश्चेदःदेशःवन्दःयःवःदुग् । श्चुवः यर्थे हेव की अळव ही देश हैवायर अकी में टर् पक्केर रे अ हिं अर्पे के सक्ता गट्रियश्चित्रपद्मान्यां ग्री सक्ति हे हि हे सूर् श्चरायदे सहिन हि नामा गुः इयानावन । दे.ज.पञ्चपरायराय मुद्देर, द्रयायवर मुरायदे स्ट्रा सवर हुर. वयान्स्यायुग्ञ्चयायवे द्वयान्नायम् यवे । १८ ये दे हे व दे ८ या वया म्राज्येन क्री वार्षा क्रिया क्रिया के वार्षा का निवार के क्री क्रिया के क्र विषाद्विषायवै ववत्तु ५५ कि. द्वासायायम् गुषा । हगानु द्वायवे यसायाववा ह्रेग्यादवयाक्रयायर श्रद्या विद्वेशयर द्वेशय दर्भ विश्वेर्याद्वेश

न्यास्त्रा दिःवास्त्रवादिःवित्रः प्रतास्त्रा । द्वा निबेट्य.त.क्ष्म । क्रिट्रेट्रेट्रेट्रेट्र्य्तका.विव.श्र्ट्राचया.विट्यापा. ५८। र्रेन्द्रमित्रयम्पद्यस्यविष्ठयस्य प्रमायक्षयः देवाप्यक्षयः हेवाप्यक्षयः हेवाप्यक्षयः हेवाप्यक्षयः हेवाप्य ब्रेट.व.जथा ब्रिच.अर.क्रुंच.अ.बाट.बु.क्रा ब्रिटंब.लट.रेच.रेचट.वक्षेर.था हिंगाश. यवे देश यवे इवा वर्डे रावा दि के के वर्डे र देव विदा विदार व ति वर विदार गुर्याद्वेदाया अनुपर्यक्षकुर्युः मुक्तियाग्रामा अस्ति यर वै। श्रियवर दश्चिय प्रक्रिक प्रत्ये विद्याम्बर्ग यदे हिरा स विद्या यत्री दे स्र र्वट विवय श्राप्टा द्वट दुश श्रुष्य व्यवस्थ प्रवेद्य केवाद्ट र्देशयाक्षयाविवार् वर्ष्याविवार्विवार्विवाति । द्याक्षेतार् र्देशयायायायर देर वसन्त्रयायावित्राञ्चियायायाद्दे उद्यायवद्गुटायक्वितावी द्रिता सुदार्श्विता स्थिते यवु.क्षेत्र.हे। क्रूंश.वर्वेर.वाया हु.क्षेत्र.के.वत्र.वक्षेत्र.वाचुवा क्षित्र.वयार्था क्रवा.ब्रीट.तर.त्रद्भा ।ब्रेट.चे.चेश.तवु.क्रेंच.जश.ब्री ।व्यूट.त्र.ज्र्यावा.ब्रीश. द्रभाग्नी । लट्द्रवासव हवा स्वास्त्रवासाग्रीमा विद्युवायर विद्यूर रेपावव र् श्रेवा विषानाश्चरशायवे ध्रेरा दे इस द्याक्रना द्यायर द्याय वा विषाना देया द्रभागदेशः मुराद्यते मृत्यं द्रिया देश महिषा मुरायद्यायन वाग निराव कराया मिषा प्रथम गुःसवयकेन्यरमाहन्ययययेवसन्विसन्। गुःहर्म्युःनगवयवेवयस्तिनाः वेदः न वशा श्रेमें अरेत वार्षे अर्थ अर्थ से वार्षे वार्ये वार्षे वार्ये वार्षे वार्य इवार्वेर्येर्द्धराइवार्वेराव्यायवराद्ध्यायुवाकी देवाय्युर्वायविद्ध्या शु'येष'य'व'र्षे'रेश'रेश'रुष'रुप'र्यक्षय'यर'न्नि'य'थिष'हे। रेश'स्'यश पश्चेत

ततुःरुश्रायाज्ञेनशान्वशान्दा । ह्र्यशायतुःरुश्रायायुर्दे स्थशाया । विवशायुरे ह्यायातपुरमार्थाक्याक्रियाक्षा । स्रयाक्षाक्षायाः स्यापाः स्यापाः स्यापाः स्यापाः स्यापाः स्यापाः स्यापाः स्यापाः पर्वेश.जश.पीटा चेट.ची.कु.शरश.केश.पी.मुची.ततु.चशश.त.ज.जूचश.तर.वीर. य'देव'ळे'चेव'य'वाबर'य'द्रब'य'विश्वायवे'हिट'टे'वहेब'व्य'वश्चव'चे विश्वार्येवाष नासुर्यायवे भुरा अ । नासुर्याय दे । दर्ने द्राय के दर्गे ता से नासाय के दिन दर वन्नमन्तुःस्वामाणुस्यम् कुरुरिन्द्रभे देवि वर्षः दिवस्य दिवस्य वर्षः विद्याप्य वर्षः स्पार्वेश्वरायर मुप्ताधिक के किर्ने किया प्रति । इस्किर प्रति सा र्धेन्यासु । क्रोर्नेन प्रवस्य पुर्सेन्या गुर्या वक्ष्या । दे दि द्वेव पर्य सार्धेन्या सुन रिट्याचीतावशबाक्टरावर्द्धभागावर्द्धिया विद्याचीर्यास्तरा स्ट्राचितासीलार दे.क्षेत्राचनरात्रव.क्षेत्रा क ।चध्रातात्राच्छ्री रटात्रुव.क्ष्रित्राचा र्योजावहित्र क्वामक्रम विषाक्वामक्रम विभिन्निर्भाष्ट्री विभिन्निर्भाष्ट्री विष्य म्बियायर द्वेत व्हुंवावी । इंटार्यावानेश यदिन हैं नशागुः ह्वेर प्रवेष्यन वना इंटा सर्वित्रेग्रार्थिकार्यो व । १८ र्थे वाग्येया विवासर हे सूर छ पवित्रेया। श्रद्येष्ठ, भेष्ठेष तस्रियः ततु द्वितः स्त्र्या श्रद्धियः श्रद्धियः याः स्त्रा श्राय स्त्रा वर्षा वर्षा वर्षा व क्रिय.पश्च्या.तातु.तु.र.पश्चर.पत्यत्यू.र.जू.पश्च्यातत् । १८८.त्य.त.स. १४.८०. हिन कि प्राप्त प्रति हिन कि विषय के प्राप्त के प्रति विषय पर्यात्मेरियीं अकूर्ताने वे बीबानक्षता है है बाबबारिया मुख्यान में बाब कर होर. तातार्य्यातात्र्रा में विवासम्बाह्मशात्र्वाह्मयाश्राक्षामहिताह्म दश्राक्षामा म्रिन्दरम्याचवान्द्रवान्व्यान्य्यान्यान्यान्यान्यान्यत्वे स्त्रान्यत्वे स्त्रान्यत्वे स्त्रान्यत्वे स्त्रान्यत्वे स्त्रान्यत्वे स्त्रान्यत्वे स्त्रान्यत्वे स्त्रान्यत्वे स्त्रान्यत्वे स्त्रावे स्त्रान्यत्वे स्त्रत्वे स्त्रत्वे स्त्यत्वे स्त्रत्वे स्त्रत्वे स्त्रत्वे स्त्रत्वे स्त्रत्वे स्त्रत्वे

र्रे.हे.लेश.चश्राश्रीरे.ता.ध्रे.ते.ते.वे.वे.चे.द्र.टे.वा.क्या.वेथवा.वर्टवश्रात.रटा र्रेट.ट्रेवा. विव क्षियायक्ष्याय विवेद हे दर देवायुवेद अक्षियायवाय विवयाय व्यवेद विवयाय ट्रेवाचुर्नाचेराम्बद्धवावा वर्षात्राष्ट्रवाचिर्णाचेर्नाचेरामचेराम र्शिवशानी व्यवसायित विदा वदेर हैं हैं साहर विदर्शे दिस द वदेर वहन नुवानुवान्त्रवानुवाद्भात्रवा द्विवाद्भात्रवा ब्रह्मानुवा ब्रह्मानुवान्त्रवाषानुवाद्भावा देव गरेन । विक्ता देर देव हे स्याव मी देर देव दरा हे द्वाप सेव देर द्वियाधेन ने राय के प्रवाद दे। दे पहिना विदेश में द्वियाधेन प्रवेश के राति है पहिना गाम्भूष्य निर्देश्य ह्रियालय तात् हिमा मर लेबाय ह्रिय जाता हैया नहूर. रेन्या भी के निवास के र्हर दिवानिहें बार्येन हिंहे वान देवा है महिनाया है मब्बाया है स्या है र्गेता ब्रिक्ट्वशह्रहेत्रश्यकीत्री क्रिक्ट्वियात्रव्यत्यीत्रप्तराम्ब्रह्म् बर्टरश्रात्तु के श्रात्व ही मिन्तु हु हु रहा हे जाय क्षा प्राप्त हो पर हु है जाहे था. न्द्रशासुर्या श्रास्त्रना श्रास्त्र वायदा के स्वानास्त्र मान्द्रा स्थानास्त्र साम् 9८. में के के के इ. इ. के ब. के देश शहता शे विषा ताय है है . के बीश ता सूची था लाय. वी डियाराय न्येता ये मेश्रास्य हें हे सेससन्य देवे हे या पुन्ता न्यव सेवे. डिवानु नहा ने प्रवेद मनेना शाय देवा नु इस सा सुर्गिता नहारी वा के नम्या मुक्ट्रिंग मुस्य गुर्थ गुर् हे स्पवर ग्रिंग हिता हिता है न वार्य गुर्म प्रति स् वाग्रेश्यीवरात्र्रेहेरे हेरे मेरायस्त्रायस्त्रायक्त न्यवद्वयाद्वरायात्र सेर्पी केष श्रद्रायाध्या देत्विव विविधायदेत्रियानुः वास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रा

पर पति खेर केटा वस्रक कर के स्पार्थ का महत्र कर के स्थाय पति र खेर रेव रें के। यहा रय में वे खेर प्रश्नर प्रस्तर में प्रदान के विषय के में न्यळेवाची देर देवान्ता यो वेषा गुर्देर देवा वहिषायका न्दर्धे इत्यान्ता न्द्रियायाक्षेत्रम्यायायाचेत्रां । यदाक्ष्यायापाद्यायापाद्याया र्ह्नेट वी पर रेपेंट दी यावव वर्गे के अक्ट वा हे द्वा हे से वाहिन या दें । वि स्केश्वामश्वामान्त्रवा निःस्रमायार्थिनशद्यानुःको क्रिक्वार्स्ट्रिमानमानुद्या विषा ग्रह्म्यायवे क्षेत्रा वे न हे हे न न है वा नुषा सके न यत्र न न है हे हे हो ने न ने लट्रीय रूटा झेर्ट शेर्या थेवया विश्व शेर्ट यावाया तर्हर हुव हे. वयर हुर्ड. श्रेयश्रान्यवाद्वा हेर्न्युः स्थात्रया हुर्न्यु व्याप्तात्वा स्वाप्तात्वा हिर्म्यु यद्वा पक्र, भीशातलवाशातात्रातक्रेट, भी.पट. तपुषे विषयाता सूर्याशास्त्राक्षा रातातक्रेट. सर्भ्यते । मसुत्रा द्व्यासु इसायर दूर सर्द द्वेर । ११८ के प्रेस्ट यविव यदा । रेव केव कें ये रे वर्षे । विद द्यमा सेद के बुव कु दर्मेता । यह र्द्भार्यान्याक्षा । राष्ट्राम्ययान्त्रे । वर्ष्मान्ययान्यम्। क्रमार्थवात्रान्ता ।र्वेशकी सेवरात्राक्षित्रास्त्रा वित्रकात्रात्री विश्वाश्रुद्यायवे द्वित्र विवानु स्थायाव वर्षे हे स्पान्त प्रवानी यद वर्षा वक्र क्षेत्र क्षेत्र विश्व दिन श्रुव के क्षेत्र क्षेत्र के वक्ष के विश्व के विश्व के विश्व के विश्व के विश्व के प्रा.म.र्म प्रा.पार्याच्यात् होत्। ट्रेयाट्यः प्राचित्रः प्राप्तायायाया प्रायः प न्दा न्द्रित्र्रित्र्र्यं यायावश्यान्स्यायत्वेश्यास्ट्रियं श्रीश्रास्यायत्वेत्रं हे र्हे विषय वर्षे वर्षा रविष्य के किया वर्षा वर वर्षा वर क्रि.चर्या प्रत्यक्षेट्य.ततु.हुरा रेर्तेच.वीय.पर्ट.तप्रव.हूट.हेर.ह्रेच्याततु.

वयश्यवंशर्थाती विश्वति होता हिन्दा हिन्दा हिन्दा होता होता होता होता होता होता है । यन्तेरक्षेत्रक्षेत्रयद्भेत्रवर्त्त्रक्षय्यस्यक्ष्यक्षेत्। यदेःह्रित्त्तेरक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्र रे.मेर.हैब.श्व.क्श.तर.चर.च.बु.मेब.रच.ग्री.वज.मेब.शकूबी तथ.वा.चेब. यदे थि वो पकु र ग्रीक प्युक्ष पति र र के र कु व का के वाका पति के के वा पति हैं। 15 स्र व दे हे शाववशाई हे शेअशादयव दर्ग देवा वृक्ष मेशास्य है हे द्विरका शुः मु.ज्रास्याभी अकूर्य। द्वातिवृत्स्या ज्रास्याभीयाई हाम्यातवृक्ष्यामी विष्राम्या कीया श्चित्यम् क्रियम् क्रि १८। दे पडेन हेर की मनम नेम हिर पर उन अर्केन खुवायर पेर दे। दें है म वयश्रम्यायार्याद्रदरदेवाषदायवाद्रह्राहेवहिश्यायास्रम्भा द्रिवायुश्यानेश्यारमास्रमा कुर्ट्रिय मानिकामा अस्ति। हे हिव हिनका या गी हे हिव हु हिव अर झर्ट्र है'य'तुर'वकुन्'नु'र्पेन्'यस'देर'युवे'न्युस'ग्री'ङ'वन्यवकुन्'यवे'ङ'वेपेर'सर्वेदा इवाद्वे कुंश पुराक्ती हूँ देव सर द्वारावव वर्षे गर्दर रहा। इवाक्चे तुर पक्त र् जिन्यम् स्थायन्तर्भी स्वत्यायक्त अस्ति। हे हे ख्रेन्यायक्तर् प्राचित्रः य १८। इजानुःकुष्वयामकु १५ पर्के १ वर्के १ वर्षा १ मूर्या प्रयास्त्रीय पर्वा हिन्दे र प्रया स्वाक्त्रेत्रकृतिस्यरः स्वायत्वेर्पये स्वरः स्वरायक्त्यक्त्यक्त्रपक्ति पर्वे रायक्ति याधेन परे हैं र है। सञ्चातरा नानसान पक्ष दे पक्ष दे प्रकृत पर है। विसायवे छत् गुःसन हेरा द्रवासुदे नदावी सेनाया पक्ष र इस्या सु से पर्यु र केट द्रिवाय पर होते। रिकिर्णेखरान्डेयकर्पक्रिय्याक्षेत्रयात्रकेत्यवर्देन्त्रपुःक्षेत्रस्य हो देश्वर रेडिवे हैं न सरकर नकुर पर्वा डिबास के हैं बार रे विस्टान है है स्रावत वर्के विहर

शक्र्यत्त् विश्वतिश्वत्त्रत्त्रेत् । हिवानिवः क्रेट्रेड्रहे क्रेट्रवश्यस्य तथा बे प्ययापुरा है सरा यर पर्वा या दे सर्वे वा देर देवायव रहें व दुव दुव रावे रहें वा वें प्रवेर व्यर वहन भेर प्रायस्त्र देव के नित्र संवे से व्यर प्रवे दें है रहा ट्रेवानुदेशिम्द्रम्भिषाअर्टेद्रा मह्त्रार्थेव्यर नदेग्गुर्ह् स्नुदे नुद्र सेस्र श्राम् वे ज्ञान्त्व में शास्त्री विष्यं वे दुनमें उपद्य वे दे हे दूर देव मुद्रिय मुक्र अस्ति। विर खेरित वार्य हे व प्रवे खुना का व यु द खुना का देना नी दनाव प्राय के प्रवे हैं प्रकृ द ब्रे.इ.इ.व.डे.व.टे.हेत.वेद.डे.व.वेट.ग्रेश.श्राष्ट्रये.हे। असे.५४। ४८.व्रे. ल. प्रा. र वि. ती. वी विश्व १८ र वि. वि. विश्व विष्य विश्व व संत्यः स्व क्रियाग्री पर्ने क्रिय दे वार्क्वा प्रया हो व व्याप्त स्व स्व दे वार्क्वा स्व २.८.४४४४.के.सूर्याव्यक्त्रम् विश्वस्त्रम् स्थान्त्रेराहेशास्त्रम् स्थान्त्रम् वर्षाः हेट देवा वी देव केव बेट यद ट देर बेर की दे केव वार्व दे दे या केट यद विवास वर्षाक्षित्रायात्रक्ष्याते। हे हे स्रोवदावर्त्या वर्षा देवेश ग्री विवास वर्षा कर्रिया हेर्पकुर्णी मन्या नेया मुद्द्याय देशे मान्य प्यता हेर्ह्या व्यक्षास्त्रास्त्राच्याः मेश्यास्त्रवाश्चार्याः विवादतास्त्राच्याः स्वास्त्राच्याः त्यायुषान्दा हिंदिहेद क्वेंगायवे देवा त्वे क्वामस्ट सकें कें । सर्देर करे বাধাপনা, বুধ প্রমানত্ত, শ্রিশ ক্রিশ ট্রী প্রপান ট্রিশ সূপ্রমান প্রার্থিক প্রসাম প্রসাম প্রসাম প্রসাম প্রসাম প্র क्षेत्रप्रवेष्यत्वाकेत्र्र्वस्येष्यते। स्वाक्षेत्रा देहे मुन्यप्रत्रेष्यपुः सुर्तरः रेव.स.चीबेट.हू.। विकानीबेटकातव.हिमा ट्रे.केम वट्राय.क्रेब.तूव.ल.चेका देशर्देव के दे हे दर्भ हिंद हे दे दिवा संयो मेश र य देश देव के देव के लिया

देशर्देव कु देन देवा वर वे देन देवा अर्कें के कु देन के देन देवा वर्ष कर देवा ग्रेग दिसर्देन शुर्देर देव पदि हिंद द्वेर सेद शुण्ये मेस या द्वे न यस स्पर्धेत र्। वि. ह्रें र. तथा हे हे ह्रें तव हें र व लागा हि हे लेख कर वे व र व हें व हिंहेर्गुण्यवेत्रवावर्धेर्द्रा हिंहेरेर्घ्याववेत्रवावर्धेर्द्रण सिव्यात चुदेर्द्धेवर्स्याया । इस्रानेश्रास्रार्धेर् १८ द्वेवर्डेग । यो नेश्रार्दे हेश्राम्बिस्राध्या या दित्यतुः स्विषात्रे स्वित्याच्या हिंहे स्वित्या स्वयं कर्या हिंहे प्रत्या कुरानर्स्य ताल्ये। वेराचसेर्यात्रात्रेम। येथ् मेश्यायक्ष्यान्स्याग्री स्वाया र्ट.कुर्यश्चर १४४४ थे असि ५४ रट्ट गीर जरायी बेट्र श्री हिंह उद्देश ततु. इन्यार्श्व प्यत्नवनानुर्येद्दी वित्याची प्राप्य साम्यास्य वित्याची सुन्तास् म्वेचकार्रे है नविषयार्श्वास्त्र सक्रमा अप्याख्य पर्वेच प्रवासक्ष्य स्वास्त्र है ज्यासायिन विना थेर विन पश्चिमी निर्मा निर्मा कुरा प्राप्त स्मान सुन सुन स्मान कि मान स्मान स्मान स्मान स्मान स्मान स्मान श्रेष्ट्रेर्यासर्हेन्याधन्यवेष्ट्रेर् सर्हेन्द्रेन्द्रियास्य मेन्त्रियास्य मेन्त्रियास्य मेन्त्रिया पर्हेर् प्रमागुर पर्मेर् न्यमार्पपा कुरोर प्राचेत्र प्रमार्चे र प्राचेत्र स्वामाने मा पर्हेर्याधिक है। कुर्रेहें हे हे के यथा के के के नियाधिक पर पर्हेर्। । अर्केया र्ट्रेर्ड्रिर्द्ययार्ट्यायया । त्रयायत्रह्यस्याप्ट्र्वर्ट्या । द्रयायहवः न'र्राचगा'मेशर्नेवा विराम्य प्रदेव मये ह्या वा सुपर्हे । केवा ना सुर्वा मेरे सर् निष्यु मानिक मिनिक या निष्य या स्था रहा हि दे सुपाया पह दे हैं है। बायायात्रे न्याळेन किष्टते सर्वे बायदे यहेत्या के मि हैं है र प्यु के ते परि यन्ना मेश्राम्बुट्यायाची। देख्यायामेश्वाख्याद्वाता द्वाम्याची सुप्याद्वाता स्वाध्याची सुप्याद्वाता स्वाध्याची स्वाध्याची सुप्याद्वात्वा स्वाध्याची स्वाध्याची सुप्याद्वात्वा स्वाध्याची स्वाधी स्वाधि स्वाधी स्वा

ते.ह्या.त.उद्द्रश्यत्त.र.। रग्ने.च.उद्गयःच.श्यावश्ची.ग्रेर.जवार्ट्ट वंश्वतायार्चेया वर्तेष्याक्षे के स्राज्या येरे विषाय कुर विषाय हियात विषय १ वि हो । रेटा । निवायवे केवाबार्वे विवायम् हेन्। विवायाम्यवार्वे वर्षेवा हेन् रेटा इना पर्यास्थ्य र पर्याय पर्याय अर्थन । देश न्युर्या अर्थन दे प्रवेत गमेनामानामानामान्त्रभारत्रिः गुण्युवायार्दे हेवै दसक्षायदी यहमायर गानुदायर विग्री नार ले ना रे हे से अधार पर र र विते न भे श हरे र वर्ग हे र सु न श र हि ग श र्गेर.श्र.हेर.त्यन्रेय.क्षेत्र.त्य.प्रेश.हेत् वेश.तत् ।हेवा.वे.वह्त्र.तत् विश्व. र्देव यद पत्वना मुर्येद दे। वह श्रुक्ष द्वी विषायव पह श्रुक्ष दे दे हे दे या मुरक्षे क्रमान्यमान्द्राचे हें त्यवयापंतर दुर्दे नमायव नेमारव देवा चुवे दमार्दे न येव या अर्कें देव दे दव यथ हैं वश दे या पु दे में वि है श या द हैं र पक्षेर्णी स्वापस्य प्रसम्य प्रसम्य प्रसम्य देशे में के बीका यो में का स्वाप्य प्रमाणिक प्रमाण या अक्रेंब विता अक्रेंब देव दे दव पर्य क्षेंब बायब छेवा पहेंद प्रवागुर हुवा पह्या कु पठरा गर्डिन पाणे व हो। दें हे के के जारा थे में हैं के के जे पहें ना हुग वर्ष्ट्रवायक्रम्भिन्द्रव्यम्पराष्ट्रेत्। ।गरुग्यार्ष्ट्रगमार्ग्यम् ग्रेत्रम् । वितः यवे विषय या पर्टिन यम होता । हुँ वे अर्केष कु इव यम हा वेब प्रमुह्मा देवे हेश.श्रेईरद्वपानी अळेक देव पादे हिंदादिय अंतरित के अंतरित के प्राप्त के प्राप <u>र्रे.इ.श्राथा-रेतव.जासूर्याथा.तप्र.शरश.केथ.सश्या.२२.श्रेथ.तप्र.वेप्.क्षेत्रा.२.श्राथा.</u> मिट यहूर वश्रे बिर बट तर वित् हिंह ने सूर यह रे मुसर तह हिंद या वा स्रम् र्नेन मुर्ने हे परे हिंद र में र केर केर में प्याने कर के का जर्मा मुर्केर पर केर प्यान

भुट्रियाने अह्रायाक्षेरवाद्यात्री अध्यय क्षत्रवाद्यात्री अध्यय क्षत्रवाद्यात्री अध्यय क्षत्रवाद्यात्रा अप्याप वचेन.चर.वेश.तपु.धू.षेश.व्राट्टर.चपु.र्द्धेच.वर्ष्टना.वश्व.क्ष्य.तप्र.घर.चर.वर्चेर. चयु नि मिन्ने विक्रम नि विक्रम मिन्न मिन्ने उर् गुःरे वित्व हेर हेवाबायव द्विरा देशाव वहिबा सु खेर यद पो सेवावर वी हैं हे दिन्। दे अळेब प्रवेदें हे हैं च दर पर का प्रकाय हर देवा का है। के अळव प्रमित यासनायादेवाध्या देवसाई हे स्ट्रा ध्रेन्यस्मित्रा ध्रेन्या प्रकृत्त्र नेता र्नु मासुसार्ट्र मासुसायहेर्यायीय है। सञ्चात्रा छ्टार् हें हे मास्य वयात्री क्रिक्यार्म्च स्वरणट द्वापाद्या द्वापायुट सायवे क्षेत्रा द्वापायु स्वरामी साम् यदःस्वार्त्वराष्ट्रेरायेरायास्रस्या र्ने पास्याणीयास्ट्रायेटाके पास्याणी सेययास्य विरामायकार्मेवामराष्ट्रेदायक्रम् द्वामाद्वीयायवाद्वाद्वीयायवाद्वाद्वीयाक्वा क्षेंग्वह्र इक्कार हिन्त विश्व सेवाश ग्रीस वस्त्रा वदेव देव पर वालवा मु र्ये देव क्षे वे ह्रम प्रवेव। पह वे हैं हे हो देश हैं मा वेद अर्कें प्राधिव की के के जा वा श्रंबिट हिट में विट हिट केटा विशेषा हु केट केट पार्टेट दु केटा विवा हु केट क्रिंगिरेशक्षेत्रधेत् । क्रिंट्रेर्ट्रेट्रेट्रेर्ट्रेट्रेर्यर छ। वेशवास्त्रपाव धेरा ह्या वे क्या रहे महि देवाया धररहे महे राज्य के प्राय के प्राय है महे ग्रेन मुन्द्रम् वार्म स्वाद्धियारम् क्षान्यस्य क्षान्यस्य हिन्द्रेनेता स्व विने निर्माणिया महूर्यार के तृ निर्मात्या ग्रीमार्से वातु मुन्ने या नु निन्ने मा नु नि य वे रद्भायविषा यह सम् वे हे हे से सम्बाद्या है दाय वे मुनाया मई मिने गुन मु देशे साथा दुं मासुस दूर में मासुस दर सु दे हैं स्र प्यति है। सर् र प सु दा र्हूट.प.धेर.कु.मु.मू । ४०.पे.मूर्य । ग्रेंब.पे.४०.पे.मूर्य.तमामामामामा

वसश्रुर्वाणियर हेर्पिया विर्वेशका मेश्रुर्वाणी सर्वेशकार्य मुद्धित पर्वेशक्षेत्र रर.त्रविष.वीश.श्री रिवृशता.कुटु.कुर.वी हु.ह.श्रुशशरीत्रद्वविश्वरचेशतर. गु'नवे'भ्रेर'दुवें ।दे'यर'मेश'रव'ग्री'स'र्रेव'तु'भ्रेद'यदे'रर'नविद'र्ह्हर'यहेद' गुःसुःरवःववेदःवःस्राम्युस्रामुस्रदेशेषाद्देश्यस्य विराधेरःस्वर्ते स्वर्धः विराधित्रः প্রধানেম.বীধানধাপ্রপথ এই মেবাবেরীন বি.প্রামাধিপ্রবের্ড্রমাবর্ডুর বিবাবেশ। मुजानर नेपूर्षियातर विवीदारी । दे सिर सैचानवयाग्री स्वायर रूप होवा नेव मुस्य वर्षियाय के संख्या दर्ग स्थाय व्याप्त है। सके मुद्द द्वेद देन देव मुस् क्षेत्र'रेत्र'यरे हेन्ट'र हेर कोर 'ग्री'णे 'मेब'रे 'यय'ग्री 'श्रेवा'र यायर 'मेबायदे केर 'णेत्र' या विवावीकानक्षण प्रदेश विवावीकानक्षण पर्वा निवायान्त्र पर्वा । १८. र्येत्री विनासरावरासकेरावस्यायायार्वेत्रायायेर्ने वरासकेराग्रीयञ्चया म्बिक्टर्श्विषायायमिषायावस्यवस्यस्य स्थान्यायायायम्य विद्रिश्चित्रायायम्य ववि केन नुष्पेत्र पवि क्षेत्र। ने प्यतः विमेग्रा सवतः क्षेत्रं ग्री स्वाया ग्रीस वसतः निमा तत्रक्ष्यं रश्चे वात्रात्त्रात्ते देवाला त्रित्ते । प्रत्ने क्ष्राहेर वायवा वदः विवासामा वसः विक्ति विवासा सहर हो द ग्री किवास द्रावा कु से द र विवास मान शक्ट्रिया में प्रति । त्री प्रत लयत्त्रिम् विश्वायात्री वृक्षाप्त्री वृक्षाप्त्रियास्वायात्रीयास्वरायाधारात्रीया ववः खुवायर विन दे। वने हिर न्वेर क्षेत्र तथायर अष्ट्रर कि. प्री पश्चितायां क्रियां वा परे हिंदा र छेर खेर की क्रियां के वा विश्व कर स्थार क्रियां के वा

व्यायानी सूर विव श्वराया विवादि स्वराय स ८८.वराष्ट्र, में केश वर्षा चिरा में केश वर्षा केश वर्षेत्र में केश वर्षेत्र में केश वर्षेत्र में केश वर्षेत्र यायान्विषायायेन्ने। वर्त्रक्षेष्ट्विम्हिन्षाञ्चराम्बुर्धानेन्यायाकेष्टरायायाकेष्टरायाया ध्रैरके। कुर्धेः यायमा स्रर्द्दि प्रविष्य प्रमेगः यद्रा विष्य ग्रीहरू प्रवे धुरा थैं रे नहिषा हुँ नहिषा ग्री नर पुंच्च प्याप्ता प्रीय विरामहिषा ग्री धुनिषा व्हिसाई हे सामकुत्र या वा दर्वी साया विदारी दुंग्वि साद दि है विदेश गुरा थे मेस <u>चःत्रळें त्रायश्याचे त्रापित्रण दिन्त्रणे वादिन्त्रण देशायोः ने वास्त्रे प्राप्ता स्वीया</u> मरमुम्वते केन्षेन पवे भुरा नेवे हेट नुष्टिष्ठ । वहा की सर्वि ही नहा ग्राष्ट्र । शुर्पिक् शुर्मिक्ष्यायान्न स्वामी स्वामिक्ष्यायान्य स्वामी स्वामिक स्व न्द्रेरक्षेष्ट्रेन्यवेष्ये नेषारीयन्वार्वन्तु र्वेषायर द्वायवे केन्यव यवे क्षेत्र नेवे हेट्रुख्रवसम्बद्धारपदेर्दिर्यम् हेर्याय हेर्वस्य विद्यापित्री अश्रास्त्र सिंह्र यक्षेत्र अर्क्केन यम। क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र में ग्रायदे यो में सामी ग्रायदे यो में साम क्षेत्र अर्थ के सम्म न्राचरार्श्वश्रायवाकेराणेषायवाध्येत्र। देवाष्ट्रान्तुः व्यश्रायद्वार्भाराये विष् वाम्बःशास्त्रक्ष्यामञ्जीदायरामुःचायिक्ष्याने क्रिन्द्रीसावाश म्बःवाशामुदायदे पर्इति। दे प्ये देवा पु पर्वे अप्य प्राप्त हो । विश्व वाश्वर्य पर्वे श्वे र । इश्वर्य अश्वर्य यवैन्दर्रुष्टिन्यवैक्षुअळन्यिद्दे विद्यवैन्त्रदिर्गायुष्यविष्यप्यदिष क्रिंद्रियायायह्रम्याद्रम् विद्यवे क्वेद्रग्राम्यस्य स्टायवित्र क्रम्यद्रम्य स्टाप्त्रस्य प्रथमित के वर्षे असे दे में देश में दे गुःभःमेशःमञ्जूषः पशःइशःइस्रयः पदेःह्रिंदः द्रग्नेत्रः खेदः ग्रीः भेषा ग्रीः स्टिंदः खुदः प्रतः मेबायवे के द व्यव प्यमा के दा देव बर द प्या व्यव यह प्रमुद्द या वाद के बाय विद

ट्री लैंश्या क्रि.त.श्रट्या तथ्या तथ्यात्रेत्त.क्षय सूत्रात्त्र क्षायक्षय स्वरात्त्र स्वरत्त वरुषायावरे हिंदार होर सेर ग्री प्यापेषा ग्री में में र हिर सेंद्र स्वाप र हु मिंदे केर प्याद पर न्त्रा पर्वत्यराम्यावन्यायकुर्याचेतुःवतुःवाष्ट्रश्यास्तर्भायावश्चेर्यायान्त्रीयः वःलूर्री प्रविष्वत्वीर्वद्रश्रम्भाषान्त्रात्वीत्र्र्ये द्वाप्रम्भावत्वे लव्याव द्विमा ने वया मास प्रमान द्विमान प्रमान है । याथिव है। येतु पर्दु दुवायायमा ब्रह्में ये निर्देश मानि केव दवा है प्रवा नुःबिटा । इस्मार्थायात्रे दिवात्र नि । दिः इर नि श्व मार्ग्व मेर्न्य स्था । विषा न'स्'न्र'पर्'न्द्र'क्षेत्र'यार्यापर्'त्रर'क्षेत्र'ग्रीक'र्ग्यरकार्क्षेत्र'क्षेत्रस्थकायात्रप् चेश्री स्थान्य स्था स्थान्य स् ट्रसायम् कु क्षित्रमानम् वाययेवसायाया कु द क्षेत्रस्याया वर् द कि स्थायमा वर् द कि स्थायमा है सूर पत्रया दिपविष प्रयये स्थाप स्थाप विष देश पर या है। हा शवातिश्रामी.क्ष्र्यावाड्डी दि.श.र्स.क्ष्रश्राक्चिट.घ.ड्डी क्षि.संब्राक्ताल्याचेष.क्ष्याच्या यमा । पर्नु दे अप्याने पर पर । । विर प्र प्रेम प्रेम प्रेम पर्म । विर वर.वे.रट.वर्षेचेबस.बेट.जा विवास.की.जैस.शे.४व.ब्रैंर.वसा विटेट.कु.कं.ब्रे. ववत्तरचि वेशवश्रित्सक्ता हे हे वहेर वावसग्रद्धान वर्षि र्चेद्रम्स्यद्भ श्चितः व्यवस्यवित्र द्वाम्ययायम् वास्त्रम्यदे श्चिम् स्थाप्ति । क्षेत्रिन्दर्भायिव यात्री समुद्राया सेन् किर्ण वर्त्तृत क्षेत्र स्थित हेद्राया सम्बद्धा यास्यरायरास्याच्याम्यानाळेवायारेवायहेवायायवाते। हेहे सेरायायवा दे प्रविव र्रेव र्येट मुप्पपाना वेश मश्रुद्रश प्रवे हिरा प्रदृत है से या हुव र्येट र् र्भाणियामीबासळवायर मेन्द्र दर्विकाते। व्यामीबासळवायदे यत्त्र केवी ।दे प्या

द्वाःमित्ववात्तरःशि चेशावशेरशत्तर्भेरा ट्रे.क्षरःश्वरातात्र्येशतात्त्र्रे ने दिनाक्षावयुद्दावित्वर्त्व क्षात्र क्षेत्र स्वर विदान्नेवावि के दाये स्वर मः सः न्यान्ति द्वार्योत् द्वार्या श्चित्रः स्याप्त्रः ये निप्तान्ति । वर्गेर्यार्या मास्र्व्यार्यास्यावेरावर्गेर्व्यापर्राहेस्यार्य सक्सरायविरायमित्याद्या यतुत्रे स्यात्व्याद्यास्य स्विम्रायविरायमित्रं स्थान स्नित्रावरायक्ष्रयायविरावर्गेराकुंवावायुयावया स्नित्रावरिरावेर् दिरायास् नुन्याधनाने। श्रेपशायदीयाह्मापर्याये स्थायने वायाया सामित्राया स्थाय श्चेर या मार दिन । नामेना सारा सार ग्री वा विकार वा वर्गेर या वर्गेर या वर्गेर या वर्गेर स्वा सार स्वी ना सार चल्र वर्गेर यथिक मी। सक्समाचल्र वर्गेर यभ्य रेवामाचि मेरा वर्धमाय वै। वहन्यान्तेन स्वायाणी युन्यान्ता नस्यायां वे यने सकेन स्वायाणी युन्या येव दें। नि.स.२८. पर्टे इ.स.वामवाबाता संव बार्य व श्रीर हरा सरालटा थियो'ने न्यायीषा अळव यर द्वाराया केंबा उवा नवीं बाया येन ने इसाय दुर्ये नेप्यानेश्वास्त्रियन्वाकुन्यशस्त्रुटाविटास्त्ररायटायानेशस्त्रेत्यन्वाकुन्यशस्यायन्त्रा म् विमानेमानराम्य विक्रित्रे केर्या केर्यं केर् क्रि.शक्ष्य.लूट.ट्री ट्र.र्ज्ञ ब्रिट.स्याश बरायाश्याचे थायथा ब्रैयाय जूता प्राप्त या श्रीयाय स्थाय जूर्या ही रे. १८ . के वे. तपु. के. जातिजायका रेट्या वीच की र . टे. पवीच थातपु. के वाया युः सः १८ । १८ शः युवायाययाय र छे १ प्याः श्चित्रं सः स्विधाय हे १ प्या से १ । १ । क् स्वायास्यापान्यापान्त्रात्र्वास्यास्याय्यास्यायाः स्वायाः स्वायाः इर.चंबेश.वेश.वेश.वेश.वेंच.त.त्.वटवा.वट् क्रीश.व्ट्रश.वींट् क्रट. केंच.तत्.त्.क.वा.तेवा. वसा वक्के सेन देन विद्रम मुन्सू मुन्सू र प्रमुक्त प्रमुक्

तत्र हिरा चले याया यट हिट है नवा हर नव्याया नट होते। दे नवा वी. हिर्मियर हर या है अदे र्मिया विक्रित्में हिर्मिया विक्रा ही सार्व हैं हिर्मिर में इ.क.त.त.है. वाया श्रम् वाया श्रम् या हिया है विश्व त्या है है है ज्या या वैरावाची विरासरायाविषावश्यात्रमात्री विषाविष्ट्यातवादीर् दिरा दे सर ब्रिट्रियं केर् ये प्रेरियं केर् केर् है। दैं दे बिना है हुव मानूच नार बुना विनाम है है नहे हूर र हे र छेर छोर हो ले मेश्रादी श्राद्यात्तर्भूताले व क्वित्राचित्राधक्या मुक्तान्त्राध्ये । वेराये वित्रादे वित्रादे । लट है, जश दिर तदु हू ह र या र त्र के कि का ज है की शासक्य ता हे जश दूर. वर्षेषा दुर्पणियाश्चित्र वित्यवेष्ट्रिया हर्षा इस्रम् स्वान्येष्ट्रा विवायवेष्ट्र र्नुम् द्रायाम्यस्य उर्म्ध्रम् नेवास्य प्रायम्यस्य प्रायम् । दे क्षेत्रायमा स्रम्प्रद्राचित्र सेवायप्ता । स्रम्प्रम् स्राप्ता देवः क्रियाम् नित्राधिक स्तित्र क्षित्र क्षि मेवार्ट्रामक्रियायर झूट्युर केटा वेबाव्यस्य परिश्वाय की देवे द्या. भेर्म्या त्रा होते व्हें वा व्या द्वा त्रा विश्व विष्य विश्व विश्य ववेर्द्रभुषायानेषाभुगवर्र् देवेर्द्द्रम्म् विषयाहे बुरावर हेर्पायाये धेर है। वर्षियाः देर देयारवे केयावनर दी जि. प्रेम है सावह सावर वर्देर। जुना विश्वर्थायते द्वेरा स्वःश्वर्य द्वेरहेवश्वर्यहा श्वर्यात् ही श्वर्यायते श्वर्याय द्वेरहे नास्रार्दे हे दिन न्यन सेन् की सर्वेन नाम लेन । नास्रार्दे हे दिन न्यन सेन् ने पके

श्रेन् स्वेत प्रमृत् के या सदय प्रदेश प्रवेत स्वापेत प्रवेत स्वापेत स्वेत प्रवेत स्वापेत स्वेत प्रवेत स्वापेत त्रश्चेर्नेष्व स्वरं तर हिन्द्व वर्षे देने क्रिक्षेत्र नि देने हेने स्वरं सुन्य स्वरं स्वरं सुन्य स वर्देव:दे.चबुष्यं वेचेवाबातावश्वश्वरत्यी.ज.चेबागी.वर्टेट्द्रिवर्गीवावेबावस्वरत्वा शर्त्र सिर बुर झेवाचर तथशतर वि.च.लुथ ततु हीर है। इंचेश क्षेश्राचीय कुः भे ने छैं। विद्वेयश्व दे या वन पुः ववर। वेश दर। देव कुश वन दुः र्ध्विषायन्त्रवे वहेना हेव विस्रमा सम्माणी । सर्क्षेत्र क सर्क्विन नीमा इत्मानमानी पर्दे क्षेत्रे पुरायम् वर्षा गुरा विवयः पर्वः क्षेत्रः प्रयापवयः परः छ। वेषानागुर्यायवेः ब्रेमा अप्रियाचीशायर् राष्ट्रे अरायें महाराष्ट्रियायरे कु अळव यें रो अ शुर्रे हे इस इंद्रा इंद्रिय के वित्र वित्र । शुर्रे हे इस इंद्रा इंद्र दि त्ये का ग्री वर्त है वरिष र्वायवे वा श्वाया सुर्वे में से से स्थाय सारे सुराव वा यवे सुरा अर्दे राव यानी नाश्वरा वार्या में दे दिन वार्या वार्या या या या या वार्या व मुन्या ब्रिट, हुनाया ब्रिट, वार्थिया कुट, देन्या हो। किट, कु. या वार्थिया वार्या वार्य जयान्भेर है। यावयर ने दे विषय का प्राप्त है रा । यावय लट्। बट्रश्रक्ट्रेन्वेब्रन्थन्यंद्रव्ह्व्यश्चर्श्वात्रच्यात्र्म् स्त्रिंद्रव्यालट्राप्ट् र्। मैं.इ.रेंद्र.र्ह्याय.क्ष्य.रेंग.रटा श्रम.लट.याश्रय.रें.वर्द्या.तथ.यट.त्री.क्रिय. रूरान्यकार्या रूहिक्षेत्रार्थर्यान्य्यान्य्राय्यान्यान्या व्रेवः केन दे हिमाय इ सुर पार्टा विर प्रायोग यो या यो साम केन प्रायोग साम केन प्रायोग साम केन प्रायोग साम केन साम केन गुमर्डे देव ४८.२ हर ज्ञान में इट बिया में यो शास वयर यर दार अर्गीय में हिंद ने ये ने न सुरा में अध्या कि अध्या दिव अधि में स्वार में स्वार में स्वार में स्वार में स्वार में स्वार ब्रुन् नि.मंश्रम् क्रि.तीयात्त्वात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्र

शुन्ता विन्यमानेमायाविषयिविन्यविविन्याम्यान्ता मास्यान्तावर्त्रास्यास्य वह्वानो न्नप्राणी द्वारपदि श्रुष्य दर्दे वर्णे वर्षे वाषा करे देवाया या सक्षेत्र विरा त्रिमागुः धाना मुख्यानुषा प्रविधानुते स्नियमागुः सुना मुख्या पर्या स्विमा ल्यां वि स्यक्ति दीव की सम्बन्धियाय व कि सम्बन्धियाय वि इति । व सा १८.सेत्रा.तत्र.सं.श्रेश.तर.वे.च.८८। श्रैव.त.त्रू.च वचत.वत्.रश्चेत.वहेत्र. यद्रा पर्दे के क्रुवारी श्रीयात के त्र श्रीय प्रति । त्वी व्यव विव्यव श्रीय श्रीय गर्निर सेंग्र हेव के सपद्भव या वर अर्के द के सप्तर महिर हे द या बुरा हव र् नु प्रवे केर विव प्रवे क्षेत्र है। हु प क्षे व्यक्ष व मानार । मनेवायागुन दसम्य सेवाय र मेर्रा ठेवा राष्ट्र येरा विरायवा रे हेबायी ने चारीश.र्ज्ञचा त्राच्चाचाराच्याच्याच्याच्या । स्कूर इया स्याप्याचा नबर्गिर्मेर है। बेबामबर्गियान के मिन्न प्रमानियान हैन पर्मा मिन्र सामित तत्त्रचेश च.लच.संश्रीश.रेट्श.शे.श.चेशेंटश.गेंट.। ट्र्ट.ग्रे.सं.श.रंशश.ग्रे. स्वा.जुर्व.रे.जूर.ता.क्रंप.वे.द्रवाबाही हर्मेथ्यतर् अकूवा.रटा वीव.कुर्व.शकू. ुटा। शोववःवर्ग्ने.के.श्रक्ष्.वाशाबुटःश्रिटःवार्जूचं,वर्ग्ने.वार्ट्र-श्रान्तेरःवारःवार्थरशः यमारतिम ।दे दमामी रेमार्था मुस्रु रु रु र प्रते हुरा मार व्याद्यु यापवे खुवा ब्रे.श्रेयश्वर्दरासुंगश्रश्चराधेवाया दे.वालरावयासुंगश्वायापार्यादरा र्यार मुंगबायार्गवायाये मुंगबार्भेर महिबायबा वर्रम हे भे आया ने निर्मा जार्यायात् स्विष्या श्रीट स्थराजा हे हे अक्षेत्र क स्विष्य ग्री श्री व हर्ने प्रवे के सक्त स्त्री देशस्य प्रक्ति हिन पर्हे हैं पकर निम्न पर पत्रीर दुसरी निम्न

· · ·

अक्ष्यमी स्थित कर्ति का तार हिना हिना सिंदा स्था सिंदा पर्य क्षेत्र निंदा त्रीयाश्रामक्षमभासीत्वार् स्वार्टा स्थार्या स्वाराह्य स्वाराह्य स्वाराह्य स्वाराह्य स्वाराह्य स्वाराह्य क्रिंट.क्षश्वर.प्रट.प्रवाश.ग्री.क्षेप्र.क्रिंट.त.रेट.। वेवा.ततु.क्षे.वचव.बुवा.पे.क्रिंट.क्वा. त्तुःश्चरःश्चेरःतान्त्रयःतृत्वेर। त्तुचार्श्चेरःययश्चरःश्चेरःयरःग्चेरःयरःग्चेरःयरःग्चेरःव र्ने चर्च अर्था हे हे तकर र्ने पश्चेर पाया द्वीया परि दे। हे नया श्चेर इस्रया या व यवानी सर वेत मुद्दापद्दा दे द्वयम वायव ग्राद्य प्राप्त ने प्रवे केत् प्रवे प्रवे बुरा देणरक्षपतिकेरक्षिर्देश्यक्षिर्द्यार्थेर्द्रप्यक्षयार्देश्यक्षप्यस्त्र मुग्रायद्वयंद्वरा गहिरायावरायकेरास्त्राचुन्मुग्रायद्वयायाणवाया हिन्द् क्यवित्व्यवादी कुन्नर रु असावार्यर सार्श्वेर प्रवेश के मार्थर ह्म जानाव बातार ट. ह्म पहेंब व बाशहर तालुब ह्या । कि प्रधु तर्वे जायव ह्या बाह्य. यवगापुराधिन ने विनासविष्णास्त्र दें नसुस्र हे नसुस्र के स्टिन सुस्र की सामित निर्मा है सा वे.मेब.रव.ग्री.त.र्र्ज.रे.हीब.त.श्रक्त्या ते.वे.रवा सैर.वे.शक्त्यांथी बट.गी.र. बुत्वक्षेत्र, प्रगीय ता लक्ष्यु, श्रक्त्या त्र्या त्र्येक्ष्या स्राप्त्र प्राप्त्र प्राप्त्र प्राप्त्र प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त तत्र्रेव लव तत्रिम नहिर शत्तिवा क्या नहिर शत्र प्राप्त व निर्म क्या ने स्व क्रियंत्रेयं वर्षात्यतितात्र्रात् हें हे वर्षाये हे वर्षात्येवात्रार्था हे हे वर्षार इवानु न्याविद्या द्वार है । के विद्यार के विद्या के विद् न्यस्य वहा वहरते हे सन्दर्भ का व्यापा क्रिक्ष म्या मुख्य मार्ग्य निर्माण तर्वे.ला बुधातायका यत्रात्रावद्गावस्यात्रीःलूट्धासीयात्वा बुधात्त्व.

नर मुंब दुन्य नर्द् र्याना बिया मुंब मुंब पर्द केंद्र पर्द में हेंद्र पर्द में हेंद्र पर्द में हेंद्र में हेंद वस्रयान्त्र देव दस्याप्तर प्रतिव क्षेत्र मुप्तप्य हिन्द्राप्तरे क्रियां मुप्तप्त स् प्रवित्र नु प्रवित् । व क्ष्र नु प्रवित्र क्ष्र क्ष्य क्ष्य व्यापाय क्षेत्र क्षेत्र क्ष्य व्यापाय वित्र क्ष्य पार्क्यान्त्रम् निष्यान्युक्षामुक्षामान्वयाम् याध्यान्त्रम् विष्टान्त्रम् पार्वया याया वेशयवेष्टर मुक्षयित्र सर्मेव देशय बुद्दा के देन द्वादा वेशयः वया वे पर वेर्ष के के वा वेष पर्य पर की शामिर साय प्राप्त पर दिया स्वा पर्वाची रिवेवा विश्वर हिर प्रत्यु पर हिंके। वेश्व प्रत्य ह्वा प्रर सहूर। कुबातदानर में श्रितावयबार हूबा याच श्रियात सूर्या बाता वर्ण याच ग्री तर कर् श्रे वर्त्युर पर्वे वर्षे वर्ष पर्वे वर्ष पर्वे वर्षे वर वर्षे.कर.कु.क्षे वेशत्रावेश वर्शेर.वर.शह्रे.दे.वेश्वता है.सेटी वेशत्रव. पर मुक्ष भ्रायावका पर्देश मिले स्थिय विश्व सहित के तर्दा मिलव पर मिर स्थित श्चैत.त्रद्रश्चिथ.भुष.विट.क्व.क्षेट.त्रुव.तर.टे.श्चैत.तद्य.वस्वथ.वाश.वक्क्व.क्व.तस्व. याणिवादी व्यवद्वाहराष्ट्रम् होतायरायहिराष्ट्रमाषाशीषावनुवायरायनदायाद्वावा र्विलेजा क्रिंब केर दे। वह्नायायरे पवे क्रिंग मिर ह्नायार्वे अर द्वायार्वे विव पवि द्विरा देशव दुश्व मुख्य क्षेत्र पाने व स्विव स्विव स्विव स्विव स्विव स्वय प्र ने नश्रम्भी प्रमान् सेवाय वादि स्वाय विद्याय व नासुक्ष कु प्यत्ना केन उन कु प्यते हिन्द वित्र केन कु स्पेन के स्वापन के साम कि साम कि साम कि साम कि साम कि साम त्र मि. त्रु क्र त्यु क्ष प्रत्य क्षेत्र मृत्रु क्ष र प्रति व क्षेत्र प्रति व क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र र्रासिक्षियायवार्षाकुष्ठक्षाया विष्यूर्य विष्यूर प्रमान लट्रिंग में दे दे हर्ग हैं से दे नार्टर हैं नहें व ब ब अहरे त लब सद है र दे ब ब

बुद्धान सक्तामक्री क्रिके प्रमान क्षेत्र में प्रमान क्षेत्र मान क् ब्रामिन्यास्यां वर्षेयाया यावव क्राया वे में स्वीता सके राये स्वाया र्नेन के नियम देवा न मेरी माने के मिन प्रति के कि माने के मिन में मिन के श्रायात्रे सुरादे वित्राद्दायकश्राया पृष्टे दे के दिन । इना सादे हिरायम् । वेद पशर्ने व सुन्ता सुन्य पर्दे पर्दे न हे व सिन्द पर्दे व श्ररावेशक्षात्रात्रेयर्गः श्रियर्गः श्रियः श्रीमायायवरारे पविवर्तः श्रुरः स् । दे स्रराविवाः शर हूर्य त्यू यर्दिर श्रास्वाय वाङ्ग १३४। द्वी माय व्यू देश श्रीय वाय प्रदेश ग्रेव,मूर्य,त.त.तम्ब्रेबार्य,यी,तर,कर्तमृष्य,त.रटा श्रद्येथ,मुब्र,स्वेश,कूर्वाराता. श्चित्रपत्रविष्यवायवस्थायवे स्वर्णायवे स्वरं स्वरते स्वरं या सर्ह्य प्रत्यासुः स्रमार्था चरित्राची मान्ना स्रोक्ति । या वर्ष्य स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र । या वर्ष मुंबावाबवार्त्या सराम्रावाङ्कार्म्य व्या द्वाक्षायान्य विषावान्य स्थाप्ती सराम्य गर्न्रस्य वर्षा द्रवाक्षाया हुमाया स्थापन विषय प्रति प्रति प्रविषय । र्गूब्रमे। रतिर वचर जना गुलु बुर वर्गे जन खुन्न है ने नव नग्ने मना कि. वर क्रेस यु विदुर यदे के व देवा दि वे खुर गुर क्रेस विर गवेर गुर के। दि यवेव 'युष' क्वे अर्केन 'तृ मियर 'य्युर । ओर्तेन 'य्युय' के 'र्केन 'केर पर्गेत् या । रूट मियावसः स्रम्या हेन् वया युर्या या यहुमा दिस्रयान् एक सामा सुर्या केना या ना ना ना गुंगमार्चान्नान्दरक्षायर प्रच्यायर मुद्रा विना चेवे पुरास्त्र माने पर्हे या नमा मा निर्वात्रम् प्रतिवात्त्रकुष्यत्ति विदेशम् रायम् मे कुष्टिश्चानम् वा विर्देर्क्षवाशके बिर्र्यनामुखायुग्य दिवा । अर सेवार्ष्या सुर्वा विवायः वर्गेन्या हेर्दे। हिस्न्य के बिस्य वे स्वयं के स

क्र.च.च.द्रच.तक्ट.तर्चे.तचीर.हे। रिश्रम.२८.वचि.भैच.२च.त्रम.तर्पम.तर्पम.तर नि । नि प्रवित दे अले शक्त मित्र प्रवित्र प्रवित्र वित्र वित्र प्रवित्र के अले वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वि णुवान्द्रकुवार्यानिहेन्द्रन्द्रियायाश्चिमा । ह्रियाविद्युन्येन्द्रन्वावाकनामायर वर्गेरा विश्वाविश्वरात्त्रक्तेरा ट्रेश्वराच्यर ब्रैट. र्डिंग देश वर्षा सैःवर्श चुर्यवे विर्यण्यत्य मेर कु के य इस्य क्रिंर्य प्रेम विर्य सकेर ह्रा गी बेर् ष्युः यश्यक्ष पश्चित्र याया द्वीषाया येदादी ष्युः वेदादेश देव सेवा वह्व देव प्वताप्त याया रटायम्बर्गान्यायये हेन् इस्रवाक्किन्याने सामित्रायये केन्ये वाये हेन नेया लैंश्वराश्चेशतार्टा स्वायहेशवाश में क्र्यायार्देवयार्ट्ययार्ट्रा देश हैं ज्या क्रिया द्वा क्रिया विवास क्रिया क्रिय क्रिय क्रिय क्रिया त्तात्राश्चेशत्त्रं क्वाविश्वाविश्वाविष्यायायश्च वर्षराष्ट्रे साक्षराष्ट्रायाये विष्या क्षर पश्चिर पाया के बारवा दर्ग बारा कि दी अके र इस समय कर किर प्रतिनाया र्ये दिस्तर में सामर में नव किर लिया नव हिरा श्रेट में मार्थ दिस में सर्हेर्द्र स्यारे रामा हिर्यम मासुस स्व रुप वर्षेस यम द्वाप प्येव है। रे विवे विद्यामा विद्या विद्या के कार्य के कार्य के कार्य के किया के कार्य के कार कार्य के कार वास्विधानदास्त्रक्र्याह्म स्थास्त्रस्य स्थापर मराया हेरावधानी हिर्पार सर्ह्य इस्रमाग्रीन्वराये दुवासे सेवे हुँदा प्यवादा अवाया सेदायवे यदे या विदाय र उत्र हुँदा नव् विरागरार्टा विषायरावर्ष्वियायाचिषायते विषायीका विषयीका विषायीका विषायीका विषायीका विषयीका व वे। लवायन्यमध्यानीयर नुरावहित्यं स्वाक्षिक्षेष्ठा वेषार्थेन्यागुषानुद्वन्तियायद्वन्यायायद्वन्या देन्द्वर्णेनायनुन्नसुराद्वर्स्यक्रित्

इसार्श्युर्युर्द्धराष्ट्रम्बार्श्यक्षाचायाक्ष्याच्या न्वीयायार्ग्यन्ते। सक्रन्द्रम्यस र्रेहे नश्रुम कु प्यत्व कि र र र के के कि प्यत्व के र प्यत्र के र प्यत्य के र प्यत्र के र प्यत्य के र प्यत्य के र प्यत्य के र प्यत्य के र कुरियादिव कुर्मिह नामुक्षाद के र क्षेत्र प्रदेश्वद ना कि द प्रदेश द के र के द कि र के द कि र के द कि र के द कि नेबारे आहेता वा क्षेत्रावा स्वाया इसाय सम्याय स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वया र् अर्केन् इस कुन कुन प्रकाय क्षायाया के सार्चा न किस या व्यान न किस या व्यान न किस या व्यान न किस या व्यान न व्वित्राचितः सुःस्रास्त्र्रम् यस्त्रम् स्वायत् चुन्यान् सुनायान् त्रात्रम् सुनायान् स्वायत् निमायत् । गु.४८.यध्ये नेयात्र मुच्यात्रात् नेत्रात्येयाते यट्या मेयागी यद्रात्या मुन्यरमञ्जूनम्यव्युवयवित्रद्वयव्यस्य मुन्यर छन् नुप्यूरपविकेन येव यदे हैं र है। अर्गेव यदे अर्दर हु बायबा वर्दे र य स्वे वे प्रेर्व शहर बावबा न्यावास्त्रमात्रीकान्ने व्यान्या । इत्यावर्त्ते स्कार्या । वर्षे वश्चिट.क्विववर्षेचात्रप्रची प्राचिश्वरणतायुःश्चित्री क्वित्वुधी हुःहुःश्रथश्चरत्युः मुराम्बर्गान्यायाक्षात्र्व। द्र्मिरामायूर्द्री मैंवानयरार्ट्यामेषु मुरा तत्रवरम् तवावामुद्राक्षवायादरा ह्वा सुरमि विवयवायम् र्वे छेराद्रमाळेवा क्षित्रा क्षेत्र त्रात्र सराया सकूर्य पुर्य प्राप्त क्षेत्र क् सरकाक्रिकार्गीय की श्रीताञ्चाती ।तर रेगोर मितव रेतिकार्यायका स्टा ।हि.ह. ट्रेव.वे.केथ.बेंबातत्। हि.ह.अश्रमारततः ज्यामारश्चामात्तरः। जि.यो.पके.प. क्रु.च.त्रचेथे। हि.से.इ.ध.५.५.त्रञ्चला ।सैट.सूचल.चेथ.वेश.तश्चनश.वर्वेर.पण। वत्रवात्तर्भेष्ट्रावर्विराधेना विवातात्रक्र्यात्रेशवाधिनात्त्वा विवासक्रमा स्त्रे हिरायर है। विरोधास्त्रा है स्वास्त्र है । विष्यायर द्वा परिवासि । वर्गेर् । बुबानिबर्धात्रु हिरा ह्रैशाक्ष्यात्रु ह्रैप विषय्षाय विराम क्षरात्रीर मान

वा लानामकार्य ह्वाबाद्वावा क्रिक्ष मुद्दे हेव बार्च क्रिक्ष विदा अस्त देव वे.र्ह्रम्यवेषा यह्रस्य वे.र्हे.हे.स्रस्य राता स.स.स.वे.रश्च्या शि.से.ती.ता. ला बे हे बा खे केंद्रिया नह, बारे हे हु, ना बे हू है अथवार नव हुरे ज़िबा है नया है है. वे नवसायर सहित। देई वे पहवाया के वे पहना इ के दिस येवे रहा यविव रु अर्देन सु हि से इ अ व यन् व या मेव हु र के सम्बे र या या मेव हु र के सम्बे र या या मेव रह र के सम्बे षानु र से के इ साने प्यापा से का मुं कवा का यदे र र प्यापे मुं के से के कि के इन्द्रवेग्न्नायामेवानुन्वेशयवेग्र्रायवेत्र्रायवेत्र्राय्येत्र चैतावशबास्त्राचर्याताक्ष्याति वाष्ट्राया शक्याक्षास्य स्थान्त्रास्य स्थान्त्रा ठ८ क्रियानु मिर्सेया दि हैं मु प्येश्गा नु दि सेसस्य गी नियय नु सहिन। नियय ने हैं हैं युः ने न र् दे त्र सुना थारे हिया थार्मे न प्राप्त के प मु। पहंत्रे में है। अअदि पर्य । अङ्केष अपर्दे र हिम । पहंच्ये वे में हे रहत मुःरद्यवेदा अनुःशःअःषःशृदेःद्रअःक्षेषाःश्रेअशःद्यदःकेदःया खुःदेःष्रुध्रः र्हे हिव सर्चे व विद के या वस्त कर के या के व या के व या के व र्येदे ये नेषा अर्केन । यत श्रीषायदे हिंद द्वेर सेद यदे यो नेषा वाषवायर होद छेट । देव श्रे अध्व भें भी वार्य हैं स्थाप मान हो निर्मा धन है । वह स्थाप हो निर्मा वार्य वार्य के । विर्मा वार्य वार्य के । र्टायर्थायायर्स्यथायर.मेर्। द्रशानाश्रीर्थायये.मेर् दे.सेर.थ.र्ट्र.म्थायथा श्रायम् विराध्याया भीत्राया हेव मी हिंग्या हिंगा न न मिंगा में न मिंगा न मिंगा न मिंगा न न मिंगा न न मिंगा न न मिंगा न मिंगा न मिंगा न मिंगा न न मिंगा न नुर्श्वेन्यवर्ष्ट्रेन्या अर्देन्यर्हेन्यसमासुरसम्पदी नन्गानेश्चेनसम्बद्धाः

लुका चेबाक्रुविकाग्रिकाक्ष्मायर सेवावदीव पद क्रूंचका दूरवा से पक्ष वका हेवा तालका बिर कूर्या ततु कूर्यका सैयका या प्रक्षेत्र तालव प्रतृ क्षेत्र । यह या प्रति के के वहुंब.ततु.होरा क्र्यावाधुट.शक्ट्रहट.हूंश.त.श्यावाववेट.यथ्री ह्रीर.त.क्र्यावा हाशान्त्री मैं वाचवरा शेवचर ता क्षेत्र वि वाले दे वाले अक्टर पत्र में मूजा रे मैं वा याचार्यार हिन्द्री हिर पश्चित्र या वाक्षिय छवा देवी बाय विद्या पाय देवा विद्या वाच्ये देवा विद्या वाच्ये वाच्य र्गिर्द्राक्षेत्रवास्यान्वायवे सूटावेब स्तुट्राववे केन्येब यवे सुरा ने सूर् स्तुट्राया वाक्रियास्त्र द्वीयायाय्र दी सराष्ट्रेय वेवायव स्वयास्य क्वियाय सकेरायवे विष्राम्बुस्यानिव सेन् ग्री है बाबिव निष्यामिव निष्या विषया । विषय । विषय । गुनवे के न प्येत मित्र कि मा अप्राप्य गार निर्मा के मित्र क्षेरानु कुष्णियान्यार ये प्रमेश्वरायर प्रमन् ग्रामा वर्षर कुष्णिया में बर्ग मिस यवे कु अळव पेरिने कु वे के प्रमेर् प्रवेश मिंदि मारिक मिंदि परि के मिंदि परि के प्रमेर परि के प्रम परि के प्रमेर प श्रे पर्केरि.त. कृष्र. त्रूप्त. सुराता रेट. सुत्र में य क्षेष्ठ व श्र शहर त्रात्र त्रुप्त त्रिया वीरा वीरा धुन यदेन यामनगानु र्येन दे। रहानी क्षेटानिय स्वत्यामकुन नहां विना यानगरा न्सर सक्केन यदे यद्व न्दर्शिसायाम् न यदे मेन पुः या पदि क्षेत्र स्टिन् हेर बेर्-रु'नवस्य यस्टिन यदे र्दुं र्ह्येन यदे रेद्रे रहेन यदि रेद्र जेर खुन्य सुदे रहस या रहन की या हुन गिवे र्दुं धिवा व्यश्विद चेर दर अर्केद स्थित्य श्वित्व श्वित वित्ते द्वा स्थान स्थित वित्ते लुवा.ज.वर्ड. रेब्र्य.हे। इ.क्रेंट.जबा वर्ड्ट.ब्रब्स.इ.इ.क्रें.व.थे। ड्विंब.ब्रब्स.प्रव.

प्यद्याय है। विश्वविद्याय देश देश देश यह वाया वाद्वियाय विद्रा देश त्ताहिकान्तु सेवकासी श्रेटावाकान्द्र हिटानेवे श्री नेवाकाना वात्वाका निकासिका गमुम्रान्तेन्यदेन्वे इन्निक् क्षेत्र नेन्यत्र उत्तुन्यत् उत्तुन्यत् केन्यदे स्रेत्र ने वयाश्रद्धात्र्रीराद्धिराद्धिरावयापश्चिरश्चात्राक्षराञ्चराञ्चनश्चिर्दिः श्चित्र वडेव द्वीय है। वेव य वहैर व्याय सेंद वस्त्र की विद व व सेंद यर वस्त्र तत्रहिर। शक्षाश्चिष्वत्रदेशक्ष्वालरास्त्रित्रो वीयात्रत्रात्रेशक्ष्वीत्री श्चिताह्यमः गर्द्रगार्द्वरायशास्त्रस्य स्वाधार्या पुरार्वे द्वित होता स्वाधारा दे शुन पदेन पदे क्या ने गा ५६ ग म छे ५ ग्री दिर से ग म ग्री शुन समस्य हैं भ हैं विवे देवाबायन्वाची खुंयानु द्वां यदेव यान्या विस्तिन्य विकेत्र यान्या वि त्तु.क्वानाश्रम्यायम। वर्द्रमःद्वे.मान्नमःव्यान्यवे.द्वेम। नाम्यमःद्वेषःवर्द्रमः व। रद्यविव मी नवश्वश्र श्रुव पदेव विदा वदे वायद के श्रुपदे य केव श्चित्र प्रदेव प्यापिक प्रत्र दे। सर्व पर्टे पर्टे प्याप्त हिंव प्राप्त प्रति प्रति विका वर्षित्यात्तृत्रीत्र। त्वाश्चर्म्यवाश्चर्याश्चर्याश्चरत्त्रेयात्रीत्वरात्रीत्ववात्रात्र्याश्चर वडेब य प्रेब हैं। ।दे द्वर श्विब इट म बम्ब स्वा स्वा मार्के र स्वा मार्के र प्रव र स्वा पर स्वा पर स्वा पर स्व वड्राचार् अर्थेद्रागुद्रा वद्देराञ्चयमाग्रीविष्यपाद्गायमावस्यव्द्द्रायाङ्गराअर्केद्रा यन्दर्धेर मेंद्र या दे यद अर्के द या श्रेन्य या वा वत् वया द्र तृथ्री अर्थ्यातासूर्याकातान्रान्नान्नात्त्राह्मकालियाक्येये हिटान्नावह्म स्वीतात्त्रायक्ट्र त.झे.विर.तर.कि.र्वथ.रे.वे.र्यूश.सर्। वर्वेव.रवु.र्ह्यश्चर्ड्र.हु.हु.हुर.व.वाश.यसर. यः इर री । ह्या शर्देव दी किंदी यम द ने बा शव मि है पा मिना श

याम्बस्य रुद्रा मुक्ते के के दिन होते व स्थाप के मर्की श्वर्राहरवर्ष्या समायान्याकेन मियोपनिवर्त्यवेसा खुः १८ दुं ने गस्र- १ - इन्या में में के प्रेया के प्रेया के प्राप्त गुः से दिन नी सकेंद्र या कु सकेंद्र श्वेष पर्वे पाद्म पाद्म क्षेत्र पाद्म पाद्म प्राप्त से स्थाप है। सूना श्राक्षश्राययदाने स्राम्याय पुर्वे । स्रवाया पर्वे प्राप्त के प्रवाया प्राप्त । मेन यदे ख्यापेन ने। के विषायहें न यान र नुषा अव अनु र न वी क्षेर पा वषा अहें न इसन्दर्दर्दे द्वायदे द्वायदे द्वार्थे द्वार्थे द्वार्थे द्वार्थे के द्वार्थे के द्वार्थ के विषय बिट'इसमाग्री'सेवामाक्रीर'वात्रवातात्राप्रदेग्वरे क्रियंत्रत्र स्थाने विदा हुं विश्वपर्हेर्यार्दा हें हे पहुं पवे धुवा कु पकेद विदाह से समा हिर विदर्भुः भिवा वाय हुसाय र से समाय भिवाय पिताय दिया विदेश या सुवा विद्याय दे पात । वनाः हेन्द्रयाया क्राधिकायम्य प्रति नाम् नेनासार् राष्ट्रियाय वर्षे मेशयर् भेर्द्रा वेशर्येषश्चरा वदेवदेवदेवदे श्वरायर्थशयर विषाया वियातक्रवायवाल्यायवयापुर्वि द्वा वस्रमान्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्र ई.९.८क८.८८.सटश.१्यश.लूटश.शे.१्यश.त×.त२.खुट.। श्रेच.यश्चिश.सटश. यदे ज्ञवामाश्वामाहेशासु के दाये थे भेशादे हिंद कु के वा खेद विकार्य का ना वादे न्याधिक यदे हिरा ने न्या गुरमार ने का यह मकर र केंद्र या वर् ने बावर् डेर्रर्स्थयर मेश्रय हे सुर पें सु क्रायर र्वाय दे प्रवेश विवाय प्राय देवा हा श्रुम्बद्धर द्वान्त्रयायर द्वापाई हे या हा दिरा गुव पवर हे द्वा विवार्यवाया न्वराधार्यानुवास्त्रयरान्वायासाक्षेत्रा स्वार्हेरा त्रसाहेता वहवाहेत्रान्वर त्व । ब्रेन राजा विश्वरात क्षेत्र वा १८० । या का क्षेत्र १८० व्या वा विश्व वा वा

स्राम्यम् अर्थः द्वास्यापर द्वापाय्यस्य वित्र त्वस्य द्वाप्य के स्राम्य वित्रस्य इस्रायर द्वाया इस्राञ्चर की रेवाया की वाहे वा ने दादा दे पाले व दु विकास ८.कैवाक्षात्तर्थेवानुष्ठवानुष्ठवानुष्ठवानुष्ठवान्त्रवान्त्रवान्त्रवान्त्रवान्त्रवान्त्रवान्त्रवान्त्रवान्त्रवा गुःर्केशन्दावरुषायाः इस्रायरान्वायारेन्। द्वायाः सेन् गुःरेवाषाः हास्रोत्रान्। है हेर्न्द्र-गुवाकीर्यमार्कीतविषायायम् छेत्रस्यमार्स्य दिस्स्यम्हेर् एक८५८ वर्ष्युकुष्ठक्ष्रक्ष्याया देवायविक्ष्युरायायम् वृह्यायायम् वेह्या र्षेग्रम्मस्य वद्वेदिद्वेद्वे। वर्ष्यविद्यीवार्वेद्रावार्वेद्यम् मुदेशः मुक्तात्व। वैटाक्तामु अभवार् हे हे हे तकट रटा खटकार विषय देवा प्याप्त है। रेवायाक्षेत्रवाकुर्रायम्ब्रियावयःक्षेत्रावयःक्षेत्राकुषाकुष्यर्गानुष्यर्भाकुष्य चत् क्रुं अळव नी शळे अठव द्वयाया द्वाळे विषयाया वयव उत्तर द्वया क्रीवा नी परे हिंद नी'नवादावात्रसमासुर्सेन्यदे'न्देसर्यदे'क्सर्यदे'क्सर्यानु'न्दरावदे'क्सेक्सरम्नामुर सेसस हैं है 'दर' वर्र प्यापेब पवे हिरा द्रीय विर वा वर्षे द हुव हुव सामा नियातक्वाक्वाक्रियान्त्राचा ईरार्टाव्याक्ष्यायान्त्राचायान्त्राचायक्वाक्वा विनिन् इन्दर्वेषप्रवर्दिन्क्यन्त्। नगवन्त्वेषप्रवर्ष्त्वार्वेष ८८.। क्ष्याताबुबातबार्क्ष्तबार्ताक्षा श्रातवीराबुबातबाश्चावाल्या कें.बुबातबा क् वयाक्रीक्रियार्या मुन्नवयाय दिस्य संस्थाय विष्य विष्य विषय ती. खेश. तथा तत्र सामी अधर किया है। शूर वायशा तर रार राय खेर आसी र साम त वरिवा.१५४.विष्र.वृश्च श्री४.व.४शश.व.तिवा.वक्षव.व.लुपे.तव्.त्रिपे अश्रवा.वी. हेश हेन शक्ति अवेश यश हेट देन ने विकित्त ने शक्त का नेश क्या यर दन परि दिन् पर्वत्रिं क्रिंट्यर्ट्ट्वे इंट्यर्ट्ट्यक्वया क्रिय्यर्ट्ट्रिशे वेश स्वायर ग्रीया हि.

र्च-इवा-अ-दुवाची-देवाब-र्देब-दिव-दा-धेव-हे। क्रेंटब-५८-विबा-धवा-क्री-वार्य-पानुसा इट'र्टा वे इट'वेश'यश हेट'र्वग में विर्च महिशक्ष के मर्हेट य'र्टा वर्देर कनश वेषायषान्युनार्टेव उव वेन नयन येन नमा केन नमा क्षेत्रायषाय निम कुयारेव वर्चर दर्। हे हे लेश पश्चेत्रा रिके देव प्रावि ग्री रेग शा हु हेव पा प्रवि पर्व हिरा वर्रान्वाक्षेत्र्युः अवेरवेष्वायम् कुर्मेयस्य वन्द्रायः स्रम्भिक्षेत्रं । वासुस्रायम्बासः मदि प्यत्र यम हें त्र माया मह लिम हें मा के इ हिन पदे खु मुह है। लेख हें माया में र्वेगाम्बेद्यम् वृद्धाः देणद्रः हेव्ययः यठद्र ददे द्वाः व्यवस्य प्रदः प्रवाहिष्यः य गर्रार्थायाः। वह्रभार्द्रम्मी श्रुवाधवर्षावर्षावर्षावर्षाद्वराष्ट्रम्भेर वनग्रायदे ख्याचे दो। ग्राविग दुर्श र्चना सासे दाय राज्य मान्य से दाय दे खुर ५ गाव क्षेट ५ वा ना सुक्षा का या वा वा विका गाव व सा न सा हा ता ना सा वा वा वा विका न सा वा वा वा वा वा वा वा व र्राप्तावाकार्याचे पार्केयायान्दरावरुषाया सम्मा युवासुन्य साहे केव र्याद्दर स्वतायते म्नायाद्वात्राचित्राचित्राचेताक्षाक्ष्यकार्त्तीः श्रुवास्त्राच्या स्राधारे रे उद्यायायेवः तर.ट्र.ट्रे.ट्रेच.ब्रु.वश्व.ब्रट्र.लूट.लेट्.लेक.ट्रेश.वश. क्वेत.केक.वश्व.वश.वश्व.क्रू. नायबेबर्र्इक्ष्यमयबेळ्टाबेटाय्यिरामश्चायदेवाचेर्र्इन्स्यायये मेबर्राया म्यागाम्डमायुरा वर्षेत्रेत्वत्री ह्रेन्सस्याक्यार्रायुरास्यस्या वस्त्राम्याः इस्रम्द्रा १३ र्रेट्रवस्त्राम्याद्राः वस्त्राम्यायायम् वर्षेस् क्रेंदेगान के मान्यान सहित्यादे प्राण्यान व्याप्य द्वा स्टार्म विवास करिया बिटा रटनी'रुष'नासुरु'र्'चसन्याय'यंदे'र्नि'य'इसस्यागुट'व्व'सेर्'ग्री'ग्रुट'क्वः

पृत्ते जित्रासुपर्दे पर पर्वी रेगाय है। दे स्र र विया पर्या देवे स्वयं पर दिया है। बर्पियाममा अर्केन मुप्या में प्रति । व्याप्ति । व्यापति । व्याप्ति । व्यापति । व्याप्ति । व्याप्ति । व्याप्ति । व्याप्ति । व्याप्ति । व्यापति । लर्.मी.स्वानार्ट्र.भर. . इ. वर्षा पश्चित्रण विश्व स्वाया स्वाया विश्व स्वाया स्याया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वय र् अरशक्षित्रात् श्रीपश्चार्यात् प्रत्यात् स्थार्या प्रत्यात् प्रत्यात् प्रत्यात् प्रत्यात् प्रत्यात् प्रत्या मै.जश्र क्षेत्र तातूर विश्व विराधद्य क्षेत्र श्री वश्र शे. वर्गे. वर्गे ताल थे तातृ हिर । व्. थे यदे पर वामेवाबाया इसबा छ्रायर है हि यु प्रार्थ हे के वो यदे वामेवाबा इसबा क्रियाच्या विराधमान्येव स्थयाक्रियायाप्य प्राधिव हो। यसामी प्रवसास्रियसा श् र्हेट हेर हे न बायदे थेर की रेवायवसाय मेरिया वहिषा सूट मेरी सासेर या स वर्द्रवर्षेद्रवर्षेद्रवर्षेद्रव्यवर्ष्यवर्ष्यव्यव्यव्यविष्ठिष्येद्रविष्ये क्षेट. हे. रेश.त. रेट.। ब्रिथ. सूर्याश.शवंद.लश.तंद्र, वेचश. क्षेत्र. श्रवंद्र त्र श्रवंद्र त्र श्रवंद्र य युवै वयम नेम ग्री पें न पन अवर वुन यावस्य उत् पुन पन केन पुन र पने पे प क्रिवंश्वेष्टकर्यरम्बव्ययर क्रियाय क्षित्यर प्राप्ति वित्यर प्राप्ति क्रिया वाश्चित्रमासुवर्त्ते, वद्ये वार्त्य दे। वहिषा बैट वी हेवा या आवारा वारा साम रट देश ब्राटेशायर मे्वियाबेटा। श्रेश्रयान्यत्रत्रायाच्चराश्रेश्रयात्रथ्यायाः स्थ्ययाग्रीः श्वर्याः हैनाशरीर्धेवरतवर्षुवर्षुवर्ष्वयार्केनवर्यावव्यवर्ठन्यवृद्यवेष्वविष्वव्यव्यविष्य नेशायमानित्र निर्मा क्रियालम् स्टूर्मिशायदे निर्मायासम् निर्मायमान्त्र निर्मायमान्त्र निर्मायमान्त्र निर्मायमान गुः ८८ र र मिना येव के बादि र दे प्रवित हिर गुः दे वित है र वित्र प्रवित प्रवेश दे.सं.वंतु,रश्रात्तु,क्र्या,द्रेश्य,देग्य,स्वा.सं.वृत्त्य,विश्वः विश्वः विश्वः विश्वः स्वा श्वेष्ट्या से विश्व र्स् सेवाकी तक्षराचार्योष वाहालत्तर्या तत्र क्रिया केरा है सह मक्सी मी.

श्रास्थानश्चित्रकृतानी सेस्थानी र्यापुर्वाता स्वापुर्वाता श्चिषायदाक्षाताप्रमान्तु प्रमुविषयायदाः द्विष्वयाचेषायाः क्रेव्ययदिवान् वानिषयाः रुवानीः श्रुभेव.विट.श्रश्रश्राकात्वार्वे वट.त्राशक्त्वा.ये.वीर.त्व.क्त्र्यावाक्ष्रश्राक्षश्राक्षाः वेतात्व.त्र्याचावा बी.पिश.विरश.तपु.मु.चेश.भैपश.बी.पब्रे.प.लुच.तपु.मु.प रेवे.त.श्रुशश.पश्चेरे.ता. न्दायमानुष्ति वर्षे प्रमान्ति । प्रमान्ति । प्रमान्ति । प्रमान्ति । प्रमानि वेशःश्रवाशःमृःश्रानाविशःवृतः। वदेवद्वादाः व्यावः स्वावः स्वावः स्वावः स्वावः स्वावः स्वावः स्वावः स्वावः स्वावः त्र-श्रूब्रानबाक्ष्यात्र-प्रकृष्यदिःश्चूर्यश्च्युव्याश्च्यवात्रव्यः व्यव्यवात्रवः गुःरूवः न्यान्यः क्रिंशक्तित्तर वित्रक्ष्यत्तव्यव्यव्यव्यव्यक्ष्यत्त्रेष्यका श्रीत द्वा देव द्वा पर होत त्तुत्वच्यत्रे हुर्यत्र द्रम्यत्र र्यायर व्यायर युर्यय हुत्या यु कु व्या कवा सण्टर्या त्र वर्षेत्र वेशाता वर्षेत्र त्राया क्षेत्र त्राया क्षेत्र त्राये क्षेत्र त्राये क्षेत्र त्राये क्षेत्र व्या वायहेब र्ख्या ये दि। यदे मिना बार्ष बायस्य इस बारी बायमें दाये वसामिता युःचेना केन मी व्यस् मी नानु र मेरा ह्वेन स्निया स रेवा मु ह्वेन या दुना मी नगरा वेन १८। १ग्रार पेंदे वस वस पर्दे पेंद्र मृत्र मु क्या द्विस श व पर १ व य र दे व न स यर वर्गुर्दे क्ष्मानु न्यायकवायाये वाये क्षेत्र। वावका स्वयायाया क्षेत्राया व्यवसाय वश्विद्वारायम्बर्गात्रे। अवश्वद्वरावश्चर्यश्चार्यात्र्वात्रात्र्वात्रात्र्वात्र्वात्र्वात्र्वात्र्वात्र्वात्र् जुष्राया जीवाता ह्र्यावाता वारवा क्षरवा क्षेत्रार्या क्षेत्रार्या क्षेत्राची गुः क्रियामञ्जूतायर प्रमुः पाये प्रदेश प्रदेश प्रदेश विष्युता विषय प्रमुक्ष प्रवास विषय याम्बाराणीयामन् यास्र रे । वितुष्यामुष्य स्वाराम्बारामितः लब जन हूंब त व बटब के ब टेट के प अश्वर रेपद गुर्वा वे ब रे स्वा मा स्टू

ट्रे.लट.सेचब.उट्टर.र्ह्याब.र्ह्याचबेट.च.व.ट्यूब.त.लूट.ट्री र्ह्याब.र्ह्य.र्हर.स्टर.स्टर. न्यर र् क्रिया द्वार क्रिया विषय विषय क्षेत्र क्ष्य प्रति विषय क्षेत्र क्ष्य विषय क्ष्य विषय क्ष्य विषय क्ष्य यहवायाद्राचित्राविवाद्राविदा देावायहेवावशाद्वासाद्राविदा चतुःक्षंक्रिवाबाश्यक्षयामः मुद्दायते श्रुवायते स्राह्ये । यमः त्वीमः वश्यक्षेत्रायाः स्राह्ये वावाद्ये वास्त्र रे. ह्र्यश्रात्राय्वीयात्राकुरातु. ह्रिया रटात्र्या ह्या शाह्या व्यवाया व्यवा त.तूतु.स्व.मी.वाट.जव जिथ.ततु.र्थ.तक्ष्मश्रक्ष.क्ष्य.त.वा शरश.मेश. चिट.क्वाक्राश्चरात्रायेषे विद्यास्यायामरायास्यित्। विवादार्क्यायह्यायवः हेन'रु'सूर'यदे शेयब'क्केर'स्वप'हेन'याचा दे सर रुबामध्यायमिन पे क्या वेषास्वायाः मैं विगापिता मुद्दा देवाया स्वाया से सिर्वेद महिवा प्रति स्वाया प्रति स्वाया प्रति स्वाया प्रति स्व वात्तिवश रट.तू.क्षश्चर.वी.प्रवश्चीरश्चवार्यः ह्र्यात्रावह्रवे.क्वा.ह्र्य. याया क्याविस्रमागु ने पश्चिम्य प्राप्त है सार्थे विस्तर्भे विष्णा पित्र है दिन वे। बर्षाक्रियास्यावर्धेरास्याञ्चरानारियाषाग्रीत्याक्षमान्दर्भेयायावहेवायवेर क्वार्येन ने। व्रवार्येन निवार्येन प्रतायिक प्रतायिक प्रतायिक विषयिष्य देवनियक्त्राह्म क्रियम्बर्धा देवस्यसम्बर्धा देवस्यसम्बर्धा देवस्यसम्बर्धा वार्श्विनायावकाश्चावद्वाचाद्दा द्वावर्श्विनाद्वाचावकाश्चावदादाद्वावर्श्विना नासुक्राचा सुवसासु वर्षे वा वा सामित्र वा वा सुक्रा शक्ष्यत्वरं त्राक्षेत्रा हैर्देश टैंचा ते हिन्दान्तर कुरेश तक्षत्वेर विद्यात्वर तुर्वेत क्षेत्र की श वह्रव याध्यव यव द्वेरा हे हे के पर्केर त्रव र्यव र्या वा की राष्ट्र वा राष्ट्र वा वा विवास यव स्वाने हिंद या वा दें हैव रेगस सकेंग के दें ये या विस स्वास में विणा परिवा इत्। देवनी श्रेम्ब्रिन्यवेन्रेग्राश्चित्रक्षण्येन

ने क्यायवे मुन्यायने याके वार्यवे त्या ने वार्या प्रवेश में स्वाप्त विकास विका यवे क्षित्रणक कर्न न्दर स्तर्यवे दिहे वहेत्रय वस्त्री वदव व दिहे देवे न्या केवा न्दर हिंद हिन्दिन स्योद नेस रवान सदावि देवायु किन या दे दन यदे हिन सक्त केंद्र १८ इत्र प्रेरे द्रे वातु वहें क्र या वक्ष क्षे व १० व देव प्रते द क्ष क्षेत्र प्राप्ते ४८.धेर हु हु अभग्ररात सूर्या ब केंद्र श्री तिया के कुथ तूर त्य श्रीशा के का ग्री तिया. क्.रेट.विर्.त.वश.विर.तवु.चर्र.हूट.बिर.वश.सूश.त.वश.श.वर्व.त.तिब.केवु. र्शक्रमार्टा रटायार्वटावसुरावसासक्र्यावरेहेहे हे सेवार्वेन में सुसार्वा लर् वाश्रमः स्वान्यदे स्वे न्त्रुप्त स्वार्या स्वार्या वर्षा देन न्त्रुप्त स्वार्या स्वर्या स्वार्या स्वर्या स्वार्या स्वार्या स्वार्या स्वार्या स्वार्या स्वार्या स्वार्या स्वार्या स्वार्या स् बिरामर्केन्'नु'वहेर् प'वार्यायीय की विद्या हिंदा दिवा मी दिया हिंदी देश के ना हो। दारा के ना प्रवि मूर्तात्वेषं तार्वासंशिषाष्ट्रवे नव तरियाई रेश्यतिति श्रूतिताप कुरिषावकवार्षरः विश्वाचेत्र यदे सुवानीशादह्व याणेव यदे मुना नेवाद्म निमानी प्रमानी प्रमानी र्ट्स्यतात्र्द्रम्स्यास्य द्रियास्त्राचा द्रम्यक्रम्द्रम्यास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य इता देववी देव वहुत ने देव वा की दान हैं या पर देव स्वार्थ देव बर ब्रेट नी ब्रेंब या केंबर गु क्रेंब या छ समाय कर से दें क्रियाय है यु छ समाय रे ब्विष्या यहराक्षेत्रश्रास्य अर् अर् क्षेत्राय स्यायु अपदिवाशया क्षुवशा कुष्य स्थान्य स् ळेगायने ये दिन्द्रमा दुन्ने द्वाया अया अयद्वय ये व्यूट्यो देवा श्री द्वाय छन्। लुब्जा दे.बश्चाद्धेव जब पास्याश्चल्य जब नास्याद्वान मिन्नाद्वान प्रदेश हैं स्थाद ली न्यायकवानिरावशायेषायवे स्वामीशामा हरायर मुग्नायेष प्रविष्टिर दिन न्यम अन् ग्री देवा वा भी देवा के वा देवा के वा त्रीय के युर्या वेशःस्वाशः मार्यायवे युर्। देव दे। देवा द्याप्या सेर् कुरेवाशकुर्यः

क्रियान्दर्भस्यायव्हेत्रःक्वायदार्थेन्ते। भ्रेष्ठःभ्रेन्थे कुन्ना नगरावस्या वर्चेर दर्ग इयावर्चेर व्यक्षेर श्रे श्रु दर्ग इव विषाणी वेवाया रूट कुवाची विषाया सर्रेयानु क्षुव पर्य वेषाया है वेषाया गर्म स्वास्था सर्रे व कुर है प्रवे पर इचात्त्रात्रीश्वात्रीश्वातर्वक्षात्तवक्षाव्यक्षत्त्रन्त्रात्वात्रक्षात्रवतः य देन नयमा सेन गु रेमबा गु न सा हिमा धेवा या ने समस नुबानु पहिन यर क्षान्यायकवानिन्वसायेव पर्वास्वामी सामा मुन्या क्षाना मुन्या प्राप्त स्वासी मिन्या प्राप्त स्वासी स् गुःरेवाबागुः द्रश्राक्षवाद्रदः द्वायायद्वाद्वयः द्विवाद्वयः विवायाया व्यवागुः रेवाबा स्रकेवा छेषा र्थेग्राम्तर्यप्रविष्टुरा देविती देविष्युयाणीरिय्याणीद्रस्कियाप्रदेवा क्वार्ज्यान्त्री विवाधार्त्र्यायम्दावधावधार्यास्य नियानम् विकारम् इस्राच्चर द्रवादित त्यम् सेत् ग्रीपर ही त्य क्रिमा यकु दुना या सम्राच कर सिस्र र दूर्य इगानु वहें व या वक्ष के वदव या दर्ग इक्ष प्रदर्भ व विकास न्यरायाने किंत्र हिन् श्री अर्केन यानु यानु यानु यान्ययायाय याची यान्य स्त्रीय प्राप्त स्त्रीय श्री या रेग्रणी'न्यक्रिप'न्ट ह्यायणिव या न्यक्रिप'न्ट ह्याय'ने ग्रेशक्षिव यव नासुरा सक्त वा पासुरा दु वा बुद वर मुदी क्षरा दु व्ये दु स्वा दु व्ये दि वा वा वो वा यवै ख्यानी बायहे व याचे व यवे हिमा देव यह बाहे रेमा व हा हु व केंद्र यवे दश क्रवान्तरः र्वेयायायहेव क्रिया रेव याया छत् क्रियायेयाव नित्रक्षियायावी सामानित क्रियायाया मर्यायते वृत्। देवावे। रेणश्यः सुवार्यर्यदेव अक्रिणाद्र क्रिंगपाद्रवः ततुःक्वाजूर्द्रो शुभथाक्ष्ये विषयात्रर्थे क्षेत्रा र् अस्य पश्चिर्द। देव ध्रैर र् अत्र सेर परि द्वर स्वाम सेर सेर रे रेमम नि.श्ची.रट.श्र.श्रुव.रश.क्र्य.रट.र्ह्म रा.धेथ.तथ.य.सेशाशक्ष्य.तथ.यसीश्रा.री.यीवेट.

चर वरीत् क्ष्यार् जार्यायकवानिर विषा वेष यदे स्वारी षा वहेष या जी यदे हैर। इंग्राईश्राचर्टर वंशावश्राशिति प. वृ. ते दे हे हे तावा श्राचरीया व.क्ष्रश.च्यांक्र्याका.यट.त.तधु.वैट.। ट्र्य.वे। व्याका.क्ष्रा.ववेट.वया.ह. क्षेत्र. वि.चतु.क्वालूर् हो क्रायाता.श्रुचशाया.सूर्येश्वाश्चर श्रीयाताताशाया.स्वा व.क्षश्रह.जग्रचर्नेजन्दर्। ४४.४८.ट्वे.चर्ट्शत्त.ज.शूर्यश्र.त.पुश.ह्रीय.जग्र. श.मूजानाक्षशादे जाशाद्मूजानाद्मा ईवानह्यामुशाद्यवाषाक्षासुकार्यदेन्त शूर्यायेश्याम् अभावत्र्यात्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान् ब्राधेयश्रक्ष व्यवश्रक्ष क्षेत्रम् व्यवश्रक्ष प्रति सुरायत् स्वर्म व्यवस्थितः स्वर्म प्रति सुरा सर्वापु केवाबाबिटारे सूराग्राचिर खुवार्ये दे। रदाविव हैंदाय है द पु हिंदा व्यक्षेत्र्येग्रयम्यरावयययन्ता व्रेव्चेयवद्ववयवे क्षेत्रर्रायन्त्र्ययन्ता रटान्नक्षासुन्निनाक्षायवे सुंचान्नसुसाचका वर्देर द्वे साह्नर द्वे दायका यदे । हिर.धे। श्रिवाश्चेद्राप्त्रशास्त्र श्रिव ट्राया दे द्वा स्वतं व्या स्वतं व्या स्वतं व्या स्वतं विवास यर प्रसम्भाया प्रमाय देते हिन् केनियाने र सके र या पार्क्र मा उने मार्य प्रमाय प्रम प्रमाय प् दे। श्रुपः व्यवसः दर्दसः निवि स्थितः यदि सम्बन्धः क्रिकः वर्षदः वर्षसः क्रिक्षः यदे स्थान में हूर्याशासर में नवु छूरे लाये नवु हीर। वाश्वेशास वर्षावा में ब वर्षावा नवु हीर नश्चेर वित्र क्रिया दे। विश्व विश्व विश्व विश्व क्रिया क्रिया विश्व विश्व क्रिया क्रिया विश्व विश्व क्रिया क्रिया विश्व विश्व विश्व क्रिया क्रिया विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विष्य ने सर दाये में या ग्रीयायया गहिया पर्ह्मियया पर प्रयुक्त रावे खेर हो हो हिंदा हो है । ने। नेवर्ष्ट्रन्तुं क्रेंद्रित् क्वियायाया मेवरणीया क्वियायायायाय विवाधिरा है। यो मेवर गुरा क्षेत्राय देश परेद देशही वाचवा क्रूर क्षा होवा क्षेर्य यादा प्रक्षेत्र पर दिस् श्चेष् ब्रैं र पद्म होर हिर हेट होर ब्रिश प्राया क्षेप वा पर्शेर विष्र हें श्रायद के स्वार

हैंद के द हैं या वे पशुद विकास या साथ में हिंद के विकास कर है के दें हैंद द में र मेर्गी सम्मून द्वार तकर तर विषय केर् का विषय । म् अर.त्. केवशतरीत स्थात श्रात्वर हो हे सर.क. केर र तत्ववाश वालव. म्यानीयानुरायमाद्देमाम्यायह्रदायते भ्रित्रादे केत्राचे दे ह्रा कुर क्षेत्रायमप्तप्तर्भेत्र देवेदायम गुन्नम्भास्य प्रदेश्वित्र वित्र वित्र । पर्दे.ट्रे.ट्रेश.क्ष.तर.पर्द्ध्या वृद्य.वर्शेटश.ततु.ह्वेरा लट.वि.हव विपूर.त्. सम्वीत्रायात्रायवित्रावाद्वीत्रायात्रायवाद्वीत् देन्द्रात्रा विविद्यस्य सामित्रस्य सामित ववि'सळस्यस्य से 'त्रेन पवि' श्रीमा ले 'त्र 'श्रीमा से 'दे 'वि वे 'से 'त्रे वि वे 'से 'वे 'वि वे 'ते 'वे 'वे वि म वर क्रिंट क्रि.श.जबावनेट ततु क्रिय है। श्रामिल्य दिस्थ क्रिया वेश चार्थरश्राततु.ह्येर | रेशाय वर्षेट त्विर स्थिताततु.ह्या देशा से त्वा चार्यरश् यास्तरार्हेराहेराक्षेत्रायाणेवाया हिराहेराक्षेत्रायवात्त्वयायराजेरादे। बाह्याध्य र्च्चाथात्त्र्र्यं कुटा व्याय्ट्यं ट्यात्यः सुर्यास्या स्थाया ग्रीप्टात्त् स्थाया ग्रीया रट्मी अक्षत्र हेट्गीश वीच तथा हैट्या पद हैट्ग पहिट्र हैंद्र पहिट्र हैंस्य प्राप्त हैं रा इ.सद.र्घ्याश्रद्धालर.सूर्या सू.ध.त्याच्या स्.व.स्.स्.स्.स्.स्.स्.स्.स् परिषा मुईश्विर्वेश्वे द्वापायाविषा सदाईश्वः वे वात्रूट्यः दिवः पर्यापस्या यवै के शामस्य कर् । अद्भागित के पर्ना के ना अर्द के स्व में स्व मा स्व याद्रायदेष्यम्य मुख्यायदे केषा स्रक्षा स्त्र प्रताय विष्युष्य प्रताय प्रताय प्रताय स्त्र प्रताय स्त्र प्रताय स् ट्रेन्द्रविश्वयात्त्रवेत्रवेत्रेत्र हिंद्रपदेन्द्रत्वश्यंत्वश्च हेर्मश्रयद्वर्त्ता श्वरवश क्षेत्राचे क्षेत्र पुर्वे वाका विक्राचे क्षेत्र चित्र वाका क्षेत्र पुर्वे वाका वाका क्षेत्र पुर्वे वाका विक्राच वर् हेन न्द्रवर्षायव हैवरा में हेट र विर्वाय है । विर्वाय के विष्य प्राथम

गुक्र या के क्विंक् प्रकृष । यो मेका प्रकृष प्रकृष यह यह यह । विक्रिया परि है है पहिंस चे.बुटा शिक्ट्या.मे.शह्यात्रात्यातश्चीतात्रराची हि.इ.उत्तरात्व.श्चेथ.श्चेयातथा श्चाम्याचार्त्राम्याच्या वेषामध्रमायवेष्ठ्र। वर्ष्ट्राचेष पुच्या शर्टेट.शु.चेप्रेश.शहेच.ब्रूट.त.के.चेतु.ब्रैट.शक्शश.वंश.ब्रेचेश.शक्शश.ग्री.क्रेट्य. इसकार वाजी के निहेश पास पुरि दिविष रहते दि सिंदा प्रेस पित वा से परि सुपका हिंदिन वद्दिन विद्या वि त्र हैट शहर दूर तर बुटा हिंह श्रेश्वर रात के वारा का विवास बेट्य. यवे हिरा हिरा में विक्य हिर्म कि प्रकर नगर में विवाय किया हिया यहिरा या नन ब्रेर.लट.ल.डे.ले.पारशत्तर्थर.चे.व.च.विश्वातिश्वातिश्वातिश्वातिश्वातिश्वातिश्वातिश्वातिश्वातिश्वातिश्वातिश्वाति शर्दे हो वाका वार्कु हा है विकट वा ला ने बा है वि के दा है है वे किट हो वा बार बा यवःक्वामुकाक्षेप्यानकुत्रकाले इत्रिर्देश्यानकुत्रकाले मुद्रा मृत्यायक्षाभुद्रायाचेत्राते। भ्रित्रामायायाया स्टार्ट्रावेयाग्रायात्रा विवाधानकात्मर्यं नामान्त्रीकाममामान्त्री विद्याम् मिन्स्यकावास्यावित्रेकः वनर्या देलदःश्चेश्वर्वार्वार्यरःवश्चिश्वरायरःग्वेश्वदा हेहे वकदःश्चेश्वर्वाः र्यार्तार्वे ईट्र्हेर्यवर्षेर्याया लेश्राप्रवाति हे हाश्ररावर्षेर र्यात्राप्ति हिन मांश्रवाताश श्रदशःकेशातवराववःत्र्राद्राद्राद्राध्या वेशामान्त्राविद्र्यः र्ट.वर्ट.वृत् बुश.चीशेरश.चतु.हीर। वश्चेट.वृत्र्ट.बी.ट्र.इ.वक्ट.ट्र.श्रश्थानेवत. गसुराक्तीयन्वाक्षेत्रप्ता देवे मनसम्बस्यासुरात्यो वासुरायकी प्याती कृतः

है या यय। यें द्या हैं द पति द एयर द ना ह्या । देना पदे है या पुरे हे रहे । देश नाश्रीर भाषा वर्षे भाषा होता होता होता होता है है कि वर्षे हैं है 'वर्कर खेत वा ट्रे.लट.सें.वशेट.सेवश.ग्री.र्रे.ड्र.वशिश.टट.ल.पेश.श्रश्य श.ट्राचव.टट.र्डंब. यायार्यरशार्श्वेर् पत्रे प्रतास्त्र प्रतास्त्र प्रतास्त्र भी प्रतास्त्र में प्रतास मे वकर विद्यासु सु अर्देग नगर धेर वर्से अयाय वाद वेषाय विद् दे। वेद दु सु र्वे.स.वु.र्ज्ञचाकारूच.क्षेत्र.कूट.कुट.ब्रुश.स्व्याःक्ष्याःसुव्यःवात्रात्वित्र.टटा। सेचवावट्वरः तावर्थेवेष्वेष्वे र्वट्ह्र्र्ड्र्यक्षेर्यवर्षेष्ठ्याक्षेष्ठ्रावश्चर्षेत्रः मु द्वाप्तर्मेर व्यवस्तर मुन्त्रस्य स्वराम् व्यवस्ति र मेर स्वर् प्रमानिक स्वर् स्वर् स्वर् स्वर् स्वर् स्वर् लव्याव सेना वित्र में मिन्स सेन् मिन्स सेना वित्र से साथ अन्या वित्र से साथ अन्या वित्र से साथ अन्या वित्र से हेर्यक्षेत्वर्दे। रेक्ष्र हेर्यत्वव्यययाय्य श्रुग्विर्यययम् तत्रिम् वेश्वेर्यात्र्यात्वरादे। सर्ट्रामुश्यशास्त्रिम्पर्वेद्वेर्श्वेपराम् विश यम् छिटा द्विर्यत्र मियान्व या क्रेन्य राज्या या क्वियते देव या स्टायते क्विता या विक्रिम् इस्मायाक्रम्यम् विक्रम् विक्रम्य विक्रम्य विक्रम्य विक्रम्य विक्रम् वे इर नव्यायमा भ्रेया वेय ५८ । यहूर छ्यायमा दे याया व्याप्त या है याया वश्रेरावे हेट रुपिव प्रमुद्धिया भिष्य प्रमुष्य विषय स्थाप्त स्थापत स्य स्थापत स्य स्थापत स्य श्रेन्द्विन्यायुम्यक्तियानु स्वर्षानु स्वर्पानु स्वर्षानु स्वर्पानु स्वर्षानु स्वरत्यानु स्वरत्यानु स्वर्षानु स्वर्षानु स्वरत्यानु स्वर्षानु स्वरत्यानु स्वरत्यानु स्वर्पानु स्वरत्यानु स्वर्पानु स्वरत्यानु स्वरत् गुःसह्रायासह्राज्यार्दे हे वकदायायकुषा हे वि सूट दे हे र पश्चर पाया देवी सामा

स्ट्रिन् विष्ट्र क्रि. पर मु पर्व के द व्यव पर्व सुरा विक् इस्मा मुक्त दिन मुवा पर्व व ५ स्टायामना कु के स्थानी सहित्याया सहित्य वि के अक्षेत्र व्याप कि है। क्रमाणु सहत्य के न्वर्ये व्यासेन्स्य विष्य दिन्दिस्य या प्येत्र या प्राप्तिन वि मित्रसम्मान्त्रायामित्त्रसन्देवेर्वमानुसन्दर्भात्रसम्भासन्दर्भाष्ट्रम् सर ले.र्ट.हे.इ.अश्रयादेतदःश्रेशतद्भवीयाग्री.र.केवाकाविषायेशत्वीत्वीत्वेट्रशह्या वायक्षतामा नेषाञ्चवात्रात्रात्र्यं मह्मायिष्यात्रेषाताने व्रत्याक्षयाम् न कृ.चगव.बूर्.त.वा क्रू.बिक्रेंच्याक्र्याका.ग्रेथ.त्याव.तसू.त.ल्य.हे। रू.इ.स्ट.त. वया चनेत्रयागुरु इस्य यर महिना यदे द्वेरा । निर्दे र सहस्य प्राय क्ष्य सुर पुरा ग्रा । भिरम् विश्वेत्र मुद्दा क्री क्रिक् व्याप्त विष्य विष्य विष्य विष्य विड्-द्र-इं-प्यता देशनास्त्रासी । ह्यास-द्रेव दी खेंद्र-पन्द-वेबा स्ट्रे विश्वायर्थियार वर्षेताचा द्वे स्वेष्ट्रेद्वे देशायर आवीशायर वर्षेताचे विश्वास हिमार्च्य. सहसायार्चित्रपर्वे । दुं वि देव देवस्य प्रमा छेत्। प्राप्त वि क्र वि सा त्रवे.बेटश.बेटश.वेश.त.के.बोट.वे.बोब्ट.शह्श.त्र्यातामः भावटशावेश.तत् । ग्रि. न्नयुष्णवीन्नयुष्पन्ने वहेन् नुक्तावहेन् नुक्ताकेर्याके नारन्यविराह्मा ग्राम्पद्देव र् क्ष्मापद्देव र क्ष्माक्ष्याय दर्ग हुँ वे देव दे र माम सुवायवी । भू ब्रायाक्ती स्वा अव दे। क्री पर्ट्या स्वापन विवा देवा पर्ता विक्र देवा पर्वः क्रवाराष्ट्रिकामार्थर महत्रा वार्यप्रवास वर्षेत्र राष्ट्र । है स्वत के मार्श्वर यदि है र हार लट्च श्रीवार्य्य । अर्द्र र देशास्त्र वर्तवारा हेशास्त्र शावीशासावर्वे वाता वेशा विषाते। ग्रेप्वर्ष्यास्य प्रवास्य प्रवास्य कृषाय विषाप्रविष्य प्रविष्य प्रवास्य प्रवास्य

क्ना हेश पर्वा | दे स्ट्र प्राय प्रमेश प्रमाण के महिल ग्री खन सक्य है है दे हैं इ.द्वेशश.वीर्यवर्षिराधशात्त्रवाधाश्चित्राहुत्युत्त्रियश.श्चिरावर्ष्ट्वरक्षिराधाः ध्रेयाश. क्षान बुद्रा अग्रेव याव यावन याय याव दिया ने प्रामा व या विद्या पर्वे प्रामा नि पर प्रवास्थाय प्रवित्ते सर्देर प्रवासका हिन्दि गानुन वास्व विदेश के विदेश क गुःचन्नार्यक्षेन्यगुनाक्षा । व्यान्यक्षा । व्यान्यक्षा । व्यान्यक्षा । व्यान्यक्षा । चैशावरित। कुशावशिरशातवातुः होत्र। चर्योवातवात्रच्यावशास्त्रभगः मित्तात्ववेदाः हो. र्रेषानु दिन यायगुराष्ट्रियो इसाय उन्न इससा सुरायस्ना यससाय प्येन है। दे क्षर वर्गार्ग्य राष्ट्र वर्ग हे हियायमद यद हिरा यगुवायद यमेगाय हमस्य ग्री ही र्वर श्चित्रवयश्चर्यायम्द्रायः स्रायुरायाद्याय्यायः द्वायाय्येतः हि। सर्देरा द्वायाया हि इ.तर्र.इ.केवात्रका ।लेखवार्ज्य त्रुवातर्याश्वरश्चेय ।वतर वहार वह्याया ततु.पूर्. कंथ ता हि. इ. ते र. ते . क्षातर त्यूच्या ध्याप्ये द्यात्तव. ही रा ने र. ते. ब्रिन्क्वन्त्री मूर्जी.स.मान्द्रवा विवाधःश्चित्रस्यमःग्रीःब्रिन्ट्रन्तुं वाधास्त्रन्तुः विवायम्बिसमाने विवस्तासु सुराया वस हिन विकियन दिन विवाय वाहियास स कर्म्यर्राहर्मान्यायवेर्द्येवस्वत्र्यानुष्यः सुरानुष्यः सुरान्यान्यः १८.प्रथात्त्र्राज्यम् स्थानात्र्यात्राच्यात्राच्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्राच् व्ययावायायायायायाया अक्तिवायायाता श्राक्ष्यावयराववरावयायाया वर्षेव न्यीव विर विर विषय । विषय विषय विषय विषय । देव वा विद यह वा गुःस्रगःसळवर्रेहे अगमःगुःदेर्देहे चे प्रकारपानु वयर पर मुरवमा यगेगमः

क्षात्रात्री है दूव तर दे हू तथ पर्टे द्वारा हु ह तर दे ता के के प्राप्त का ती था वगवाव मिन्न मु व प्यापे हैं। हैं हे से समाद्य मुवा ववस प्यमा दे तस पार्वेद भहें श कु वर्धे व्याद श द श ह्या श वर्हे न छेट सु र पु र वि हैं व श व र ट र व स स प र पु रे वेयाम्युर्यायदेश्वरा स्वयम्द्रित्रे स्वयम्द्रित्रे विष्यम् नेन्द्रियार्म्न्यम् । मुन्न्यामुन्न्यायान् नुस्त्रान्याम्ययान्ययान्ययान्ययाः मिन । डिलायर्थे । यतायता है देवादे नामवाया पर में दार्थे । ग्री वाया नहिमाने स्र-प्रवित्वायात्रीयव्यव्यन्तराष्ट्रीयानिवायवी । यदान्यावे देवायवे प्रयापाय ह्यश्चरी स्पृष्ट्रियाश्चर्यर्दे मुश्चर्या मुश्चर हुन्यश्चर हुन्य क्षेत्र प्रमुख पर्वे नहं ग्रीयाया वे दे हे सुर पु वार्य द्वारा । नहं इ र स्था हूं न त्या है दे हे पकर वी त्वायित्वाशुक्षाक्षे विवेषाश्वस्यस्वत्युः युक्षात्वायित्वाशुक्षावि विवास्य यर मुक्ष नेना पर्वे । दुं दुं दुं प्यत प्यत दे पर्वे पर्वे देव दु ख्रर प्यट प्रश्नुवापर्वे सर्दर्वाम्बर्गिर् भेर्द्रहे सुर मुलेबर्ग्यबाद्या देहे वकर मी प्राप्त रहें वा सार्द्रिय य इंग यद प्रश्रय उत्राध्या उर् यी जुरा द्रा भी न मुश्रा धुर पुरा विवाल मुर्जे वर्गीताश्चर्तियर मिश्राताक्ष्रिश्वर भूचारात् । रे.स्रर वर्ग्याया स्थाया मिश्रिक्त वर्षा भर सहयानी प्रत्रानुस्य न्त्रायहरायसायुस्य द्वाप्यद्वाप्य विस्त्राम्य विस्तर्मा स्वर् क्रिंट र छेर क्रेर क्रिंट प्रथय र पठ्या पर प्रथम पर क्रिंट क्रिंट प्रथम क्रिंट प्रथ क्रम्भावायक्ष्यान्वायाय्यायः स्वायवे केराधियायवे स्वायवे स्वायवे स्वायवे स्वायवे स्वायवे स्वायवे स्वायवे स्वायवे ५८। अववः व शृतृः विद् यदे ह्युवाद्मा दे गहिषामा सेदाया प्रवास्ता वर्वोः

ब.क्.जूर.कुट.शवत.ब.बंरे.शुर.तद्र.शवत.श्रर.रटा ट्रे.जथ.कूर्य.तदु.कृत्य. वार्वासिन् केशन्ते पानि रामनि रामनि रामनि सामा विश्व स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थ ८८.सेर.ये.जश्र.ह्रंडु.श्र.व्र.४०.थे.वघर.घ.ह्रियश्र.वर्द्धश्र.तश्र.व्रव्ट्रर.व्री चन्नेन्र्याम् वर्त्ताम् वर्षेत्रम् वर्षेत्रम् वर्षेत्रम् वर्षेत्रम् वर्षेत्रम् वर्षेत्रम् वर्षेत्रम् वर्षेत्रम् है। अर्दर विश्वायशा गर्गाय केना वश्य व्यव क्षाय । विश्वाय म्यूराय स्था तर तथमा वृषाविधियातवृत्तिर। ट्रेष्यास्त्रिः इष्याति स्थानि ग्रामाने स्वाया द्विया प्रमाण क्षिया स्वाया स्वया स्वाया स वश्री । क्षेट द्वा लट द्वा क्षेत्र क्षेत्र विश्व क्षेत्र व द्वापर पेर दे। त्री दूर ने या मेर्ट देश मेरिय कर हे र्हेन र्ये के पान असर श्री किंद्र निर्मा केंद्र वस्त्र कर दि है रहेद पदे हैं व्यास रम श्री पर सारवानु विवादा स्थापित स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स गुराक्षाचारुमाणराभ्रानुषायदे।विद्वाच्चाव्येष्ये विदेश्यो वेषागुःभ्राप्तवाद्याप्या भूर-र्-विवायवे अवे रामा देवे क्षेर-रेवार्-वह्य केर वर्षेर पार्म पेवे पुर र्रे. इ. मुश्यमार्थातु स्तित्वयमायमायम् । पर्वासित् स्तित् गुर्यक्रिन्देव द्वारी ग्रम्मी र्त्यार पद हिर्दे हैं देव में प्राची देवा निविद्धे पर्या र्रेहिव सम्मित्र में के किया मित्र मित्र मित्र सम्मित्र मित्र मित् द्वाः स्विषाशास्त्रस्य सम्बद्धाः स्ट्रान् द्वा त्या स्ट्रान् स्वा स्ट्रान्य स्वा स्वर्धाः स्वर्धाः स्वर्धाः स्व

मुन्दित्यद्वे यदे अक्ति ने स्रवयः सुन्तु प्वति प्वति गुन्। वदे र बुसर्पे र मुन्य लय ता के रितर श्री कर हो। का है ताश है र द्वी श्रव वश के र र ग्री वा वा से वा यव पर दर्। युष्य प्रश्ने हिन्द्र स्थायव परिवादि व देव व से देव व से स्थापित वासिवानपुरायप्रत्राचित्राच्या क्रियाचेवानुस्त्रीत्राचित्राच्याच्याच्याच्या चर्चर तथा ४८ जीवश मैंच न तृशह उश हैं वश न र र अर्चे व तर सुंश न ले व ही हिंहेद्र-नुप्रस्वयाद्वियायद्वेयावद्वयावद्वराय नासुसार् भो नो नासुस्र के कि क दर्ने द या दे हु या या या स्टार है द की पुरा द ना स्थित ना सुस्र ल.चेश.तपु.भें.वोशेट.बीवाश.८८.हु.मू.चेर.श्र.२.श्रूश.तश.चरवा.चर्बेट.च.लुचे. है। ई. इ. श्रम्भार ततु. श्रियः वयमा जमा ला. चा. तम् वी. मू. क. जार्ग विमान में रमा यवै:ब्रेरा वर्ष्यूट्रविर क्री हेन र् हेट हैर हैर हैन हैं अप देन प्रायवे वर्ष्यूट वर्ष वर्ष्यूट व्यूर्ट्स्यावीव,श्रुंथातागीव,ह्र्यातव,त्यंबेट.च.लुब.वा ट्रे.क्षर.श्रेंच.घवबाट्ट्या गोले द्विमायि हिंदा द्वाया प्रतिमाय हिंदा प्रतिमाय हिंदा स्वीमाय स्वीम इवावर्द्धेरक्षश्चर्याचेत्रयावाचेत्रश्चर्यायाच्येत्रयाम्या लुब्र.तवु.क्षेत्र.धे। इ.क्रिंट.जुवे.तव्ये.विश्वमातातावा वस्रम्यापेष तक्ष्म.वीर्थ.तका.वीर्ट्य. यरुषायया विवयमार र्वे पर र्वा द्वा विवयमात्व के राव दर्वे प्रेय के नवश्चरायरश्चराक्षराचेत्राचेत्राचित्राचित्राचित्राच्या व नविष्याचा वा वरार्ट्रे.जूटशःश्चरःविराववृत्रवावर्ट्ट्ररावन्या श्चेताश्चराविरः वर्षः इवावर्ष्ट्रितः वन् ना देवदः वर्षः श्रुवाश्रुयः वद्दिः कवाशः ग्रीक्षः ग्रीशः वर्षेतः

न्यान्यान्याप्यापराक्षेत्या देरावळ्टाकुपवेषादेवास्त्रकुपाद्धाक्षेत्या देव्हर वक्ट.के.क्वालेवा.श्रूबाद्रा.वाबवारे.केंटात्रा । रटात्रावाबाद्वेश हूंटार्झा विगार्ह्सेट्यायदेग्वस्रवायान्द्रःक्र्यासन्त्रम् यात्रायो विद्यान्त्रीयान्त्राचित्राः वक्रमाथान्द्रम् अविष्याम् हेर्हेवः यान्त्रीत् वयामावयायायान् निर् में या विश्व किया अहु इ प्युवाय मिन या दिया है शा अहु इ खुवाय मेन यदी । इता र्येन हिन्गी वहना हेन हिन्यायायाय उन्गी सेससा उन हिन्याय हिन नुपर्यो निया तथा देव.क्वालटा पर्टेट.क्वी.श्रश्रश्र.क्य.ह्येट्यातव.क्व.श्रचर.श्रट.टी.श्रश्रश् रुष्यायर क्रे स्वर देवा क्रिया के स्वर प्रवेशके दिर विषय वर्ष स्वर प्रवेश के स्वर्थ प्रवेश के स्वर्थ प्रवेश के वर्षास्त्राचर्यम्स्रस्यव्हिना हेत्र मी विस्तर्भान्त्रत्मी स्वर् सेर् र् भी वर्षा वरम वर्षा वरम वर्षा व हेन पदिव अन्य केन या हमा हिया है वा सुरक नुकुषा नामन पत्न पत्न पत्न चर्रियानकर्। के.क्.के.विर्यात्रियात्राश्चरात्रश्चरात्रवेषात्रे सेर्या देवाहेशा सुः इत्ये न्वस्य द्वा किरस्य न्वस्य प्रते त्या द्वा स्वस्य स्य द्रशायश्राक्षेट्या देवाईशाशास्त्री,श्रीटातवाशाधिवा,वी.केंटावाक्ष्या,थेटा,ग्री,क्रेंचया. गुरुष्यम्बर्भागान्त्र प्रत्येव प्रदेशमाने क्षेत्र्या देश गुरुप्य येव स्त्रुष्य प्रवेष प्राप्त प्रमुख प्रवेष प्राप्त यन्द्रयदे यन्ते विषय् विषय क्रिं वालट वर्षा विषय निष्य दिस्य वि भेषा है। वर्षा विषय विषय दिस्य भेष वश्राह् सुन्तिरायदे क्री इस्राय हित्याय र व्यूरा देवे हे श सुन्तर दिन देव दिन प्राय श्रिकाराम्याम्याम्यान्त्रम् श्रिक्षेत्रः श्रिक्षः भ्रिक्षः स्यान्यस्य स्वर्ते । त्यान्यस्य त्यान्त्रम् श्रिक्ष निविदे हैं सब पर द्वा निवर दु की की प्रवा वर्दे दि है में में मान दु में मिन दु में मुक्

वाक्रमान्त्र-गुःह्रियमागुमायमभागान्त्र-८ र्योव र्द्यानिव हिमानुक रहिमा हुमान्या र्वेद्र या व्यक्ष क्षेष्ठ यदे र्वाद वर्ष र वर्षे वर्षे वर्षे विषय हैं र यहा दे या वर्षे क्षणागुरुक्तियाम् मेन्द्र द्वाति मान्द्र क्षणागुः कुत्याया प्यायमा मान्द्र द् त्रुद्र-र्ट्यानाषु भ्रेयत्त्रः क्वानी मैवाक्ष्यः द्रवायानाषुद्रः क्षेत्रयत्रः भूट्या द्रुद्रः ह्या शुरुषादुः इत्यार्थ्याय। वहाय प्रवादा द्वाद द्वादा वर्ष्युवाद वावतः वावतः वस्वाद्वराष्ट्रित्यवेष्वराष्ट्रिक्षास्य भिष्ट्रात्य वित्राह्म देहेश वस्रमान्त्र न्द्रिये क्षेत्रियाची कुर्य केंश्वर ग्री हिंद्य ग्री सहिद्य प्रेय प्रस्थायान्त्र निरुषायदे दिसानि क्रियायमा देश गुर हिर दे प्रदेश प्रका क्रियाय देश गुर है र्टायदे पाने विश्व विषायहें रामा दे पानन की मार्च मार्थ के मी मार्थ मार्थ गानव गाने वार्य प्रति देश गानि वे रेश्वे अवाय हु गा श्री वार्य प्रता गाने वार्य वार्य वार्य प्रता प्रता प्रता वार्य वार वार्य वार वार्य वा बिर्यायत् क्वानुस्यस्याम् न्द्रान्द्रस्य हिर्या दे द्वानी प्युत्र वायरः पश्चियापर्द्व पूर्व । दे वयापर्द्व ग्री खेयबारव हिंदबायबाक्ष स्वयं शी बाक्र र विवस्याधेन् यदिक्रीम् मीसन् द्विदेश्वेषावित्रः राजन्यः मुराक्षाक्षः क्वाइस्रा नेम्या देवार्य क्वाये के या के स्वा के स्वा के स्वा के स्वा मक्ट्रिक्टरम्मा भेममा देवमार्या मुक्कप्रया मुक्कप्रया मराम्या म्यान्या वि अमिर्निश्चार्यं कुं सुर इश्वा द्रेश्वा दे व्यार्य पुं कं चर्व हे अपवि या मार व्या क्रि.ट्र.चधु.८८.शक्त्र.श.ट्रंब.त.ल८.श्रेंशबो ट्रे.बंब.क्रे.श.र्ज.त.चंर.वंब.क्.शक्त्र.क्र्य. र्मेष्यराञ्जेसपराष्ट्रेता देवबाहेरसात्त्वापानरावबाद्रार्भरायकागुराद्गायव्या देन्द्रक्षक्षेत्रयन्त्र्रव्याम्यत्रद्र्यक्षेत्रयान्त्रयम् । स्वत्यत्रम् स्वत्यत्यान्त्रयः

र्वत्ररावश्ववाय्वयाद्वश्वश्वश्वश्वश्वात्वर्गात्वराद्वर्गात्वयाः स्वत्वत्वर्गात्वर्गात्वर्गात्वर्गात्वर्गात्वर् वर्षाचयरान्त्रग्याद्याद्यायविष्टर्याविवःहित्याविवाःतुत्वमुरावाधवार्वे देवः · प्युनक्रन् वायर प्रमुवानिक्षेत्र स्वेति । विदेशायावानिस्या पश्चिन रेसामी स्निप्ता शुः हिंदि हैं दें किया के दिने का या प्रति । या दिन विषय प्रति । हिंदि है दि है से प्रति । क्या हिर्देशनविष्ययायवे निर्याय मन्यवे । नर्द्य वे विषय । रेस्य ८८.तूपु.सेघश.शे.सेट.त्रियश.सेपु.प्ट्रिय्य.सेपु.प्ट्रिय्य.प्ट्रिय्य.प्ट्रिय्य. दे किंव हैर क्वें या येव है। हैंद क्वें वार दे किंव हैर हैंवा या दे ये हैं ये या है ये या है कि याचित्रायदे भ्रित् वर्देत्रायह्रताचे निषानी स्वतः हिंदा हेत् हिंदा हिंदा वित्रायायदे हैं दिनु सर्वे हा पःक्षेत्रायवरःश्चेत्राते। न्यायवाहेत्रायहेत्रायवाष्ट्रम्यवाद्वस्यायवाद्वर् या बेरा डेश खेंग्या पर्टेर वया बेरा पड्रा उरा बेरा दी के साम प्रेया परि केरा बेरा यःश्चित्वन्ति देःद्वरःवर्देन्यादेःवार्रम्बायान्दरःवम्या । स्टामी म्बराह्महरू ५८'वनाया युट'५८'वनाय'ववे'र्श्चेत्र'म्युअ'र्थे५'यवे'ध्वेत्र। त्रेनास'य'५८'वनाय' हे। क्रन्यसम्बुवायवे र्द्वेन पर्दन्येन यम द्वापान निम्नुमायने प्रमान यथिव यदे केरा वश्चरमान्त वर्षा देन वर्षेत्र वर्षेत्र देन म्यायानी सूर विवानी महेव र्घेर वर्दे द्यान दिन दिन स्राप्त स्रिया परे म्यायानी इत्विव के में बाधिव यदे हिया युर दरण्य प्याया है। हिर देश या दर येदे भ्रम्यास्त्रवर न्यान्ता विन्यम भ्रम्यायन्त्र देने विन्ते केन्यान्त्र याम्य व्यापक्षियः तर किर्रेर रेट बीट कुष मी बिर्रेर शालका बीबेट का ततु हो र है। बही पुरं रेटा होरे न्दर्ये वर्षा न्दर्ये हिंद हेन्द्रस्य प्रस्यस्य वर्षा विषय उत्र स्रस्य ग्री दे स्यापशु

ब्रान्ता वहवाविश्वावयावश्चित्रादेश्याववाद्वेराकुषा विह्वाव्यया २४.मुश.मृब.प.प.मुशा ब्रिश.प.श्र.जश.क्षेत्र.वेश.४०। ब्रिश.प.कुर.विट.ब्रुश. बेर्'ड्रा वेशर्टा बर्रेर'ड्रिश'वश'गुटा रुब'वर्देर्'र्र्'र्रेर्र्स्य'र्धे इस्या ब्रेन्'न्सुअ'न्द्र्य'र्ये'अन्'यर'वर्स्या ।न्द्र्य'र्ये'अन्'यर'र्स्त्रय'यर्भन्। ।वर्स्त्रय' यर द्वाच क्षेत्राय क्षेत्र | दि ह्वर दिस से दिस केद यथा | क्षेत्र य दिस स्था मेन्यवी । क्रेन्याचरुन्यने योषाञ्च सवे कृवे। । यन्न क्षेत् के समस हिन्य स वर्सुमा क्रि.चेष.क्रीं र.च.वर्र.लमात्री कि.चेस.स.चेष.चेय.चेय.चेस.वस्ता द्रस. क्रेन्यायकन्यदेविदेवयवस्यावस्य द्वेन्यकुन्यस्य क्रान्यस्य यान्युत्यायवे भ्रेत्रा देशक स्मान्यायदेत्र र्ह्नेत् पकुत् स्थल कर् रेदे नायवात् पर्वेग.इं.क्ट्रश.क्ष्मां क्ष्मां क्री.प्रट.त्वेष इंस्ट.त.क्षेट.त.क्षेत्राका क्षा इंस्ट.क्षेट.ह्रेच का ततुः ह्युत. वार्डिट.क्ष्य.रेश्चितात्त्र्य.से.तेषुट.क्ष्य.क्ष्य.क्ष्य.क्षेट.कष्ट.कष्ट. निष्यायो द्वित्यवे हुना मह्यानिष्ठ हेवर से दि साधित। दि दि हस सायवनिष चर.वीर.ततु.मुश्रम। वर्द्र,थ्र.श्रम्थ.सीश.क्षेर.रे.सूर्यास.तर.ववीर। विच.कुर.की. के'य'णे'यद्वा विराधिक'देर'वे'गुव'हेंवा'इट'के'व्युरा वेब'वासुर्वः यवै खेरा कु अळव दे द्वा वी या हिंद के दावा हिंग या देश देश दु वर्द द या द दा लर्ट्र हैंशायव कर्तार राविव होर पव वह व क्रिन होते हैं विव ही हैं विव हैं वर्ट्रायवर वेन्यायर विन्याय धेन ही | निर्देश पानी इ क्रूर् में हैं दे वकर म्ने बंदेश त्रात्ते चिर क्रिय भी क्षेत्र क्षा भी क्षेत्र क्षा क्षेत्र क्षेत्र

र्द्धे पर्देर अवद प्रधु रह तेवा पर प्रक्षेत्र कुरा ही रूप की शा क्यावर ही वाश्वया गुः हिंद ने द पहल यादे पहिषा गुः देव देखा या ज्या विषा स्वर ज्या देव द प्रमान वा नेषा गुःकेषा ठवा हेन् पठ्न ग्री नर्सेषा ये देश में देश स्था में वा स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप क्रेन्यने। क्रेन्यकुन्सेन्यवैन्द्रन्तुन्यकुन्द्रस्त्रन्त्रःक्रम् गुर्देव क्षेत्राय केर दे। दे स्ट्रम् व क्षेत्राय य द्रान्य वित्रा चु वार्श्वेवा श्राय वा प्रवासेत्र र्'वर्श्वर प्रकारे वित्र हेर् हें अपवर केर् र्वे अपवे हेरा नर पर र प्रवेत श्रेन् यायानु नुन् श्रीनुद्यम् अर्वेद क्षेत्रद विव नुष्यानुवाय सुद वन् पेर्प् प्यर पत्रुदः वर्षाने विविश्वेन पर्वे स्वाप्य द्वाप्य पर्वेन वा क्षाने वे ने विविश्वेन विस्थाप सेवः है। रद्यविव मुक्ष मुक्य या या मु मुद्दे नाद प्यद की वह द्या पर मुक्त है। इसे या या वस्यायार्रायवेद्राय्री द्वियायायवर्यर्थाय्व्रर्भे वेद्यानास्तर्थः हीरा मेश.वे.क्र्य.२वा ट्रे.क्षर.व.त्स्रिय.वे.स्र्य.वेट्रेट्र.स्र्य.त.त्य्वया ४८. विन्दरम्बयविष्टरम्बिन्किर्किर्यक्षेत्रपक्षित्र विन्दिन्दिन्यम्बिन्यः विषार्श्ववाषाण्चिषाञ्चवा चेवास्त्र प्रस्व प्रवेष्णवार्देवाकी ।वदेवाश्चिरेवाण्चियानम्दिवः वर्षेत्रम् निष्यात्ता वर्षायेत्रम् वर्षेत्रम् वर्षेत्रम् वर्षेत्रम् वर्षेत्रम् वशक्षियायावायारादेविविविदेशिर्यादेविकियायायेत्ते। देव्हरक्षियायादेविकियायादेवि उन्योक्षयक्षेत्रयविष्ट्रम् अभियमा नद्रम् द्रित्यक्षित् विष् पश्चित्रमु के देश में के प्राची के स्थाय में देश के स्थाय स्था स्थाय स्याय स्थाय स्य मु.र्रूट.त.सेट.सुश.क्व.तसंबर्धा विसुश.तर.वे.त.८८.के.८८.ववरातस्था

यदेव मुय मुय मुय हर व श क्षेत्राय प्यट दे विष के दे क्षेत्र खेत की अवव यवि क्षे पर्वाप नै'रेन्र्ययाणर'न्नाने'चक्केन्छुन्छुन्छेन्'छेन्'वनेष्यर'व्यवायायान्वेन्'यवे'छेरा वर्देशासक्ष्यास्त्राक्ष्याच्ह्रवाहि । श्रेस्रशामुश्यानम्प्रशास्त्रसायशाम्बद्यायः वन्नबानुवान्दिबार्थार्भेन्यायानु वायदेन्यवान्दिबार्धियानुवायासेन्दे। र्भेन्नुवा र्श्वेन ने न र्श्वेन पर्धि न सुस्र देन सप्यापट न न ने यहन न सर्वेन पर्देन पर्देन के सि हैन यदे हिरा वर्ष हैं के के देश हैं के के वायह के हैं। दि हिर र र र विवेष की का वीय प्रवे यमायत्वमार्यस्थायेन यदे द्वेर वदै द्वाक्षेत्र स्वाकाविकाद्दा स्रास्ट्रेन् पश्चेर ह्वाबाब्धेबाग्री श्चेतातात्वा बिथ श्चार री क्षेत्र स्वर पर री ताला श्चेत्र र्नेबर्ने । नेप्यर क्रेन पर्दन वस्य उन हे सम्विवामी नेसप्य परिन पासवानु पहुसा हे। जिन्न क्षेत्र क्षे श्रेन्द्रश्रेषात्रशःक्षेत्रायाधेत्राया देःस्रमःक्षेत्रायायाधाःनेषाग्रेषाक्षेत्रायावेषायहेनः तत्.की.शक्षे तूर्ते है। येषु ता.क्रें कि.श.ष्वे व.क्रेंट्शतत्त्र वे श्राश्रीव त.क्रेंट्श राट हे या र्द्भिन् भुग्याविषायकवाषायविष्वविष्हेत् छेन्याने यवित्न् । ने सूर्वे स्वयायवेष्यानेषा देश'गुर देवा'वश'द्यूर'वदे हेव'वहेव'यदे द्यीव'देवर मी'विवहेव'मे र्'यश'दे क्षर पर्टूर पव हिरा विश्वस्य है। स्रेयश पर्टूर हिर हिर पर्ट्सिस्स पाय हैंस ठवा न्नेबय्याचेन्ने। क्रूट्वेन्ष्ट्र्याक्रेन्बय्यान्बर्न्ह्न्बय्यान्द्रा हेन्बर विवादन यान्ता व्यादन रोत्या वास्या वास्या वास्या वी स्वादित विवासिता हरा महिमानुद्रायमेथानुत्वमुरायन्द्रा दिनान्मायस्य प्रद्रायदेने माद्रान्ते वार्यन्ति वार्यम्ति वार्यम

विर इससा विषय विषय विषय के स्थान के सम्मान के स्थान के स वेषाग्री दसार्रेवारु वकर पवे द्वीषाया दुवा विद पर है कि हे बाय वद पवे हिरा ग्वन्थर। न्निय्यत्रिरःहिर्देश्यविष्ययायाः व्यक्तिष्ठन। न्नियायायिन्ने। विष्राविष्ठावानन्तावह्रम् की निश्वेम मित्रम् निष्ठा दिवानि मित्रम् निष्ठा विष्ठा विष्ठ सक्ता भुष्यु र पाद्रा विवेषायहिषाहेव विवायये हेश गुः हिर्शयये पञ्चया र्ट्युक्ताश्चित्र विराय र्ट्या वार्था हैना मार्ट्या मी मिनमा सुर्दे वे मी स्वर् मु.र्बर, भुंब, नुरेर, दर्वीर, तर्रा, वच्याने, यर्था क्या, में, युव, क्र्या, भी, रट, क्र्या, यासहङ्ग्रादेशस्त्रसामुव्यसाम्चेन् छन् यम् एक नुवश्चर प्रवेन् के सार्थिन् पर्वे भेरा ग्रेशतायायेर्श क्रांशवियत्तित्रा क्रांशवियक्षेत्रतार्ट्शास् ।८८. र्ये वे विद्यास्त्र विवा हिन्द्र सायवे वसास्त्र विवा हिन्द्र सार वी प्यव कर् वा पानर पश्चया वि.संप्रिं किरा दे या वे क्षिर्या म्राया वेषा गुरा पर्हे देशी क्षिर प्रकण्या परि पर्वे कुरात्राच्याचाराचारेच.वाहेश ता.सूर्याश च्याचिट,तूर्या.ये.विट.वट,त्वयातारायाताया नान्वर्र्र्योर्धेन्यारी नाव्याकेर्वित्रस्य स्थान्यस्य देशक्षास्य देशक्षास्य देशकाया याचितात्त्रशायदाः इत्राचीश्राक्षत्राः देवशः ह्रेद्रातक्षत्रायदेः स्था ष्राश्चावतःवार्चेतःरेवातिःरेवातिश्वात्रात्र्यात्रवात्रेश्वाप्रश्नात्रश्चात्र्यात्रस्य चर्षेत्र.के.के.के.त्रीतात्र्र्यर्तनारक्षासीर्त्तर्याक्र्र्रसालार्ट्रत्वेशस्त्रीचेत क्रिर र्मवाक्षर् अनुसास्यायारसास्य यान्त्रियाय्यर्गास्त्र यान्त्रियायास्य श्रानुषायाविषाक्रमा देवसासंस्रह्मान्त्रम् मुन्यस्य प्रमानुष्यायस्य मुन्यस्य प्रमान्यस्य मुःक्षेट र्घ रुव मुःकर मुःक्ष क्षेर क्षेर दियदार विरुधाययकाय प्युव रेट र्घ यक्षण्या

यथा कुर द्रीय कु हेर द्रा द्यर श र्या कर व्यु अ स्वा पर् के वा दर हेर स्वाक्ष-मे.लूर् ताद्र-क्षुद्र-रेग्रीवा.व्यूप्र-क्ष्वाशा द्वाइशासी.क्षुद्र-रेग्रीवा.व्यूप्र-ट्रे.स्राश्च क्ष.है अविष.की.जश्राजशावीयःततु.किंट.क्षायतिश्वतश्रातातात्रहेष वशा त्राभीता व.जब.म्रीब.भ.कचबात.संस्था चाम्रस.म्री.चीज.विस.संस्था.याच्य.संस. स्वान्त्रस्याद्वार्ष्ट्रम् स्वाक्ष्रम् स्वाक्ष्यम् स्वान्त्रम् सहित्यम् देशाः देशाः वह्नाहेन ही। लेश या अभा अना अन्या देना के मार्थ प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प् तत्र हिरा के र ट्या हर ही द्यीय विषय ही। विषय विषय विषय स्वा विषय स्वा विषय स्वा वर्केर्स् । विश्वत्रद्धार्या सेरश्चत्र हिरा विश्वत्र विश्वत्र तीवाश्वत्र वास्त्रिया स्रेर् गुर्दिश्वासु सेर् गुट्। वर्द्दाय मान्य इस्स्य गुर्मी स्य से सेर् वायमा वाल पर्वः क्ष्रे अधिष्के की जना जना विषा प्राप्त जाविष्ठा में क्रिया मार्थ है विषा कर्मा है। है वर्षावश्वाः इं क्रेविश्वः पदः करः ययः यापुरः दे द्रायश्वाषायायश्वाष्ट्रः मी द्रीवाः विरामी हैरान् अर्के के दारिया कर्म मार्थे दि से समार द मी समार कर् चैत.तपु.र्थेट.ध्राथ.वर्षेतथ.त.जथ.विश्वश.४च.जथ.४.४च.८८.। विश्वश.पुंट.जथ. दिर्दर्वत्वकात्रक्ष्वाक्षाक्ष्य दिर्द्वणी निर्देविया दिन्देविया वेदायक्षर्यं व उट्नाकेर वाक्ष मुद्दार विक्वा मार्कर की रेप्टर् के की कर मी रेवा करिये हैं इक्का बे प्यव विवास के देव के कि प्यव कि ता देव विद्या के अक प्यव मा सुद्ध प्यव के प्रमान यब कर ग्री अर्के वे पाक् रुव मी सुदि कु अर्के प्येव प्यथा हे पा ब्रीट प्येव प्यव पक्र क्रम्यायहेव यदे ख्वामीयापवयापर क्रमापवर्गात्र यापन्यापन्य विश्वा

यह । भर् दिन में राहे हे वे यानि । वेया सेन सम्बद्धा वह वे हें दे वा वे र जी मित्रात्रक्ष विस्तर्यकातालयास्वरात्रीकार्ट्राह्याकात्वित्रात्वीत्र मित्रे मित्रात्रात्रात्रात्रात्रा त.स्थात.र्ट्याशे.वंशताचर.शाचचर.तश.ट्रे.प्रश्नास्थात्थ्राप्रश्नुधाताश्चात्र्यात्राप्राप्तेश्चेत्राच्या यःश्चायम् दे दे दे स्थरः श्वेश्चायम् द्वायक्षः द्वीयाकेषा दे हे विदेश्यायम् प्रति बुरा देक्षरक्षेत्रत्वा वेचु वर्दे हे दे प्राया के दे दर प्रवस्था के प्राया क व्युरवित्। देश्रेयवद्वत्य्युः म्हत्वेषावर्षात्र्यीयावर्षिरामी प्रस्थावय्वषा बुवासविष्यराष्ट्री विषा श्रुदायाक स्तुदार्षी दुषा यर यमदायादा र विषय विष्ट्री वर्ष वश्रास् ।वश्रुराविस्त्रीरवृक्षासुःक्रियववृद्दाःश्रियाद्वीषादे। ब्रेटाविष्टा जुत्रमश्चमत्रा वस्मस्यत्रद्वितस्युः द्वितस्युः द्विस्यन् वस्यस्य विस्यप्तद्या वर्षः चेड्रचात्रवी वेशाश्चित्रहेद्रारेचेशासीतश्या वेशातशाक्र्यावर्चेराह्यारेव्या त्रत्रव्हेंब्रत्र ह्रेब्र्विष्यव्यव्यव्यव्यत्त्रित्। क्रिंट् ह्रेश्वावया क्रिय्वेट्रत्वे इ.स्र-प्रमुखा विश्वद्वश्चर्यः वयद् वयद् सुनासुन् ह्यायर्गी द्विप्राध्या विग्वसुसः र् दे देश राम्य पर्त्वेश विश्वास्य पर्द्य देन केश वर्ष पर्द्य में वर र् दे दे के विश . यक्त्रचक्कित्यर ख्राच्येकाहे। दे त्यर पुंच वित्येषाय निर्मे वे से दे दे वे दे ग्रें क्रियं प्रतित्तर्भे प्रया स्थाना वा वा विष्या समित हिंदा है से के स्थित वा वा वा वर्तित्तर्थः क्षत्रकार्त्याच्याता श्रीतातार्थः क्ष्यात्रविष्या देवार् वे अधि मेन्तित्तर्यर छवर् प्वश्चर प्राथवार्त्वी देशक क्षेत्र वर्त्वे स्वर्धाय वर्षे स्वर्धाः स्रिन्द्र। विवाधास्त्रास्त्रेन्त्री वसामी हिन्द्रिन्द्रेन्द्रिन्स्त्रेन्त्री स्वाधास स यवै केर विव यवे केर है। केंब व वुदाव देवार गार प्रधार दाविव कथार गार दा

न्राण्युयाचीयाद्वयाद्वरार्द्वित्युयाची हिंदिहर् १५५५। इप्तिरे प्रियायाय्याचीया परे पाक्रिक रेवि के स्वास्थ्य सम्मास्य स्वास्थ्य है । देश सम्भार के स्वास्थ्य के स्वास्थ्य सम्भार स्वास्थ्य सम्भार १८ वहेब यव द्यीव विराध्या कर कुर यर वर्षेय्य या वा द्यी का या विराध केन मुंक्त यर नेब यदे केन केब यदे हुर ने कर केब द्वार मान के मान के यान्द्रसामाळे याने वर्ते हिंग्याक्तरहे ग्रास्य हिर देविया प्राप्त हिंग्या हिंग्य त.सूर.र्। तथ.रट.सूर्य.वेश्व.क्षेचश.शे.सूर्थ.थे.त.बुट.। शूश.बूर्.थ्य.चबेट. क्षेत्राम् राम्याक्ष्यवासुर्वे प्रवादि क्षेत्रायुव्य राम्ये राम्ये स्वर्षेत्र व क्ष्यंशतर्रेत्रः केंट्रं विद्यविद्यिवात्र्रियात्र्ये त्रम् विद्यायाः विद्यायाः वन् देटा दे सर वश्चेर या वार्वेषाय विर्वे वोवे वा वर्षे र विवे दि विवे दि विवे व र्जर्रप्रश्चेशक्वश्चर्राचर्ट्स्थयाविष्ट्री ह्वश्चर्याची स्वराम् त्रुं किर्ता क्षेत्र भेषा की तर्र क्षेत्र तर्रे सत्य होत्. मेष तर्र त्र क्षेत्र स्ति वासी वासी वासी प्रवेश्वराविता वर्ड्स्याञ्चरावर्ड्स्रियाञ्चरात्र्याचेशास्त्रयावर्यात्र्या स्रोत्रीया ग्रिमाग्रेन कुर्दा करियोवाग्रिमार्स्रेन प्रहेन दिन स्मित्र मिया मिया स्मित्र स्रोवा स्थाय मक्र्यं ततु होरा लू इ.तृ.वृ.चल् तका वर्ति त्वध्य द्वित विकार्य वर्षेर तयु के मक्ष्य. येन ने। ये ने प्रति न् ग्रीय विकादिक परित ये के प्रति कु सक्त मी मार्थ हो ना नै, त्रिश्च से त्राम् इ.इ.ज.मूच रटा इ.इ.प्रिश्च व.दी त्राम् इ.इ.माइच ने ट्राम् तमा दें,बहुस,लम.वेंट.तदुर्ह्र हे.बहुस.ग्री.चर.रे.दवैंट.पष्टुंद्र-प्रिंवा.दह्र्य.इ. रे वस कुर धर पर्वेशस पाया दर्वेस पाया दे हैं। द्रीया विकर प्रति या दे परे सिर

रहर सेर भी पो नेय भी चर्वा हैर र सेंस र वें स से वें स वे स चर हु चये हेर पेंद ने। वेद्यक्त्यमा वियम्हियहेन वर्षेत्रमा विद्यादवा गुरास्य पुरा वेषायषाने स्रायस्व या अर्दे श्वेष्यषाय नन् यवे ध्रेरा न्येषायं मेर प्रविद्यार्थी नुष्यदेशयायायशासुर्वेषाशाहित्यमुन्यायाद्गिरायायदिन्दे। हिन्सादेशप्रति सुरा यार्च्यासुवि कुत्र यइ उत्रास्त्रायास्त्र कु पत्रि दि हिंससायर वहुनाय दर। वर नी'क्रेब'इन्पर्व'कुर्प्वते'य'ईर'पञ्चरा'ग्रुबाय'यबा'ग्रुर्प्यदे'न्ये'न्व'में 'देन नार्यय' ५८:इय:पायमुक विदा दे'स्युवि हेवाबाय क्रेयिव पि संक्षेत्र के दान प्रमाण र् वर्ष्युरामाध्येत्रायदे भ्रिया क्षेत्रावे क्षेत्रात्रु विद्या व ब्रे.वर्बे.वर्भेरे.ता १५.२.क.मे.इं.चशश्या व्राचिश्यक्षरश्चा इं.जश्चविक. लक्षावर पश्चिर्याय द्वेषाय र्यूर दे। विषयवावय लब्धावर वी श्चिर विषय अर्वा र् में यार्विया से विया में यार में प्रायं केर प्रवेश में में के विया में हैं वे हैं पर विवालकातरावस्थितारावास्क्रातात्र्री देशय वर्षायदे देव के दूर विकास वर्षान्तर्वात्वीत्र्रास्त्ररावेदशरादेशक्षियाक्षेत्रप्रेत्र द्वित्वव्यव्यव्यापरा मैं कर दे सर विवादी स्वादित स्वादित स्वादित स्वादित स्वादित है। विन्द्रमहिषायाद्रा पद्रद्वायर सुद्रुवेष व्यद्यद्वाय पद्रावस्य द्वीय व्य के.मे.त्रत्वभीरक्ष्मुट्रा ट्रे.त्वेष्ट्रियेरक्ष्मिक्री हि.स्वेशिक्षि । बार बा के बार के वा विष्ट में निष्ट ना । वि. में ता है . है र . में र . तत् । वा र . र च र . है वा

मि.वि.वें बार्टा वि.की वार्त्त वि.चरें बार्टा विवार वार्त्त सामा विवार वार्त्त वार्त्त विवार वसारेशक्तर्नुग्वसुर्याया वानुवानुविद्यर्यावीशक्तिरेशयासेन्द्री न्यीयासेवा र्र्रात्रेट.जर्भा श्रोधश.तथ.वेर्ट.वे.वेद्र.क्री.व्.ला विश्वश.स्रश्रश.लट.टेव.वर्डश. वश्रे । १८६५ मश्रास्त्र वे प्रश्ने प्रमान । वेशमानु दा वर्षा वेश र्टा बै.वेट.वुश.वेट.। इवाश.तश.बूच.शढु.वेश.त.रेट.। डिश.बे.वेश.वेश. न्त्रीयायोद्यन्ते । वि.वार.तायथायक्षश्वराधायक्षाये । वि.क्रूर.वय. वे.वय.वी वेशनश्रम्भयदेश्वेम देण्यान्यानीरेशयायान्नवर्वदेर्द्रद्रायस्व वश दे सर वाश्वरकारी। देहें बार्य वावका स्ट्रिंट दिन विश्वराय दे हैं व वास्तर सेवाका सवत. ग्रिया मुन्देशायाकेन्द्री सरकेशस्न ग्रीश श्रेस्र रहत प्रस्याय पापहेन् न्या स्वामाह्यात्र कुर्याति । व्यार्टा वायायक्रीत्राच्या रत्तवाक्षराच्यीक्षा विवार्डमानु। विविन्न विवेदन ग्रीवायिन मिना मिना मुकानु वा विवार ना निया क्रन में नव मिन रामा । या नवि निन मुं सहस्य पणि । सर्केन हेन ने न केन हा चविषा विषयविष्टार्याविष्टाद्राक्षर्या विषयांश्रीर्यायवे हिरा दे ज्यावया एराप्तरनी सक्षिति प्रत्रित्र में निवास सेना मानिया निवास से मानिया है जा से प्रत्र में मानिया है जा मानिय है जा मान शर्ट्र विश्व तथा बेर प्रधु रेट हु ब्रै प्रधु रेट । दि प्रवस्थ प्रथा अहंश विश या विनायविद्रयंत्रे स्पर्द्रना स्त्रा । नायायक्त्री सक्षेत्र स्त्रा विश्वर्षेत्र म्बर्यायाक्षराधेवाया देत्यराह्मेयात्वा द्रायहरामे हे सहत्व्या मु अद्यव प्रत्या क्षे कर हेर प्रवि दे प्रवि दे हैं रवे अद्यव द श अद्यव प्रत्य व से क्र्याकेरात्रेश तर्त्रत्राश्चात्रव्याश्चात्रव्याश्चात्रत्रात्र्यां क्रिक्र्याक्षेत्रात्र्या

है.यद्रश्रवतत्रथाश्रवत्रटा वै.कूर्यथाई.इंद्राय.ड्रे.यथार.ड्रेद्रायय.वा.ह्ये.क्र्य. वे.चा क्रेग्रायदाबरायवादाबरायरायाक्षेत्रस्यक्रियरायाक्षेत्रस्य बर्ययेष्वर्यस्य विष्यं विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विषयः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विषयः विषयः विषयः लक्ष वट की देवरका वाक सब पर्वे देव दिव हैं ट की श्राटव लट की देवरका वाक यव गरिना क्षे क यव पर्य पर्य पर्य भी दे प्रमाय भी दिन साथ दे स्र पर्य पर्य । हिरा विवःही ६.ववश.ग्री.शरद.लव.र्टर.ही.विश्वश.ग्री.शरद.लव.बधुश.हर. यथ्यात्तर्द्धिम द्वि विषयाग्री विवाजयाद्वा चेटा बटा खदा विवा द्वि खटा पठिवा सेवा. रंथानीयासी |देवयानुधिवयानिस्ति स्वास्त्रान्तियान्त्रान्तियान्त्रान्तियान्त्रान्तियान्त्रान्तियान्त्रान्तियान्त्र चट बट अदे दिन निवे के विस्रार ग्री दिन निवे प्राप्त निवे प्राप्त के निवे के निवे के कि यवे धुराने। गर्रे येवे वेगानु गर्रे र अहे शावमें र र में शायवे धुरा अरे दे या र्नेग इंकेंग्रया पश्चयप्रदेशपर्ये पुरायविष्ठा सामित्र विष्ठा विष् वो द्विषा वाद द्विवाष सुप्य द्विसाय सम्माने विद्या र्र्-रहे पर्वेट विष्ट्री सेवश हर ब्रियारा स्थाप हो है जाक खेर पहिशासी किया वस्तिवर्त्रेष्ट्रेत्र्रेत्र्यायक्ष्म्यक्ष्यायक्षेत्र्यक्ष्म्यक्ष्म्यक्ष्म्यक्ष्म्यक्ष्म्यक्ष्म्यक्ष्म्यक्ष्म्य क्रिनाशयद्भविःक्षेयवे कुराहायमश्चिष्ठं पाठिना अवे युनाशया क्षेत्रं कर् पठुः दुना क्षि विष्या वी सर सेर में हैं या सूर वा वद्याया सु के विषय या पे के विषय हैं। दिये हिर र् द्वे क्रिया स्ट्रिय हे प्रत्य के क्रिया हे प्रत्य स्ट्रिक प्रत्य स्ट्रिय स्ट्रिय स्ट्रिय स्ट्रिय यामहिषामिव युनिषाया क्षे कर् पञ्चानिषा द्वान स्था में कर् न्डिन् सदे चुन्य व क्विं क्विं न्विषा न्युस्य सदे चुन्य व क्विं दे न्विष

मुस्राता क.संब.चरीश्याचरीश.री.इंश.चंटा चलराचल्य.मी.रेश.रेवं. क्रें क. त्रव्य निर्धानिष्ठ व. पीर्थ व. पीर्थ त्राची व. त्रव्य त्रव्य त्रव्य त्रव्य त्रव्य त्रव्य त्रव्य त्रव्य है। । ब्रुक्तियार्रे हेवे क्षे पापर्ने मार्चे के या दुन्य अपार्धे नया अर्म । वे देन स् न्याना क्रियम बिन्निया विन्दित्वा मृत्तिविन्त्रम्यात्रीम् सम्बन्ते रदारदानी दे प्रविवास सेवास परिकार्य । नायस नायेव मी नु ससस रदार नी र्श्वीर्नानी ने प्रतिव निम्माय पर्ये अर्देन विमानी ने इससा महाम निमानी के प्राप्ति हैं विव निम्मायये सर्गित्य हित्र क्षा मुर्दे स्थाय मेरी विव सर्गित सर्गित स्थाय गुःदर्ह्य सक्षमात्रे। द्वित्राम्वेदिः दः द्वमान् मन्याः द्वीत्वं प्याप्तान्यः वा इंकेन्साई हेवे हे नवे ही अवव क्षाव ८ र ही कर पति वे रूप राये असंसा ब्रायम्ब्राया ह्या ह्या ह्या ह्या स्वाराया स्वाराया स्वार्म् मार्थ ह्या सार्म हिया ह्या स्वाराय स्वाराय स्वाराय वर्द्धाः क्षेत्र द्वेत्र द्वेत्र व्यापित्र व्यापित्र व्यापित्र व्यापित्र विष्य प्रति । विष्य प्रति । इंकेंगबारें हे पर्नेयसायायाकेंबा उना दर्गियायाचेंदादी पाववा पर्यापदायी हेन नाले हो द प्यंदे के द प्यंद प्यंद रहे दा के प्यंद रहे द प्यंद प्यं गुः क्षेन्य प्रमु म्वी पवि क्षेट प्रमुख या वा न्य स्थापि गा या ने हरा वा का स्व प्रमुख र्मरश्राक्षिक्त स्व कि.म.स्वाक्ष्य प्रति श्रामिक्ष प्रति विष्य प्रति विष्य प्रति । नुःइस्यनुःइस्यान्विनाःहेरानुःविनायक्षेन्यायदे स्वानुःविन्या इस्यानुदे मारसः ह 'ययस'महिस'गा'यायसु'गरिया'हु 'देस'स्। हि 'ययस'र्स्ने स्ट्रा गरियासायायदेवासा ड्रेन्'ग्री'गाप्य स्वन स्ट्रन्ट क केन या सूर्य पुष्प कु गानु पर्वे स्वाय स्वरूप मासूर्य गशुम्रामहम्प्राचेता न्यात्रामुद्राम् वयायमाप्याप्याच्यात्रम् वर्षे

युवैन्द्रप्यवस्तर्भ क्षेत्रहरणियर रुषे द्वाया सुक्ष सुक्ष द्वेद के द्वेद पादेश विद्राया पश्चिम् छ । याक स्वापिक परिवादार छ । द्वीय है। बार वा कुषावाबार प्रवास सहर । इर याथवा झू.लु.वेशबारेटार्य.प्राप्ता निवारी बहुता हुराशुद्रा जुद्यावीर्या हा। इंश्राचित्रवेश्वेषात्त्रकःस्थावर्येश्यात्र्राच्याव्यावर्थात्रा न्वरात्रु मुकायाक्षे दे स्यापु के स्ववकार्ये दक्ष हैवाका ग्री द्वादका स्वता केदा वाकास्त्रात्रिय । ५ म ५ में ५ वे वाकास्त्रात्रियाने कास्त्रात्र्य प्रमानितायाया । वीवरवीद्यरमण्डिविरा देवे हेर्द्रास्य व्यवस्य मुदे खुव दुर्वेद्रायायाकः स्वानिकारी कास्वान्द्रभात्र्वावयापकावन्त्रीक्षेत्रन्मत्राक्ष्राविका व विनायत्वयास्याद्यादे स्राम्याव विवा विविधि विनिष्ट विना प्राम्याद्य । सक्तराब्र व त्र व त् सक्तराब्र व त्र व त बर बेट वाक खंद परिवाद । दयह बाबी का खंद पर्यु दुवा व्यविषा पाया विषा ग्रिशक्षान्तान्यकुत्रप्रुंग्रायाये हेट्रुं ध्रिम्याये विष्ठुर् प्रिम्याये विष्ठुर प्रिम्याये नेशायावाद्भित्राक्रीवटात्राक्ष्यश्चायावा द्वित्राङ्गेद्धित्राक्ष्यश्चाव्यराष्ट्रीत्र्यान् चयावात्रमासुदेविसमायुग्यतिमायायविष्यायायात्रम् ।देवाद्यसम्बाग्यरायुग्यस्या श्.म्र.क्र्यं तेश्वा देशात्र्यं ता रहेतश भ्रियां श्रव्यात स्वापा स्वापा स्वापा स्वापा स्वापा स्वापा स्वापा स्व गर क्षे.क्रद्र त्वे क्रूर पद्र शवद क्षेर्र दी हे हे दे तथेशतार तर शक त्रेय पड़िया तरा ब्रियार्ट्य प्रमूर प्रदे र इस्र मा गुप्य द्वा साम स्था मा प्रमूर प्रदेश प्रमूर स्था मी प्रमूर प्रदेश स्था मी प्रमूर प्रदेश स्था मी प्रमूर प्रदेश स्था मी प्रमूर प्रदेश स्था मी प्रमूर प्रमूर प्रदेश स्था मी प्रमूर स्था

ग्रिकागुकायतेनायवाक्षेटानुमायताक्षेत्रम् यात्रायताक्ष्याया देवाक्षेत्रम् न इत्याश्याश्यार्थित्यार्धेवाश्येर्यात्रश्यात्रश्यक्षेत्रात्र्वर्यात्र्वर्यात्र्वर्यात्र्वर्यात्र गायायराष्ट्रसाङ्केष्ट्रास्टारा गास्तुरान्नेष्याद्दायरसायायाम्स्यायेयाद्दा गे हिट दु अ हे है अ इसस्य नगवाय देव हुव की शहे से हैं है के र पु रे के वे के वे के ग्राञ्चरापदाकुष्यरावनेवाचावित्रं । दिल्लम् म्रिस्यावित्यराव्यराम्युस्यां । र्ने राम्या स्थान ग्रथायन्त्रा परे हिंदार् ग्रेर सेर ग्री भेर मेर ग्री स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स मुन्यायेन वा ने दूर वर्षे अवायाया के बाउवा निवाया के निवाया के रद्धिर्श्वाद्ध्यायात्राम्याद्याच्चिर्णीयद्यादेवायेवायाच्याचीर्रा यार्बेट्य प्राचेत्। यस्ट्रियायारेसामी स्नियार्थात्वासार्याची स्वीत्यायायात्रीया ल.पंबाप्य र सेर जया वीयात्र विषय तालका विर र हुन विषय ता वीवात्र र वी अ.सुर्थ. नुर्द्रात्वीर् वचरान्यस्याक्यामुत्राम्यः सर्द्र्यान्ये वर्षः सर्वा क्रभाग्री, ब्रेट. क्रींट. तर्गीट. तत्त्र तर्गता तरा तरा हो र विराध र तरा क्षेर. तर्ग क्रेट. येव यदे क्षेत्र। महिषायायामबुद्धाः समार्थेषा ग्री सु प्रवित्या समार्थेषा ग्री सह द या स्वार्थेश वेश वा पर्दे पर्दा । रेट में वा वा श्वा वर्षे प्या पर्टे र अधे थे तर क्ष.तभुर्तात्रक्षा रे.रट.शविष.तर.क्ष.भुर.तत्रक्षेश्रशक्षा पभुर.प्रश.वीश. श्वर पानि श्वेर प्रवे देन प्रमान पर्दा । इर पेंडी दे प्यर के बाबा में प्रमान पर पर चित्रात्र। ह्रियाःसर ह्रिन् क्रयाशात्रशायन्त्रन ग्री संस्थान्त्रत विवास प्रदेश हिता है। यहास गान्न गान्न यान्न साञ्चित प्रानिगाके वर्षे साने प्रस्था गान्न प्रान्त में स्थापित स्वानी सा यश्रमान्द्रद्रियःद्रम्भःवक्षम्या कुवादे प्रविद्रपुर्वेद्रः द्वर्षेत्रः द्रम्भःद्रम्।

ब्रिट्यिन स्वि क्षेत्र हिन्या अपवि मानस्य न मानस्य स्वि स्वि क्षेत्र मानस्य यवै:र्रु वर्जे ग्रद्धयानक्र कं र्स्स्य यक्षा के के के विकास मार् ता. देशका त्या प्रशाय का तकवा का जूर्य हिता क्षेत्र अव र अव र वि के वि के वि के वि के वि त्तर्रात्यस्वातातक्रमशायद्वासह्माह्माशाया मन्धायद्वातम् स्थायाम्बुसर्गः श्वश्राम्तुः क्वानु त्युद्द्रिय प्रमा दे प्यार तकवाषायायाय राम्नुवाही प्रदेश त.ज.ध.सी वाषकात.ज.ध.सी हूंटकात.ज.ध.से.रट.पश्यातपुरप्रत्यसेवातकीर. पश्चियायाद्रायेवे श्री इस्रमाह्रमाहे भे ता के विष्यापा द्रिया विषया द्रिया र्यागुव करावा युवा स्टार्व गुः विवाया सक्षव द्या हेवा समुवायका वसुवाया र्वादावदात्रक्षात्राचा इत्युवामुक्षात्रक्षात्रावदावादम् तुषायाक्षे केवाचरुवार् द्वायामान्नवात्ववाद्वी दिवाळाबवान्नेटानुन्युन्युन्युक्षाळ्याक्षायार्राष्ट्वाद्वाया भूकानाक्षाम्। विद्वास्याम्यास्याद्याविद्वाक्षाम्याद्याविद्याक्षाम्या बश्राचाश्चेर् प्राचेराचन्राक्षन्। स्वर्गाने वास्त्रह्वा स्वरित्र स्वर्था हे स्वर्धा स्वर्था स्वर्था स्वर्था स म् । विषय स्थार क्रिय क् यान्त्वाचानुत्रक्षा नेव्यवान्त्रान्क्षेत्रवानान्त्रन्त्रक्षेत्रवायान्त्रा इसमायुवायाधिकार्ते। दिवाकेंसवायन्तुन्केरावेस्याइसमात्रे सर्वेनात्वायानुना ट्रें इंश्रामक्ष्रभाषार्द्र्यानवरानशार वे नवरा वार्कित वे रद्या हे विश्वास्त्र प्रार्थ प्रार्थ । तावाचहेब बंबाबाचर्टे तार बेच मू । तार बंद हैर रे बंबा सेव बेश कूर्य बात.

लट.ब्रुश्न.त.च्याचेच.ततु.वर.क्र.वधुच.ब्रु ।लट.शतु.क्रेट.२.क्री.वीतु.क्र्जा.तेच. में भाक्ष्य माना रू. के. माने ता कार्य गारियाती यादा कार्य ते सामिता हिया ते ती विवास क्षेत्र हैं वा ट्रे.लट.क्रूश.त.क्रूगश.र्वं इंट्रें ।लट.श्रवे.क्रुंट.टे.श.क्रूश.श.चयेव.तव. वन्नमामानु सुर्वायान्दरास्त्र या स्वर्वास्त्र विविष्ट स्वरास्त्र या वदः वस्रश्रु ने के कि स्त्रा के कि स्त्र के कि इर.मु.पह्रियातपुरवयाक्षयश्चर्द्रात्त्वपुर्वामुश्चर्याच्येश्वर्याच्याच्येत्राच्या त्र विवाधाताता वावधास्यकाग्रीकाकावह्र तार्श्वाकाग्रेद द्वर श्रीत्रवाधात्रका मृष्यान्ह्राताता रे.च्येश.ग्रेश.रे.श्राश्रह्यात्रात्र.वे.च्यु.क्षेत्र.विशाववेचयाता. र्सेन्यानुबायमानुबानी मेन्यायाराने व्यानुदारी । देवे के वन्नयायाने व्या रे प्रवित 'येत प्राथका बेसकारुन 'ये 'ये रुन 'विवा नीक हैन 'विवा पहिका गयि अस स्वित का गठिग मु : ब्राह्म वायायायहेव वयायावव अस्त्रा शुक्ष शुद्ध विद्राह्म हो । वर्ष श्रामेश्वायत्र। नावव नीश्वायुव्वयायर्थेनायात्ता मृत्यार्थेनाश्चायायायहेव वशा यद्र खुंद पद्मय पर्दा हैंद पर्दा अक्ट पद्मु पर्शेन श्रामी पर्व प्रेय प्र क्राबाद्रेशास्त्र दे हिवाबायर क्रिंग्हें क्रिंग्डे क्रिंग्डे क्रिंग्डे क्रिंग्डे क्रिंग्डे क्रिंग्डे क्रिंग्डे पत्रद्भाविषाद्भविष्ट्रपत्र्भिषाते। देशग्राद्भाविष्ठशाद्भव्याचिष्ठशाद्भव्याचिष्ठपत्रिष्ठद्भव्याचिष्ठपत्रिष्ठद्भ दे.क.कूर्य.च्या.ची.चैय.कश्चर्यत्यत्यत्यत्यत्येत्रक्षेत्र देविक.क्रूप्त्रःची श्रदः

त्राचरीर तद्र केवात्र प्राचेश वि.वी विक्रिष्ट की किंदे किंदा हैं दे विष्ट हैं । वि वर् वद्रावस्यायान्द्रिक्षेत्रे हुं अन्ते क्षेत्रान्द्रक्षा अवुवायर स्वाक्ष्य क्षेत्रेत् क्वार्ड्स्य पाया सन्द्रियाचीय स्वाप्य रख्याप्य रखा की या वेषा स्वाप्य प्रमाण देया ब्राक्षणाश्चाराणी स्वाह्म सम्बाह्म स्वाह्म स्वाहम स्वाह्म स्वाह्म स्वाह्म स्वाह्म स्वाह्म स्वाह्म स्वाह्म स्वा श्चिर्याधेवाते। सर्देरामुद्यायमा केनाद्दानिवादीयावीयाया पर श्रीबायबाबाबवा वेबायबार्या मिट जेवायविव हैं है के देव देव प्राप्त प्राप्त गुर'दे'सूर'पस्रुव'यवे'स्रुर। स्र'इस्रब्यांस्रुवाबावार'दर'यार'दुःपत्ववाबायायर स्रुवः वयश्स्र मु न प्येत है। सर्देर मु श वया पर्या है र स्या क्र म्येत प्येत । निश्व सुन दुन स्व व अर्थ दिन अर्थ या विशेष विर दिन अर्थ स्व वर्त्तेस्य प्रमान्त्र । विद्यापान्य वर्षेत्र प्रमान्त्र । विद्यापान्य वर्षेत्र प्रमान्त्र व्यूर्ज्यावर्श्वराद्याता । दे.पध्ये हिट. देशातर पश्चिम विषापव पर की. वाशवायर प्रक्षेत्र प्रवे क्षेत्र । र्यो वा व्यव्य क्षेत्र क्षे ब्रु.ब्रुट्र.रे में तथा श्राप्ता क्षेत्रा श्रुका ग्री में सु. दु में बार में विषय हैं विषय हैं हैं विषय हैं में यामिन्दरारेषाते। अर्देरामुषासुष्मार्थेषाणुष्मिर्देराधेयषाद्वा अर्देशे ८८.ईर.श्रेश्वश्व.वी.श्रेंच.वचश.शे.टुंड्र.वी.डू.टू.ई.ई.उक्चट.वू.च.चश्रुश.तर.वीशेटश. तत्रिम स्वास्त्रात्री स्वास्त्रात्री स्वास्त्रात्रात्र स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य क्वार्या दे। सवाय र र प्रवास समाय स्था मा या प्राप्त हो का प्राप्त की का सी का यद्रम्प्तर्भेर्भ्यः यर्ष्यर्यः व्राथ्यः व्राथः क्षात्रम् व्राथः क्षेत्र देष्यर् प्रमुव्यप्यद्र त्रुव् श्रुव् श्रुं प्रास्तिबार् ८८ स्वा श्रूब्युं सुवि सुव स्वा स्वा वा वा वि सुर याउँ अप्येन भी देगादेश श्वरणाने श्विर भेर पुरस्क श्वर पाया येन है। दे स्टर श्विर

रया थे.ब.प.ब्रैं र.वी.रर्वेश.बी.ब.चूर्यक्टर.व.जब.श्रेंर.त.ल्य.धे। अरूप.वर्ह्र. म् अर् हुर क्रेश में क्रुप्त में विष्य प्राप्त विष्य प्राप्त विष्य प्राप्त विष्य प्राप्त विष्य प्राप्त विष्य प्राप्त रावु.हीर। शरवा.श्रीश.हीर.होर.टो.सं.लघ.लेश.बी.शरवारे.श.पूर्य वाश.श्रीर.ता.लुय. हे। शर्वाश्चेशवायुणे ह्विरायाणेश ह्विशया इस्राया दे विद्यास्य विद्याल्या व श्रुवाच श्रुवा हे श्रुद्दार वा बुद्दा प्रवे श्रुद्दा हेंद्दा वित्र वा ब्रा श्रुवा श्रुद्दा हेंद्द हेंद्द श्र पूर्व वश्वभेशतालुर है। ईशर्विट वर्षेवाचर ब्रियट राश्चर वश्वभेशत्र. शुःगवयःद्वान्यावयःश्वेषायव्य विषागर्यायः ध्वान्त्रेषार्श्वेषार्श्वेषार्श्वेषार्श्वेषार्श्वेषार्श्वेषार्श्वेषा देशक्षक्षक्ष्याचाद्याच्याचाद्याच्याचे स्वास्त्रिका स्वीका स्वीक्षा इर्गेर्ने केर्ने देवा विषानेराया के विषाने के वर्वेट.जुवे.ब्रेश्चर्यत्में रेशकी.ब्रैट.युवेद्रक्ट.त्रथ। ब्रैश्चर्यद्रियः देव. वे। शिक्षस्य गुरुष्य स्वासी स्वाप्त है। विवास क्षा विष्य विवास विवास विवास विवास विवास विवास विवास विवास विवास जुट्र.पार्चेचारा.ग्रीरात्तर.रेवा.पार्या विद्याशाश्चरता.श्रीरा.ग्री.श्री.पट्र.प्रशामायारीरया. वया दिव हैं र मेर्न पश्चित र का हैं व या वा वेत पर्या मुखायर व या हु वा है व येन्या हिन्गीशर्सेन् क्रेशर्सेन् छेन्-इन्-दर्नियिक्केन्-केन्नाम्युर्यययवेवायेन् र्वित्रायवान्त्रीय । स्वर्वान्नियान्त्रीयान्त्रीयान्त्रीयान्त्रीयान्त्राय्यान्त्रायम् वुर्द्दर्द्दर्भवावसञ्चर्द्वर्यायात्रियामाद्दर्यवावाहे। देवानुःश्रुवानुद्दर्येग्रयः स् भ्रेर.ताश्राटवा भ्रेस ब्रिट. ग्रेर. रेश्यावीचवा जयावीर याचीटा विस्तर टावीया

ग्राट, दे. क्रें प्रावध, बट थ. तातु. हो रा विचा. श्रूष. ग्री. क्षेत्र, श्रूप. क्षेत्र, विचा. विचा. वन्द्रधेवे हुषा भेषा भेद्व चेद्र प्रवद्ष के प्रवद् के प्रवद् दे। वन्नवा वर्ष वे केवि भुै'च'वनवाबान्ववायुन्दर्भिट'च'दे'र्बुट'यट'र्द्वे'हुव'र्छट'बुद'य'व'द्वेंबियवट' बेद्रपवि द्वेत्र वित्व खुद्र दे द्वस्त्र श्री देव है ह्नर धेव लेवा दे प्यद पानग मु र्थेद ने। युर्-१र-धेनिहेश-ग्रे-रेन है। इदे क्रिन किन नहिश्ये ने क्री नहिश्ये र्रक्षासन्त्राचित्रप्राचर्षाच्याचर्तिर्यानिर्वत्याचीत्राचीत्रप्राचेत्राचित्राची रेसायवे वर्द्र महावायहा श्रुप्त हुन 'स्ट्र स्वा हुन 'पा पह नी पश्चित रेसायवे प्रीत भुर्-१८-धुर-वर्ष्वायाधेव यदे धुरा वहिषायही स्वषा स्येत् गुभुर हेवा क्रमार्झ्यीर पर्वाक्षेत्रामारवाश्चिषावस्यानुना स्वापित्य राष्ट्रिर पर्वे कुरस्त य्रिन्द्री अस्मविवान्त्रस्यायाया वर्षायान्त्र सार्वेत्रस्यान्त्र राष्ट्रस् च्टायदे सरमा कुमा सम्मा उद् अदे पद्वा कुर कु कु सम्मा कु सम्मा उद श्राप्तेष्ठ रावे स्वाया विषय द्वारा स्वाया स्वया स्वाया स् म्निन्यक्षेत्रयायम्बद्धि विषास्वाराश्चरात् केन्यन्य विषास्वारा र्थाती.क्रु.बिर.जातक्र.कि.चतु.रेश.चार्यश्राती.शरशाक्षश्रातात्व. श्रुद्धं वातक्राति वार विवासर वार्षित वार्ष हिर्म हेय वे हैं वार्ष हो जी जा गु.ह्रच.श.र्थश्वश्वश्वरति.श्वरश्वरश्चेषात्रीयात्री.श्रु.होट.योड्डवी.वा.वक्ट.के.वप्र. द्रश्रात्रायान्त्रम् । वह स्मिन्नेराये । येदा स्माने । येदा समाने । स्माने । स्माने । स्माने । स्माने । स्माने रेयर मूर्चार्थम हिर जायहेथ राष्ट्र महे क्षेत्र जाय है है र वेश्वरेश हिर के जायवाया. त्त्रत्यक्ष.क्र.ब्रद्रत्याःश्चेत्रत्वाचारात्वत् दित्तर्यत्तेत्रद्वेत्रदेश्चेत्रद्विश्चरत्त्वतेत् वसमान्त्रायवे वर्षे वर्षे

ह्माया हा येदा ग्री सुरायया यह राहुवा या ने पदे हिंदा द हो रायेदा ग्री यो पेया येवा या चर्ने चर्ने प्यट दुन्द्र नुप्रस्तु वृष्य गाव्य श्री साम्यस्य चुर्या प्यसः इत्सः प्यते ख्री भ्रुषाग्री पर्दे के व प्रवादिता दे अक्षव हिन कर प्रवाद क्षेत्रकार प्रवाद स्वादित इशायर रेव्या ततु हिर है। ले क्या है है ग्रीय पर्धित वर्षा स्वास रेट सेवा किया शर्ष तर तर वे वे शतवुर्द्द है रेट तथि श्रधि शतर है र त. श्रदे तर मेथा तर क्षा यानश्चात्रेयात्रे स्वरायम् अस्त्रात्रे स्वराया विद्यानश्चात्रे स्वराया देवात्री स्वराया यत्रयायर र्श्वेर या से दार्थ स्थाय दिवेष की सूट या मुख्य के दे वा से की वर मुख्य या वित्। यत् द्वान्द्रः वित्नायत् द्वायत् द्वित्रः श्रेषु राश्चेषः द्वे पदे प्वः केव पेविः हिरारे विहेन के के दर्दी विषान्यराये गहिषा हिराया के नायर विहेन विनायका छेना गुःगदे पाकेन में वापहेन न वार्ष्यु अदि सुकेदे वाकी वर्षा पान वार्षि वापत हिन हग्रामिक्रियामित्राह्या वर्द्राञ्चवीह्रेयाणदास्त्री विस्मार्गेदास्त्रवाहेराया यर बेर्। ब्रीट मानव मासुका मी हेव या यह केर्। हव वर्षे वे हेव या यह केर् तत्रहीर। रट्यू वीवाडी रवट्यू वाडेश हीराजावडेथ तत्रावश्वाय राष्ट्राय गुःवनुःवर्धन्येन्यवेःश्वेन। नहिषायागुनःहे। नेवार्थार्यवेननम्याज्यायमः श्रेन्यते हिन्। नसुराय वुद्ध है। श्रेन्द्रे नस्याय प्राया के त्रिन्य के कि यरे के वासर् पुरे तुरार्थे प्रदार्थे प्रदार्थे के के विष् के श्चर वा श्चेत्र वृषा मा केर मिले में राहि में रे समय वित्य में र की या मा कि मी वार्ष गु.म.त.भ.लुष.तु.हुर.हे। ईस.वर्टेंट.जहां चर.बु.जेम.वत्त्रधारा.वट.हूरी दे.चंड्रेथ.वेट.चु.मे.मु.मु.संबा विट.चसीरा.त्.तु.मु.संश्राही विट्रस.मूट.कुरे.तूरा.

यदःद्वापकी ।इसर्हेनाकेद्रक्रिंद्रस्याद्र्युद्रस्या । बुव्रस्त्राके प्रवासी त्त्र विश्वर्टः। इंश्वेश्वरःक्ष्यश्चिष्यःश्चेश्वराद्री विश्वःग्वेश्वराद्रा विश्वःग्वरःस्यःपुः विविश्व विवास मुसान्द्र हे से मुसायसा । अर्क्किन प्रति प्रति प्रति । भी प्राम् अर्थः इस श्चित्र पदेन भिर्म गीत वासर्वे दान र विषय महित्य पते हिन। पति व गुव है। दे द्वा वस हैं सम्बद्ध है व दु के दु है से देश व हिन व हो से दे हैं गुःगन्यामुदेगम्रिक्तिन्द्रसुन्तिन्द्रसुन्तिन्यदेश्विदेन्द्रम्यान्यान्तिन्यान्या युवा क्षे.मे.इ.चधुत्रःरतत्त्र्रःरद्भवात्त्रेरःश्राक्षश्राद्भिश्चरःप्रवरत्वेवारः तातुत्रक्रिय क्रिय क्रुवास्तर्दा वात्र श्रीय तत्र सूर्वा वात्र सूर्वे त्या स्ट्रिय वात्र सूर्वे त्या विवास विवास वव्रवायर विश्वदश्यी विश्वयाय विश्वेद देश पति श्विद वि श्विद वि देश वि वि विन ।रेसमिहियाग्री श्वरानि से सिंग्याय यह है। क्वेप्याय श्वरानि क्विप्याय श्वरानि हैं वकु.च.ह्यश्रानुअनु मिट्योब्रायवे प्येत्र प्रदेश में मुट्यह्यायया मुप्यावे याचे प्र गुर्वास्तियनेत्रयाक्षे । विक्रीयविक्षीरायमार्देत्रप्रयानेत्रयायेत्। । रेस्रामहित्रा वर्त द्वा च अव देव के अवी । केर या वर्त के अविद्याय हा के या येवा वेया गर्य हा यवुःक्षेत्रः व्रतः हिं विष्वा पश्चेतः देशाविष्व वाश्चेत्रः या व्यवस्य दिः हिं वर्षः देशाविः वश्वतक्षात्रात्रात्रात्रात्रास्त्रहित्वयायर ह्या पश्चित्रह्यायात्राद्ध्यात्रात्रात्रात्रा नार विग भिराप भेर रेश की हर नावि दर। वक्षेत्र हेन कर अकी मुरानित ल्यान्त्रक्तिया वर्द्द्रम् व पश्चित्रहेव्यवायान्त्रवार्त्रम् यान्त्रक्षम् वित्रहेवायान श्चित्रवृषायर वयाची । रदायुवाषा पश्चिदार्रेवाषा विष्ठेवा विषया विषया श्विता विषया । ब्रिट्.बोष्,लुष्,तुर्,हुर.हे। वृष्टु,श्ले.वर्थात्वात्रा,कु.श्ले.वर्थाः क्रिट्यातात्वात्रहेषः

वश्रावन्नश्चर्तः श्रुपाश्चरास्त्र्रम् पुरान्यर प्रमुद्राया विष्ठा विष्ठित हिंदि पर्देशः ग्री. विर्देवर्त्वत्री के'वर्दर्भेत्रिंद्राम् केदार्भित्राम् केदार्भे वेर्यम् वास्रवायावर्षित् कृतिवक्षेयावे देव दस्यादेव याद्येव देव वस्यास्य मुना पु पकर बिरा दे 'यहा यह हा पवे पर देवे देन ग्री क्री पांत हैं पांपदेव प श्चि अदि श्लुर व्हर विषय प्राप्तेव वा देशक रेश महिशायदे र मा छेश पदि रेश महिशा गु८'५क्क'च'५८'म्र'६ॅर'क्केु'म्वे'रेक्ष'म्बेर्प्द्र्भामार्वेद्'याषवा५८'क्कुं'वुष्र'सुम्बेर्ध्र्र्भ यमानेशयी दियार बुर विषय केना मिन स्वास विद्या देवा स्वास विद्या देवा स्वास विद्या देवा स्वास विद्या देवा स्वास र्वार के वाशक्य स्वास शर्र है निया स्वास स्वास स्वास है दावि द दिस सहित है र यायायेवाहे। श्वरायावे दरासेवायस्वा श्वरायाचे प्रताये विष्या श्वराया स्थाया स्याया स्थाया स्याया स्थाया स्याया स्थाया स्थाया स्थाया स्थाया स्थाया स्थाया स्थाया स्थाया स्था नुर्यासाधिव नुष्ट्वित्वविद्रत्मस्यायासन्त्रव्यायेषस्य विवा निसायाः स्रवसायदेरावह्नवः मु विरक्षियालय त्राच्या ला. नेया ग्रीया श्रीयाया दया देवाया प्राचन वा वीया क्षा यदेवया यवेन्यरमु हु न्यविराधाय रुषायवे स्रविषाय देरा वहन मुन्य मुन्य मिन्य सेरायवे धिरा देरावया च अद्गी प्ययमी हुरानिया निर्देश के सादनायये हिंदा पर्दर विश्वासु देश या श्विट विते र्सेट ग्री विदेश है अ यो नेश ग्रीश श्वेराय दश स्वा रेश गुःहेब क्रेन्पिय प्रत्या मुह्य मिल्य पर्वे । पर्वे । यह पारे व स्वा से ब स्वा से ब स्वा से ब स्वा से ब से से स तार्थान्यवार्याचीयाक्यात्रेयात्राच्यात्राचराक्री श्रीटाव्ये प्रत्याद्र श्रीत्र देर वया वर्द्धराग्री श्वरामिव वर्षे स्ति हैं भी तक वर्षे में मुश्रासे हैं या मार विमा विके य'ते' क्ष्मा क्रेंब देर मुबवार् क्रुर्य पर्मा वर दें ते अदेव ग्रुर क्षावार परिये परवाचीस के सत्ते प्रसाद प्रत्य की श्विर वित प्रत्य स्व श्विर कि सम्बर्ध है स

त्राया स्वार्गिका स्वार्भिका स्वार्भिका स्वार्भिता स्वा कु सक्त रेंदि दी मुद्र दें हे तक मने के किया हैन सप सुमासुम की की मिन हिनासाय वर्षेस तथा भेर क्रियायाहिनासायर र क्रियाय देवसाय छेर या धेन यदे हुन १६० वर्ष र इसमाग्री हुन केंग हेंग माने पारी पहेंग पहेंग ्याया रहानी द्वारा गादे हैं व्यक्ष देन केर वर्षेका विभक्षित्वश्रद्धा देलद्ध्वाक्ष्यित्वर्ग्यस्त्व श्रुवाचवश्रव्यस्त्व वयार्द्शासुर्यावस्थित्याययाकुःवारायाद्वर्तिःववावःवेवाःश्रेश्यद्रिःगुद्रः। देशः धर छे ५ ५ विकाले। इ कु ५ की जेवा वार्षेत्र है दिये के दिव की के वार्षाया वार्षाया वार्षाया वर वन्दर्भवे छेर। बहर्प यह दिस्र बहर्प पवे खुवा वि दे। रह वे खुवा गविः द्वैत्वस्दिः वेर वर्देश श्रेश्रयः वस्त्रयः वस्त्रयः वर्ष्ट्यायः प्रवेष्ट्रम् संस्थित स्थान स्थित स्थान द्विष्ट्रम् स्थान द्विष्ट्रम् स्थान स्थान लय.लेश.क्ष्र्यकात्रमः विवाधात्रत्ये विदः क्ष्यात्री क्ष्र्यकात्री त्रूरः ब्रम् वीकारे घटः पश्चेमः वशन्यविवयमिवायायायस्य स्टन्शे व्ययश्चित्रशे वित्यन्ति वित्यम् इ.सुश्चर्यर्वे त्र वीरायरायर वी.सटका.केश.ग्री.बुट.टे.चीचेवीयात्तर प्रश्चरता स्वायत्त्रीय श्रीयात्रियः नियात्त्रियः प्रवायहेवायहेवायहेवायाः हुन श्रद्भ वह मा ख्रुवा हेट वस वह माना से भारत स्था र पद वह मा ख्रा विमा वसायह्यायाहे हे स्वासायी यहवा ख्या द्विवसायविष्वसार्वेवसा छे न्याया र्र. इ. श्रम्मार्थत्त्र वर्षे व. क्या व. श्रम्भार्य त्यत् क्षेत्र । श्रम्भारु व वस्य १०५ व. र्वर्ष्य स्त्रियंत्रियंत्रियंत्रियंत्रियंत्रियंत्रियंत्रियंत्रियंत्रियंत्रियं

वर्ष्यं वर्षेत्र देश्य वर्षा वर्या वर्षा वरव्या वर्षा नु'यम'ने न मुन्यर उत्र'नु वयुर'व न हिंदे हैं के देव ग्राह्म व्याप विद्या है यदःग्रुवानुरान्धुरान्दा वेगायाकेन येदेन्त्रस्यावेन स्रायर द्वायर नुः चवु.कुरे.लुबे.तु.हुरा ।वाश्वेश.त.बु। क्षेत्र.शूबा.वीश.वा.चर्हे.त.रूबे.ता.वा ४८. ची. सिवास , यातु , दें, कूष , तूतु , तूर , ज्ञे प , ज्ञे वा सा , यो तु , अरा , या नेप्पराष्ट्रीन्ग्रीयामी इस्स्मस्यरम्पी पुरायायमेन यापिताने उत्तुन पर्या ने वयाने प्रविव मिनवया की प्रश्चित पान्या विषाया वया ने प्रविव मिनवया क्या तर.कॅट.शह्र, क्ष्रकार्, चधुब्र, वीमवाबाता तीटा किया ग्री, क्ष्रकार्ट्र, हुय, बीबाबा, वार्षेवाबा, म् विश्वतिद्वत्तर्विद्यत्त्वेद्वा सर्ट्र विश्वत्वश्विद्य सर्वाति स्र यःलबा । रद्यां व्यवायादे इस्रयान्त्वा । व्यवायी विद्यार्थे र हिन्यायद्या कुषा रेस्रायाद्दे प्रतिव प्यतः द्वाप्यस्या विषामासुत्सायदे हिर् युस्रागी प्रिय विष्य र्मन्याभुराञ्चनार्म्याभुगञ्चात्रयायायङ्गरायादे त्युराद्मभुवाद्मान्याभ्यत् भुग्ना मी'वीशावाक्षेत्वर्त्रान्त्रश्रक्षेत्रपाणवावा क्षेत्रश्रश्रक्तात्वरक्षवात्तरात्रेत्रो क्षेत्र नामवावामाम्बद्धाराःस्रा रद्यो स्वायागविः हुर्वे र्यवे र्यदे स्त चे र स्वायाग्वेवः इस्रायान्त्र क्षित्र इस्राञ्चर व्यापार्वे रास्रहेशक्षिक्ष क्षर क्षर हुन दर्शने। रूरा में हैं। च्यार्थन्य रायदे नाम या मध्य या सुन्य निष्य महिन या ग्री सुद्र च्या या सन्य या प्रदर्श र्नेन्द्रेरकेन्नुर्वेषण्यरदेन्यणेक्यवेद्वेरा वन्रयह्रकाष्ट्वेरकेन्य नावनापुः स्पर्ने । नहावायते क्षात्रमधान्यारम् नी सुराधार्मा स्पर्ने हो र छे र र्भेरपण्येष्यवेश्वरा ।गवयायावी यदग्रेदण्येख्यात्रे व्या

र्सेन्थानुसावकरारे। सर्दराष्ट्रसायमा र्देन्द्रसायाधाविकरार्वे ध्यमा दिपनिनः हर्यानानुना मुक्षायमा । दे प्रतिक निम्माया परि स्तिना स्ति । दिसा नीपः रवःश्रक्षेत्रातवीवःतरःवर्वेत्र। वेश्वाशेरशःतवःहेर। देश्वेरःक्षेरःक्षेरःक्षेतःत क्रिंद्राचा शर्मे हो तथा दशक्रवा ति सिंद्र क्रू.वा तब्रेश विवस्ति तर्द्र प्राय चर्नेर.तत्र है। १५.पंषुष्य विवाधानद्व क्रुवाधानधर दी। १८ ह्या वीचार वा सक्रुवा वश्वायरावश्वरा वेशयन्द्रश्वरः विवागत्रात्रः विवागत्रात्रः विवागत्रः विवागत्यः विवागत्रः विवागत्यः विवागत्रः विवागत्य वस्त्रकृष्णवाश्चरप्रप्राद्यावर्वावेषा श्चित्रक्षेत्रवा क्षेत्र पंडिनाचायार इंकेंग्रार्न्त्रा वेशामश्रुद्धाय इराये हेरा देयार देर. न्यायार् द्वित्रमेव क्वादी प्रत्मी युषायामी प्राप्त द्वाद्व स्वत्य क्वा क्वा प्रत्र प्र नामवार् मेयायर प्रवासितर याचेव। देवाबार्चित में क्षेत्र में स्राप्तर प्रवास यवर अध्येष् की विवाद्यका वहार वृद्ध र या द्वर या दे । विवाद या की या श्चेश्राम्बर्धार्यम् विष्याय प्रकारम् । सुराया विषय प्रकारम् । श्चेष्ठे प्रकेर र्युम । युवा न्। विद्यारी यो मेश संस्थान के राम कर में राम वर्षेट्यर वर्षद्य क्षर क्षेत्र स्वीत्राय येव है। सर्देर मुखायका वदे वे दे हे वर्षेट य वशा विशवान्त्र है पहित्र हैं। वेश विश्व विश्व परि के ने दे प्यत् के म शवात्तात्वर्तेरात्तात्रात्वर्द्धात्रात्रात्वर्द्धात्रात्रात्वर्षात्रात्रात्वर्तात्रात्वर्तात्वर्तात्वर्तात्वर रुषागुः अर्थेट सुरुषे येथ। यावयय। अगमी द्वाट में रट कुर गुमा अवाय इस्रायाक्षकावर्तिता देवाक्षेत्रधाकाक्षी वार्ववाद्यात्रीयात्रकार्यकार्क्याः बिट स्र दुर्वे पद्या पवि दुर्श के से स्यापित के स्वराह्म स्थान स्थान स्थान रवर्रवश्वर्दा शावश्वश्वर्द्धश्वर्षान्त्रक्ष्यर्वे व्यव्यान्त्रक्ष्यः

य स्पुर्ता अग्रियर विस्तु राज्येग विदे र वहुँ साम्री ने साम्या रहा कुर श्.श्चेग्.श्चे.क्.तेव्.बैट.व.वर्वेट.व.ट्र.वध्या पटाव्.वेश.ग्रे.के.क्य.बैट.वंश.व्रू. गर्रेश ग्री पर देर ग्राय पुरिकायर क्षेत्र या भित्र है। दे हे प्रदेश या वाह्या व स्टार्ह्मियान्टाक्रार्वेटान्टा ।यावस्याक्षेत्राक्षीन्द्रद्रान्टा ।यात्रुवायान्टा क्राप्तरम् मुर्याक्षे विर्वागिक्षाप्तरण्यात्वा वेषागिष्ट्रयावे हिरा देवे हेश शुक्तिर पर्व सुदायी अवअक्षित भेषा इ पर्व द्वार में कुर्व प्रथम। रूर क्रिंग्गुं क्षे वियापाद्रयसाय वृत्या दे द्रयसाग्री सुविद्गामाया स्ट्रासुद वियापवे हवाबासु निवर मेंबादिर में क्रिंग कर विदेश मेंबा के निवर अहम हिन प्यानेबा वियायवीत्रम् म्यासु व्योद मेसाविष्य की क्षेत्र पायदे सुमा इयस क्षेत्र प्रस्य विसाधवीर्मणकास्प्रापाकुः समाधिया सम्मायस्य साम्यवी सम्ववीर्मणम् विसाधवीरम् गर्मा शुः इ. पशः श्रुः श्रेष्ट्रिशः रूटः कुट् ग्रीः श्रुः विश्वः पदिः हवाशः शुः इ. पदे विटः वी पुरः श्रुः श्रेः वश्रुराया देन्त्रामी बराह्माशासुनु याक्षायुवे श्रूराय वश्रुराय देन्ति वन्तु। देवा वर्षा क्रूप्रस्टामध्याद्वेराणान्याप्ता ।क्राममध्याद्वाप्ताप्ता ।श्रु १८. इश्र. क्र. ती ४. ता है। वि. त्या क्ष्या र ता ती विश्व वि देव:ईशःशुःवर् नेशःग्री:सुराधी स्रें रहेवायो नेशा स्रेवायस्य स्वीर्वादार्थी र्रक्रिंगुःदेवियायस्ययायद्भा देन्गानीःद्वीःस्वयायद्भानेयाग्रीःस्ट्रिंदिया यदे ह्नास सु हे नु स्वास शु देव के न्द्रा के र हिना थे में स हे स यदे हन स सु हे .

नर्टे हुन का का तही विद्यानित हुन का त्र हुन का कि हुन हो हो है. बिट बट र हुन नगवा रट कुन गुर्दे विस्पर्व हमास्य दूस दे के केंद्र बिट । दे न्नानी कर क्नारा स्वाय सूर सु पुरे सूर पाय पुर पर दे पति वा के दे दे पाय से दे वशक्तिं निर्वेशकी प्रमान्ति वशक्ति वशक्ति वशक्ति विद्यापर क्षेत्र प्रमानित कि विद्यापर कि विद्याप नेशर्शेर्यर हेन यन्ता विवास द्वाणिन्दर येन्ता दिन्दर स्थाप्तर सुराया है। वि.म्.वहिश्चर्टालट्रवा देवा वेश्ववर्षायवे.हेरा देवे.हेश.से.वर्ट. नेर्ती सर्यो नुमुन्ये नेषा दुर्निष्यषा द्वेद र्नर्यो रूर्कुर्ती रूर् इस्र विस्था दे द्वा ने क्षेत्र वा स्था स्वर् कि द्वी दे कि स्वर् के स्वर् कि स्वर् कि स्वर् कि स्वर् कि स्वर् क्किन् से तुषा वित्राणी द्वायाये नेषाचे सपि दिवाया के वित्रा वित्रा वित्रा वित्रा वित्रा वित्रा वित्रा वित्रा ता. इशका. शु. ट्रेच। केंट्रावशका. हुश. तत्त्र देवा केंट्र त्य केंट्र त्य वे का वे का तत्त्वी हि. र्वर वियायवे द्वाय है वियावे र वुर हैं उर्चे र्ये र व्यूर र क्रुर ये रेविया प्रतः स्वारा के सार्म् के स्कूरा वर स्वारा स्वारा से रायप्र मी केर प्राप्त में रायप्र मी केर प्राप्त में स्वारा प्रति स्वारा स्व र् दिन मुयान मार्मिया निर्माणिया ग्री प्रमाणिया प्रमाणिया है। वित्रवस्य वर् भेर्भ्य व्याप्तर्य । वित्रवस्य के स्वर्धन्तर्य । केर १८.इस.चर.वीर.त.की वित्र्याधेश रि.स.चर्याक्षेत्र विश्वासीर शत्तर हीरा देव हेश शुकुट ब्रुट च व विश्व पवि ब्रुट च र ट र तुश शुक्रिं व व स व व व व व व मृत्र्योशवियातक्षेत्रेय्राम्रावयायवे दूरायाव्युरावा दूरायासकेरायावा विभायते अकेन या र टानु शासु हैं ना न भागाय द ना या या है केन गी शामु वा या सु व्वेत हैंट सट दशर वशायंत्र हैंट प वर्ति । शक्रेट प हें र मूच वर्ति शर्प हों र मूच रट.रेश.शे.र्डूच नावश्रानालव.रेचा.ता.वा शक्रश्रश्ची.श्चेच.वर्चेच.त्र्श.विच.ता.क्ष.

वृद्धेर्ष्ट्राधरःवना वश्चाये दूरावाववृद्धा हेर हैव दें नहाव व हैश यदे रहा र्गासुर्वेद्राचेद्रचेद्राचेद्राचेद्राचेद्रचेद्राचेद्रचेद्रचेद्रचेद्रचेद्रचेद्रचेद्रच स्यवे दूरप्यविद्दि से विकाय विद्याप्य विद्या के देवी विद्या महिषायहस्यान्ययान्दायकसायावेन्यस्यान् द्विसायर द्विसायाधिक है। क्षेदावेना मिन्र नेन मुग्न पर प्रतिन की शही दूर पहिना विका ने शासुर प्रतिन विवास त. है। विश्व. मुश्व. में ट्रं दूर विश्व तत्र विश्व न्यवायायाविदःक्र्याश्चर्ता श्चर्तायायद्यायाद्रा गुर्वः ह्रेटर्द्रावया क्र-क्रिट्र्यावेशायुरामुक्षे सुप्त्वाय्र्यायक्षायुक्षेट्रान्या विकायी सुर वियम्द्रायाण्येव। वेषामासुर्षायविष्ट्रिमा देपविवाद्यायक्ष्यायविष्ट्रमार्थेषा र्मायाम्ना नाववाणाः श्रुपायाधियाणी कान्यासी महियादाः श्रीमहियादे म्रिन्देराश्चर्रात्र्यात्रम्भाष्ट्रमार्थेसाङ्गरायीः ह्यात्राच्चरायात्रमार्थः स्वात्रहेराये पश्चित्रेर्द्रियायदेवि नवस्वेशयार द्वा क्षेत्र क्षेत्र व्यक्ष अपर्क्षेत्र वर्षा म्राम्यान्त्रित्। वित्रवाषायान्वाक्षेत्रावाक्ष्यायान् विषावासुन्यायान्त्रीता दे क्षरादेर्याम्ययार् प्रमुखायवे देना मृत्यु हिन स्वाया वेहर केटा ह्वाया देन प्रया र्ह्नर यहित्र र स्थाप उन इन है स है यह व के न रिवे के मेन हो र के हित पव के व पविः सुना शक्तिः भुवे प्यन्ना हिन्दे दिन्दि द्वयानु व प्यन्त व प्यन् स्वयान्ति । है। अर्दर दिशालका चर्षायर दि पर दे पर दे हैं दे हैं। विश्व हि स्वाय पर है के पहें दे तरती । भू. पैंदिर हैंय तह बेहैं सक्ष्य ग्रुध्रे । प्राचिश्य ततु हैर । इंचेश वर्देव रें व वा वार्ष रे श विष्ठ श वशा श्री वश्य वर्दे र दिं श शुः हर व वर् पा हर

गुःदर्द्वापविवानुः श्वियापाणवाया दे स्रापश्चियवापिः देशाद्दर्श्वेराप्याये इट.रट.यधुष्मीश्राचीयःतश्राक्षेट्रत्तर्त्र्यत्र्रेच्यायदेषःतर्ट्रत्यक्ष्माः विष्णासः र्येषायमार्ने मान्यापने मान्या वर्ते मान्याची मान्याची वर्ते मान्याची मान्याची मान्याची मान्याची मान्याची मान्य मृत्यासी, रेट्रापु अधूष मूर्ट्र प्रशिववैट खुट । व वेश वेष मूर्य सासी व वैट अश वदे ने देन दसद्यीय विक्रिक्त विक्रा विक्रा के देन स्थान के देन स्थान यदेव य वेष मु य विषय मिन क्या मुन क्या वेष य मुद्द र य वे र य र्वेर् नम्बयार् हुर सुवा चायार्यायवे स्वराद्या नियानकुव सवर वर्षे भवि है। रूर मिख्ट र्स्सन्य ५८८५ होर से ५५% स्थानिय द्वार स्थानिय स्थानिय स्थानिय स्थानिय स्थानिय स्थानिय स्थानिय स्थानिय स उरर्देन्दुलुक्षक्षिरावरर्देन्वाषयानुकुन्छेर। सहरत्रावर्देवेदेर्क्ष वायोषश्रातात्रात्रवात्र्वेषात्री सेर. प्रश्नीश क्षेटायो राप्तर्थाय श्राप्त सार्वेश देश ती रापे. क्रॅट्रिंट्येर.श्रेन्'ग्री'स्प्रेंट्यं विश्वायर प्रश्रश्चाया मुड्डिन्दे स्वाशर्ने न द्वापर प्रश्र हे.ह्यायालयावतृत्वेया वहास्यावर्श्विष्यायावावक्याक्ष्यास्यायावादक्यास्य वर्चेर वेश च हो। वविदे वक्के रेस ५८ दस्य या सब्द विद सुवाय ये रूप हो । शर्दरश्रायदे पक्के पार्श्वेरायर मेरा वार्था हैना श्राप्त मानी स्वापार सामी स्वापार सामी स्वापार सामी स्वापार स गमवाद्रम्भायासम्बद्धान्ति । देःस्युवैर्वेद्रमम्बवादर्कुर्वाश्चिर्वेद्रमेश्च भुष्रभुर् दिर्तरश्य दिवार विषय विषय विषय के मार्गी मार्ग के वा पर हिंगी मार्ग्य स गु.सी.र.१४भाताभविषावर्त्तात्रस्थित्राच्याचीतान्त्रान्त्रीत्र्यान्तिम्या तथा १.वर.वव.ववंश.वे.किंप.वे.ववीय.तव.ववश्रावश.विर.तप.११४.२ं.वर्चेप. प.लुब.तुर.बुर्गी ।श्चिम्या क्रिट्रट्रमीय.कुष्यः सन्त्रम्

रग'पतिवा । इस'सर'पन्'पवे क्वयस'ग्री'प्रेर'पत्विग'रेर'। । वय'र्देव'णेर्' यत्वेत्र देर पुषा पेर्या वार पदी विवाध यन् पदी के सक्के के वे पर्दा क ग्रेशन्यर र्ने वृष्य श्रुर विराय होर प्रवेर स्वाय हेर प्रविर प्रवाय हेरा है हिर ग्रे वराद्देव स्थापावना द्रा दे दरसमुद्रायर दरायेव स्थापि सुद्रास्या द्रा र्येन वक्के पर्वेद न्यासय में पर्वेद प्यर मुरप्ये कुर में सन्देर वेद दरा सेसस ঀৣয়৻ৼয়ড়ঀ৻ঀৢঀ৻ঀৢয়৻ঀৢয়৻ঀ৻য়৻য়ৼয়৻য়ৼয়৻ঀ৻য়ৢয়৻৻য়৾য়৻ৠৣ৻ঀয়ৄ৴৻ঀৣ৾৻ঢ়য়৻ र्ने कुर में 'युष 'ठव 'पविव 'यम में 'इस पा 'ठव 'युर पें 'हेर पा 'यब में 'रा 'येन ब सु हे ' चवःक्वानीशाद्रसानावशायान्यादे वस्ति। देर्दर्शशास्त्रशादुःयुनाशः र्चेनाकाक्षेत्र विवाद बार्श्वना श्रुवे वात्र मी ह्नाबा समबाव मुद्दावा वक्के वार्वे नाबवा वनानाया वर देनीवाता निवास हैनाने छेर ह्या भेशाता विश्वर्थ शास्त्र भारत विश्वर्थ । वर्मुरार्टेश । वरार्देदेष्यर दवरार्थे गुबाळेराचा यब वापादर हिरावा छेवा छरा क्रियामा द्राप्रवाद्यवाद्यवाद्यवाद्यवाद्यवाद्यवाद्याच्या कुषागुषागुराद्वावाक्षेत्र्याहे। सहदायमा द्वराधागुवाकराष्ट्रवाकाक्षेत्रकु। वश्री, इ.वर्तिवा. चीवाश्चर ट.र्ज्या चेश्व. वश्चरश्चरत्तुः हीरा श्चर. वी. प्रश्चा वर्षा ट्रे.ब। ब्रेट.त.चर.त्रा ल्रट.तका.वेट.। ब्रेट.क्रूजा ट्रे.बढ्र.क्रयक.कथ.बुका.वे.च. क्रमश्रम् दिवाद्याद्रस्याद्रस्य व्याद्रस्य व्याद्रस्य स्थान्य वर्गामीसामियाताक्षामी पट्टीत्मुद्रायराट्ट्राच्ची श्राम्बर्ग्याच्या व्या नु न्यार र्यायकुरम्य प्रस्तुते इस्य पाउन नु मार्थ दिस्य प्रति व्यम प्रस्ता दे प्यर ५ अथापर क्षेष्ठ वर्षे के प्रत्ये के कि त्र के कि त्र के कि त्र के कि त्र के त्

इन् इन्योतियम्द्रिक्षित्राम्द्रिक्षित्राम्द्रिक्षित्राम्द्रिक्षित्राम्द्रिक्षित्राम्द्रिक्षित्राम् विश्ववाष्ट्रावस्थाः सुभुः पदे प्रस्ति देन राष्ट्रिया स्थाप्त विश्ववाष्ट्रिया विश्ववाषाः बेर्-रु:श्चे प्रायापर रें बेर्युर विदा देव्यान्य निव्य निव्य हैं विद्य हैं। । दब वर्षेवे वर दें हैं। कें खुन श शु वहार दु वर्षे व दहा केंवे वर दें हिं गा झेरे प्रराहे हेर रु पर्वे प्रराधि रहें सामित प्रधान सुर साही कि केंद्र निमा पर्वे रेर्टा देवेन्दर्भुम्बम्भहेर्न्भुम्ययेन्वेद्रा सहेर्न्य्प्रुन्थ्यारेन्स वक्कि.को लट.जेश.प्र.चीच.झे.चरेष.त्रच.चरेष.क्षेष.का.भी.च.हथ.तप्र.चप्र.को चरेष. स्वारितः वर्त्तः के व्यापारार्थेन् प्रधान्य प्रदित्ता वर्षाः विष्यः वेष्रः विरा वरः वर्दा क्रेयाविषाम्भित्रम् विष्युत्विष्ये विष्युत्विष्ये विष्युत्विष्ये विष्युत्विष्ये वास्त्र ने सिंग्यायदे वर है से नुषा गुर्मे निया वक्के पर्दे प्रायवादस्य सामुर्मे र वव न्या दे वक्षे होता दे दा सक्ष्म स्था स्था या वर्ष विषय दे विष्के होते हैं होते . यद्। हिन्द्रन्यत्यम् द्रियानम् हिन्द्र्यम् क्रियानम् अस्ति। ग्रीटा गीय जारा परिवासी दु. झे. य. खुना मुख्या में शिरा पारी पर पर पर प्राप्त सारा र्ह्ना विर्देशन्त्रात्राची इस्तिये वुकाहे व हित्यास हितायर दे वासी वह वाया बे'यनेवाचावमार्ह्मिमाग्रीमाकन्यमायह्यायह्नायहेन्ग्रीक्षेत्रोष्ट्रीयम्भे वरान्युत्रान्त्रा यदायर्द्देत्रवाराअध्याद्या द्वेत्रयेवान्वयास्तरः युर्यवे हैं अवे द्रीवाविरा वेषा सेना सम्बद्धा वदे सर से सार्वेषाय है। इ.क्री.जु.र्ट.तु.र्ट्राचुर्ट्ट.च.हू.ह्.ट्रट्ट्र्ट्र्ट्ट्र

चेड्रच.ततुः हु. ह. चर्षेत्रालचा. इचरा. में अकूच । तिच. के. कुष्तुं तू. इत्रा. हुत्रा नि । विट. क्वायमगरुन्द्वादित्तिम्। जि.पेश्रार्ट्राङ्गायोश्यादी वेश्यायगायस्यायः यवाति दे.स्रम् अर्ट्राक्रे.रेट्राह्राक्षेत्रकारेत्वा स्वयं विषया विषया विषया यवि.क्षेत्र। दे.लट.पश्चेर.प्रशायव.जूटश.से.रट.त्रुव.श्चर्या.श्चर्या.श्चर्या.सं वया विर्याणराष्ट्रीयस्यायराष्ट्री विवाधाग्री से का हिरायाया विराणाया विराणाया विराणाया वार्श्ववादायर है। विश्वासिक्त हैरिया ग्री रिव्यवादाया विश्ववेर्त्रीया व्यूर्यत्र्युश्चरायराची । विर्यायायया ग्राट्युर्ये हेट दी । विर्यय द्युत्य द्युत्य स्था तर्यमभा दिलद्वर्यक्ष्यत्वर्यक्ष्य विद्वार्यम् विद्वार्यस्य हेट'र् ह्वाबाक्रेव या । वियो वाबुबायट वर्चेबायट हा । ह्वाबार्ट यह देवा १८। अ.चव.रग्रेव.व्यूचर.व.वीचशतशा अ.चव.रग्रेव.व्यूचर.पीथ.ह्यस.ता इरक्ष्यायसम्भा किर्दश्या वर्षा विष्ट्र क्रान्यस्वित्। निक्षाप्रस्म वित्रेष्ठ्रात्रेष्ठ्रात्रेष्ठ्रात्रेष्ठ्रात्रेष्ठ्रात्रेष्ठ्रात्रेष्ठ्रात्रेष्ठ्रात्र च। क्रि.स्माः र्वे.पे.से.से.स.लाया,ग्रेशे विद्याचीरियात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रा द्र्यामायार्यात्रम्भायवेर्द्रायविष्कुर्वेद्रायमाग्रह्मामायार्यम्भायम्बर्वेषा अर्द्रवः चिर्न्स्नायायम्भुर्क्षयः हुर्न्स्याया देर्म्माययायम् देर्न्यायायम् देर् पानमा झाणान जुनमा वा द्रियामा प्रमान हो। वेचा परि पर ने मुस्मा ज्ञापायमा विरक्षितायाक्षेत्राया वसास्रविद्यिषाणुर्विसाम्बर्गाया लयं, ग्रेंथे वेशत्त्रत्य त्र विश्वर्था क्ष्येश ह्ये विष्यं वेश्वर्थे वे विष्यं विष्यं विष्यं नु ने दुर्व स्थायमायमाने सहर मानु मारायदे स्यादे देन ने ।दे प्यट प्ये मेश

द्रभावार्श्ववातात्रा श्राचात्रकाचिराक्यात्राचे १३८ वर्षे वात्राचे वर्षे राह्यात्रा वर ब्रूट व ने ट्रिंड्स अपवे ट कुवा वहिंग या प्रेव प्ये हिंदा विव मुं प्रेय वे दे स्रेस्यार्ट्स्ट्रिंट्स्येन्'नुव्यस्याने र्बेन्यक्न्यस्य कन्'ग्रेड्स्य प्यट्स्येन्'ने हे देर पायमा है र्रायम्बर्गर्त वहिषाय र्रा विष्य यात्र स्रायम् इ. क्षेर् तहवा देव की शत्मियाना । श्रेयश मी खेर वी असत विवासी । विवासी बीट. तत्रिम् ने स्वित्रस्य मिर्ट्रिया मिर्ट्र्र्या मिर्ट्र्या मिर्ट्र्य इवार्त्र्रा, निर्मेष वेशा श्रान्त्र, रेवेश श्री की वश्यक वित्र त्रेत त्र क्वा में वर्षानुद्रायदेः भोषान् वासुस्र द्विसायासर्वेद वाषानुद्रात्त्वेदाया विद्रात्ति सर्देर पुषावा ट्रे.क्रें र.च.रश्चेयत्रथाथ्ये हिंगारी.ब्रीं र.च.चश्चरतर.वी विजाउत्तर त. ल्याल्याचार्येत्रात्तरः। विष्युर्दिशासीक्ष्यात्रात्याचा विष्यासीस्यात्त्रात्त्रीय देख्याची देख्या देविया देविया प्रदेश देविया प्रदेश स्वाया स्वया स्वाया स नुत्रेन्याश्चर्द्वा देवावया देव्यत्यासुत्त्र्यावयादेहेन्त्रारायके यक्षेत्रायाक्ष्रास्त्रः देवी बाराक्ष्य याक्ष्रियाया देवा याक्ष्य याक्ष्य याक्ष्य याक्ष्य याक्ष्य याक्ष्य याक्ष क्षेर्यायमा देखमाण्यामासुमायमानुत्या । गुङ्क्षायारग्रार्यातम् स्या वेषा निश्नायदे क्रिया देय अत्राज्ञ र व्योवाया देव क्रिया विद्याय विद्या स्थापनि । श्राचर्गेर्यास्त्रास्त्रास्त्रवास्त्रस्त्रम् श्रीशार्द्राहे दे याटा क्यागुटा मानवा पर्वेषाते। सर्दे श्रे वस रेंहिर्मकुवादे वस मुद्दा वेस नस्दर्भ प्रते हिरा रेंहि के ने द्राप्त कर पर्यादश्रसुसुर्यः यथाः र दिन्द्रित् द्रायेते स्मित्रं स्मित्रं स्मित्रं स्मित्रं याः वर्षाः स्मित्रं स्मित्रं स क्वायाधेन हो अर्देर प्रशायशा दर येवे अर्वेन ये प्रशास्त्र स्था विषा

ग्रम्यये भेरा देवस्य दर्भेय स्वित्रम् व देवस्य व दर्भेय स्वित्रम् दश्याणानेवाग्री श्रुरान्याविर्वेत्वार्याश्रुदे हे पकट दिवादे दिवादे दिवादे दिवादे दिवादे दिवादे दिवादे दिवादे द वाशवास्त्र-पिवाशास्त्र सुरार्वाशास्त्र। ड्रे.क्षेत्रावसुराशावाचर द्रात्रास्त्र विराववार्ष्यावर्ष्यात्र्यात्र्यात्राह्या विषावार्ष्यात्राह्यात्रात्राह्यात्राह्यात्रात्राह्यात्राह्यात्रात्राह्यात्रात्रात्रात्रात्रात्रात्रात्रात्रात श्चैवातात्राप्तराहेरे क्रीशाद्राधात्राचराहे विष्यात्राची स्वाधात्राची स्वाधात्राची स्वाधात्राची स्वाधात्राची स सुन्तासन्तानी सु पुरापिक्षान्त्र सन्दर्भ सम्बद्ध वित्ते पहिरासुर पुराप्त समुद्रा सम्बद्ध वित्ते पहिरास्त सम्बद्ध र्ने इ.श्रुव.वेर विराधर त्रवर रे वर्धरी वर्धानी मूर्य श्रुवेर हूर्य वात्त्र श्रीरट. इस्ताराश्चेब्द्रियान्त्रस्य स्वयान्यस्य वित्रात्त्रस्य स्वयान्त्रस्य स्वयान्त्रस्य स्वयान्त्रस्य स्वयान्त्रस्य श्रीशिंद्र, टे. तवीय ततु. घयशायां वर्षा विदे तत्र कथे . टे. वीय ता लावे ततु. हिया देवा श र्ट्या युवाकी क्रिंपये प्रताय मा अक्षेत्र मा मा स्था क्षेत्र में स्था प्रति प्रति प्रताय प्रताय मा स्था क्षेत्र में स्था प्रति प्रताय प्रताय प्रताय मा स्था मा वारा तीवारा कूर्वा मिं क्टा पद्र हैंट. य वार्षेश मूर्टिट क्र्याशविषा अद्भेग्तर वार्षेश में दे तत्त्रियोगम्ब्राप्तः। वश्चित्रवेषात्रेष्ट्रित्त्रुत्तित्त्वेषायेषायेषायेषायेषायेषाय महिसानी इस्रामेशनासुस्राचिति ही र छे र छी हुर मासुस्रादर। र र र सा छी पर्वेन यदे क्रुट दट के बा अधुका दे मध्यब उद मिर्च मानु पदे बाय के मिने पु करे मु स्यविक्तराम्यान्ति । देवस्य स्यान्ति । देवस्य स्वति । देवस्य स्वति देवस्य स्वति । देवस्य स्वति देवस्य स्वति देवस्य स्वति । विष्रः क्षः वस्य वार्षः विष्यः वार्षः विष्यः यात्रा विष्यः विषयः विष्यः विष्यः विषयः वि लानामाश्रम्भ्रायान्या देश्वयश्वराष्ट्रभ्रम् वेत्रप्रमान्या देश्वर्षा यन्ता देःवशन्तर्यवेःसर्वेद्रायम्बद्धायाद्वेत्रस्यायावेद्वा वरद्वेदारवान्ता

ग्रु'य'द्रा धेर'द्र'खुर्याश्चरय'द्र'केंस'सहुद'वेर'देर'वेर्'सकेंग' पृ'क्य रायाध्य रायते द्वेरा हन वा नहिषाया मुवा है। ब्रांदे राय पा सुक्ष ने प्रोपेर्न । गुर्दर्गम्ययायमायुन्यार्ट्नापुःयद्यायदेः इत्याम्बुम्यर्ट्स्मम्बुम्। थः गे'सुस'ळन'निहेस'र्रे'है'चे'नेस'रे'नसुस'हेर'छेर'ग्रे'कुर'र्र'। रे'नसुस'ग्रे'पर्नेन' यदे कुर ५ र के श्र अध्या वा वि दे दे ती या दे वि दे वे दे वा अ दे वा भी की या वा वि श ग्रेक्, ग्रेस्व, मेव मेव त्राम्य व्यव विष्य अवस्ति ने में प्राप्त ने क्षा अवस्ति विष्य अवस्ति । श्चि त्यायायाद्वेषात्री यायाद्वा सह्यायाद्वा श्वायाद्वा श्वायाद्वा क्रायासम्बद्धां विरादे क्रायासम्बद्धाः ५ त्यावायवे द्यो इश्विव न्वेदाम् रहत् ५ त्या रा व भेत्र पद सुरा द्वाय वायुम या गुव ही ते कि पद वायुम भेगे दि पव या प वे। बर्षाक्रुषाग्रीषाव देन नवया वयश उन हिंदायायय विनासान निवा श्रूरा बक्देर'र्ह्मच'वासुक्ष'क्षेर'गुर्'। इत्रक्षेत्र'गुं'रेंदर'वासवा'देवे'कुर'गुर'मवे'सूर'मः वर्षः इस्रायर म्नरवादी वर्षमानुषानी वर्षि वर्षान्य वर्षे हत्तर देवेर से वर्षान्य क्रियायद्ये अपत्रक्षेट्रियायोगायुर्यस्यायाद्वियायाद्वे कुवायदेशस्याय्य 如モノ、ロノと、ロタかれ、と、実が知道引 美、多、馬、口が、これ、これ、この、日から、 नार्नेगातशास्त्रेत्रणानेशास्त्राचानस्यान्ता हेर्ड्रेन्द्रिन्याचीमास्रुस्त्रेत् तबार्ट्राड्राच्युम्प्राद्येम्प्राद्येम्प्राद्यक्षेत्राच्यात्यक्ष्यात्यकात्या न्नेन्णुं क्यानु न्यान्य साम्ब्रेस्य सामान्य सामान्य सुन्य मुन्य सामान्य सुन्य निवासित

वर देव बर बेव स्वाया । य दव खेद पवेद विक वे कुव वर्ष दे । भिवसीय नावयामेर्भे म्या प्रमाय प्रमाय प्रमाय प्रमाय मिन्न मान्य मान्य मिन्न मिन्न मिन्न मिन्न मिन्न मिन्न मिन्न मिन्न मिन्य मिन्न मिन्य मिन्न मिन्य मिन्न मिन शक्रा क विशिषाताभ्री, पार्श्वेलाभ्री र प्रति र प्रतु देवा पर्शे र प्रवि र प्रवि र प्रवि र प्रवि स्व निव स्वार् क्रिं व जे क्रिंव व निर्मा क्रिंट हे र क्रिंग सह में हिंद क्रिंव व निर्मा जैश्-देश्वाद्भे स्वतः द्वात्रात् स्वत्रात् स्वत्रात्रात् विष्यात्रात् विष्यात्रात् स्वत्रात्रात् स्वत्रात् स्व सुस्रायक्षेत्रसाम् प्रायम् । प्रायमित्र विष्यम् विष्यम् विष्यम् विष्यम् यवे द्विनायनिकानियाविराधहर्ति ही द्वित महि हिन्या वया दे यह नर्दे सहवा र्भुःच वेद मदे के के या मुख्य कर च देश मान मुख्य दर मुख्य पर्मि के कि येन्दिराञ्चायळव्यन्दरास्वाया देश्वादेशयराय्विराया सिर्धायदेवाक्यकग्रायन् र्येदे भेदाया साम्या साम्रामा साम्या वर्षा ग्री वर्षा साम्या देश है साम्यामा नःक्षेत्रेदेश्वयाम्बुसन्तः वयान्त्रेयायम् सम्याद्वापि सिन्द्रेष्यमम्बुद्रयायदे ब्रेम नेप्यत्ववायाक्रेम्याहिसन्त्यावेत्रसम्बद्धम् केम्कत्ववायम् निक्रायायम् यात्र। यिःसान्त्रेशःक्षेत्रसायह्नामाःकेष्प्रारंदे मिष्वते हुतःस्रेससायवे विवसः हु कि वयायद्वाक्षे वयामवयान्यायया जामेयायययान्यास्याप्या सहराग्री क्षेत्र लुग्याहे। वेशयाहरा क्षेत्र वसुरावस्य ग्राहरा दहाँया देवे गुकार्श्वरायमा । येदायवे श्वेचे एक पुरस्ति । विकाति देशायर गुकादवादे स्टिमा विष्णे वर्धा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा द्रिय द्वेर वर्षा शहर विष्ण वर्षा वरम वर्षा वरम वर्षा वर्या वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा म्यानेश्वा विके.वाचराष्ट्रावत्त्रीवर्वी विश्वा विश्वापायास्ट्रेस्यास्याद्देश विश्वा

गस्त्यायते भ्रेत्र दे स्र त्वाया हे स्र हित्या देव पहिषा ग्री वत्य प्रवाय प्रवे चिरक्षित्युं क्षेत्रकार्यर त्यूंचिकार्यकात्त्र क्षेत्र अत्याक्षचिकाः मेरावात्त्र वात्र हिरायते क्षेत्रका १८। श्रूर क्रे में तथा क्रिया पर्य क्रया शहर वी प्रथम प्रथम पर हैं में पर्य क्रिय श्रमण स्रवे स्यान् वहुनिक्षा दे द्रान्यक्ष्य दुः द्विन श्रुवा श्रुवा विकास विकास गुःस्वाबाद्यमायव्युद्राचा द्रामायवायवायायान्दरायराद्देवाद्वराक्षेत्रसामाया र् क्रें न वहरमन्तर व्यवस्थान्तर व्यवस्थान्तर केर विष्कृतान क्रमान्तर स्थान क्रियान क्रमान्तर विष् ने ब्रामकेन मार्था हैना हैंदे पर के स्वाधास्त्रका ग्रीट वर्तिट वा सहवा नियम न्गरचिववेवारेकावा क्षेरक्षरची सरस्रची वैरकेरची अप्तर्शुरा मर्जना वर्गुराय इसस वर्गुर वर्षे १८ में हैं श्रेश्या स्पूर्ण प्रति । विहेश वाक्नी बराया के शाहित के राव में या विश्व या निर्मे में या व.चर.क्रीर.क्षटाश्रवधायत्र्यात संत्यत्वेर.क्रू.स्ट्रीतत् ।ट्रे.क्श्रक्ष.प्रवाधा स्रिंद्र स्वाद देशयायविद शेष्विद्धा देद प्रमा शेदा देव चीत। दश्र बैट दश्र शर्र ट हैं र जा विश्व र शर्य विश्व र शर्य विश्व र्थर.त्री मूट.वी शवट.वीरा लट.र्था.तर.उट्टेश.त.रट.र्जी ट्रेश्रश्य.विट. श्रेयक्किन्या विन्न्यमाश्रेना देव वसूत्। देव मुद्या इस ब्रूट इसस्य प्रन्ट देस यर हैं र य प्रें के इस मानमा रेस प्राचित्र के स्थान में प्राचित्र के स्थान में प्राचित्र के स्थान में प्राचित्र निर्देशतातुर्त्ते भारताती निर्वास्त्रीयकार्त्रे रेचार्यस्त्रीर्द्रात्त्रे सेवर्षः ने इसस्र रेग्य स्थे हुट प्विर हुट प्यास प्यास मी। स्वर्य द्वार प्यस न्यार स्थर गुःरवेवारेश्वात्वार्येदायाविवात्। देर्ग्चित्रग्नेत्रुत्युवात्रीवानुःक्षात्रव्यवारेत्रवा र्वेदे देग्र गर्य द्वा व्यवस्था व्यवद्वा स्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व

याम्ययान्याराच्यार् की प्रवेषार्यया देशाया शायन्य प्रवादित प्राचित्र न् पुर्वा न् श्रीया मुः इस्रयाय्युत्रेद्वास्यायः इत्यादियः यहाः होत्यद्वास्य होत्यद्वास्य होत्यद्वास्य होत्यास्य होत्यास्य होत्या यर विषेषात्रेयात्रः येखेर खेर येखेष्वर्भेत्यात्रः श्वरावायात्रेषायाणेत्ते। तरः येवे अर्गे क ये श्रु व से देर के अका सु पश्च र पवि के इट येवे अर्गे क ये के पश्चित या वाषिवाबातार्टःक्र्यात्रधेत्रःक्रिरायःत्राचे ततुःक्रिरं श्राटवासी स्राधान्य त्रूरः भ्री. ब्रस्टिक्वायाप्रध्निम् रगान्यस्यायदेव। स्र्रेरक्वेव देवसर्वेव क्षेत्रम् र्शे विगन्त्रम्भार्थास्य वर्षास्य वर्षास्य स्थान्त्रम् । वर्षास्य वर्षास्य वर्षास्य । ह्निया य झु खेब क्रें खेन्य युक्ष ५८१ ह्ना झु यदे नव्य छु नव ५८१ छ५ नेषाणुवावावह्रमायवे द्वाया इस्मार्ट्स वर्षाह्रमा वर्षाद्वमार्था द्वायावा हिरा म्नियक्षित्रातातात्रवार्ष्यक्ष्यात्राची यहिवार्ष्या विषाक्षित्राचत्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित र् मुरक्षा देशया गर्वेव द्या ररपया नव येवे न्नयस्स्रमण्युर है। ग्रेशयार्श्वेरानेरार्ट्यायह्रवार्श्वेराक्वायाया रदाविवानीयावशवया विश्वर्शिवश्वरशा देलट्ट्रियेश्वर्षेत्रभूषेत्र्र्मेत्र्युवास्तर्भेरःश्चर्यास्तर्भेत्राव्यः वाशवाध्या शर्ट्य विश्वास्य श्रावर्श्वे राता हेश सी बीवाश यहा यह सामा स्था होता । म्बर्धरम्याया रम्पुः क्वेत्रम्ययाद्रा वर्षेयामारेत्रहेर्द्रा द्रम्केनिईः हे दशका ग्रीका रूट मी हिट मान का ये पर्येट पर्येका क्षेत्रका ये का कर मी देव प्रकार हरें वर्षात्ररावाद्यभाषात्रराहेर् के पर्केर्तात्र के रायर के रायर विदेशी कि कि सर्धियर दे द्वर प्रवेद गुर्ग दे के से यह देते। वर दे हि दिवा की द्वर सुपरहुवा मिषितियान्यर्द्ध्यात्तरत्देयात्तर्भ्यत्तिक्षेत्रर्द्धा वर्ष्ट्रत्तर्भव्यतिवियात्वत्देयाः

वी रिट.जश.वर्वेट.चतु.वि.विची.ज.वर्देची.तवर.श.जुब.ततु.हुरी ट्रेश.ब.हुजा. ग्रिन हे हे चिन हिन दु प्रमाद प्रशाय प्रमाद प्राचित है है से खेल मुद्देर के स्थ श्रे ब्रैं र तपुर द्रश्राम पर्दे जा क्रें पा ब्रैं वा ब्रैं या ब्रें या प्रें र प्रें या प्रें र प्रें या प्रें वाचर र्.ह्स्येश्वर ततु शरवा भ्रेश विश्वर देवा देव तर भ्रे वा व्यव ता र ट्राक्ट्य शर्वे व विदा मुवायार्थित्रदाक्षेत्रीयार्थेद्रमायवे भ्रेष्यार्भेद्रियार हेत्। यस हेन्स रेस मु:स्रम्बरसु:८ना:स:८नामी:सु:युबरमानिहेष:गुबर्यस्य,पुर्वायस:रुष:गु:स:रन्वरगु:सुय:सु: तचराति,श्राट्याक्रिमाग्री,श्रव्युट्याङ्गिराह्च्यात्तवास्त्री,वहूरात्तवात्तास्त्राचारा तर्स्रर्थायात्री श्रिवासी वह्रे तार्ट्र प्रात्रधीय खुटा र क्षेत्र थाय तथा तथा नेर्गी क्वार् निष्यं वार्षियवार्षे स्वापक्षे स्वापक्षे स्वापक्षे स्वापक्षे स्वापक्षे स्वापक्षे स्वापक्षे स्वापक यर रहत दु विश्व राय प्रेक राय दे हिरा हरा सार दर में सुवा है। रद विष में पान स वयादे प्रविव मिनेन्यायाप्यप्य स्थाया उव प्रदूषाये भी र दु क्रियया यर विन्या त्राचु त्रामानु सः क्षेत्रम्य प्य र पहुना पान् र र केया सम्बन्धा स्तर स्वापा स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स चीच.तत्रुश्च.वश्चिर्तत्रश्चरात्राच्यात्राच्यात्रश्चराच्यात्रश्चर्यात्र्वे.वाच्च.ताचिर्त्याच्या <u> न्यार न्यार लु प्रथायायायावेश ग्री अल्लेंट ख्रा देव गहेश ग्री वट ग्राट प्राट किया</u> यविष् रेश.श्रम्भ.२४.वश्रम.२२.ज.विष्युष्यः वश्यम् वर्षः व य'न्र'णेन्'यने य'र्सेय'य'वे सेअस'ठव'नु'यर्नेग्रायये'ग्वि। स'अ'ग्वेर्ग्यु'सुर' स्वाबायद्रेत्वसःकेवायः २८.क्ष्रां अविषे श्रायश्चिरः तावश्वास्य विदः नी'बर'र्र'निकेना'र्रु'पदेस'य'वे'सिन्सन'सरपार्रु'पदेस'य'र्र्राकेंस'सिवा दे'पा ५८ येदे अर्गेक ये बुग्याय के पर दें मे व्या क्रे ग्वय मुंग्वय मा बुग्याय दि के या मुन्

विश्वाहेत्र नाववाप्यशावट र् देश्यायायायय र्टर द न्या नु नाहेश्याया निवाश निवाश क्रमां अधिय क्रिया के अर्था यह वाया से स्थाया वास्त्रीय से वासा स्थाया ब्रे.श्रम्यामी.श्रंशशान्त्रवानुष्टानिम्मीयात्राच्यान्त्रा विश्वशान्त्रवान्त्राम्ब्रा त्र देव विश्व विश्व विषय । विषय । श्रेष श्रिष श्रेष्ठ विषय । श्रेष विश्व विष्य विश्व विश्य र्वरार्ग्नेश्चान्यार्या युवास्रिहेश्यास्राह्यास्रियावित्राह्यास्रिक्षा गुवायाद्रा यद्रायवाद्विक्र क्षेत्रायाद्वीदेवायद्वायवाद्राद्वीरायवार्ट्यायाद्वीत्रायाद्रा यद्रा नम्द्रिक क्ष्यक के देव रमा ह्या चेव महस्य है द्राय है अह सुवाय प्राप्त विवास र्रा केंग्रवार्यया सुरायकेवा वा क्षेत्राया है देवे प्रवादाया वा वा क्षा क्षेत्र वा पर यमानुनास्रवे युषा मुद्राय ५८१ देवाबाय द्वापी बाकु बाय देव बाय देव स्था मुख्य स क्षर्ने भ्रिरावर्श्वरायाद्र केश्वराह्य यावे भ्रिया या स्मिव्यवद्र हिंदा की वर्षेया नीवाशानावाद्भव । श्रेश्रशाद्भवाद्भवाशास्त्राच्याद्भवाद्भाताद्भाताद्भाताद्भाताद्भाताद्भाताद्भाताद्भाताद्भाताद्भ नु'खेनब'म'झु'नबुट'मुनब'मुक्'क्क्यम्डब्स्'म'इ वहरारे। वेदुर्द्रायेदेर्वाक्षिनावद्द्रायार्देहेर्द्रार्ट्वर्प्वन्यदेश्वन्याणी %.तम्बार्यक्षतायो≾.र्ज्ञयाताती.प्रेथ.क्षेत्रात्यच्यतातीतातीय.क्षेत्राचयपताता । ७४०. वासीरकात्तव, त्वा. थे. दे प्राचुव वा मेवाबाता दे हुर खिता वा सीकाता के प्रीच का वा चा र्गेर.ध्र प्रत्यक्षरकातावार.ध्य विज्ञाविकाताक्षेत्राताक्षेत्रत्येत्र विश्ववाद्यात्राच्या क्षेत्रपद्यप्रप्रद्रियम् इस्मिन्न द्रियाम् स्थापनियाः देशायम् योष्ट्रस्य प्रदेश स्थापनियाः यन्त्यासुर्यायान्त्रेयासायमेसासुराने मेर्यायर दुदी विश्वेत्रेर्यायदेन्द्रियामेत्र

तर मुराताल हो। माता गर्ट वके मूर्या श्रित वहता रे अव में हिट. सक्सशः श्रुप्तः द्वादे द्वारा गुर्वा वर्षया है। । मार वर्ष वर्षः वर्षे वर्षः श्रुप्ता गुर्वा वार शहर देवात हैर शक्ष्वारे सवाय प्रवास । ।विश्वास हैव यावा रहावी जैश.ग्री.भर्थ.कैय.रेट.। जेश.श्वीश.वीशेटशा वर्दुव.श्रेचश.बी.वि.कुव ।श्रूच. र्ये हे हे देव देव विकास विक्रिय वह र नार्य प्रविव की भा विषय परि र की वार्षिर निहेशसेन्'यर्वे वेशमशुर्शययायमहेन'नश्चर्याप्यक्ति'च'वश्वर्यार्वेन' यान्यान्ग्रीवावित्रम् व्यानावावित्यम् स्यानेयायम् स्यानेयायम् । स्योग्याम् स्थाने र्ह्र राष्ट्र वार्षातातर्रेयशात्र क्षिता क्षिशार्ह्याता त्रव ही विश्व हर्से प्रिं व त्र्री. तः संभवः ग्री विवास्य वात्र विवास्त्र मी वात्र हुन मी वात यर वया गर्देन अन्न शर्दे हे पकर ने न्गुवाद किर नु व मुयान का के निय प्रेर गलक्ष्यर सेस्रक्ष उक्षेत्र वा देहि वकर रु गरिन स्र विष्य मुन पर्या मुन पर हिया देव खुशक्षित्र त्र मिर्दर अत्रशहि देव कर मी द्रीय विकर पुरा मुदायश मिदायव हि र र्री ।देन्स्र प्रकाय यावित्र रे। वर्षे प्ववे युक्य ग्री दे वित्र हे द द द ग्री या वित्र मिने किन हैन निक्र स्थान के स ग्री सम्सक्ता ग्रीपायित्र निर्मा स्था है। यदिन प्रमा क्रिया स्था न्ग्रीयान्नान्नेषायवान्ग्रीयावित्राम्बेषायावर्षेषायावर्षेषान्नात्रवान्यात्रेषान् यरखुर वर्गार सेर्पर वया विकायवे र्गीय विकासी के का में कि के केर पर इवि ने किं के केन ग्राम्प हो र क्षेत्र प्रवे ही र कें । यह खुन्य अपन ने वि ने के ही नि ग्री थ

मुसानसर ५ पर्ट्स यस दे वस पश्चितस पर्द ५ मुखा विष्ट वर्द्ध सासेसा नु'या वुष'न्ग्रीय'मी'यश्चरगिवे'युष'ग्री'क'ने'न्द'ने'इयश'हे। रद्भीष'र्द्रस' वशर्ह्नाश्रायर र्ज्यूर प्रथानाश्चर र् अप्तर्ह्रशायश दे प्रश्नवश्चितशायवे र् क्रिया विद्रार वै। विग'येशक्तिं द्रेषेदे देशयाय वस्त्र। विर्मे य वदे द्रग रहा विव की शा विष यवै न्यीव विर महिषा से न पर्वे । पर्वे सामाहिषा में मिना । ने ने मानुवा चैवर्वर्वर्व्यक्ष्येत्र। विषय्यवित्रमुवाच्चर्वे प्रमुवाच्चर्वा हैर:र्रो वेशःश्रवशायशा वर्ष्मयःपवि वर्ष्यःश्रवः है द्रीयःपविश्वयशा युषः र्गीवासक्तारियान्य निर्माति विद्यात्त्र विद्यात्त्र विद्यात्त्र विद्यात्त्र विद्यात्त्र विद्यात्त्र विद्यात्त र्वायवेर्द्रम्अहरक्षेर्व्यायरम्बर्धरस्यवेष्ट्रिरर्द्र। विद्वावकेष विश्वेद्रिर्द्रस यश्रास्टाक्ष्रास्त्रियायदे के स्टार्ट्यान्वयायेव हो। नावा हे सायव व व विच नेया बी.तर्वीय.तथा.श्रप्टशाक्रिशायी.क्रिय.श्राप्येपःतत्त्व.क्षेत्री चित्राञ्चय.त.ध्राप्ट्रयात्रात्रहरः मिल्ला दिन स्वार्थियाणी अह्र पाल्लापुर सेम्बर्य क्वा सम्बर्ध कर् वार्य प्राप्त प्रमान पशर् प्रवित निर्माण प्राथमा स्वर्थ स्वर् भी पर्ने प्राप्त प्राप्त प्रवित से दे हे से स्वर्थ । र्यर क्रियाय के अध्यक्ष क्ष्य स्था कर निर्माण क्षा वार्ट है पकट विव वस्रक्षेत्र। विवादाञ्चर रुरास्रान्स्रेनासायसायमसामिरा। इयायम्हिरायमिरा में बाजाय में इस बाय बाले सब रहते विस्वाय उद्देश कर में में विष्य प्रमाव विषय विस्वाय लुबेबी ट्रे.हेर.प्रह्मेश्रयात्रवु हुशूनालबी विषया के बाग्री केर.शु.देर.पर हवा र्वेषा नेषा पेष प्रवेश केरा वर्षेर मासुसा विश्वमा विश्वमा । व्यवस्ती कारे पर प्रवेष विषय यस वर्षीकारे दरदेर देशायवस देर मुक्का राष्ट्र क्षेत्र प्राप्त के साम के विकास

हा क्रि.ह.इ.त्र.व.वन्ना जेम.ब्र.वेचवत.लम.वट.रे.वेरा विरम.क्र.गोय. कु लट न्या पहेन वेश लेश वाव वालशावट न्द्र संस्व वर्ष यार वासुर संपरे धुरा विश्व विश्वाणी विषय दे दरदेर द्वारी विषयी सर्वेद वर्गे दिव स्वर्थ ट्ट्रिंट्र क्रिंश पान्द्र या पेत्र क्षे प्रदेश क्रिया पर क्षेत्र या प्रदेश क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र क्ष याधिव वे चे राम के प्रवाद है। यह रामुका प्रका में वा वे की प्रमान किया विका के की प्रकार की प्रक ग्राक्षेटाम्प्रस्थायर प्रमुखा वेशवासीटशक्ष्या कर्नेट. क्रिक्टि. क्रिक्टि. क्रिक्टि. प्राचित्र विद्या बै.श्रु.रेचेश.चर.ब्रै.चर्चा.श्रव.श्रव.श्रव.श्रव.वर्। क्रुच.पंश्रतश.लट.बे.पट.तपु.चर। है'य'नेन्'यम्बर्यायर कुवायर खुबा दिन्य हा हमा के नेनेन्यर रय मुख ष्रात्रात्यात्यात्रम्त्रीयात्रक्ष्यायम् अर्मे श्रेष्यावश्वात्रात्रम् श्रेम् विकापार्वे । श्रि र्गुवामु दूरावावस्यावसायसार्ग्या विवासियायसायर द्वियायार्गा यर हा यदायन्त्रम् क्षियायन्ता वेत्रतन् वेत्रव्यायदाक्ष्यायी साक्ष्यायार्थेनायायन्त गुर वेग्रयम् याया विवर्षे । रूर व्याप्य हर मी ग्रव वाष्य प्रमान में दूर परे दे दे यामहुरायवे प्रत्वार्यस्य स्थापायिक प्राप्ति वा प्राप्ति वा मित्री कुर्व के स्थाप क्षा मित्री कुर्व के स्थाप कि ८८.वीश.मी.क.८.८८.८,वस्ट.त.लूटश.सी.चीर.ता.वाश.वीश.मी.ट्रीवा.वाूचर.चीत. यर र्श्वेषायाध्येत्र है। न्येर व व्ययपुर्दि कु क्रिया कु विषय है। या प्यति व रूर्र रहा मी'लेबाग्री'श्रर्थे केंचर्ट्राचेलहाचलुर्थे तथु दुर्देशिवात्त्रिरमी बेर्द्राचे देशत्र कें भ्रीन्त्रीयात्रदाद्वायाविष्ट्रात्वे सिद्धात्र्यात्रीक प्रवे सिद्धात्र्यात्र्या व्यापदेषा त.जस.जैस.देग्रीज.क्री.योचज.लस.पट.त्त्री.बेर.पपुर.प्रुश.ट्रेस्ट्रात.क्रे.चे.लुर.त्तु. न्त्रा जिंशहेब निवयण्यश्वाद्य हुंबाडी इ.कैंट.जुंवे क्येंट ताला द्रव. क्रवास्त्राचेत्राम्बर्दाहेवाया विषास्याषाग्रीयायह्रवाद्वरा युषाग्रीकानवाताः

न्यारम्ब्यायम्बरम्यात्रम् कम्प्रम्यारम् म्यारम् चल्नामा अर्व कुराद्या विषयद्या विषय कुर्वे कुर्वे विषय क्षा स्ट र्येन्थ्रेष्यर द्वायर। इस्यविवाविद्वायः येषा द्वेता दिद्वाववयः यसावरः र्ने. वर्षेत्रा वर्षात्र्यम् स्रीयविष्यावर्षात्रात्त्रियः स्राच्यायायम् वर्षात्रास्य विष्या ब जैंशनिवजात्तरावट रे झूंश क्वा हूंब तर्द सैंचश शेंटेचट मुंश रेट तूर प्राप्त संस्था न्वयाप्यापरान्दानी करेरेरेरावर्द्वयायरायम्दाया शाप्यद्वर दिवा क्रिन्से केरादे। विश्वी में र्षे तथर्याश्वरा विश्वरा केश या वाया पर प्रवर्त प्रवर है र है। वेश ताम्रम्भागीटास्त्रेट्रियार्यस्यम्बातात्त्रवे तत्त्रक्ति विद्यार्यो वासे वासे तासे इस्रयायुर्यायुक्तायुक्तायान्यवर्ष्ट्रियायाम्यायवनानुर्यद्दे । इत्तुद्वेद्वेद्वेद्वेद्वेद् त.जर्था शर्ट्र सेट.मू.कि.क्षश्रयाथी। ।शटश.क्षिश.क्रं र.ध्र.प्त.प्रें तस्या चेश. रटा श्रु श्रु त्रु त्रु त्रु त्र त्रु त्र श्रु व्य श्रु व्य त्रु व्य क्षेत्र व्य क्षेत्र व्य क्षेत्र व्य व्य व्य निमेटकात्त्वान्त्रीया जेकाग्री निषकानाटारी सुष्टात्रा हु हि हि हि त्या प्या हु हि मुच द्राय तीश तर्, जा किवाय ए सी थे प्रायप्ति योष शा प्रमास ग्रीश य से थे करा अर्रेर मुकायका गुरा देवका सुराधा वार्केन का येवी वेका यावका नार्केर शहराकितात्त्राचश्रातात्री । भटाताविश्राजारेव्टितरात्री वृश्यात्राचरात्रीश पर्स्य। ट्रे.लट.प्रट.वी.ही.मू.ज.शूर्वाश्रातदावायश्रात्वेशश्रात्वेशश्रात्वेशश्रात्वेशश्रात्वेश ह्य क्राचित्र प्रत्ने प्राच अवाक क्री सुर हि ज्ये कि का मा जुक क्री क स्व क्रिक दर ट्र.च्.रेडेर.शर.रे.वेबा रे.बबाई.श्रू.बेडेबाबी.पश्चेर.बबाट.केवारट.बाबवाहेट. वर्श्वरायर ग्रुप्त व्या दे सर वर्श्वराय वाद्वी राय विद्या वर्ष स्वराय राय देवी राय विद्या वर्ष स्वराय स्वराय व

र्स्यक्ष द्वेष के अपने स्वाप निष्य विष्य के प्राप्त के स्वाप के स् न्द्रीचिवात्तव्स्विवार्वेद्रिट्टाचेद्राश्चर्यात्रस्यवार्श्वराचारत्ववात्तवार्वेद्रात्तव ह्निक्षःद्रवाकुःह्निक्षयाष्ट्रद्राय्याद्वद्राकुर्विक्ष्याद्वित्रः क्षेत्रः कुर्त्वेद्वरः विद्याया र्थाभी के मृत्येश्वर्शेत्र री. तं वीय ततु स्वयंत्र श्रोपश्वरे तत्र १४ री. तं वीय ता ल्ये. त्तुं हुर विर्तर लेव. हं हं श्र. कं रेटा लथ वर्ष वित्र त्र हुश्रश्रात वार्षेश्र स्रवश्री द्वियायायर विद्दी श्रेव स्वाधि श्री स्वित नेषा सः वर्गुव केर युवा सूर यदेक्वेब कु द्वार्स्य द्वाद्य वयर यद्दा यवेषा व कु यह पार्वेद के व कु र यदे द्वी व गहेशक्षाक्षात्रस्याद्वा । श्रुरानेदावास्य वर्ष्यास्य वर्षाः स्वात्रस्य वर्षाः । वर्षाः र्सेदे प्यसः यदे प्देश हे व 'देव 'केव पठिण । प्रविष्य पार्श्व ग्रास्त्र में व स्वर्थ है व 'ग्री व दिय पर्दा शेशशन्यवासुरायहेवाशार्स्त्रेयासुरायहेवावाहेशावशा न्दार्या स्दानी ही म्रक्षावसार्वेद्यपुर्वित्रयुवार्वात्रा वेश्यूचेशवीयावीयरथा ट्रेलट्र्स्त्वेचित्रा नुवायक्षयाहे वास्रमाञ्चयावयस्य स्यापित्या स्राम्य निवास्य हो वास्य स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्त पश्चनम्रेन्द्रभारा । हार्च्य जेत्यान्त्रम् हिनायायम् ई हेव प्रियायम् र प्रमा न्यायर। र्वे वेशन्य प्रत्य प्रतियो वेश सेन्या मुक्त श्रुव प्रदेव स्वाप स्व क्रम्यायकर्मिद्रयाम्द्रयाम्यायाम्या वेत्रप्र्त्रयाययाम्या कूर्यायानकरापुरम्यानध्यानप्रचिषा जाति.चैर्यातालयानिरयानव्यक्तियान्त्रीया ट.कैवानविट्यर तत्त्वारातालय संग्रीया वीट्यात्त्र हिर दे हर र सूचितिया विव मुक्षाम्ब्रमायायायवि वस्य दर्मे मुद्धिक प्रक्रमायायायाय वर्षे महास्था सुव

वर्देव यात्री रद्मी श्रु रिंद की वाया वेषायात्रया श्रुव सार्द श्रु दे रावे सार्व । ब्रास्ट हिन्यवस्य प्रमा देश परियम की स्वर्ह । सर्दे स्वर्ध या ता ववि द्रीवा विकास मा विकास क्षा वद्या यह वा स्वार विकास क्षा वद्या स्वार है । विकास क्षा वद्या स्वार क्षा व्या वा वेश.तत्.वर.वशेटश.तत्.हेरा इ.श्र.हेश.वश.हेव.वट्व.त.केंट.वश.श. यन्त्रण्टा अर्वेविधियुं श्रुवाणु अवाद्या वर्षा वर्ष्ट्र वायेविके विवस्तर्भेवा यायदेवसायादी द्यवाद्वरासम्याकुराञ्चावकरावा वेसार्सेन्याकेन्यावठरा विश्वाने। स्वाकावरुद्दियावर्रियावर्रियां इस्याङ्गद्दद्दा विश्विकायमायित्र इसमा वान्रिवाचावदेवशयाधिवाव। देवति। नाद्मीश्राचदे केवा क्षेत्रावदे शुवासाम् क्र-दिब्रत्तवार्त्तवार्त्वे वर्षाक्रियानश्चर्यत्वे भीन्त्वे प्रतिविद्ध नश्च श्चि तकरान वेश दश द्वरा विश्व दश द्वरा विश्व दश दे हे नश्च अर्थ दे हे नश्च अर्थ दे हे . वकर नु नर्सेयल दव श्रिव यार्टियन निर्देश निष्ठित नु के के का प्रकार निर्देश निष्ठित निर्देश नि ळ्यहिन्हरता पर्वापी युषा भुदि हे द्वा इर वी दिर्घर सहर र पार्शेया यर ने सर नांस्कान निवान कराने व की का द्वीय पर द्वीय खुंबा के वि है से असा निविद्यान वदश्रसीचश्राचरताश्रद्धात् क्षेत्रः वेश्वाचस्याच्याच्या वेशायवशा भीवार्यात्र स्या द्वापाय्य स्या द्वापाय्य स्थान ८८.केथ.क्या.कंया.का विश्वात्र क्षेट.शह्रे.तश्रश्चात्रश्ची हि.पर्वेय.वश्च. व्रेचिव पर्यवस्त्री वेशमधिरसाराद्य है रा श्रुव र्याट सुना हियायर प्रस्या स्वा र्यर्दो श्रुवे श्रुवाया द्वे पाचे राववुद्या दुषा देवा उर र दे सूर्व दुषा यर पुराय स्विद्या याध्येव यदि द्वेत्रा दे वद्यायहव यत्र सु दि वेतु यद्व यत्र या सुरस यदि सरस

क्रियाग्व की सुन्तर ध्वेत देश स्वाध में के गानि के पर्दे दे दे दे दे दे वे वा सर स के स गीय में हैं। हैं गराय दे यावे गराय देश हैं ए ए ते वे वा वे वे ते देश हैं पर व मुंक्यायर ब्रुवायदे श्रुवार व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था गुः भेरु.ह्.च्.क्रा.क्रंट.ट्रे.ट्व.उट.वर.स्व । द्रव.त.ही वर्त्वा.वर्तीर.जवा तर. म्.क.ल्रब.४व.मे.केश प्रथावर्वेट.व.केर.ज्याश्मा ।ट.केव.वह्र्य.ततु.क्रियश. र्नेत्राथाक्ष्यम् वित्रा सक्षे वस्य रहा हार्च वह वित्रामिन सामा गा याने मुद्राया पहाने हिंही युद्धा प्रतिवा अक्षा माने प्रतिवा वि अन्तें दे दिविषायाक्षे दे प्रविदायाने या या सम्मार्थ र ग्री सुर्दे हिये र र प्रविदा गुःग्न्न केन्ने न्द्रि वेश्यर्थे । निवेश्यम् न्नि गुरु ग्वन्यस्य प्रस्ति । युवाश्चुवाददेवायां की रहानी क्षेत्रान्त्र्या सुविषायावया सन्वा सन्वा रहाना रही पावया तर में राष्ट्र क्रायदायर में श्रायक्ष्या वार्श्वायदेवस में द्वा में श्राद्वार स्था स्वाक्तरम्बर्यस्वर्यस्वर्यस्व स्वा क्रिस्वे देन् न्यवास्त्रन्ति ने हेन्स्स्य क्रिस इ.इ.८८.वार्थट.इ.इ.वई.व.श.वार्ट्यश.इ४.वधुव.यू. विथ.वीरा.वश्चत.तद्र.क्वा. लट.र्र. हे. श्रेत्रस.रे ततु. श्रेय. वयश. वध्य. हे. वः श्रथः श्रेय. वयश. तथ. यथ. पर् 9'न्बेब'हे। सर्रेर'इब'यबा वेब'न्यार'र्सेन्ट'झ्ब'डेवा'हा ।रट'वी'वर्डें दूर.लट.रेबा.र्डेश ड्रि.ज.रेबेबाश.तर.रच.चशशश.वश विशेट.बु.ट्रेच.बुश. वक्ष्यायस्या वेशमधुत्रायवे ध्रेत्रा महत्वे निष्ट्वे निष्ट् ने। नुसुर नुरुव हिन नु नुसुर का गुर के अका उन मा अव उन गी र र र द नी निन ५८ अनुवयम वर्षेया वर्षेया वर्षेया उर्देवसाय मुस्या प्रवासी मा

र्सेन्स्र सै वे नामरिन है। देव वे। दे हे के स वे द द प्यन से द नी महिल्ला है। तार् थ्रे प्रमात्व क्रवादीश सङ्ख्य राज्य श्राप्त प्रमार देवा पाय देवा प्राप्त व्यवस्थ नुरागुरायबायुक् सुक्षास्त्रिकायाध्यकाया नन्गानी स्वेनागुरादेन नमना केन्गी मसुरा ने 'न्रा'वर 'बिरा वन्ना केंश वहें व या वें न्रायना केन ने न्राप्य प्रमा केंश त्त् । रे.वश्क्राश्चार्यः संविष्टः मुन्तरः श्रीश्वारः क्वियावा ब्रेट्या ह्याश्चर्यः व्री सै.गा.बुश.त.चाश्वर.टश.टच.लुघ.जा क्षेचा.श.इशश.र्घर.चुघ.ब्री ।चाश्वश. पार्चियारान्त्रेयात्रयात्राम्ब्राचारान्त्रेयात्रात्रेयात्रात्रेयात्रात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र् वसर्वेट्रत्व प्राप्तत्रया प्रद्धेर्यायस्य न्यूया क्रयावायर की सावस्य पर'सर्रेर'विष'व्यक्ष'ग्रह्माया गर्भव्यवन्वणीर्देव दी सु'संगी स्वाक्र स्व पर्याद्ग द्वा अक्ष्रे अद्भेष्ट हिंदा । श्रिम् द्वा पर्दा श्रुप्त । वन्यायवे रद्यावेष की सुग्यार द्यापन्य हिन्द्र वह स्थार हे हिव सुग्या वहर पश्च क्ष्यां हे र अथवा ग्री श्रियाचयवायां विषे हे मि अवा ये शेरवा ता हे र मि प्र है। शर्र्र मुख्यका सुरामी केविकास युकाया दि हे मुनका न प्याप्त देवा क्षेट.वार.लट.बु.चर्च.वाषश्रशी विवास.ग्री.चुष.मुश्राचश्चव.त.द्रशा विश्व.वार्थेटश. यदे हिरा हिन्या ग्री नियम हिना यत्ना है स्प्रिया है में प्राप्ति व है में स्प्रिया है से स्प्रिय है से स्प्रिया है से स्प्रिय है से स्प्रि ठर्रेगारुर्रुअर्द्व सुअर्रुअष्ट्रिव प्याणेव पर्वे द्विरा देवस्य पत्र पर ग्रुप्वे गुर्व पु प्वर रेवे खुन्य मार पेता वेश सेन्य में ये गामरेना है। देव दे नायर ययाद्वस्रवागी द्वराग्यासद्दाकेरा देविदिक्षिदाहित्वावायाद्वस्रवागी विद्वरागुरा

ग्व.में.इं.क्रमतावश्वर्त्रे.वंचर्धुर्त्युःश्वर्त्त्रेत्रें भीवार्त्वर्त्त्रें ने त्वर वर्ष श्रेम् भूति पर्व स्वाधावाद श्रेष्ठ या सूर्। वद्वावी श्रेशका ग्रुट ने प्रताय . वर मुर देव देव प्रेय पर्दा | दे वशक्ष सदि है वा विषय में स्वाय में स्वाय में स्वाय में स्वाय में स्वाय में स्व वा विवाधार्त्यक्षे कुष्टां कुष्टां क्षाया श्रेया श्राम्या स्वाधार्य क्षा विवाधार्य क्षा विवाधार क्षा विवाधार्य क्षा विवाधार क्षा विवाध नु अर् यर क्रिया दे स्वयश्मियाई हे वाश्यक्ति सं क्रियायाय यायायत्वार या हीय. र्या वर्षाम्य प्रविवाद्यात्र वर्ष्ट्र वर्ष्य स्थाय प्रत्ये मे स्था के स्था के स्था के स्था के स्था के स्था के स ट्रायदेहिं मेर्थित्वी के सूर्या श्रिष्ट श्रिया श्रिष्ट स्था हिंदी सामा त्रीय है स्था त्र विवास त्राय दे हिंदी है र्यार र्यार अविर वश्यक्ति द्या यर निया यर निया व्याप श्या र विया व्याप श्या र विया व्याप श्या र विया व्याप श्या रट्म. ह्रे. चंशेश. ५.५.८८. हेथ. शूट्च। शटश. केश वशश. २८. ग्री. ई. हे. चंशेश. रे रे पर्दर हैं हे नाश्वर हुन केंद्र यह रहे में बड़िन या वह हिंद रहे रक्षे हे द्रावर य शुक् दिस हे मानु मायवे देन गुर प्यते प्येक प्यवे शुक्रा प्यते पाने। रह किन ने मन्त्रमानेग्रायाम्याय क्रिया कुर्या कुर्य इ.तकर.कुबे.तुव्.सून्य.वीरा कुबातरूर कुरार कैवातरेबे.तर ते.रेश्वारी इ. क्रि.जुरे.विरेश.तुरा विरे.जुरा.श्रंशश.तीश.के.वे.टरा वेश.श्रंचरा.जेश.टे.क्रंट. पर्वेष तर हूर अभवा मित्र विषय विषय विषय विषय विषय विषय विषय

र्वे तथान्य प्राप्त विषय । विष्य । विषय । व्यापत्राप्यस्या देशे पहें स्यास्य स्थापित्रे विश्वाप्य स्थापे वस्य रूप्य प्राप्त वित्र मुलेषायाविदि हे वासुम्रायाष्ट्रम् सर्वे र दिने र कि स्वीत्र स्वीति स्वीति स्वीति स्वीति स्वीति स्वीति स्व र्राट केवा वे बिया पर्य देव व्यव पर्य होरा दे स्र र व से वार्य वे वे वी या पर्य पर ताताकूबारवी रेपूबातालूरेडी ४८.मी.सू.वाबीबासवामी.सूटावेब स्निराता १८। ४८.रश्चितातातातात्रेयात्रवेशात्रवेशाच्यावेशावेशावेशावेशावेशावेशा ष्यात्वश्राह्म्याद्रश्राद्रात्राचेष्रात्रायव्यात्तेत्रात्रात्यात्रात्त्रात्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त यदेकेर विवाधिया विवाधिया निर्माधिया रूप्तिया केवा केवा केवा विवाधिया स्वाधिया स्वाधिय स्वाधिया स्वाधिया स्वाधिय स्वाधिया स्वाधिय स्वा च्रिन्न्यथयपदी वेशःश्रेन्यगासुर्यःयःद्वर्यःचर्त्वय्यराष्ट्रप्यथेवःहे। देःद्वरः इ.क्ट्रेंट.जुर्वे.चर्थे.चर्थेश.त.जबा क्ष्य.तु.श्रक्त्वा.क्ष्यश.गीय.र्नंथ.ता श्लि.वार्थेट. ब्रुग्राणी हैं हे रहता । हिरागराये नेया द्या केंगा दरा वेया स्वाया ग्रीया पक्षत पर अर्रे खे प्र र दे र खे अया ग्री खेंच विषय प्र या ग्री र से प्र प्र या प्र या प्र र प्र या प्र या प्र र या प्र या प्र र या प्र या प्र या प्र या प्र र या प्र या प्र या प्र या प्र या प्र या प् गुर्। दे स्र प्रत्मारी प्रें प्रीय प्रक्रिय विष्य विषय विषय प्रति । विषय विषय प्रविषय प्रविषय विषय विषान्यसुर्यायवे धुरा सक्ष्याय दुना वे धुना सक्ष्य दुना में दि । पर दस किना मुत्रमान्यत् के प्रवास प्राप्त का स्रीयमान्यत् वीमान्य स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स न्यव है ख्रायाना हुना अवे खुर्या ने क हु ख्राय वे कुट हो अश दे पि न हो र अन दु ना करा यवै कुर रेंद्र केर ख़रपर्दर केंबा समुद्रा हिर रे पहेंद्र बेसबार पव दे नेद मुन चत्रस्रम् १८ क्रियासम्बद्धे । स्रम्यायदेव स्रुवा सुद्दे हे स्रम्य प्रम्य व्यक्त म्रम्भात्मवाले मार्ग्ह्र्नायवाकु सम्मान्त्री द्रमान्त्री मार्ग्न्यायाया

देशक्रिनानिश्चन्त्राच्या शासाहिष्यदाद्वाप्यदाव्याप्ताद्वाप्ताद्वाप्ता वायर्वातम्बात्राचेषायाद्रस्थायराद्वात्यरावर्त्ते,चार्ट्यत्यव्यात्वसात्त्रव्या र्शक्ष्य । श्रेश्वरूष्ट्र वि. रूप. श्रेश्वर्थात्र श्रेश्वरूप्टाचा लट. व. प्रश्नेश्वरूप्टाचा याध्यव पर्व द्विर है। अव है यथा थे नेश श्रेश्व पर्व पर पर पर्वेत पर्वेत पर्वेत विषयन्यन्यन्त्राचे विषद्दा बेयषाच्याची दिवानेत्यनेत्री भेरद्दा क्या यर द्वायव सेसमञ्बद्धाः हा सुद्रा श्री त्याय सुद्र में विश्व वासुद्र स्याय हिना नु निर्मा मित्रा वर्षेत्र श्रुवा श्रुद्र श्रेयषा वा द्या क्रिया श्रेयषा द्या विष्य नु श्रेय श्रमात्री सैंच वया वया रमाक्या वर्षा रमाक्या वर्षा वर वश्चेर्यवे ध्रेर्य्य केषा श्रेस्य प्राय्य विषावहिर्दे विषावश्चर्य या स्र प्राये वर्षा क्षेट्रचाव द्विषात्र वात्र रायाची विष्येषा होस्य द्विष्य द्विष्य विष्य वह्रव सेम्रम् न्यव वेश मु नवी थे ने कुँ वे ने रु न विना के मन्युर मायव कुरा किंवारी जानेबाब्रयम्यवर्षयर्ग्याचेरायात्रीतवर्ति। क्रियासम्बर्धाः ररावर्वाणानेशाश्रेश्वराद्याचित्रायराम्ब्रायराम्ब्रुर्शयविष्ट्रीरा वेशाचेरावाक्षायविष्ट्र रे। कुर्म्यस्य उर्ज्यस्रे द्वरम् सुरस्य स्थाय स्थाय स्थित स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय वर्षायद्रश्चाम्तर्भुं कुर्मार्ष्य्यभूर्दे स्रम्म्यम् स्रायम् मान्द्र'वम्वनिष्यम् रहत्वेचे येषामान्द्रम् मान्द्रम् स्वर्धामा स्वरं स्वर्धामा स्वरंधामा स्वर्धामा स्वरंधामा स्वरंधा <u>५५०.५८.ल.चुब्रश्रेश्रब्रथ्ययत्त्रवेश</u> श्रुन्यःश्र्वेषयः द्रवाशः मुन्द्रवाद्येतः द्रवाश्वरुष्ट्रायद्रायां श्वर्वाश्वरीश्वरूर्यद्रत्रायाय्यद्रायायद्यायाय्यद्रात्रे दे द्वारीष्ट्राया

रदायद्वादेव मुं अदेव स्वा अळव सेवा सह सह प्रवेष पदाय देवे साम भ्रम्य वर्दविष्ये नेषा श्रेसषा द्वावे पुषा या या ए झार्से पहिषा वर्षे दिन दिने षा या राष्ट्र व क्रिमाशेश्रश्नाद्मात्रा श्रुवा श्रुदे हे शेश्रश्नाद्मात्य त्या है स्वार्थित हिं स्वार्थित हिं महिषाद्दीयाद्दीयविष्ठायद्दायाद्वीषायदे ध्विमा देव की विष्ठाया मानवायदा वहवाबान्तेरावाकानेबाबाबार्यवावह्यार्यवाह्यर्थार्या वानेरार्यर्था थे नेश संसम्दाय द्वापाद ग्राम में सी सर्वे से में सास संसम्दाप परे सर्वे ग विर्वनायान्याक्रमा सेयस्य न्ययः हें स्यायायाः वेस्यस्यस्य न्ययः न्यारः विद्यास्य स्वर्रुः सम्यापन् प्राप्यम् क्षेत्रवाद्यम् या । देशक्षः सम्यापन् सम्य क्रिंग श्रेसश्चर्य द्वार हें देव र्यर वाश्वयावय मुग्रामर श्रे क्रिंग्या पर्य दिन स्था विश्वया विश्वया विश्वया चवःगन्त्रायायो नेषार्थस्य न्ययः श्रुस्त्रियान्स्य र्यो त्यापित्रायो सा ई·९८८८वानुव्हर्षायसप्टरङ्गरावीःमेसप्टासायायावात्त्व्रिताम् विश्वेरिता यश्युषाकुषायर छेदाय क्षेत्रादर्गेषाहे। दे स्ट्राइ श्रीहेदा षाइ पूर्णारषा शहरात्रात्रास्ट्राचित्राकीत्वीवात्रम्याविष्ट्रात्त्रात्रात्रात्रम्याव्या गुः श्चित्र व्यवस्था यक्षा गुरा देवे श्विर मार यो नेका सेसका रूपवा श्विमा महिका या सर्वा र्शर.त्र.वि.व्रेर.वी.व्रेर.पश.तंश.वश्वश.२२.क्ष्रश.तर.वेर.त.पश्चश्वश्वश्वश्व म्बर्मायते क्षेत्र वदे याये नेषा सेस्र रायत नेषा यहें दाये कु सक्र पेरि दे। थे नेषागु रत्यविव मु रेग्राय प्रवास्य प्रवास ने स्राप्त में राय है र प्रवास ने स्राप्त स्राप्त स्राप्त स्राप्त तबार्थ स.च.ड्री ल.पुबार्श्वश्वश्चर्यत्वसूत्रात्य वेत् ष्राचीर्थे स्वात्वरिया देव.बीबाबाबाप्र ब्रैंच.बचबालबाउचिंद.च.क्षेत्र.धेट.द्र.वह्रबं.ब्रुशबाद्वावा.बुश्यः

न्त्रात्री हरक्षश्रमात्री श्रुवाचवर्षात्रा अकृत्येवु वर्षायया धानी सर्वेना मुं शुर्यायक्षेत्र । देशयायानायवायर यह्नद्र यदे धुर। दर्ने वाने दारे वहेत् स्थय न्यवः वेशः वर्हेन् । यदेशः कुः अळवः स्पिन्ते। वाववायदी व्यः केवा किवा कुः निवाया वयः पर्सुराबातकार्येटाइ.वह्रयास्त्र्याःस्वयःश्चर्याःभ्रेषात्रवाःम्याःभ्रेषात्रवाःभ्रेषात्रवाःम्याह्याः त्र क्षिश्चा वार्श्वेर प्रश्ने द्वर पहूर प्रवि भेर हे दिव क्षेत्र की शास्त्र श्राप्त प्र सुस्रायक्षेत्रकायाः वाद्वीकायाः विद्यायाः विद्यायायः विद्यायायः विद्यायः विद्यायः विद्यायः विद्यायायः विद्यायायः विद्यायायः विद्यायः विद्या गु.रु.म.ब्रैटम.धे। तम.मु.म्मस.रेचव.स्मा.च्रेचस.सं.चर्बेर.चर्चा वर्चस.चेतु. म्रमार्यात्रम्भायक्षेत्रायक्ष्म्यास्त्रम् । देवस्त्रम् । पर्वा.सूत्रातात्रारूर.वेबा.जबा.श्वायीरवा.पीटा इ.व.शबा.वार्थेटबा.ता.संर.पुरा. तत्र पर्सुस्य द्वासाने। वायु पर्यु पायु स्पायी द्वा कुन हें हे सर्क्ष्मा यह न या लेश यदे विवेषाया क्रिंत वार्षाया वार्षा १ च क्रिंत हैं। वार्षाया वार्षा क्रिंत विवास वार्षा हैं। विवेषा वार्षाया वा पश्चार्या कुश्च स्रम् १५ मुँ १५ स् १ मुँ १५ मुं ष्राचित्रराचेत्रायाम्बर्धाः विदासकेशायर विदाय राज्यसम्बर्धाः विदायाग्री विद्यायाचाः मुरा श्रुरम्नारगरर्धेलयम्बनास्यानिकाम्स्यानिकास्य स्वामाहेन्याय विवस्ति। वन्दर्शि श्रुषाया निवेधि सेसस्दियवा निस्त्र में दे स्वर्केस विस्तु सेसस रेतव विश्वभूति इव वर्ते र की श्री । श्रिट श्रामश्च वर्ते श्री श्री श्वास र वव इस या विश्वभी सर्व.रे.वर्वेर.ध्राचत.शुनु.वर्थेत्र.वर्दे.वर्श्चेवर्था के चधु.त.र्ह्स्य.त.व्या ४८. में हिर मान्यर र रेन्य ग्रीरेना साध्रा ने व्यासन्य वास्त्रा ने प्यर प्यत्ना ठग में हैं व प्यस् गुर् ही माश्रम मी में प्यस् पहें साव साम जिया में प्राय प्रस्प प

या वहार् वास्त्राचार र वाना वार्ट्स व न्याना स्थापन स्थापन स्थापन ग्वं वर्षेत्र यणस्त्रम् यवे वह वशायेष्ठ वशासे सहस्य स्व यादहा एतं पर र्हेन हिर ता किर ता शेर शामव हिंगा श्वर प्रविद्धा होता है वा है वाहे केन तहेन प्रवि वर्गार्य सहर्वेष वर्ष रिवार्योय वर्षेत्र कुवासक्ष्मिनी स्र सम्मास्या ही स्मिन्यी सहर् याबहर्यां वितर्दर्वे वाया अनुवायर द्वेबाय दर्ग दे द्वे पुरे भुगाषु व्य की वी व्यवरा यर वर्दे द क्ष्माराणी कुंवा ग्रीसावर्षे वायर यहार यदे धुर देवा साव दु धुः या येत् हो। यर् हे.लं.तथा ह. क्षेत्र तर्व्य क्षेत्र वर्ष ग्रेश वेट क्व ग्री म्. वयट वे वर्ट क्षेत्र श वश्रभु पर दर्गर पर रच मुनद्देव परि देता वेद दर्ग दर्दे कवा रा के व रेवि. क्वाबेशन्य पर्वित्र दे पर्देश्य पर्देश स्थान स्यान स्थान स्य यायान्वरायराप्तर्योक्ष्रियायामु हो। वर्षेत्राक्षायाक्ष्रीत्यवे रोक्षरा ५ व व राज्या गुरिद्रियम् वर्षाय स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित विम्नुत्रित् विम्नुत्रित् विम्नुत्रित् विम्नुत्रित् । अर्देर व रेग अप्तु नु पा अव कद प्रवस्य नु सरस कुषा गु अह्द पा द्रा ह स्यापा यद्यवाराणिवाते। देवायायर् प्रयावयार्गीयाय्रिताक्वायकेवावीः भ्राम्ययाप्रकेता ने हैं या है हैं या अहर पायहर पर हैं या पड़े अर श रं या है रे या हर क्यायायमुक्। ने क्या संक्रीं क्षेत्रायां के मुन्यां की यह न या करा नु त्या पर्देना गानप्तिकाराद्राइराशवित हे येथ केत्रका इत्रुक्ताहुक राव्यतित हा शहर गरिकारी हूर्यामात्रमात्री एक जारा एर वास्त्र के के प्राप्त हुन महिन हे न महर

त्र त्वा हर विगयाय प्रत्वाया । श्रुप प्रति विष्कृति विषा विषा विषा विष् मव्द्वित श्रुरपार्च्याद्वपार्द्वार्द्वार्द्वार्द्वार्वार्यायाया देणार वह्नायन्ता दें हेन्यन्ता क्षेत्र क्षेत्र देवकायन्ता के वहेवकायन्ता यर द्वायर क्रेंद्र य द्वा केद क्षेत्र हेर व वर्षाय र र वक्ष देवा व व्यापर के हैं ना यदे हिर पर के बावकर वक्ष र्वा. द्वा. द्वा. त्वा. त्वा. विश्वा शुर्श्य प्या स्था हिता क्व. स्था विवा क्व. स्था विवा क्व. स्था विवा क्व. यर दे सूर् वन् यदे अळव के रिन्ट ख्वाय दर्गेष ही दे ख्रेश्व व के श्याय नेव नुकि है। ने नुगासरें वर्ष्ट्र प्यमा । इया पर्चे र से न्या पर्चे र से मा । ध्रमा कु'वान्ने'नर्ग्ने,'वर्ग्नर,रहा। वि.पंबान्नर,त्रान्यर,त्रांच्या विश्ववादार,वर्ग्ने,चर. में कैं अभी रेशमा शुर्श यदे भेरा देश में प्राया प्राया है में महिषा गा अक महिर दर श्रात्वरायंत्रस्यावर्षेत्रयाश्रद्धे त्याक्षेत्राची स्वाप्ति हित्राक्षेत्रस्य भी स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्व वना तर्व क्षेर्यावना नेवाग्री स्वा केश्रह्य यर स्वति है। वेश स्वा वा वा विष मेटा वश्रश्रह्मवाद्यदेक्ष्यायाता क्षेट्यर्यद्यक्षायदेक्ष्येको ।स्या वर्तेत्र,इवा,वर्तेत्र,वव्यवा,नेट,श्रा विध्वाक्षा,क्षा,क्षा,क्षेत्र,क्षेट्र,श्रा हि.ह. र्वेटबाग्रीर्ट्राट्स्र्र्यम्बा वेबाम्ब्र्यायदेव्य रेप्यट्स्र्य्यक्र्य्य यार्चर्याचेना स्वर द्वी न उत्तर्वसानि वायवे या स्वर द्वी दे वायव विकास व हे। इस्राम्वमार्रस्यायस्य प्रस्यायस्य र्रामे रेग्रामी प्रस्यायस्य है रेवामी प्रेंस हर्षाया वेषा नाश्य सम्ये हैरा दे स्पर्वे हमा के महिषा है। लय्याट ब्रियावययायया महत्याय द्वार प्राया द्वारे र प्राया विक्रिया विक्रिय विक्रिया विक्रिय विक्रिया विक्रिय विक्रि चेशतमा क्षूत्रे ही पूर प्रथमातर है। प्रशान था पर ता प्रेश ही जगात.

त्री शतह्रव देशून्वच तत्र ते। 'प्रात्तव तत्र विशेष्ट शतव हेर। वह शति तत्र स्वास अन्यास वास्त्र की त्या वासी वर्षी विद्या स्वास स्वास की है। दे वास्त्र वास स वन्तीं कुन्न न्त्रण्य पुरान्य कार्या महत्या देव.इश.शे.शैच.घटश.जश.ठवैंट.च.क्षेत्र.श्रोषव.वोश्वर.वेश.श्रेच.टेत्रा.टे. वेश. गुभाक्ष्यास्य स्वायाय र अर्दर मुस्य स्वाया गुः स्वया गुः स्वया गुरुषा गा पषा यथा । अद्यक्षाद्देश मुक्तेवयर वयुरा थिने दुंदर फेंद्रनाद्दा । शुःदर त्रियान्य वर्षाचा विष्ट्रिय स्थानिय वर्षा विष्ट्रित है वर्षे स्थान । विषातास्त्वम् वाम्यान्याम् स्वाद्यं हिर् देवे द्वे प्रमुख्यापु स्वाद्यं प्रमुख्यापु इंश.क्ष्योश.ग्री.क्र.प्रथ.वर्वेट.ग्री.ट.मैवा.वह्रथ.तप्र.हूप.श्रशश.ग्री.श्रैव.घवश.वश. वार्यरक्ष.कृष्टः। अर्ट्रूप.वेब.वाबा.ग्रेटः। ट्रे.क्वा.व्यात्वद्वश्चात्रस्य । क्षू.बावः म्ब्राम् अत्राप्ताहार्यहार्यम् अभिन्ति । देहे वहेन यदे र कुवा वेन वाव विका है। । दूर्ग शुर्धिक गुर्दे न के नियम । । तर्ग गुरु कुरावि । क्री दिश्व अत्वर्णी विश्वर हिवाश यहूर तर ही विश्व हेश कविश्व में जिया विद्य चतुःत्वाति हु ह तक्षर् वी र के वा बी श है बी र विर श हे श्रेश्वश तत्र तह वी तत्र वी शेरश. ततु.होर। विधाशतश्रद्धी ।हें धारानर्दर तती धारानु प्रदश्किशक्षा ।विट. क्य सेस्य गुरासकें द्रिय की विषर स्वीय पदि है पर्टे पर है। कि यह है न्याप्तित्रं मह स्वास्त्रक्षात्रं भी हे सामा स्वास्त्रं स्वास्त्रं स्वास्त्रं स्वास्त्रं स्वास्त्रं स्वास्त्रं र्देन मुन्गी सायहेन द्वीसाति। हिन हुन सम्मासायदी नासुर पार्यार्देन मुन्गीय विन तत्रहिर। स्वार्श्ट्रहो संस्कृत्यह्रद्या स्वायाद्वयम्बर्धिर प्रिव प्रिव

वा ट्रे.लट.क्रियंश्चट.क्रु.ह्य.ड्री ड्रे.राष्ट्रयायेवाश.च वसत्र.क्ट.ग्री.इंस.से. क्रम्थायाई हेते प्रदायवेष क्रीयन्त्र केर्ने हे हिंदी सायान्त्र स्वाया क्रियायते देवावी देपविवामिनायायासवायालदानी वाहिदायाहितेया स्वाहिवानी पदाना वित्रदे दिविषायवे । यदिराज याववानाबाद प्रेज प्रेषाय इतका हे देव प्रदूर मे ट.कैवा.मेशा तथ.क्षेत्र.विटि.त.शूचेशा शै.क्ष्वाप्त्र.तथु.कु.प्रचेश.ततु.पूजात.कूर्य. र्वात्र्यात्राह्म्यायहित्द्वरह्राह्माक्ष्यायाणुराक्वयाव्याहा। देवह्रास्यहेहहावकर ग्रीट्रक् वाजीयाद्रै बीर बटरा प्रेट्रक्रियात्तर बीवायाद्रे विट्रक्रिया हिंद्र याद्रेर नुवै देवै पर र्वायायय विषा विषायामा वषा धेर के वर्षे पर चुषा वा पर्वे के व इंदर्श देशक्रेंद्र हिन्देश यर गुर्श हे के विवा हु क्रियायर गुने केंद्र दे वदा वर्षे चर्-क्रिब्र-देश-४८-२८-सिवा-क्रिक्-विशावा-वान्-दिव्यक्-विश्व-कुषावस्य । उत्र के साबे दासहे शायर प्रसंस्य वा यता पहें दे । उत्र सके दाये दा कुवायहेन यायेन है। व्हिवायदे स्रमाय है समाय वाद के साथ थे दिन हैन यहेन यवे न् ग्रीवावित्र वस्य उन् वने हिंदान हेत्र से न ग्री ले मे मा ग्री इसारे वा नु वकर प'त्र' कुन्'हे'वेग'अ'गसुअ'अब'क्रन्'वस'वन्स'यवे। वित्र'ववे स'पन्ने न वहेंब मु निहेंब र्ये अर्केन मु वर्मुर पर्दा पर्मु र रेश यदे हेंब र्येट श वसा मेर न्दर्द्राधेन'यम्चेन'ग्री'वर्द्धिर'व्युर'व'न्द्र। ने'य'वहेन'नम'हेनाम'रेम' यवै पर्ने क्रिक पर्ने के पर्व द्विक प्रेने प्रश्न क्रिक्त प्रिक्त प्रकार प्रक प्रकार प गुरायाधेवायवे भ्रेत्र स्वायदे वादर येवे क्रिंत्र में राया वेषायहें दाये क्रिंस क्रिंस क्रिंत्र दे। श्रीयातातुत्रभ्रे.कृत्यराद्ग्यविश्वाश्चित्वावेवासीयोविश्वार्ट्यराङ्ग्रीरावदः क्वावर्त्तेराणेक्रायमाने स्राप्टेन्यवे द्वेरा श्रमा क्रेक्येवे नुवानीमावक्के पवे मूर्याक्षेत्र.धुरा विवयतवुरम्भात्रमाञ्चाक्ष्याचाक्ष्या विभावन्य विवृत् कुण्यम् भुगम् अभाकी विद्रार्गिव सक्ता हिन वयस वर्ष सर र द्वा भ ।। गहिन यन्तीवाविर कुवासकैन ने ने राटे वहें वन् प्यावाने मा नरें मार रहें ने मा यान् धन् पर्वे । न्द्रां के न्याया युष्या के यह न्याया युष्या के य र्श्वायाम्ब्रुट्या देण्यट्रास्ट्रेश्वाययास्त्रहेन्यवादे देवेन्यवास्त्रहेन्यवास्त्रहेन्य वन् नश्राक्षेपक्षित्याविक्यायाम् कत्र्तीवाविक्याक्षेत्रापुः वन्त्रयाद्वा वेतु-१८-भेरि-क्रिक् नामवावामाश्ची-वर्जी-१०-वर्षाक्षाक्षे व्हर-हे-हे-र श्ची-१०-१०-१० ह्यें रायर गासुरस्य या गरिसाय गाया विता हित हो दे दे दि हैं राय दि दि हैं विता है कि स्थाप में सिता है कि स्थाप में सिता है कि स्थाप में सिता है कि सित है कि सिता है व्यार क्वाराक्र्या प्रदेश ग्री व्याप्तर हैं स्थाय वर्ष व्याप्तर दे प्रदेश ग्री प्रस्ति हैं स्थाय प्रदेश श्रायम्यायदेष्ट्रिया देयाच्या श्रामर्श्चित्यायस्यावेष्ट्रम्हेरहेराष्ट्रयादे त्रयिक्चित्रप्रदेशक्षित्वारिव ।देर्ग्येवादित्रकुवास्टिन्नेवाव्यादार्द्धिके तत्.ह्येर। ८८.त्र.बीव.ड्री प्रचानि.ह्र.ड्र.श्र.श्र्चश्च.ड्रंच.श्र.श्र.चेश्चव.तन्त्रेथ.तत्त्र् लव्यायवानुमा देरावया वे इटाई हे यया युक्त क्रिक्य पर विवाध पर्व दिटा हे वराने स्टाई हे वे किट वहें व नवर्षा | निशेषा विकास कर हैं। वर ही निरा नश्रद्यायदे भ्रिमा हन्या नहिषाय मुदाही दे क्वियत् व की क्विय क्रित्र के निष्य त्र निश्नात्र विष्यालका विर्वे निष्य व निष्ये कार्य के निर्वे निर्वे निर्वे निर्वे निर्वे निर्वे निर्वे निर्वे देःलरःदेशिवाविरःकेवासक्तिवानीःक्षःइश्रमःहःक्षरःक्षेदःववेन्द्वार्विरःदे। क्षेत्रप्त द्व में के का के दार होरा है दिस्य में दिस्य में दिस्य में के दिस्य में के दिस्य में के ति के ति के ति के ति के मुर्ग्यन्ते। युम्रानीयइरविषायेकाम्डिषाकुंत्रादेश्याम्युम्यायमान्या

यश्यापर याद्व पठशादर। द्विवा वे का या देवा या इव दे इसशा की हेर दुः के स्वादेश ट्रेंच्याक्षात्र्वेषात्व्या कार्यक्षायाद्वी द्वायाद्वी गर्युर्यायाञ्चर। झप्रराप्रति क्रिन् स्वायाधियो नास्याधी चरान् सेवादिया ने विश्वास्त्र माने का ने विश्वास्त्र स्वाहिता सुन्य है सिन्य दे से विहास के सिन्य स हिरा भुट्रक्रवाश्चर्त्रक्षात्रद्भारदार्याश्चर्याय वर्षे वर्षेश्वर्यात्रक्षात्रक्षात्रक्ष्यात्रक्षात्रक्ष्यात्र वर्ते.वर्शेश्चर्ट्य झेवाचाचाटा प्रेटा विश्वातश्क्र्या झे। येटा तृथे श्राह्य विश्वातश्री श्रू. मृ.य.पूर्य तया विराधाता सामा क्षेट मृत्ये । विरे तावे वाया २ य. मुसा पर रे. त.सूरा वेश स्वां श.ग्रेश पहंदे जा चहिश त. हे. हैं वे चारा जा वा प्रत्ये हिया श वह्र हैंगा देश दी व ता श्रवीशय दे तथ दि द्व दे हि देश हे वेश द द व हे न या वार विग दियाहेस-दर्गेटस-याक्षेयवायायवे द्वेरा क्वेंगहिस-याहे सूर-द्वृट-यवे द्वेवा नविना मुर्भेर दे। तीश्र की तश्चर त्रिर ततु के अश्वर हे हुत त्राय शक्षर वार देर श याक्ष्रप्रदायदाषी अळव स्वाबागीबावडीवायायेवायवे क्षेत्राहे। अर्देरा गुबायबा त्र हैं है गुरे हिना का ग्रीकार में दिरा। विकास निकास निकास का स्थान के स्थान के स्थान के स्थान के स्थान के स पर्श्वित्यासुराक्षरार्चेवाररायी अतुवावायत्त्रयायाररायी क्षेरायाराबुगवायायराररा वे.र्ट.र्ट्रहर्टरावर्षेर्रद्रमुख्ये। सर्ट्र विश्वावशा खरालट्रह्र अर्थेव र्ट्राली विव इ.२.५.५२१ । इयाबायबाने हिन्दाना है । इयापायबान केन क्यात्म्रियवात्रवा कि.श्रवात्रवात्रवाद्यात्रात्रात्यात्र्यात्रवा वि.कट.र्र.हेवाववा वानवीवाश विश्वतिश्वरात्तुःहिरा गीवःहिर्हः से नेशावने वात्तरावाववारे. लूरे.हे। श्रेश्वराक्ष्यकान्वरात्त्राचितात्त्राक्ष्याः कुराक्ष्याचित्राच्याः कुराक्ष्याचित्राच्याः शेयशक्षक्षक्षराणुः ले इंटर्ट्या है सुना सेन्या हुट गुरे दिर दे स्यश हुट गरे

विरा श्रेणक्रिन्यन्दरक्षाः इर सेन्यन् नृत्यर मुद्दे स्थान् वर्षायायोव यवे ध्रिम्ति। इ.क्री. जुत्रेर्टात्रा वे.र्ह्टात्री.र्यवाग्री.र्ह्यवाश्वरक्ष्यात्री.क्षेट.तुत्र. ग्रत्रे मुद्दा वेश स्वाश इत्वोवा इस्राम्युद्धा प्रति । वश्यापास ५ यदे क्वें यद नावना मुर्येद दे। क्वें या यदे दे पविष् ना वेन या महस्य ग्री या के या विर वर्श्वर पर श्रेना श्रु अहर दिर दिर । अधार ठव वे व्हर ठव देश र की वेर हैं र प स्वामाञ्चित्रमास्त्रम् यात्रस्यमासह्तायायेत्राच्याः वित्ता द्वीद्वायाः वित्तायाः नुःर्येन् ने। वस्यस्यविष्यान्यवेः स्वयः यस्यस्य विष्यः पुरविष्यः वस्यस्य विष्यः वर्षः क्षि रदः रद्यो थे मेशया द्दर्दे रसेदः दुवदेशयर वर्षस्य वर्षे वदेशयवः म् इर्स्स्रिवेर्द्रम्मायान्याण्याण्यान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रा वे नियम्प्रस्ति विर्वेष्ठि विष्य स्तर्भा स्तर्भे विष्य स्तर्भ स्तर्भ स्तर्भ स्तर्भ स्तर्भ स्तर्भ स्तर्भ स्तर्भ वर्गेर् पवि र्मे प्रेक पवि मे नहिषाय रिवाय प्रमुख्या स्वे भ्रेर केवा न्द्रिम्द्रम् द्वास्तरम् वर्षायायादेनस्य प्राप्त द्वास्तरम् स्ति। या इवे म् मार्था वर्षे मार्था मार्था मार्था मार्था मार्था मार्थे प्रवेश कुश ग्रम्पाय दे के प्रमुख व्यव्य मित्र मी अर्केष केश मुख्य के प्रमुख के प्रमुख के प्रमुख के प्रमुख के प निर्मात्त्रम् न्योवाद्यम् क्वासक्वान् स्वस्यस्य न्यास्य निर्मा नियाक्रा प्राचित्र के विष्य क्षित्र क् भक्षत्र तथा विट किया त्रु विवाश र भक्ष्या वी विवा की श्री लूट था श्री हूं वाथा या वाथा इरक्ष्यपान्ते अप्ताक्ष्या देर वेर क्षेत्र क्षे त्त्रीक्षे देव्यवाशीयाक्षेवायदेववाताल्यात्त्रवातुः हिर देव्यर प्रवाधात्त्रवात्त्र र्रा वर्ररास्त्रवाक्तिक्षाक्षायदेवश्रायाश्चायवद्गायराच्या क्रीरावर्ररायवायवः

स्वाक्तित्वक्षरायाम्यायम् वर्षास्त्र विवाहे। देखेरायह्यायास्वरायसाद्या के.जरा.के.तेच.कुषे.चंशेश.ज.जच.ततु.तेच.के.उकुट.टेश्श.तर.चर्चर.ततु.होरा विषार्विषायायविष्याधिकाते। इसामविषात्रसायायमा वर्षियाय। नायाते कुर तर वर्षेत्र वेश योगेट शतपु होत्र देव वर हूं ब ता वा वर्षा हैवाता शरश. क्रिशःगुःर्पेन मन् सायुक्षायकायकृत्रायदे मनि र मुरायदे स्वीतः सुनि के केन स्वीति वर्षेत्रां वे देश हिया की सिया के व्या विवाध ग्री किया की के किया की विवाध ग्री की विवाध ग्री किया की विवाध ग्री किया की विवाध ग्री किया की विवाध ग्री की इंकिंग्यागुरायेयाययायवाच्यायप्त्रागुर्देव ने दिन हे दिन सुवाय ने प्यागुर्भा कुर्वे वेषामग्रम्या वर्देन देव वे क्रिंव क्षेत्र क्षेत्र हो। सुध्या केवा वड्व क्रेंप्त्य का मग्रम शर्चर क्रमकी संद्राच बचार संक्र्या शहीर है। से संक्रिक के तार के त्रचराषुवा विदे स्पर्वेत सेवा के प्रविद्य केश वरे प्रशाय वाचा प्रवृत्ति वा के देश ना मुर रुष्राधीर्योषायवाधीर। वेषायवी विष्यपर्वेष्ठार्थ्यात्रामक्रायक्ष्यायाक्षेत्रा बेचा देव कुषळव र्वे दे। पदे हिंद दिने र के र विश्व वा पर्दे के सूर्व हैं स र्हेंबर्यन्ययायान्तित्वेण दिवद्गायदेखेयान्त्रियान्त्रियान्त्रम् शक्रुवे.ततु.सेवे.शक्षवं.तत्र त्येषे.शुतु.सेश्वतं संव.ततु.होर् वेद्व.तत्र्यं क्वत. मुद्भाषात्रार्विरत्त्र्या मुर्रार्विष्ठेरार्वायावर्षात्राय्यम्षात्र्यम्याम् स्त्रिः र्गीवार्विर क्वा अक्रवा वी वार्डिया वाषा क्वा अक्रवा वी वार्डिया इसमा सुर्वे प्राये धुरा देवे बद बस इन सेंस दूर युस द्यु या नी से मी निर्देश के के देश है। दूर र्गाणव व रे हे तकर लेव प्रथा विचा विश्वारा लेव व के ये व के निया लेव प्रथा विच ततु.हिर। ट्रे.लट.प्रेट.प्ट.वह्रं विशेषा.बातु.सैचश.श्रेश्व.वह्त.चर.हु.हु.वक्ट.प्रू.वेश. गर्डें के ने स्पन्त अर्दे के स्वर्धि स्वर्ध के विष्य प्रदेश के विषय के क्रियायदेवरायवे में इस्सार्थाय सावस्ति विद्या द्वीयाय विस्कृतास्त्री में भी वर्षा शे.त्रू.घ.रेटा वश.केव.शक्त्यं.धु.श्रेघश.शे.त्रू.घ.प्रश्र शे.लूरे.वा विश्वेय. त्याग्री मिर्डिक विकास के सिंद सुराष्ट्र प्रमुद्ध प्रमुद् भैचबाद्रश्रवाद्यान्त्राचिता वैचार्वावादे वश्रवाद्यात्रिया विद्यात्राह्य देवावायर वस्याचार्यन्ते । विवाधावद्याचार्येवावित्रः क्ववासक्वानीः स्रवधासुनिर्देशः वाब झानार मुद्दार सूरायर। र्णुवाविर कुवासक्याना र्मूर दुवे झानारमा र्से गहिषासु देश है। द्येर द इस इंदर गुर्रे देर सेंदर वि के इस इंदर प्या पुरा न्त्रासुर्वेन। इस्राड्मर्नर्खुव्यये नुवानु से पर्देन्य निर्मे का वर्मेर्यास्वासाम्भेर्याचेर्याचेर्याचेर्याचेर्ये मेर्स्यार्मेन्याचा नवाने मुवानान् राष्ट्रसा सर गुरा दियानवसाय से प्रमुद्धित व्युरा निहास विरामिक विरामिक सम्मास चुर्य देर देर देश प्रदेश पर छ। वेश सेवाश पासुर स प्रवे छिर। परिश्र पादी विज रे। वर्षायावदैराद्यीवावविरावाद्युरामुवे क्षात्रमानवाम्बुमासुनादुनायाः वनवःविनाः तुः नक्ष्वः यः श्रेष्वन् य्यः सवा इः कुन्दे दे दिन् नक्ष्यः यः नन्दे कुन्दे इ.इ.शू.क्या.कॅट.श्रम् विट.शूर्वाश्वात्विशात्रातु.कैंट.श्रट.तूर.कं.तताक्र्याचताविवी. स्वामिश्रम्पदे स्थायर पद्मन्य यान्य के पदे स्वेरा सामिपना वर्दर दे स्र यह्रद्रायायाद्रविद्यायायदाद्रवार्ष्ठवार्यद्रायदावया द्याष्ट्रवार्यद्रवेश्वर विद्यादेवाद्य यायमें द्राया में इस्यान्त्र वा वा वा वा वा दे वि व के द्राया वा केवा वा यन्द्रमादि स्मृत्यस्त्री विवायिक्षण्यस्य स्वाप्तिस्य किये क्षेत्रस्य स्व

विवानिश्रीमान् से प्रमुद्दान् रेव्यूया विषानिश्रीमा विवासि स्ति । वा क्राम्नव्याप्या प्रमाद क्रुयाचा पर्ट्र साम्बर्ग यह साम्बर्ग स्थान र्म्राम्यायुराङ्ग्रिं पादे कुर्यया वेषार्यम्या हे साया खेवा के स्वापित है साया खेवा है से साया स्वापित वीर अश्वरा निवानी हिन्दी हिंहा वया श्रवे देश हैं व वा वित् अत्या वा वा यवे झ इस्रमान्याम् सुरायवे इस्रायर पहुन याया निर्माया छन्। यर उन्ने र्येन नि रे हे वया र्राप्त प्राप्त देश प्रति देश स्थाय वया मासुराय र व्यव प्राप्त स्था देव वया सर्वेन देन पर पार निया दिया है या सर्वेन देन हिर पर उन येर पर दे है र द्वाराष्ट्रीः अन्तरम् वया यवायावयस्य प्रत्रावयावयस्य गुरुष्ट्वायदेवः यान्नायवे श्रु खुकान्मा व्यायाम्बिन यान्माम्बिन वान्माम्बिन वाम्बिन वाम् यदेव यदेव मी देर वासवार । वाषाया वाहिस से र से यहेवा यदे वा से हिर यन्ता वयानायसान्यित्वानित्रानितायाङ्ग्रम्यदेश्वयानीसायनेत्रानित्रानित्रानित्रानित्रानित्रानित्रानित्रानित्रान श्रेन्'ग्री'त्रुर'यह्गा'सळेव'य'पेव'यवे'ध्रेर'हे। युर'हेव'यहा यव'ळ्व'ह्रेट्र'पह्रा र्दे हे खेराया | नेय र य वया गी में प्यत सर्वेग | वय से श्वर य उस मी य दी सर्याक्याम्यस्य प्रत्यापन्याप्या श्चित्राम्यस्य देवे नास्य प्रत्यान्त्र निर्यास्यापर वर निर्याणी विवानिर्याणे हे सर्वानिर्याणे विर्यानिर्या त्तृ हिर् तियारियात्रा अकूष रूष ताता संग्री श्वाशन प्रत्र श्वाशित स्थान हरे. गुः व्याप द्वा जीवाश उर्वेट् जीवाश क्वा की सैट क सीश क्ष्य मुश्र शक्का व्राप्त अरा वि.श्रम । श्रात्मा.सूच.तत्र.च.सिचा.सेचामा.चेश्रभ तात्मा.सूच.तत्र.भट.प्रमाप्ते.च. क्षे ब्रिट्माबित क्रिया द्वा अक्रिय बेर ही | निर्मया प्राप्त विश्व व व। वहेर.बाबाट.व.वर्षात्तव.रंग्रेव.व्यूचर.व.हे.क्षात्त्वूर.त.हूच.रंग्रूच.देग्र्व.हे. स्यामान्त्रवानुद्विताहेन्द्र्याहेन्द्र्याह्यायमाव्याद्याः हे। हे द्वरासुदायायाह्यसमा र्श्यान्त्रासक्ष्यायमायणुमा वेदान्त्रा वदेवे देव देव वेश स्वाप्त क्षाप्त हिंदा स्वाप्त वस्त्रम् अ.वीयश्वात्रम् व्याववृत्रः वातवृत् चेत्रः वात्रम् विश्वास्य स्त्रात्रम् विश्वास्य स्त्रात्रात्य क्रि सक्त यार द्वा पठिया वर्वेद रेवा सामार हाया हिर वर्षा मंदे हैं प्रारं से प्रारं हैं वर्षा से वर्षे हैं वर्षा से वर्षे हैं वर्षा से वर्षे हैं वर्षे से वर्षे झं क्रिन्य ग्री प्रवेद प्रया झं क्रिन्य मेना यद्ना प्रवे हिम विद्यापाय वा देव प्रव र्हेंब माजा इसमावना यथा संसम् नियः केंद्र चेन माली मार्था विदः यन्ने वदे प्रमान वस्ताम युवाम क्षेत्र मुक्ति याव कि वित्र प्रमान विवास व विरक्षियाम् विषयाप्याप्याप्याचित्रं विषयाप्याप्याचित्रं विषयाप्याप्याचित्रं विषया येव है। वर्षायाश्चीरायवे द्वार्थायर द्वीरायवे गाविर सूरायवे गाविष लक्ष वट्युष्ट प्रवे द्वेर द्वेर द्वेर द्वेर द्वेर प्रवेष प्रवेष प्रवेष प्रवेष प्रवेष प्रवेष प्रवेष प्रवेष प्रवेष लक्ष.वट.चधुष.चुष.ततु.प्रचाश.त.लट.रच.चुश.श्चीच.कुट.। शविष.रग्न.तीच्य. श्चित्रपादी हिरासेटायमा हिहासियादियायमायदीया । क्वायवि सुदि देश चब्रिनाम्बर्धा वेशस्त्रम्थास्त्र । स्वाप्यदे वाद्यीयाय्य क्यायहेन यवै कु अळ क र्ये दि हे क यहे व यवे दि मुवाय विक सुवाय व व व व व व व व व व व वयश्रास्त्रक्तां त्यादे स्राप्ति प्रति । स् वास्याया वया कुवा सर्केता या महिषा द्वत्रदिषाद्रायदेवायवे इवावर्द्धे राद्रा द्वत्यक्षणाद्रावदेवा चवु इया वर्ते रार्ट्रा । ५८ में या खाल विष्ण विष्ण विष्ण वर्ते रा नुपाञ्चरमञ्जूयापदेरित्रपिद्रराप्ति देःयास्त्रित्पर्द्वित्पत्ति केयत्र

वड्डाववे के नर्दा १८८ दे है। इ.स. हैं स. व.व. से व स. व.वे स. व्यूटर क्वां अक्ट्रवा लब क्वां प्रवाधाया वार्स्विया यदे स्रवधा ५८। प्रवाधाय सम्राध्य स्रविद प्रवे शक्तश्राविश्वाश्राल्यर्नातृत्रिम् रूट्येत् स्रवश्रावस्त्रश्रायायान्त्रिश्यायाय्रे दे। हेट हिर हिर हुन सक्त प्रार्थ पर्देश वर्षे अया पर्या हिट प्या पर्दे हिन। देन हिर हिन। वुन्यञ्चर्यसम्बद्धिर्यसम्बद्धिर्यसम्बद्धिर्यसम्बद्धिर्भः दिश्वेषस्तरम् विवर्षः स्वर्थान्यस्यसम् न्वरायहर्वायायञ्चयम् न्वरायदे हेन्ये स्वरायदे हेन ने प्यराधायय में सूरावेत महिबारमाबारावे खेताह वा वर्षेत्र श्रीकामार्केन तुबारावे अळ्यबाह मार्ग्य ह्रा रावे ह्रा वर्चेर भारत द्वि स्वास्त्रमान्त्री हिवाखेदान्तर पुरावित्र स्वास्त्र स्वास गमवायवे संभाव में रमा है। संभाव मानवाय विषय विषय के सम्भाव मानवाय के समितवाय के सम्भाव मानवाय के समाव मानवाय के सम्भाव मानवाय के समाव मानवाय के सम्भाव मानवाय के सम वा है स्र में अपदे खुवा यह येदि है। रह के प्रमें दि स्व व दे हैं र प्र स्व व व मु.इ.इ.१, चर्व स्वरास्त्री स्वराया का दश्यमु हिर र्टे. हुर हुर हुर सा इ. स.स.सर स. गरमी'ववुक्त'ठंश'वेग'श्रेपर्सेन्यवे'रेपेर'वद्गराव्याक्षेत्र'वेर्। नेप्ववेत वारेवा अर्थेट वी अळव अपन्तव या अहेद पर दु क्विया प्येव पर्व क्विर दि वा पर्व व यार्चियायात्राहे स्रमानु प्रवित्र खुवायाराये दे हो सेरावी हेरि वी से हे प्रविश्वादर न्यस्य वास्त्रम्य प्राप्त स्वाप्त वार्ष्य हिंस हिर पर वे स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप दे.ज.चर्थता.च्या.त.व.तेवा.अक्ष्य.क्ष.क्षेत्र.वश्चीत्र.वश्चा.वंद्य. शवर वहूंची ताब के चवु देशचंश हेब सै तैची बेबार राष्ट्र हैं हैं ताय है ए हे तह बे श्रमार नवकावहा देवहिन्द्वा कारान्य के देवहिना वे का श्रमायह नयान र्रे हे दर्या वर्ष वर्ष है। विवाये दे किरायुम की यहर युरायये कर दु हे वर्ष चहेब्र रातु न्युवावित्र र्यूटश हूबाश श्रुषायावा श्रेष्ठशाच हवार होन्य प्रवित खेवा र् र्श्वेष्य द्रा देव वर्षी के प्रमुद्धिय प्रमुश्चिम प्रमुश्च प्रमुश्चिम प्रमुश्चिम प्रमुश्चिम प्रमुश्चिम प्रमुश्चिम प्रमुश्च प बर्-रुष्ट्र-प्विब कं सेंदे खुवा रुष्ट्रिय हैं के किया प्राप्त के प्रदे हिर है। इ कुर वेद ना सुका यायमा देव केव केव में पिर्मा हिं। यित्य गर में वे व व कर्र खा । श्रे.ण. क्टेंब्रॅ-व्यक्तिव्या विवादम्र मुक्षके हमा हु वर्षेया विवासेय पहलापर सुर वशःही । वस्व प्यत्राश्चित्राध्याश्चा विद्यावश्चरद्याः अवर वह्याः तत्र.क्.क्षेट.वो र पर्हेत् । वोद्धेश.त.वा.वोद्धेश। ल्येट.वश्चर.ट्र.ह.वश्चरा.त.टर.। रवा. म्निष्यक्षात्र् । १८६ म् द्वी कु. १८५ शक् श्व. वर्ते व्यक्षिर ह्वी हिर स. तत्र लि ८ व छत्र वे पश्चिर देश पवे हिंद प्रवासिय के दिन वा वा वा वा विकास है हिंदे के ना की बाद स्था निमाने। र्रि.इ.क्रमान्ने में सरकाता विमानमिरकान्तर। जुनितर्थातर। मिर स्त्राचित्रस्य मा हे। वेश स्वाधा प्रति द्वा निवा प्रति । विदेश यायास्यान्त्राची द्रमञ्जूषाची प्रमुख्याया दें विदेश्वस्य स्वर्मा विवस्य मित्रम्य मित्रम्य मित्रम्य मित्रम्य स विश्वायते प्रमुख्य विश्वति विष्यति विश्वति विश्वति विश्वति विश्वति विष्यति विश्वति विष्यति विष्यति विष्यति विष्यति विषयति विषयति विषयति विषयति विषयति विषयति व र्रायु । वश्याद्वेद्रःह्वायाग्रीयायक्षेर्यवदेश्वेषास्वायान्य्यायव्यव्याद्विरायाक्षरः ब्रि.वर्ड.ता.रेश्चराश्चरा.ब्रि.व.ड्री क्षेट.ता.रेट.ड्रे.क्षेट.च्री.वधराताल्य ब्री विदेश. त्ये। क्रमानमान्द्राम्भानाकेर्यान्द्रिर्ये प्रमानमान्त्राम्भान्यान्त्राम्भान्या वयानक्रिन्देवयावयानुता रत्नीवयानुतुन्यरायरान्द्वेययावयायोगेद्विनः कुर.धु.तप्र.प्रथातप्र.प्रमातप्र.ध्रात्रेर.र्ह्तवश्यी.प्रमातप्री विशेषातप्र.

पश्चरायहै। रट्युष्वयद्यातिश्चिष्वयित्रिय्वेष्वयित्र्यः कुट.रचारातु.स्थातास्थरी.सूंशातालुध्धे। वर्दालट.सुट.ह्याश्की.पञ्चशरातु। चर्ष. त्रु। वितृत्यान्त्रकात्रु। है ह्यात्रराव है। ईरारी है र स्थान चेत्रत्र विषय्त्र स्पादी विष्टानेत्र प्रमुख्या स्वाधायात्र स्पाद्य प्राप्त विषयः इस्रयास्त्रीचुरु'पङ्गर् बुर्स्य द्वार्यर पर्देर वेर प्रवर प्रवेर इस्रय रहत वार्स्य वार् वश्यवञ्च प्राप्तवाद्भी । दे.क्ष.चेत्रावञ्चर्यायायादान्ते दाण्याद्भावित्राचर्यात्र द्वीत्राचर्यात्र व्याप्त वयानु व्येन ग्रीकायमेन यम निर्माण वया यहान में का ने निर्माण स्थान ने होने ग्री वश्रावर्द्ध्याद्वार्याद्वार्याद्वार्याद्वार्यात्वायात्वायात्वायात्वायात्वायात्वायात्वायात्वाया प्रमुश् मुवे स्वाध है विशेषाय देव से हिंदि । देव श्री प्रमुद स्वाव विवाय पेद चहुत्र,श्र-द्र-चर्नाश्रम्य,वेटा वसवायायायवास्यवाग्रीयावायवारास्त्रावास्या ग्राम् अक्षत्रम्मारायां वेत्रप्तम्यायां विष्यायां विषयां येव है। दे द्वर खेंच द्वेव अ इ यू गार ब चबेद य द्वर येव ब य दे है र अळंब ह्मवायामु र पाने हिर प्रेम है। येयु दर प्रेम अर्क्कवा की हिर प्रेये हिर प्रेयदे ना सुर य र्था । पह द्वा डेयमस्ट्यपदे स्ट्रिम स्मानुस्य दे स्मान्य समान्य वित्व वित् ग्री केट मेर पहारक की । इन्हें न के विक् के दिन मुक्त प्राप्त के प्र के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के प्राप हिर.र्ह्मिशायाश्वेरशाता¥शश्चर्रा. के.केया.श्वाद्राह्मराईराईयाशाक्रीराया. तास्थरात्राचा वर्षेत्रात्तवाचारसात्री मेर्ड्स्यावन्या वर्ष्ट्रास्थरान्त पञ्च प्रमाया देवें केट येवे सहया मुर्देश अहे हैं र प्रमाया येवे प्रमा येवे पर्व.रि. हें ब.चारावा वाराचारी रहा ही । हे से र प्रमारा निर्माण कर के राज्य ने स्वर्ध कर के राज्य कर क गर्टा विराधरार्ट्राहे पत्रसाधते कृत् क्षेत्र कुत् कुत् तुत्र पत्र पत्र ह्या पत्र सुर्वाहरू र्हेन पवे न सुर ने सह ५ य ५ द सहन पवे वह साम प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप व.ल्रथ.तपु.हिर् वश्रिश.त.थ्री लव.लेश.हेशश.तर.खेवश.तपु.केथ.वीश खेश. स्वायानश्रम्यानस्य वर्ष्ट्रम् व्यव्यायान्यान्य व्यव्यान्य व्यव्यान्य व्यव्यान्य व्यव्यान्य व्यव्यान्य व्यव्यान्य विषायमा श्ररायर हर्गयायमाय नित्रे देते। नित्रे विष्यु देते वाय विषा पर वि वेषाविश्वरक्षात्रपुरित वर्तः स्ट्राचर्त्रेयकाता वास्त्रका देवी र्वाकातात्र दे हिवाया देशकी अवस्यायान विष्णु युरावेद्गाययानु वहवायवादो में अने हिन हो दार् वच्यानुवे न्नवयागुन्ति विवेदान्ति विवाधिव । सम्बन्धियात्र्यात्र्यात्र्यात्रेत्र्व्यात्र्य्यात्र्येत् भ्रम् देष्यास्त्रायेत्र र्थिन्द्री वसार्ह्म्बर्भ्यस्थान्त्री स्वर्थास्य स्वर्थान्त्री वित्राची वित् श्च अदः भूर स्टायदे निष्ठ द्वीत हो निष्ठ पुराय प्राया प्राय प्राया प्राय लट मियेश हे कुथे नूर्य प्राप्त प्रथित विषय दे तक्षर में ततु श्रह् दे ता हुं ये ततु उत्ति वा त ने । हिर्पर ठव र प्वमूर प्योव पवे हिर। सुवायवे केवाय चन्द्र प्रविवे केवा र्म्ब के कि त्ववेवा वार्षा में बादम विद्या व चन्त्रसुर्यान्त्रस्यायान्त्रम्यायाय्द्रन्ते। श्रुवायवित्त्रस्यान्त्रम् शहर तामक्षेत्राचा श्री हि. समाय कर क्षेत्र क्षेत्र श्री तात श्राम श्री शायह या हे थे. क्षित्रयायदेगहेत् मु चित्रयात्रयाद्रायाद्रायायात्रव्यायायात्रयायाया ५'वशुरावाधिवायवे'धेरा देष्यरावर्ह्न्रप्यादे'ह्रराम्यवे ह्र्याधिवा मुन्यास्यास्य रियाप्ति । १ सम्बद्धान्य । १ सम्बद्धान्य । १ सम्बद्धान्य । याक्षराम्ब्रिंग्याणवायविष्ट्रिम्। वदेविःक्ष्यार्म्ब्रायन्तिः ह्रेट्व्याम्ब्रायमः प्रवेतर्विवायवानु के बरावाबराय दे किंब के दे जी अर्के दे प्रवास के दे ता प्रवेत । वा निवरम्भवात्रे हेन्या स्वित्त्र र सकें र वर्षा वर्षे वर्षे हेर् ही वर्ष यानीयूर्यत्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रम गुरप्रेर्न्नुबाद्यापर्र्र् के ब्रह्मायर स्थाने न्नुवापर मन्द्रप्रेर् ताक्षर मेरेरानपुरकुष्मक्षर पूर्तारी कृष्ट क्षेत्रसम्भागीस रूपाता सैन मुद्दा स्था के.भक्क.पर्वेचशत्त्रश्चरीट.इ.वेंट.च.क्षेत्र.चक्ष्र्यश्चराववेवा.व.लुच.ततु.हुप्र.धे परे.सकूबे.इ.केर.तथ.योटा ह्रिश्ता प्रचय.क्षेबे.इ.केर.पथा विज.पर्टेर.द्रवेश. यश्रम्मानुषु विश्वमासुरश्रम्यते भ्रम् वर्ष्यायते देशायाया सुमा वेदायित नेर्र्मेशके। याप्याया स्राम्यायाम्यान्तर्यः वर्र् थर.रेचेवाचे.क्षी रि.काइकासि.इ.२.या विश्व.सूर्येश.येशेटश.तव.होरा क्रा.का. ब्रिन विश्वासिन्यायुः स्वाशार्द्वादे विष्वक्षेत्राये प्रति वर्तुन् देशायदेशाय र वेत् प्रति रहा प्रविष्कुः मन्त्राकुर्दे द्रित्विषाय्या स्यादी स्या

वड्डिट्रेट्र्न्सिन् अर्ट्र्र्युक्षःवक्षा रह्यीयविर्यंवयन्त्रेयम्बन् ।विष्रः याचरे वाक्रेम मिन्निया पुरावत्रमा विषायवे महाया राम्या विषायवा प्राविष्ट रहा व्यूर्भश्राधार्याचर्षायाच्या वहुश्रायश्रावाद्वान्यात्रायाच्यात्रायाच्या पर पर्व वर्ष प्रति है र देशर र लाग लेश हैं श्रधा पर विवाध पर हैं र अक्सण वयानुदाकुवानुभिक्षायानुष्टि सेरावर्ष्या श्रेश्रयाक्षयाक्षयाक्ष्या ब्रैवःयःब्रह्मा द्रैःश्रेवानुःशुरा देशःबद्यास्रविदेशस्यश्वादःवःस्रह्मासुःशुर्यःयः वस्ट्रिंदकर्5्वर्याद्वयस्ट्रिंद्र्वेर्याद्वयस्ट्रिंद्र्वेर्येश्वर्याद्वयः यर'र्द्वेश'र्द्वेश'र्द्दे। विर्टर मुख'यथा दे द्वर हवा वर्द्धेर प्रवि मे देव पर्द्धेर प्रवि मे तास्वायक्ष्रमार्थेहास्याचाया विद्यापह्यायराचेदायदेश्यावर्चेराचे। सर्हरा निभावका चिराक्षेत्रसम्बद्धारम् । विभारवात्तर्भे क्रियावश्चरप्रवे । विभारवात्तर्भ यायदेश्वराष्ट्रियायराष्ट्री । अर्थियारा रुं या श्री या प्रायायाया । विषये परिवायिरा पद्गायर छ। ।पर्दे हे इ.ध. इ. व. व. प्रायय तहा । क्रे. व. दे प्रायय पर्दे । हि. इत्.मुर.च.वर्, लक्ष.थ्रा सिर.क्ष्याचीक्ष.थ्र.चात्र.क्ष्य.वर्ग्या विकारचा.ल्यर.थ्र. यरे.व.थे। व्रिय.वर्वे.वर्द.वाव.क्ष्य.श्रदी कुश्चासीरश्रया.क्षर.प्रे.सू.सू.सू. विश गुःइनःवर्तेरःध्रापः वर्षानिरः सः सर्देर द्वेष कुरायक्ष्यशा रदः श्रायक्षिरः पर नाया पदःश्रमीत्राप्त्राद्भाराध्यायस्यायदेत्रत्तुः द्वारात्ते द्वारात्ते द्वारा 12.28×近くとは、からなく、口は、歩、ロメ、勇、そ、四かま、手、長く、五名、あ、日、日、 1.26か.

इसकार्ट्राम् वाचाताचारुकार्चाराचाचर बिचाका के क्रान्थर वारायर हुन ब्रेट्रुक्ष्रुट्र्च्चा अध्यय ४५ वर्ष्य पर्वे स्विन्द्रुष्य न व्यव्यक्षिय या रवानुष्वर्यावार्षेषु श्रेषाची र्ख्यानु द्वा देवसार्यार राया विश्वेद यसामासर न्यश्रासुर्नेर्नेर्योवायित् हेर्परसेवेर्न्योवायित् हेर्प्नरस्वेर्न्योवा व्यूर् श्रमुष्ट्रतर्ष्ट्रव्रद्रमुवार्व्यूर्याशवायन्त्र वृद्ध्यायाः पश्रभीव पर्व कुंविया पर्व वश्रानुनाश हिरानार श्वेषश्याय व द्राह्म अस्य स ल्'पराञ्च इयराक्ट्या क्षेग्रायायेयायवेग्रायाव्यायवेग् क्षेत्रयाचेत्राया नश्रमायात्रमार्द्धरात्रन्त्रात्वेत्त्वापुर्वेदावार्त्वेत्रप्त्रमार्वेद्वेद्वे। व्हेंवावदेः पर्व.तशा चेट.व्रेश.व्टेट.वर.तवर.तपेट.क्षश्रश विकृ.त.वेश.वश.तवर.तर. द्या विद्राक्षराकुर्यावर्ष्ट्रराया विव्यवर्ष्ट्राया विव्यविरास् विवानाग्रस्य यवे ध्रिमा क्यायवे स्वायके में देन देन हैं मार्थिय विषय है न है न है न र्दर्भ विष्यात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्रेया प्रवित्वित्रम् वर्ष्यायुप्तव्यम् मार्थये सबर प्रदेश हेत न्याय द्या यवि गर्निर अ गरिस देश यर छ दर्गिय है। यमेगा स ग्री यर पार्टिद वि यद है। दिस वीन क्री क्रिक्स मिन क्राया क्राया के प्रत्य क्रिक्स क्राया क्राया ने अने द्वार क्राया क्राया ने अने द्वार क्र नेटा र्र्मारविट वसाग्रटा गहरामार्थेमान्नेरावसा किंग्री वर्षे तर विशेषा विषयिश्वरात्र हिरा विष्ट हिवास है। विशेषा निर्देश विषयी नुर्वेदि सवर् है ने निर्दे ने विद्या विद्या स्थाप स्था

की त्रहर्भाषु रच है वहूराया में शबु वर्ष विद्धे वे ब्राचा र्षी द्रु बुरावा गानुने अहेर हेबायर वर्गुराववे धुरा द्वेष्वर वा बुवायव गाँ केरण कुट बर पनर पाया पहेर ब्रुप पति। इया वर्षे र पति। हैर दे वह न गुरु देश्वर्षेर्व विर्मेश्चित्रविदःक्षरश्चित्रश्चित्रश्चित्रायः वशा भ्रमार्थेसार्वे नामवानु सुन्यवे प्रमाने प्रक्रिया वे निमामवा वसा के स्वरं र्शीवार्विरर्वरर्वे वेषा देशिया देशिय सर्केना सब दे श्रुप के ब श्री प्यव प्यन प्यव के हो। कु द श्री सा यहा पहेन प्यव के ना द र मुक्षा वित्यर श्रियाय विश्वाय विश्वाय विश्वाय विश्वाय श्री श्रियाय केवा म्त्रिक्ति विश्वानिश्चित्रात्त्र हिराद्दा अक्टिंग्लेख पर्श्वाप अपन जराक्षियात्राच्यात्राद्धेर। यद्गियात्राद्धी लाम्बरागुराङ्गियात्रवसाञ्चात्रात्वरा चैरक्ष्यायदेग्यर् वे इवावर्चेर अर्द्ध चिरक्षण आयाश्वर्ष हेश श्वर्ष वावर्चेर । वुश र्शिवार्स्स्यायां नेवार्भ्यायर्भेर। स्वाप्याये वार्ष्याय्ये प्राप्याये प्राप्याये नर ने इया वर्धे र केन भें है। देने प्रांधे र पवे प्रमा प्रमाय केर बाधन वा देव हेट दु कुव अर्केन नहिंश ग्री दु प्रमाह वा वर्षे र दुन हु व्यार विकार है। रूर.हिट.जबा क्वाउन्तेर.हबाबीकवाउन्तेर.टटा विष्य.धे.क्वाउन्तेर.क्वाउन्तेर. के। दिर्ग्ये हैं र पासदिर पहुंशाया दिवस द्यीवादिर कुवार्य सकेता विसा गु.केल.मू.क्जा.वर्चे र.सकूच । दुकाचार्थे रका.ततु.हैर। चार्थेत्रात्त्र,धेट.ट्र.वह्रेष. गर्मस्त्रे स्र प्रमान्य मेश्राम् । प्रकेष दे हिन्दे दे पुर के दे माया नाम मार्गे ने हिन्। हिन्दे के वर्षे पान्य निवास स्वे ने हिन्। वहुन वित्र की वर्षे के हिन्दे हिन्दे हैं

ने हिना विक्रिक्ति क्रिन् प्रवे ने हिना सुर मन्य के हिना न मुर स्थल क्रिया यव दे कि दे कि विकास के विकास के किया के का किया नश्रम्भार्था । यो मेश ग्री भारते दे दे दे दे दे दे दे हैं दे या के दे हो है न र्श्वराणु मानवाप्यमानदा श्रेत्यव दे हिन्। देव इव विक्र विक्र विश्वेत पव दे हिन। इन र्श्वसायुक्षायासून्यवे दे हिन्। ने प्वविव हिन्यक मुद्दास्ते प्रेति हिन्स स्विम वार्श्ववारा हे स्टायवे ने हिन्। ज्ञाया वार्षा हार क्वायवे ने हिन्। यो वेश ठ्राया क्रिंग्ययायर वहुनायव दे हिर दर्दा । इस मी दुन दर यर या पव दे हिर पर्छे स्किन्यावर्ष्ट्रेरामी प्यवायमा प्यवाही दे किरादि या पर्के साम है। वेषाम सुर सामवे हिरा शर्मना समायका अहिनश्यायायशास्त्र क्रियायये दे हिरामस्यायस्य र्दे हे 'वकर'केव ये 'क्रेन पर्व 'दे 'वेद 'वाईवा या'वे हे बा बा क्यें र 'दें। । दर येवे ' सर्गेन में श्रुपा सुर्देर सेसस सु ह्यूर पर्द दे हिना युषा हेन दु किया पर्द दे हिना सुर र्येन्द्रामिनामायर क्षेत्रायवे दे हिन्। विस्रमायि पुस्रायि र क्षेत्रायवे दे हिन्। युवा स्रें हे अस्र क्षेत्र क्षेत्र पदे दे हे । अग्रेंग्य शर् हिट स्वाय स्रुं हिं अपदे दे हे । यद वना विक्र क्षेत्र परि दे हिन्। श्रुमश्र मुन्य श्र क्ष्य क्ष क्ष्य क्ष ५यव'सुअ'यक्केम्ब'क्केंब्रख'यवे'दे'हे५'म्बुअ| देम'अ'वर्,'मु'यवे'दे'हे५| हेस' कन्या गुःदेशेद। सकेन प्रवेदि श्रेद्र द्राप्त प्रवेदि में भी मार्थ स्था प्रवेदि स्थान्य वर्षःवर्षा बेबानाबित्यात्वः द्वेरा र्गीवात्विरः क्ववासक्तावानीनाया निनेन्यामा सेस्यान्यवा सेस्यामा मिर्चिन्युराववे दे हिन्तु हे। देव्या न्तीयाविराक्तयार्थासळेन निष्ठेन्न्ते पाइस्यायात्मा वेसान्सुरसायवे क्षेत्रा वर्षाक्रियासक्रियाया हिटा हिरा सुरा सुर्वा सक्रिया स्वार्थ हिरा हिना वे प्रार्थ हिरा हिना वे प्रार्थ हिरा हिना

ना लूट्रच्यका स्याप्यका यञ्चात्र्यं याश्वर्त्रच्यायवार् यावियामा वि.प.वीयापश्चरा या अर्केर पर्केर पर्वेर स्थाप अवर हे पर पर्वेष वी अंश पर आपर हो र ता बल.ग्री.इवा.वर्तुरा रहूश.बीव.क्टर.टे.श्रीया रहूश.बीव.वर्तुर.श्रीय.ततु.ट्र. हिन्यकुन्तिकाने। ने दब्धायका ग्री कुवार्या सकेव । ने हिन्य में प्रापकु निहे का की प्राचित्रस्य के स्वाद्ध होत्र विष्य देश विष्य के स्वाद्ध स्वाद गुःदेन्द्रिन्द्रा वहुबायाक्षराद्राये मेबागुबार्झेबायाद्रवादे विदेन्द्रिन्यवास्त्र क्वयंदियरके दर्धि हिर्य हैर्य वर्ष मुद्र क्वयंदि हैं हे दर्श है अर्थे मुख्य वर्ष र्श्ववाबाहे दिए प्राप्ट सुवा अळवा वारा सुवा प्रवेश प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र यवेर्देहेर्दा दर्शित्स्वित्रिक्ति दिक्षिद्रायात्र्वाय्य्याद्रीयार्देग्रायायेष्ट्रम् विवास्य यम्बन्यार्केन्द्रम्याय्येद्रहिन्द्रम् सुन्त्रियं मुर्याद्वर्यायद्वर्यायद्वर्यायद्वर्यायद्वर्यायद्वर्या यवै दे हिद दर्भ कुषाय स्रम्भ दिषा गुवाव मेर सुवायवे दे हिद ग्रीप्य दे वि यथिने वर्गेर पर्व हे हे हो क्रिय वर्षा र प्राहेर हेर हर है। विहेश तत्। बेबामबेटबातवुःह्येत्र। द्रश्रामान्द्रत्तुवावह्नेत्रावाह्यूवःह्युव्ह्यावहेः ब्राम्मायाद्वयायाद्यवायदे इत्यायद्वे स्राप्त द्वापादे व्यापदे व्यापदे द्वापदे द्वापदे द्वापदे द्वापदे द्वापदे व र्थेर्। रहर्येर्द्रा वश्चेर्त्रयास्यायाये इवावर्धे स्दर्ग ह्वाबायावर्षिया वविःस्वायम्भः स्रायः देवः गडिमा विश्वेदः रेग्रारम्यायवे स्वायम् राक्रियः राज्या रवाश्याद्यव्याविवायवेष्वयवर्ष्येत्रावेशयर्ष्ट्रायवेश्वयक्ष्यवर्ष्य्याते स्थायका नुभग्राहेब रग्राम् निर्र्रार् राष्ट्र गुरुष मुज्या मुज्या पुरुष पुरुष प्रदेश इवावर्तेराधेदायकाने स्राप्तेरावर्देन पर्वा श्रेता विदेशायान्ताव श्रेत्रेतास स्रोति द्वा

वर्त्तेम। बरायाम्बियायवास्यावर्त्तेमास्यसार्द्वाम्डम। विश्वेराप्रसासार्यवास्य वर्त्रेम् क्रियाच्या स्वाद्भायते स्वाद्भायहेम् विश्वयहेम् प्रति स्वाद्भायहेम् स्वाद्भायहेम् प्रति स्वाद्भायहेम् प्रति स्वाद्भायहेम् प्रति स्वाद्भायहेम् प्रति स्वाद्भायहेम् प्रति स्वाद्भायहेम् स्वाद्भायहेम द्रयान्त्रवाषायायवाद्रयेवाषाहेव सावेट हेवायवायहवाषाववाहिकायव ह्या वर्षेत्र. लेब प्रबादे द्वार पहिंद प्रात्में व्यव क्षेत्र दे द्वार प्रवेश स्थाय दिर प्रवेश स्थाय दिर प्राया प्रवास स्थाय दिर प्राया प्रवेश स्थाय दिर प्राया प्रवास स्थाय दिर प्राया स्थाय प्रवेश स्थाय दिर प्राया स्थाय स्याय स्थाय पश्चेर्द्रस्यावेशप्रह्रियदे कुष्रक्ष्रण्या हित्यवि श्चेरियवि श्चेरियव्या स्वा ताश्चिथ्तर स्थित्रकी देवा देवा देवा देवा देवा देवा वर्षे स्था वर्षे साव देवा वर देवा वर्षे साव देवा वर देवा वर्षे साव देवा वर देवा व क्ष्राण्ये तथा है स्र प्रमूर्त प्राण्ये प्रविष्ये ही या विषय विषय विषय विषय विषय पर्वेशत्म्भूवोश्वः दुर्वेशयात्रः विश्वः देविषः प्रविदः क्षेत्रात्त्रः विश्वः विश्वः विश्वः विश्वः विश्वः विश्व लट्रिन्नेन्द्रियामी ब्रिट्रियमिस्ट्रियाम्यामी ब्रिट्रियमिस्ट्रियमि वेब यये महेब र्येर झ ने न्दर ने न्देश येब हुआ यये द कुव न्दर व अव की हूट ववः विषेत्र मिहेन प्रत्ये विषय स्वर् वास्त्र वास्त्र वास्त्र वास्त्र विष्य स्वर् विष्य स्वर् विष्य र्देर यदे यक्ते व र्येवे यो ने ब शी ब र्हेन् हेन् या के वा हि न हो व है वा साम दे ज्ञय या न न । बूट र्टें र हे ब र ट र यहे ब रावे बूट य यह व केंब हुर ग्राम्य यवे कु के य ग्रिम केंग्रा दशरेक्षेरमारमाश्चाविर ग्रमाते। यम्मारुमग्री र्योवायिर मी विवर्ष स्वीति । विन्देर्द्रश्चर्यं पर्वेश्वर्य प्रमान्य विषय । दे स्मर्येश्वर्या विश्वर्यं स्थाने विषयः र् 'वेर श्राचक्षेत्र'की 'वेश'की 'वेवार्श्वेर'ररा रगानी श्वाचह्र्य वस्त्र र दिना के पश्चरम्यान्दरः स्वायापञ्चययाः सःयुदे पर्यत् वययान्यानुः येन्याः सुन् येन् तुन् तुन् तु है। गुर्वार्श्वेरायमा भ्राप्तेरायायां विषया महास्त्रा । यदायमानी देश्वेराया रा क्रवाची रवाय दिश्वराया । दे क्षेर स्वा के वायर हिवाय प्रेया वेया वायर या

ततु.हिरा ६ इ.त.थ्री हे.क्षेत्रतश्चिष्यत्वात्वात्रात्र्यहेर.द्रश्नाश्चवत्रहेष्यतु.क्ष्ट्र. नालना मुर्व्य दे। रनाबाय हेव पहेव पवे दुर्गुवा विरू दर्ग स्वाधना वे प्युरुष वयुर्डमची दर्द्द्र हेद यहेद यव द्यीय विष्या मार्थिय महत्य विष्टे दे द्या देवे क्र.स.प्राचनान्त्रभान्त्रभान्त्रभान्त्रभान्त्रभान्त्रभान्त्रभान्त्रभान्त्रभान्त्रभान्त्रभान्त्रभान्त्रभान्त्रभ यायाद्वीरार्वेद्राद्वाययमञ्जव विवायाञ्चयाची द्वा कार्विद्याव दे द्वा दे त्या दे त्या दे त्या दे त्या दे त्या द यार्चियायाद्या वेर् त्वार्थेनाषाद्दे स्थायदेद्राग्री प्रमायदेना तुषात्र सामनाषादे दर दे.श्रवर क्षेत्र तर वहूचा मालव नव क्षेत्र क देवा न थे। वश्चेद द्रश्रामक वर्षेत त्र नियत्र दूर्य वीय वार्डिर वार्थिय कूरे ही क्रिये वार्थित वार्थिय विद्याय नियत् केंगि'नर्। दि'यविव'युयायायकुर्द्रा । षर्षाकुषागुरावे अकेंगि धेव वे विश्वाविद्यायवः भ्रिम् । । श्रिषायः स्वयस्य वर्षे वर्षः स्वयः यास्य स्वर्धा । विवयः वरः श्च पर्व है अस वेग्रय पन् गान्या । पर्ड पर्य है है द र्दे सम पर्व र पर्ट स्वा क्यायर्द्धेर च्चान्येर यदे कुर हे शामाना । दे रामा गुन में हेर खेन हिर पे अर्केन सम्बद्धाः क्षेत्र से दिसम्बद्धाः महिषाणी । वर्दे द्वादे कर विवस वहिषा हेत द्रव.क्रव.वाञ्चव ।रतता.रंब.क्रेंर.केता.वाश्वर.घ.तर्वेश.ता.त्रवा ।क्रेंर.पर्वेद.क्र्याश. विच चर्ना र्यवा स्व हैं हे पकट र्वट र्दा । अर्स्ट्र मार्ये सुन प्यव राज्य र क्वायालया विश्वरमाध्य क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां विश्वेत वर्षेत् वश्रमात्रूट्यामाञ्चर्तामा विवादिर्द्रित्यमा विवादिर्द्रित्यमा विकायमा विकायमा विकायमा विकायमा विकायमा विकायमा तश्यद्वाक्षश्यक्तान्त्रवान्त्यवान्त्रवान्तवान्त्रवान्त्रवान्तवान्त्रवान्त्रवान्त्रवान्त्रवान्त्रवान्त्रवान्त्रवान्त्रवान्त्रवान्त्रवान् व्या दियायान्द्रायेवे येनाबायम् नाहेर केव या दिखानुवानिहेब ग्रीक सके

क्षत्रं या क्षिर्येव सक्ष्यां वदे वद्या विषाववद्या विषाववद्या दिने वा वदे वक्केर्द्रेशस्य भ्रेष्यये स्ट्री लिशक्तंत्रप्रभागुन्द्रप्त्व । हेना सक्ता प्रतित्र स्थापने द्राति द्राति । हिन वह्नाः ह्र्यः प्रवेतः नाववाः स्रेन् द्वायः प्रवादान् । स्राह्मः प्रवेतः ह्वाः वाः पर्ने : स्रावः वहनाः गुरक्षेत्र विष्युत्वस्य १०५ ग्री केयार्य द्राया न्या प्राप्त द्राया द्राया प्राप्त द्राया द्राया प्राप्त द्राया द्राया प्राप्त द्राय द्राया प्राप्त द्राय द्राय द्राया प्राप्त द्राय द् र्मिश्रास्य विश्वश्र श्री वर्ष देवी वर्ष वर्ष सम्बन्धिय श्राम् तर्ष मुश्र श्री वर्षे विष्ण होता है । श्रीत्राच्चर्याच्यात्री मेवाश्रक्षं नेशा क्रूश्ची क्षेत्रं त्या मेश हैं व त्या नेश ने पट.कैज.शक्ष्ये.शस्ये.त्र.हैं र.तृष्टी विदेश.येट.केज.तृत्वं प्रेथं.तृत्रं विषयत्तर मेर् विषय्तर केर ह्या शह जा। जा किर वह वह त वर्वेट.चर्था.केव.वर्षेत्र.क्षट्य.वर्टव.क्रुंचे। रिव.क्षा.वर्के.ग्रेथ.वर.श्रक्त.वर्वेश. 白田下、山门夏之,夏文、口川、为村、高县、周口、奥村、山、安村、日里村、周县、古田、安村、日田、 वर्षिव कुष्व वर्षे होवा । बाह्य हं मा है।।

चित्रप्रत्येष्यः चर्ष्यात्राच्याः द्वायायाः विष्यः विषयः विषय

ふだと、母母、是、白ヨヒ、異れ、母母、母か、知を、日

वि.श्रु.ची.पे.शर्डे.कु.पि.ला कि.वशवा.करे.ग्री.केवा.त्रा.रेतवा.वाबर.त. वर्षायवे अत्र मा देश स्वाधवा क्षेत्र के हिम येव वात्र प्रात्य वह साया वय देत्र वासवा चतुः के आवेश मित्र मित्र मार शक्ति राज्य भागीय। विष्य श्रीय तह्र सार सायाश यवैन्यया । वियायन्तान्यायेवे सर्वेतायेन्ता । निवेतासेन्स्य स्यस्यस्य व्यायन्ता इव क्रियायने हें त्वयायावि निवास सुक्त क्रियाय कराया । यळवा न्दर्भे मुन्दर्भे मुक्षाय्विरात्तव तद्वा क्षेत्र वीशर्भे वाता कथे। । नियया स्व बे इंद्र अ खुरा क्या दे हो दे दे व दे व पर्य निर्देश । विषय क्षेत्र परिर खेंबा अदिव । गर्डी । कुन्द्रसम्भागुन भी कुवारी सकेंग । सामसुस्र देव केन मास्ट प्रदेशमन्। स्रायुक्षायत् कार्यये वाद्रस्रक्षायायम् । । । विदेशः क्रुद् । व्रस्ति । विदेशः क्रुद् । व्रस्ति । विदेशः क्रिक्षायायम् । यत्र्यायवे हेर्न्यार्थ्य वक्ष्याया दुन् । कु्रायेष्या कुष्या कुष्या विष्या । वर्ष्यायवे के'पर्हे । नर्गे दश्यमेवामी दश्यम वस्त्राश्चरमी मानुरम्म देवासन म्बार्चन्नुरख्या बन्धस्यार्भक्रिक्निन्द्रस्या ग्रुम न्नाम् क्रिया क्रिया क्रिया स्ट्रिया स्ट्र

क्रिंक्शरुवा क्रिंन वा के स्वत की क्रिंव या निवास में विवास क्रिंग के विवास क् क्र्राम्यावर्धेरामी क्र्राप्रयायक्षायवे हे स्वापित्रया याक्र्रा याक्र्राम्यामी क्रा क्यावर्त्तेरासविःक्रान्दान्यस्यायवेःद्वाःस्याविषाःक्षेषादेशासुःस्याविषाः है। क्रिंयवर्द्युर वाषा इवावर्द्येर कुर इस्रया ग्री के करा । द्वे पा अवाके दुवा हु देश। दिन्दिब इया वर्डे र अ कु द ग्राम्य। वि न प्रमा वि न मस्रम्यदे भ्रम महिस्याया देवास्य दरा यह महिसा दर येंदी वित रे। इ.शर्गी क्र्रायाध्ययानेषारे रे प्रति क्रूर्गिर्वा सं व्यापिता है। इ.शर्गी क्रूर् महिषाक्षेत्रभी कुत्रप्रेत्र विषय अभाषा विषय विषय मेश मेर प्रेप्त कुत् र् पन्द्रियाद्रायम् अधिवन् पदे हिंदार् हेराये ग्री क्याय हैरा पहेरा हिंदा विश्वास्त्र में निष्य प्रतिष्य । विषय निष्य निष्य में स्थय प्रतिष्य । विषय निष्य निष वर्ग्नेर देशके प्रमान प्राचित्र हेश प्रमान प्राचित्र प्राचित्र विश्व प्राचित्र प्राचित महिषा मानव युगवा द्वाना य द्वान र युगवा य विवाध दि । द्वा है। है स विक्रिया । कुर्यम् अस्टिन् वार्त्र प्रमान्त्र वा के दिरामे कुर्य महिष्य सेर् गुःकुर्भेनंबिरारे याकुर्प्यम्पाप्रस्थाप्याचाने। महिसायेर्गे कुर्प्यया कुरायवायापुरर्वेषायवे ध्रियावेषा चेया वे वायहवा विष्यक्रिषा केवा याकुरा नुष्वया ग्रेश्यायेन्ग्री कुन्यान्विया । ग्रेश्यायेन्ग्री कुन्यावयश कुन्याया नु द्रमेश्वर्यदे भ्रेरा द्रिर वासुसा यद भ्रेश ग्री सावश्वराय विज्ञ । कु द वासुस र्टे. च. २ ५ १ १ विश्व चर्या वर्षा क्रिया मुंद्रा मुख्या मुद्रा मानवा मुद्रा पा चया छ ५ १ ५ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ र्नेन श्वाद्दे प्वविक पान्ना वास्त्रन ग्री क्रून प्यवाद प्रविक स्त्रेन ग्री क्रून प्यवापन विवा

यादेशद्व त्वेशवेशवेर दे वित्व ववश्येश रे दे ववि कु दे विश्व के दे हैं धेव वसासाधिव। धेव व दे नामुसार्टि हा ५५५५ विश्व हर या पा दर प्यापा सा ल्ये.ये.व्यक्तका.प्रेया.प्र.प्र.प्र.प्र.क्ये.क्या.व्या च्युवा.श्र्रा.क्ये.ल्ये.त्र.वता व्य श्रेन् भी किर्माय किर्मा विष्य मेर्थ भी विषय मेर्थ मेर्य मेर्थ मेर्य मेर्थ मेर श्चर्क्षेत्रकुर्कुर्द्वरद्दा वयषायेषारे रेष्वरे कुर्कुर्कुर्द्वरयम् पर्वे । १८ र्षे बि'झ'सेन्'ग्री'कुन'पिब'ब'गिरिय'सेन्'ग्री'कुन'पिब'ययाष्ट्रिय'हे। ने'पिब'ब'घययाह्नब' शुकाग्री पर्ने केन प्रार्ट्सि हिन हिन कायव नेवायन विवासन हो या के प्राप्त प्राप्त का वर्ह्र नुवे नुक्रियं र वुषावया क्षेत्र पवे कुर रहिषा ष्रया देव क्षेर नहिन्य नार रहा लुबे.तब.विच.तवु.क्वेर। चेब.त.ज.क्र्य.र्रा ट्रे.श्र.वबर.तर.वजा श.कैर.ग्रेब. यदे य के व भेर के व भेर के व भेर के व भेर के के व भेर के के व भेर के के व भेर के के व भेर के मिल्यान्यायायावियाहेन् मुद्रायाञ्चित्र मुस्यायाहेन्य यान्ता संसूत्र ग्री सेन्यानिया क्रूट.ता.चधु.वर्ह्र्ट.चेठु.बाद्घ.चूर.चेथायथा.क्रुय.तार.यवा.त्त्र.क्रुट.ताथावचट.तत्र.क्रुर. विषाचेर। देश्वापन्नदादेश्कृतमादेशभी मेट मविषाम् स्टिंग्य पहेन परि पदे हिंदा ५३×अ५.क्री.ल.चेब.५। श्रेच.व्हिब.क्री.चेर.क्रेच.त.ज.व.श.२८.भक्टब. यवैर्देब्राचेब्रायवैर्धेराने। बनार्थिर्धेद्रायम। इवावर्धेराग्रीके कुद्रादनाना। विदे स्र देश स्वायायसम्बद्धाना दि दे दे वा वर्डे र स कु र ्षा कि है नावद न्यास्वासाय्या । रूटायवेदार्धे यास्वितावेसा । व्यासार्दे हे स्वसारे जा नास्त्या देशनास्त्यायदेःद्वेता नहिस्याया द्वे स्त्रेन्यसनास्त्रास्य १८। गुरायसमासुरसाळ्यामहिसा १८ र्घेनी १ साविष्रायसा गर्या गर्या त्तवाता हु शासी वहूं प्रति ही प्र के तूर हैं शामान की रे रे रे रा हैं शामा शाकी रे रे

वनद्यायायहेन्द्रमा वुर्युन्यायाद्व । इत्रिक्षायायेकायाद्वानाव्याचेद ययकुर्द्रा इस्बियद्गुनान्तुना छेर्यायाकुर्द्रावर्द्रा बेरावकी वहर्दे। ने स्र मायत्यायाया कुन निमा त्यायोविर या कुन नुष्या विवे क्रियाये किया ने प्रवित पु दित्र अळत् का अद्यापार्या प्रवित स्थिति विष्य सुगा अद्यापाय कुर्। हा वेर्'र्'वर्र्र्र् वेर'वण्यर'श्रे'वहर्'रे। दे'ने कुर्'न्ने श्रायश्च वे'न्या धुन्या अत्रा য়য়ঀয়ঀয়ৢঢ়য়য়ঀ৾ড়ৢয়ড়ড়ৢঢ়য়ৢয়ৼয়ঢ়য়য়য়য়য়ৢড়ৢঢ়ৢঢ়ৢঢ়ৢঢ়য়য়ৣঢ়ৼঢ়ঢ়ৢঢ়ৢঢ়ৢড়ৢয় तात्रात्रुव,तत्रुव्या चार्ष्वातात्वाचिव,त्येचावान्चवीयान्द्रा प्रदास्यवाद्याविवा रट.तृ.थे। बाश्चि.त.रच वि.र.जबाई.श्रुबाचट्ट.वेबातपु.विर.श्रु.क्ट्याबानबा के.च.श्रक्त्रद्भा दे.जब.क्र्याचायाक्य्रद्भारायाक्य्रद्भारायाक्या बिट विवा क्ष उत्र की के दिया महिशा शुप्य दित्र प्रयो क्षेत्र वा शुर्श्य प्राप्त स्वा प्रदेश प्रयो इं. इंश. शं. तह्र थे. तत्र हिर. वीशेंट श. त. त. किरी लट. मेरे र छोटे. इंश. शं. तह्र थे. तत्र हिर. चीर्यातात्राक्ती श्रियाताह्यायायह्यात्रह्यात्रह्यात्रह्यात्राह्यायात्रह्यात्रह्यात्रह्या मृश्चिर्तता पश्चिर्त्रयार्ट्ह्यायार्ययार्ड्यातासक्रित्रातासक्रित्रात्रयांक्रित्र वर्विन्दर्भेषासुक्षाक्षेप्यवन्ते। देहेगुरप्रदिष्ठन्ते द्वर्ष्ट्रम् गुःदे'स'कुद'क्वेदे'वर्देग'ग्रेद'दु'यक्ष्रद'य'स'थेद'यदे'सुरा वर्षे'यप्पर'से'वर्षर दे। बनार्ग्युं द्वाया पश्चेदायव्युद्दायवे देयायाद्दा ह्वायायावयुद्दायवे । रेअयायायहेन नशक्रिया बुनाया गुम्सुनिस गुम्सूय मिले हेन या कुर निस्य गुप्टे ना मेर्-द्राम्युरम्पर्वाधित्र रत्युम्यायाययायम्ब्रुद्रित्रम्याम् गुःवर्द्द्यान्द्वयायदाय्द्रादे। ह्यायात्रयानुः युवायाव्युद्दायुवायान्वाद्वायान्त्रयान्

वड्रेब्रपंदे:कुर्'झेब्रचेर्'ग्रे'रेसप्पर्द्योत्रस्वावर्द्धेर स्थान्स्यार्याक्र्र १८। श्रुःशवः श्रुववादायवे कु देव देव ग्री रेशया र देव देव व देव र व देव र हूंन याय केरी लट अकुरा भीत रूपाय वर रेपाय तर देवा अकुर तत हुन भीर. क.कुष.चर्व.र्येव.तवा.त्र्वता.व्रंता.क्र्या.क्र्य.वा.वा.वीया.सेव.प्रवाश. वर्द्व कुं बुद वर्षे य केर यवि विश्वाया अस्ति । यदि विषा सुद के के केर यवि । यश्वीषा वर्वमार्ख्यम्रिकेर हेन्यम सुन् व्यापियविष्ट्रीय वर्षिये हेर्गमार्थम भी मुन्यायह्वातात्रात्र्यं विवयानेशायहिषायर ग्रीकिर्ग्री नेयारवर्दा ववया मेषारे रे पर्व कुन् ग्री मेद्यार वाचित्र क्षेत्र किया ग्री मेद्दे के विकासी क्षेत्र क् वि'हिंद हिन हिनाबायवे वेबारवाददा ध्रियावे यहे हिंद दिन से अह शियोवे व यदे धुरा दे प्रविव दु दे प्रविध ग्री इस बागु है के वा ग्री है दि है। दूर र्मियने हिंद्र ने हे र खेद ही को के किया है। सा है सा है हु सा है हिरा देशव. हर्दिशप्र बिवाया वेष हिष्य विश्व विश्व देश च त्या विष् न्याचन्त्रं याद्र रेष्ठिशामुःबुश्यायाथे चने म छेत् यवि को तेषाक्षया मुक्कान्या वकन्द्रम् श्रु स्वान्त्रवान्त्यवान्त्रवान्यवान्त्यवान्त्यवान्त्यवान्त्यवान्त्यवान्त्यवान्त्यवान्त्यवान्त्यव इर वहिन्य नार दिन वी कुर दे अ कुर कुर कुर कुर कुर कुर कुर ने गुर प्यथा नेया रवास्त्रवाद्वेत्रायदेववमा दिवेत्सवाद्वेरास्यावहूर्द् वेमानश्रिस्यायदे हिरा मेबारच कुर्वे क्रियंत्रवा हिर्वायम कुर्ड्याहिर्वाये कुरम्बर्विय रे। विर्णेयहर्भविष्ठिपर्वात्वापरेवापर्वात्यार्थः यहेनापुः विष्यायवेषरे च.कुर्.तूर्ज, नेशर् विचय, नेश्विश्विश्वः ही चतुः नेशः प्राप्तः प्रतिश्वः श्वरः श्वरः 通要机箱分分工四型通过条式四型、日本上、各工工美工、内外第二 美工口与了一里工

षयादेव देर पहिनायानार दुर ने कुर दे थ कुर ग्री अळव दे देर प्यव है। यावद वर्जी क् अक्ट. वासा सवात्त्रीर संस्था वाक्रीर के वारी । हे रेटर हुत क्र्या रेते विसा हिरे. नमया श्रुमायद्वा निष्या । श्रुमायद्वा हे व यायम् द्वा वे सामग्रह्माय ये श्रुमा वयशक्ति क्रियाल वित्रायाक्ति क्रियाल क्रिय क्रियाल क्रियाल क्र वर्ह् र विदान्त्र में क्षुं अदे भुं रे विद्या में शन्ति श से के प्रदेश विद्या प्रदेश प्रदेश विद्या प्रदेश प सर्याकुषाणु मात्रुवाषा सुवि हेर येव कु मि कि र्यं कि राय्य दे स्र प्या है । यदि कु राय्य कि राय कि राय्य कि राय कि राय्य नासुक्षायायान्त्रिया वयवाकुराग्रीत्वे यायम्रायात्रा वर्षयाचे वनापु प्यत्र यवी । १८ में दी विवस कुर केंबा ठवा हिंदा वार हे वा महास दी दी वर्ष षे.र्ह्तावयशक्रिट्रा <u>र्हा</u> क्रमा खुद्र क्रिट्र खूर्य श्राम् ध्रिया व्यव क्रिट्र स्था संस्रित्यवाधिता विशेशमात्वाविशा अकिर्यट्रिशिशव्ट्रियाचेचेरा चर्चर क्रुन् ग्रीशह क्ष्र प्यमन स्थापक्ष पर्वे । निराधिक वर्ष पर्वे क्रुन् स्थाप्य हिर्यार्छे व परियास्य कर्मा हिर्या क्या परिया है या दि से हिर पार्टा पहिंगा त.मृ.पा.कूट.पक्रेर.पक्र.त.च्रिश.से.जूर.ततु.हिरा पर्देश.केर.जुवे.पर्वे.पर्वे प्रा विक्रांक्षांक्षां विद्रायाक्षाचरावहेषायवावहेषाकेदादुायापदादेषा विद्रायाच्या पर्क.पर्केट.त.ज.र्हेश.प्र.क.पर.पर्ह्यातार्टा लथ.लय.ज.हेश.प्र.क्र.पर.पर्ह्या. मन्ता मन्त्रकृत्यक्षिके अस्य वहिष्यि विद्वा द्वित्व सुर्वा स्वर्थित देक्सान्त्र। दर्मायुवाक्षे विद्वाचेतुःवर्क्षःवक्ष्यायःश्वास्यायः नार विन । कुर कु अश किर ग्रे सुब केर प्यंत देव देव देन मान नाय प्र मध्य पर र । हिर

गुःश्रुर्युः द्वः द्वेषशः नेपावः पावः यस्यशः द्वः यवः सः पावः सः पावः सः स्वारं सः सः विद्याः सः सः सः सः सः स वायर्बायदाक्र्राष्ट्रियावेषायहेर्ययेकु्यळवाण्रिरो विरायर्बाक्र्रायदाकुरागुरा श्रव याय द्वारा इ कु न म सुर साय हे व मावया समाव र द र वि र द र हे व र र रे.४२.ग्रीबादर्थाता अ.कैर्ताविष्टबात्तद्रर्शिवास्त्राच्यान्त्र्यात्त्रः किर्ताल्य यशदे द्वर वर्देन यव द्वर कुन देव कुन देव खुन देव या भन कुन भन यश्राष्ट्रवाक्षे वर्षायवाक्षः क्रूनाने ने केन वहुषायवाकुन क्षेत्रायेष गुरानेवा यन्त्रकृत्याधेव यवे धेरा वर्षायाय हैं माने इक्तावावा वर्षायवे इ क्रि.लुब.तब.श्राचित.झी ट्रेंड्र.तर्बंब.त.चंबर.तर्वेब.व.हुंब.वब.इ.क्रेंट्.वेंट्र. म्ह्र्याययायम्द्रायदे द्वेरा दे यद्यायदे इत्यायव कित्रा दे व्वयो केत यान्त्रवादान्त्रीय। ट्रेक्ट्यत्वा इत्यावान्त्रवादान्त्रान्त्रीयान्तियान्त्रीयान्तियात्रियायान्तियात्रियात्रियायान्तियात्तियात्रियायान्तियायान्तियायान्तियाया उर्गी अन्य लेब प्रवार देन स्थापित हो र हो। कुर् हे म्ह स्वयं उर्गी सकेवा मुब श्रेरियोर्द्रश्यात्रायास्य व्यवस्थात्र्र्त्रश्यात्र्रित्यात्र विद्यायात् विद्यायात् स्थाप्त्रस्थाते महत्रायायवेवसायाधेत्रायवे भ्रेता दे द्वराधेतायदा साम्यवे साम्यवे साम्यवे साम्यवे साम्यवे साम्यवे साम्यवे साम्य मद्रक्षेत्र। वर्षामद्रमन् क्रिन्धिक्षक्ष्यम् वर्षामद्रक्ष्यम् वर्षामद्रक्षि क्रिन क्रियायान्त्रिम्बर्धयेयपुर्वाययेयम् कृत्याव्यस्ययाय्तुयद्ये कृत्याये स्वर मेरा देकियान्त्रा इन्ह्रग्रामासुर्यायानुराक्षा चन्द्रकृतावगवानियानीयाने विन्गु देव ख्रमायामस्यायर हेव। वर्गवाविगामस्य वस्य करायाम् द्रीरावा वर्गवा विग'नेब'ने अर्देर'यह्मद्र'य'इसस'कुष'यर'वक्षद्र'यदेः ध्रेर। नदेशयां दे। वर्षः

यव इ कु र के स र का कु र है। अया हि र ग्री र में र स या व में वा खें वा खें र दे। देश विन् ग्री अक्रव नेव पक्षव पर्व क्षेत्र वार्य हिन् छ इसवा पहेल क्षेत्र स्वापा पव राव हिला वयानायायराम्त्रवाचिषायये ध्रिया दे क्रिया दर्गेत्याया युरा ह्रेव. श्रु. देशका विषय ता तत्र प्रवास होता है हि से दे त्या हिंद भी दे कि सा यायम्यास्त्याचित्रादे। मृत्वायाक्चीत्वायराद्वीयस्यास्त्राक्ष्यास्या वार्गीवार्विरमीकेषाहि स्या पश्चिर्मेश्वा विश्वेर देशायाहिर देशवहें वार्ष्या द्वार्वेर पति। देक्षेद्रते प्ता । इस्यापिक्षणी पारकारे याद्रा हिन्या देखाया देखाया ह्म पहुराद्वरामात्व यायमेवरायये द्विम दे के राज्या झे से प्राप्ति व्यापीरा विन्गी नेप्रमाय वेष क्षाप्र ने। नेश क्षेत्र क्षा क्षाप्र मान्य क्षाप्र प्रमुक पर्वः क्षेत्रकार्वित्रायायवेवायवे क्षेत्र दे क्षेत्रका वे मेर्बा हे गात्रायम् व क्वानह्रव परि ह्वें वया न्वें मार वोवान दे हिरा के वहेश मार देश परे छ. प्रतिहर्मात्री अकिर जारा शक्य तहर्र तार सैपरा भी रे त्विय वी केप रा वश्या कर्.ग्री.र्र.ह.पश्य.मी.पश्य. तत्र.पथ्य.पथ्य. वश्य. तर्थात्र त्य श्रीर श.मुटा कीर. बुःयायमागुरा अयार्न् निवानुःहेरान्गवा । वृराक्ताञ्च्यायवे विवसाविः लुषा क्री.क्री.क्री.श्रु.क्री.श्रूप.क्रीया विश्वट.च.जर्यश्रातांब्रश.चे.व्.क्रीया क्रुश.वीश्रूप. यवै धुर री दिश्व वदी वायकद वह वदी वर्दे व छेन यादर दि दे हैं न श्चुवायार्थि अर्वेदार्वे साइवारे वा प्रदा प्रदा विदायी स्विताया विवास समाय देवा प्रसाय देवाया यम् वक्षत्र गुर्ग हें हे वक्षर दर्द वर्द स्वि सुव सुव दु न सुर स है। दे के द वस

५८.८थथ.वीव.कुटा, । वि.शतु.हुच.बुश.तट्रे.ब.श.बूट.तश्ह्र्य. र्रे.इ.वर्ट्ररत्वं.ट्र.व.स्व.तिव.वक्र्वा विट.धुवा.प्रव.विश्वरत्वं श्रापतु.क्रेंटे.वर्ट्र. विष्यान्ता विर्देवायर मेन्द्रान्दा मिन्यान्दा वेश्वेश्वयान्दा । अर्केद्रायर मेन्द्रा यद्देवयद्देरव्ह्वया । विद्क्वदेहेरवह्वया । विषायविष्यावेद्यावेद्याद्यावाववायुद्यवायात्रात् व्यव्याकुषायावात्रीय विषया क्रा विषर के वाषर व के शवाषर या विर व के प्रते खर के वे विष ५८१ वर् देव इ.चर.वर्ष है देना विर्मा रेश से बाव बारा हेरा विरम्भ है या यह्रद्रायःदेव केद्रायुद्रा । वाद्यव्ययद्राययापुत्र व्यवद्राययेवा । कुद्रायवे देशयापद्र कर्षा विषयाक्षियावह्रवायाच्यानान्। गिवाक्षेत्रायनान्। विषा र्षा । द्रयर द्रवाची कुर प्यय गुप्ता कुर ग्री सबर खुवा पर्द्र य प्रेश । स्य प्र वर्वेट्रवरःश्रुवर्वेरःम् । प्राचार्यस्यान्ता चार्यरः चीरातावराज्या निर्वा र्यायसक्षे हिर्द्यासकेन । शुर्ग्युके के कि स्वार्थित । यह कर्म्य प्रमासम्बर्धाः नावश्वा हिन्यायदेःइवावर्द्धेरःदेश्चायक्षेत्र । वितृश्वायान्त्रीश्वश्चा ने क्या नर्द्र मुन्द्र स्वर त्यु पा वि स्ट्रम वस्य रुन् पर्दिन हिन्द्र । श्रि नेय रवान्नवाक्षयाचेराया । बारकाक्ष्यान्नवाक्षयान्त्रवान्त्रवान्यान्त्रवान्त्रवान्त्रवान्त्रवान्त्रवान्त्रवान्त्रवान श्चरमान्या विश्वाहेग्'र्'सम्यायह्यायायारीया किर्यायार्ट्यायुवावहेर्'यूर मा ।श्रापय वा मि.क्र रहे वा या दरा । श्रिव किंदा खे वा वही र या यही है वे श्रापा श्रीर श वा वीच.क्रब्र.ब्रमा.मू.ब्रिट.तथ.ग्रीट.। टेतवा.र्वंब.दर्थ.हंश.वश.वीश.वी १५श.

याम्बेशगादिः स्त्राचा । द्यवास्त्रावर्षायाः स्वाधिरादेश। क्रिन्स्थरागात्रास्त्र बार्कु.स्.लुबा ध्रमाविश्वरमातव् क्वेत्रा क बार्यभातात्री क्षड्रं.है.धे। वीव् अता. वर्चेराम वेरमुगाञ्च नामुम्यक्षियानिदासहर याम्री सूरावा सर्वेद्रायि देवे पासे त्रातर्यात्र्रम् व्यात्र्रोवाचाराया वीयात्राहर्यात्राहर्यात्र हैं। दिश्व त्वर्षायवे यम्द श्रेव श्रेव श्रेव प्राप्य विषय । विषय विषय । त्याया गाव क्षेर मी त्याया नक्षे यद त्याय र र यह तया यह मा मु स्था यह मा न्दर्भ महिषाणिव हैं। व । प्रविष्य है। अमेव भे मुन्य गुष्ठा मुहुन देश यहिंदर हैंब पर्यादेर प्रथा र र यहें हैं। हैवाय रेया व डेचेंर हैंब पर रेया पारिया परिया परिया विरायन्त्राक्षरावद्रःद्रश्चास्त्रान्त्राः विराख्याक्षयावते ...त्रवे सह्री वस्त्रायः यास्यायन्यानेत्रः सार्या द्याय्वेदिनावमेयासुनास्त्रास्त्रा श ग्रम्भायक्रीर्देशहर मार्टियम् र्युवासकेषिके सुमा वर्षकार क्यायन्त्रिमासुसारहर्। नुग्रायनेशायित्रिम्स्यारेश यानिसायित्राम् वास्त्री र्वायान्त्र मान्यावित्र देशायाहर सेवाय के वहीय हानवा हिनायाहर महिर हिन वमेवायार्भेश्वतम्बयार्ट्याश्वराश्वर्ता है द्वापी हैशावस्य श्वराह्यं न्ययायनेषामानेन ग्रीयार्क्षेया केना कुरायहा । । । । व रेपाया कुन के । यव तम्वाय प्रता रेया स्य म्याय म्याय म्याय स्य स्य स्र दि स् वर्षायद्यार्थात्रम् अश्याप्त्रिर्वे वर्षे प्रस्तु वर्षे व ्याबर्टा अवर्षानी पन् भूयायर जेवबा सकूवा मुंचूर प्रवासर र जेवबा ने विश्वामी हेबा सु प्रमान प्रमान विषय प्रम विषय प्रमान विषय प्रमा विवाबाग्री पर्वे । बिरामेश्वेश प्रवास्त्र वास्त्र वास्त्र । बाविश प्रतास्त्र वास्त्र । वाप्त स्टाम्य

इनायम् अर्थाय देव देवि देवि यो देवाय महिला यस है। या महा स्वाप्त पार् में निवानि वर्षात्त्र वाषात्वाच स्वान्त्र विद्युत स्वान्त्र में निद्युत विद्युत विद्युत्य विद्युत विद् यायमानम् याद्वरावेषायर पुर्वे । विदेशयायायावे रेमाविषायी देन् ५.व.च.र.। र्रे.२.२८.वथ.रश.क्य.२८.ईश.त.२व.त४.व.त८.। रश. त्रह्र क्षेत्र वर्ष्ट्य क्षेत्र क्षा क रिट सूत्री हूर रेट रेट त्र लश हे अपूर प्र क्राक्षित्रावया क्रिंग्स्रामित्रयायदेवे प्रमीवायित्रप्राव्याययम् इस्रान्ताह्मयायादीयान्त्री ने साह्मयायम् देसायदिशायाह्यस्य स्राह्म स्राम्य ग्रिट-८र्ट्र श्रामुद्य-क्षेत्रेचिन्यर-क्षाः बड्डा क्षेत्र-द्र्यत् क्षेत्र-क्षान्यक्षितः गाः नक्षुत्य-दर्शः ब्रैर है। क्रूर देर खेर जहा अट र्ना र्वट व सुर क्री र वे कर ने व स्था क्रिंगी देव नेषा गुरा विताद्येव वितास्य सर्दे वायर दी वितास स्वताया क्रेब्रिंग्यर वर्षे विषानासुर षायवे सुरा व विष्ठेषाय है प्रदास समापना हिंता वयागुर-५ अकिना-५ र ट्विंग-धा-कुवा-धविव पशुर-५ विवाने। दे अप्यशुर्वा व रेश-विश्वात्रम्यात् सुन्तर्भाग्यात् न्त्रायुवात् स्वात् स्वात् सुरात् सुरात् सुरात् सुरात् सुरात् सुराया <u> २श्चियाविराद्विराद्विर्धालुग्राकेटा । ५ साक्चिया इस्राह्य स्ट्राटा । प्राह्म</u> पद्र.दे.क्षेट्.श्च.प्रमानमा विश्वेतमाग्रेट.क्ष.लट.श्च.वर्गेट.क्ष.वर्गेटमान्त्र. मुरा नगर इस्रान्य मिय वसान्य क्या नर में स्राय क्या प्रवेश प्रसुर साम देश महिश्रमार्द्धन्तरायान्त्रीयशायाराश्चीरायान्त्रुं दुनाः व्हुंदायाः सरसाकुः हो वायाकेदायाः र देश शत्रमुश्रश्चिर्येर केट सेट सेट हो भी प्रत्ये हैं ये देश देश देश हैं ये प्रत्ये व

नासुरसायवे भुरा अ विस्तरायाया नासुसा देसा नीहेसा गुः हेर्च दर में देसा द्रभाविष्ठमार्स्च्या द्रभाविषायार्यवाषायत्वेषायत्वेषायत्वेषायत्वेषायत्वेषायत्वेषायत्वेषायाः कूर्यग्रीश्रक्रिःरिये.श्ररं बियश्यवश्चित्रायश्याचिश्रायश्याचिश्रायश्याचिरावरा परः वन्यार्ह्रेग्यारेशकुंकुंद्रक्षेत्रकुंद्रक्षेत्रकुंद्रवायाद्र इस्रथासन्तर्भायर निषाण्यर पुष्पत्रवाशवश्य निष्ठा यदि इत्यादि है पा निष्ठे प्रति । मु अळव देर जारी पर्सुराय हैं परा गुरा हुं ८ 'द्र पु अर 'ब्रुगय ग्वर या है अप ग्रुस चिषायायषाच्चरावदेः श्विषायदे कुर्गी स्वादर्चिर दे हिंग्यारे समी सक्त हिराणे वा यद्ग्रायाये द्वयाय हिंदा वर्षे श्रायाद द्वारा देवा यहाँ रा क्रमम्द्रम् पश्च । मायहण्यायदे क्याय हुँ मा सायह्रमायदे क्याय हुँ मा देसः त्ताब्रुश्रामद्राक्षवाद्भ्राक्ष्य्रम् इत्याद्वा दिश्य ह्वाश्राप्त्रभ्राम् भ्रामा भ्रामा यामश्चेर रेश्राया श्चेंदाया श्चेंद्रार् पर्मी र्नोद्या है। रेश्वास यश्चेर पर्व रेशाया ज्याबायावेबाक्टा हिवाबायदे देशाया पर्टेट सम्बावा । विवद्यायदे हिवाबायदे . बर्बाक्याम् । भ्रेषाम् देशायाक्षास्य विद्यात्राह्म विद्यात्राह्म क्षात्र विद्यात्राह्म क्षात्र विद्यात्र विद्या क विश्वराताकाविश्वा पश्चिर्द्रमाश्चिमास्कार्या रेश क्षेत्र रहेवा वी । १८ में ते हैं वा बारे या की हैं वा ५ १ में की दाय या। या शवतंत्रवटार्ट्राह्रेन्ववेन्त्रभेट्नह्यायान्यटार्न्ट्रान्त्र्यात्त्रेयात्ते। देन्त्रदेयात्या ह्निया द्रश्राश्चित्वर श्चित्र में निष्या में या विष्य सिर्य स्टानवर श्चित्र दिया में या महिया गर-रुर-नि-हेब-५८-घहेब-धवे-५ग्रीय-विस्-त्य-र-कुवा-५८-पासवा-सूर-विहेब-धवे-रवाश्याद्य प्राचित्रवायदे स्वाय है र द्रा दे हे शायु आ ही पहुर ये प्राचित्र हो ग वे 'णुर 'व वु 'ठंग्रा धुर । देवे 'तर 'तु हे तर र पहे तर व पाय र कुवार र मायवा खूर । वर्द्रब्रायते संश्वास्त्र मार्थ इवावर्त्ते र वार्स्वाय क्षेत्र संश्

क विश्वामार्ह्मवाद्रशाक्षश्राक्षाक्षाक्षाक्षाक्षा द्रश्चान्द्रशामावाक्षया नासुरस्य या सूत्र । नाबि प्रदेश रेवि नाबस छुवा प्रा वासा वर्गे प्राय पिता स्थापनित । न्दर्भे ने हेन प्रमा न्द्रमाधियानम् मान्तिमाणेन हो। प्रमान्द्रभाषान ग्री'नव्यावययायय। ।रन्य'5८'स्'5८'मेव'रु'स। ।व्य'र्ये८'र्रेट्रेर'येर'रेय' नेयाची व्याचर्षेत्याताक्षेत्र। तैयाग्री नवयाक्षेत्र। क्षयाग्री नवयाक्षेत्र। तैया श्रेश्रशः सुत्र स्ट्रिंग्वत्र मात्रशः सुव्या व्यवः ग्री मात्र शः सुव्यः सुव्यः मुगः प्रमानः पर्वे । ५८० मुक्षेत्राताप्रवाश्वा स्वा शुक्षित्र या गुल्लावा वर्षेट्रवर्ट्रवर्देट्र वश्रुरभी खुषा दे दर्धा दर्भ इन्द्रिय विषा चे वासुस्र दे वादे साथ र द्रा हिर्द्य चबु निविद्यं विष्य प्रम्यु स्वर्यं स्वर्यं स्वर्यं मार्थं स्वर्यं स्वरं रदाविवावकुर्दुवे हेवायाद्दाअस्त्राप्त्र के अस्त्राचे प्रमान्दा हिंदा त्तात्विद्वः स्ट्रिंस् मुस्याये क्षेत्रका क्षेत्रा विष्या विषय । विषय विषय विषय विषय विषय विषय विषय । श्रमभाष्ट्रव स्राम्यायायाम् विश्वायया स्वारायदे व्यक्तास्यस्य विश्वास्त्रवा पद्भारताबादारा वर्षिर वर्षणाव की पविर क्रूर प्र मेन मुख्य दे के सबस न्रिंशयान्त्रिनायान्ते स्यानवि सक्तानि योगा निमानु स्वानवि क्रुर सेसस्य स्पिन् हेर श्रेन्'नु व्यवस्थाने सार्वोद्यायन् सार्गाव की वित्ते होन् । वयस स्थायस न्याय व वानरार्द्रे निवेष वाना नी स्थाय छव पु वार बाव बाव विरामरा क्री ना वेष छिटा। इत्या यविश्रीं अव रिया दिर देव प्रश्र ही अदे ही र वर्षा व का वकर ही नर ही द प्रवे ही र

प्रवास्था स्थान स् भवाश्वमा न्याची अवन्य म्याच म्याची स्वाप्त म्याची स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत हेशक्तर्शिक्षया मुस्मिन्त्रार्थेन्द्यान्सङ्ग्रिनायस्नान्याः क्षेपम् वक्रमा दे.ज.वु.श्रुट.म.र.ज्ञ्म.श्रूर.क्रमश.ततु.श.च्येट.द्रश.चे.ज टु.हंश.सेश. मूर्यावरामुरायदे नरम् वर्दे यावराम्च वृत्व विद्यायावराषु वृत्व विद्यायावराषु व वृत्व विद्यायावराषु श्रु.वाबामुबानवु चिराचरमु इ.वर्च ई.हर्माववु इ.वर्च च केर वक्षा हर. गवै उरविष्यकु र दिया है दिया स्टेशि स्टर्म स्टिश् स्टर्म स्टिश् स्टर्म स र्रे मुर्द्धारा मुर्द्धार है दे प्रमास्त्री स्वाप्त्र रक्षण्या स्वीप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वीप्त स्वीप्त हिरा द्वीर पिदे स्पर्व र पितु स्व विश्व वा सुरा पा सुरा र विश्व र पितृ दे स वक्रम्या देवे हेट पुरहेट वर हिन अर क्रम्ययं उर वक्ष्र प्रत् व दे रहे । गुःरद्यवेषः । शुर्वानुस्यित्राच्यायायेषा वेषायागुद्यायये धुरा यावयः वेर.चर्षुद्र.इ.इ.इ.जबाचाबिंश.चेबीश.टे.क्रेबातब.इ.चर्चे.ब.वे.क्रेबा ट्रे.इ.इ. वश्रह्में हिंद र ने के शाय अपनिव के कि है र प्रकाय दे विश्व र प्रकाय विश्व र से प्रकाय दे विश्व र से प्रकाय विश्व र से स्वयं प्रकाय विश्व र से प्रव र से प्रकाय विश्व र से प्रकाय विश्व र से प्रकाय विश्व र से प्र गश्राम्या का के देश है। दे इस्र के कि देश के कि देश के कि देश के कि देश के कि रुषर विवय याना दिन । विष्य से स्वयं विवय या सी रुषर में विवय या चार्यरा। बैरावयवात्तव्रस्तिवाराग्रीस्थापर्ये चव्रस्थित। र्राम्यराप्तायायाया मु.श्रर्मा द्रमायार मानवा पुर्वे दे। द्रमाया हु है। द्रिया ग्रीका स्वाप्त हा मान्व्यम् हा हारायदेश वहिषास्य मान्यम् स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत मिस्रा वहेंब पवेसा के अवेसा नेब र पण्णेसा वेर ब र के ही र जी सामा

शक्ष्यात् दे। जीवारातविराजीवारावर्ष्ट्याची क्षया श्रीया ग्री पर्ता वास्त्रा ना वास नवश्वश्रक्ष्यित्वत्रे कुष्ठक्षव्यक्षित्रादे स्रमः पर्हेदः प्रवे क्षेत्र। व्यव्यक्षितः स्वादेवः महिशागु वत्वसम्बर्धिमात्वा वकुत्ति है मुमर्टिमाधेव है। है मेंदि इप्त्र श्रु.विदेश। शत्रीय तत्र पर्वे देव। क्षिर विद्य प्रमित् कि तत्र म्याच स्थाय विद्य है. वर्षः द्वेर है। दे इस्रमः ग्री क्रा क्षा क्रुट द्वा हिर स्रम्भा वर्षे क्षेत्रः है। हूँ अ.वर्वेर.जथा थे.चैंश.क्षेच.तवु.चक्के.लुश.थे। कि.लु.चर्ट्स्ट्रत्र दे। विषाम्बर्धायवे द्वेरा देव बरावषा प्राप्त महिषा ग्री इर्रा देव बरावषा ग्रमानेर प्रवितः सम्बितं सम्बितं प्रवितः है। र्रोप्ट श्रेष्ट श्रेष्ट श्रेष्ट प्राप्तिम् श्रीप्रवास हैर प्रवित्ववश्यान्द्रक्षायवित्तेव रेन्द्रप्रवे स्थित हिराने। इत्यो ववश्यान्द्रस्य श्री। क्षे.म् इपनि मारमाणे वाते। विवाद रागुवातु विवादी विवादी स्वादी भी रा नेविष्ठत्वसार्रे कुत्त्वाया वासुया वार्षे विष्ठत्ता नेविष्ठत्वसा न्याया वार्षे विष्ठत है। र्र.किट.चेर्थंत्र.की.कैट.टेरी.श्रर.चिंचश.चेश्व.वश्वश्व.चेश.चेश्व.चंत्राचार्यंत्रहेश्व.वश्व द्र्याबारा से बार् के वा के गुरःक्षरावदैः नृतुः अविर्धे र्वेष्येव है। विविष्यः इसः मेश्यः वहुवा वावश्यः विद्याया ने वशकेन करा वसाया परान्यों ने विश्व किया हिरावि नियु स्वि वर्ष वकराववाधिर। व्यवास्वापिर्द्वान्त्रियान्त्रात्त्रेत्राचे स्वरावकास्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रा वययः खुवादे व्हर वे वा वावे वावके त्याय मिन्न सार्य स्वर वर वर स्वर हुट कु व.शरे.री र्.भेर.बी.शरेरे.त.रश.त्रा.वर्श्यश.तव्.हीरी वाष्ट्र.त.व्.श.श. र्वे.श्वरं बर ब्रा बेर के प्रात्त्रेर है। जहां हुं की र्यट क्षेत्र कि हिर्मा है पर में वायमें पर्व श्वेर। मृति वादेर सा बद्द शुद्द प्रवासदे द्वर द्वरा गुद कुर द्दर

या वर्ष्यात्व वर्षादे विदेशायववाया वयदाची नाषा हे दायस वर्षा प्रयास द्रा इवावर्ट्ट्रास्त्रस्यम्ग्रीवर्षेवायवे इत्वेशयर्ट्ट्रायवे हिना वक्के नुषासु देवे वरः वबादे निव्याक्ति है। देव क् अक्षव क्षियादे व्याद्व श्री स ने बा पहेंद्र प्रवे हैं राव हिंद इ.रं. धरे विराश्रेश्वरात्ववतात्त्र्यं इ.श्.चिर्धामी बराक्ष्यं रे.विषातात्र्यं वे व श्रुव से द दे दे वे प्यस द्राय दर्गे द्राय दे श्रुव देवद के स्वयं वद वरा स्वात्ववद्धर्भ्यक्षर्भु कुर्यदेवर्वर्ष्यप्याप्यववद्धरकुर्भुरक्ष्ये च्र-पहिषार्रे क्र-पहिषाना वशक्षी हिन्यवि द्विषा क्री स्नावि दिष् यायबेदा बुदा कु बिदा। या बुवा शाक्ष दी दे रे रे या यु क्र असाययय प्रशासके दाया विदे अब्बर्गियः वित् । दे वहा के बाद अक्ष्रका की अवविद न द कर न न द वि विगायन गाव ने पन्त देश विषय विश्व विश्व देश विषय देश विषय विश्व वि सुन हिन्यागु उपायुकानु वर्षे कवायामासुकानु पुरायदे महिना वर्षा वन याक्चर्यम्द्रायां क्षेत्र क्षर्याद्र्यम्य व्यवस्य क्षेत्र व्यवस्य विष्य स्यायायार्ध्वमायहेव स्वायायाञ्चे। देव स्वायत्याव यात्रे हित्यायाया नेव स्वायाया रुष्ट्रिय्युषास्य म्ह्रायास्य स्यापास्य । त्रायास्य वायायाः स्वापाय स्वापाय । ह्य र शेवा है। देवे स ववे पाव शापाशर पाव शायव। देवे के देवे खुश वयुर चि स् र्रेर्नार्श्वाञ्चवाक्षात् वाचावर्ष्यायावाच्यास्य हेवाच्यास्य स्वाचित्राच्याच्यास्य स्वाचित्राच्या वर्षान्त्रभाक्षेत्रभावा देवे के देवे खुराषु इत अर्घा स्ता के दि स्ता सामा से दि सामा से दि सामा सामा से दि सामा

यायासहस्राम्बर्धायसामुन् कुं हु। देवे इत्वे मन्द्राम्बर्धासम्बर्धा देवे के देवे विश् हिंद दि । विश्व बु.लेश.चश्रश.२८.ज.विच.तप्र.चेथश श्र.च.रेच.त.थश.चर्द्र.तपु.चप्र.ज.क्र.च। ४श. तर कें.वा लट रचा तर कें.वा रच रें कें.वा हरा तर कें.व हे लय जा जा. नगरन्बरक्षरक्षरावरक्षम् नेवसनगरर्थेक्ट्यन्वन्दे हैं वेरम्बन्यः वार्दै धिवा केशा हु। नसर में कुर इन किन में हो पर वाव बाया वार्ष धिवा केशा हु। ने पारेश होना चे न्या र न्या र की या वस गी पार्डि में प्येव के र । । इस्योग र पालव स्थाय । वयर से गाव शय वे साधिव के विश्व देश वे वा वे व्याप दे हैं व देश वे वा प्राप्त प्राप्त कर वा वे श सम्राचीर स्त्रिर्देश विदेश र विद्या के त्यम स्त्राची प्रति विद्या के त्यम स्त्राची स्त्रिर्देश विदेश व विना ये प्रति र ये प्रति प्रति क्षेत्र । क्षेत्र । प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति । प्रति प्रति प्रति । प्रति प पश्चेर पर्व विवा थे। वि रें र्र र हे या इ स्वर् पर्व वा इस स्वर पर्वे विवा थे। ब्रु में दिर वाबर वाब्याव पविषय है हैं सब पर्वा वो वाब्य स्वय प्रेत्र परि हो वा वे इस्रम्यान् मार्ये भ्रिम् दे स्मरम्बि द्रिम रेवि मार्म् मार्म् वामान् वायम्यायाया क्रियाचवा नर्गियायार्थिनानी मैनानुः सायवाकुत्राया क्रियाचा मानुः निमान थि मेशक्रिं सुदे सुवानि दिन। मेद्र पुः स्वये कुर से स्वयं पिति विनाय दे बिरायर्वामी स्वित्वादी त्रिया नेषायर दी प्रवृत्ति हो । वि प्रवि प्रवृत्ति । व्यागी नव्यास्वानित्र वायवाया वास्त्र अव। | द्वीया यापित् दे। ह्वाया देया मुहिन्यायाक्षेप्राच व्यहि देवे व्ययायान वर्ष्ण्य प्रमुद्ध दर्वे यायान दिन । दे द्वर प्रवर

र्ने महीय में या प्राप्त में निविधान में निविधान निविधान में निविधान निविधान में निविधान निविधान में निविधान में द्रयामार्ह्रम्याद्रयास्यास्याम्या हिम्याद्रयाम्याप्रसम्बद्धयायाम्यस्य मर्र्याचेष्या रे.चेष्रेश.ग्री.र्षेष.क्षात्रायचरता । ग्रे.चेब.पे.क्री.तर्पुर्ह्चाश. देशनम्द्राचित् दर्धेदी व्ययेदणी कुर्द्रिव वस्ययं उद्राक्षे भे भी देव दुर्व विद्या दे वा क्षेत्र हिंदा हु व द्वर्ष प्रदेश के भी हिंदा हु दे व अपने के भी वहें दे हैं दे द्रवाशामी के से दर वार्य अपर्योत्। दर में है। बर बाक्य क्या यसवाय में ये सुवाय कुर ग्रीः क्षेट्रें हेन् के प्यंदे ने बार वा खे प्येना ने अर्केन हेन 'हरा हेदे हान बाकु हाग्री' वरे व के द्रावे तथे के अध्यापन के अर्के दे दे दिया दे निष्या के दिया है निष्या के द्रावे के दे के दे के दिया के दे के दिया के के दिया याचिना खेदी सर्वेद में दिन है। दे त्यादी पदे हिंद दिने र से दिन ही से से दिन से दिन से साम किशायत्तवाशात्तव्र सेवाशाकिर ग्री. जेशायता तर् हिंद र वियाश्वर ग्री. जा. जेशावी हो जावा मि अर्टेंब देंब दर्भ देवे खुम्ब प्यकुर की माइमब की मुंबे स येम मे अर्टेंब देव ५८। दे नहिषा मुन्तुनाषा सु ५६ सार्या निष्या या है विवा ये वे सकें हैं दे ने प्येत है। ।दे वान्ने प्रमेन प्रमान्ते सार् हो रामेर हो एक स्थान हिंदि है दिने मार्थि ने मार्या के प्रेमा मार्थि के में मार्थि के मार्थ के मार्थि के मार्थ के मार्थि के मार्थ र्येदे यो ने सन्ध योगानी अर्कें के देव दिए। दे गाँदे सार्ट पें द्वेर से द से हो द या हो गा विवासकें में माध्य विदादेश पदेन महिषा दि रामे हैं न्युस्यायायाधु न्यान्युर्वायकासुन् कुवे यज्ञ दे राष्ट्रे यो विषय विषय स्ति न्या विषय गुःरेंहि केर पुनि खण्णेगामी अळेंन रेनि परा ने गिर्देश अद्यायर श्वराप पायहेन वया ग्रिन्सस्यन्यम्भूत्यन्ता वयान्यस्य स्थित् वेतायेत्रस्य दिन्दिन र्वे। ।ग्रेश्ययंत्रे। श्चिम्पर्द्राये स्वये स्वये स्वये स्वयं म्यू ग्यू ग्यू स्वयं स्ययं स्वयं स्ययं स्वयं स

१८। क्षेट्रावर्ट्यमेन्यवेस्यवेस्यवेद्रावेद्रान्त्रम्यवेद्यान्याः देर्वाच्यक्षानेकासुर्ध्वविषायवस्य देर्द्वस्यायावद्दर्द्वायायायहेद्दर्वा विना ये 'न माने 'के व 'य दे व 'य 'वे 'वे ना ये वे 'य के व 'में व 'पे व 'में। य सु त 'य य। ही ' वरे हिंद द्वेर केर ग्री खे के वनर या वरे व वहिषा द्वेर केर ग्री खे के वनर या देन्त्रभुद्रायायास्यावाणुष्याच्यायायावद्रात्त्रभुद्रायस्य प्रवस्त्रवाचेत् ।द्रा यायाम्बर्म हिंद्यायम्द्राया वदेष्यायम्द्राया वदे हिंद्द्वेर सेद्रावम्द यदे। । ५८ में है। अर्दे स्वाया विषा गार पदेव पदिव पविर पवि सपा दिया न्तेव र्ये व्व व से प्राप्ति के दे प्रमुद्ध के प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त के प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्र हे हिर्पे कुर में कुर 'वा इव 'वर्डिर मरिया परिया नेष 'ठ्या राय । दिवेद पर र्शेट हैं रव ववद वा हिन दन के वदिर सदस के सव वीवा कि स वदन में से र यात्रवाचर्त्रिम्ययायम्। विस्रवास्त्राम्यविष्याचित्रानुत्रम् हेरा हेरावसुत्रापदे हेरा देःलटःह्नेटःयःदेःवाङ्गसःवर्हेदःदेवाषाकुर्वे द्वसद्भे द्वःवविःवेदःदे। रटःकुदःयः यब कर वार बना ने पर्ना येर र र रेर्ट्र परि वार बना र र क्षु खुरा परि इस पेर्र कुष र्हेर्द्रपाद्रा बेबबाउँबायावर्देर्पविमात्तुरावहेबाह्बामाववामुबाहेर्द्रपादरा र्म्वे निर्मे निर्मे त्या स्तराय दे निर्मे का प्रविष्य प्रविषय प्रविषय प्रविष्य प्य प्रविष्य प्रविष्य प्रविष्य प्रविष्य प्रविष्य प्रविष्य प्रविष्य श्राणवायतः ह्रेन् ख्रावशाणुः देशाववायायायाः ह्रेन्या प्राणवायाया हेन्यायाया हेन्या हिवायाया हर्षेत्रा तथायक्षेयात्राक्षेत्रात्राक्षेत्रात्राक्षेत्राच्यात्रात्रात्राहेत्यात्रात्राहेत्यात्राहेत्यात्राहेत्यात्राहेत् पविष्ट्वेर देणर स्रवशयदेर र्ह्रेट य दर्गे दर पदे रहेट हें र व शुश्रागुट स वम्राया ग्राम्मार्स्रम्यविदेर्वराधेदेः देसायसः हेराया धेराम्स्राप्त

तरे हिंद ब्रिंग वर्षेद गुदा देव या के स्वति विदेश विदेश हिंद हिंद हिंद हिंद नेन केन विषय देखें विषय है। यर हैन हेगा यद विषय दिया हैन रहेन गुरान्द्रित्र पर्वेश्वरापि हिंद् हे जिन्न निहें हे पिने पारे कि पारे कि पारे कि न्दिन । धर धुन हेन पदे न्द्र पुर दिन देन के न्द्र निक्ष में के स्वर्ष में के स्वर्ष में के स्वर्ष में के मार्थ क्षेत्रप्राचित्रपावे त्युषा श्रेश्रषा क्षेत्र श्रुट्षा कृष्ण है । या व्याद विदेश विद्या कृष्ण विदेश हिंदा श्रि कुवे यदे या अधिक है। धे रेवा या वनाव दिना ने कु द वा यह सिदा यदे छे र दिहा हैन सर्व सुक्ष नु हैं ना सम्बे जना केन ही में च प्यान केन के ने प्यान सम् वस्तर्भात्र भी क्रिया व्याप्त प्राप्त क्षेत्र । द्वापा व्याप्त प्राप्त प्राप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त पर्नेमस्यायसम्दर्भविष्टियायदिस्यायकाने देवे सूर्व देवे स्वास्यायवः येर्पवे द्वेर विराद्या अर्थे वा सामा विराध स्थाप स यद्रायमान् द्रायमान् वायमहेव यदे यदे याया दे साथ व है। दे यहे द्रायमा मु अवश्रासुष्पराधिन्यवे भ्रेम विवास स्वार प्रत्य है। देवे इस्ययायदे कुदायायदा सिद्यदे सुरा देव है इस स्वित्व वा मुक्त द्रशानु हे स. शेक्ट्रेट . रे वे श्रद्ध रे वे विश्व स्थान सम्भाव गुन्दे केव हेर जेव हैं। विश्वस्य हे बुद्द सुन के जिवल महिल मे खुस स्था राजानहें था बन निरान्त्र तोना तथ कि श्रिक्त है के निर्मा के नुष्य के निर्माण 37.454.६८४.०० तेग्याच्या १ वर्षा व्याचित्र्राचे विष्युत्राच्या नलना वया विश्वासाय ने हिंद द्वेर के दा हैं या के ले वया ने या ना नव वार्ववायायुवायावा कुर्द्रियावदेशायावित् । विदेशाक्षेत्रक्रायवे हिंद्र

यः धेषा । निर्धार्यः वर्षः यानारः धेषः या । निषारयः वर्षः नेषानु वरः नानाषा **न्छेर'बेन'र्'छेन'य'यने'हेंन'न्छेर'बेन'र्'हेंर'यवे'रेन'र्'वेन्य'ने'बे'वहन'ने**। वरे व क्रा व्यव र क्रा क्रा दे विदेश हैं के दे के र है ने व्यव स्थान कर है का गुःचदे च दर्दे दे दे दे दे विश्वायवे केश रवा विश्वाविषा विश्वाविषा विश्वाविषा विश्वाविषा विश्वाविषा इं.वर्श्वश्रातालध्तरं कूट क्रिट क्रिट क्रिट क्रिट क्रिट क्रिट क्रिय वर्श्वश्राताल क्रिय क्रिय क्रिय क्रिय क्रिय वरे व र्हेट देर हें व ब रावे में ब रव ग्री ब ड़ेब रा रावे ग्री ब ड़ेब हो ब जी वरे व हें ट तत्.पंशास्याग्रीश् इषे तत् हिष्रां श्राचिशाग्री अथशानुषे यधिष तात् हिस लट. इव क्रिया ग्री नदे ना या श्रेद विव क्रिया देना बाव बा क्रिया हैन विक्रिया ना नदे । क्रिया क्रिया कुंवायाधिवाहे। देखेवावायधायाम्यस्यस्यीयाददे हेंद्रा हेंद्रियायादे हेंद्रा देशवाष्ट्ररायम्द्रायाक्षरायदेक्षराद्येत्रात्रेत्रात्रक्षेत्रप्तात्रेत्रात्रात्रेत्रात्रात्रेत्रात्रात्रेत्रात्र गुराञ्चाकेरागु वकाक्रक्वाची नवर्षिकरा क्षेत्र हे इद् भुक् गुपरे व उद्याव हैंस्स गुर वित्र य वश्ये में व व व है र है। य र द्या हिर हे द र प्रव है र प्रव र प्रव र ल्नाययया दियां ने या अर्केना हे दाय अधिव दें विव हे हि दे प्राप्त विन म्बुशक्षायं तर्ता विव्यत्तवर्षम् विषयात्रम् ताह्मप्रात्र विश्वा तृर्विरत्यरवेशत्रे। विष्ट्रत्य श्रुत्ताच्याश्चित्रवेश क्रायास्य यवे श्वेर व्यापाय विवारे वदे यक्ते येवे ये ने स्ति हिंदि देश युवानु विरायराम्ब्राम्यायायायायाः विद्यानायाः विद्यात्मायायाः विद्यापायायायायाः कूट शब नश्चिमापर शे निहा विकान सेट मानते हिरा वे वा श्वेंब शेंद हो हे है.

क्रियाम्यायाच्याः क्षेत्रप्राचित्रप्राक्षेत्रप्राच्या देवर्ग्यायः श्रेर्वेत्ययः प्रमुत् ब्रास्तर वहेंब की क्रांहिंग पश्चेर पर पहले पाणिक पर्व की रा विश्वापायरेव. विष्यात्रेराकेराकेराकेराकेराव्याचे स्वयायदेरावह्रव के विष्यादेरा निस्ट र व है। व जान मार्य पदे व दे व जो है मार्थ मार्थ पदे र जिस्स वक्षव कु वर्व वर्षिश्व दे क्या वर्ष्ट्र मार्थि वर्ष व्या निष्य है । वर्ष वर्ष निष्य है । मः सर्वित्व व्यक्ष प्रमान्त्र द्विर दिश्व विद्यात्र स्ति विद्यात्र हित्या क्षेत्र । विदेशि विवाधायायाचे सायाया मुदायदे हिंदि है दिवाधायदे दिदावाधायदे दिन पास्यायदे रामहत्र कुर्देवन्यामनेवम्यवेष्येणामायास्त्रेवर्देवर्णवा ने यण्यान्नेवर्वेदर्देन्याययन्ता र्म की द्रिमाश्या महिशायित। क्षेत्राया यह देशाया प्रति प्रते र्मेन की द्रिमाश्या ५८। इ८ वह्ना में देव में वेद पार्यया निवस सेद। वेद पार्यय में प्रवित पर्य कुर म्रामात्वराचर्त्रम् विकारात्रः सक्ते निर्मात्रम् स्थान्या हे या सह्य ना द्वी या पर्मा ह्या पर्मा । इ नुन्दिस न्वस य वितर पहल की गुन हैय पित्र य ने स विवा नी सकेंन देन विना दे.व.तर्म्ह्रेट्र.त्म बेश्यात्रार्ट्यत्र्यूर्ये व्यवत्मी श्रवर विट्रात्त्र श्राट्यात्र्यं श्री श्रवर शुर्दा देव के दूर बाब वा हिंदायान विषये अव र सुरान वे राय के शुर निर्मासुर्येत्। ते स्वयंत्रेयतेव निर्मासुर्मासुनासासुर्द्रसार्यम् विनायासुरातुत्रम् यात्री वर्दरावहात्र वर्दतात्रिका वर्दिका वर्दि र्बे। क्रिन वर्दर पहन गान हैन पदेन पा हुं अवे सुदे हुं प छे र ग्री रे नाम पाना विना वर्षायवि। गञ्जाशासुवे कुष्ट्रव र्र्याट्या धवायवे से वाय हेव व वाय हुया या ब्रिट्मिवेद्मावद्वास्त्राध्याध्याध्याध्याच्याः व्यापञ्चित्याः व्यापञ्चित्याः माबन् वायहेब हे पश्चित्या वयस ने स रे के र हे र होर हो माबन वायहेब बस

पर्सित.तत्। रिट.तृ.थ्री चांचेबल.सेंद्र.द्रवाल.वट्द्र.केंद्र.वाङ्ग्ट्र.हेंसे.तीश.शे.ट्रश. ने। नर्वा मुंचा के व मि देवा का कव समा मि मिंदा मुदे व मिंदी व यहेव वर्षामानव देव ग्रेन प्याणिव निमा ने सम्प्री रेगावा प्रमुखा वा यहेव व्या पश्चित्र-र्मुश्रायाञ्चमाक्रेत्र-यामहेश्रामात्रेर्-यम् अर्क्ट्र्यायामाद्वेत । यम् श्वितः विषायायायर्देन्याक्ष्रम्भ्रामुः क्षेत्रायदे अळ्डान्या अव्यास्त्राप्ता विषा सुर्वे देवाया वर्वि कुवे मर्डे में अध्येष कुर के विमा अपमा सुअ वर्दे र पा क्षर की असंद र पेवे इस्रायान्त्र मु । इते द्वापर्यु रादे । यदा दे । यदा दे । यदा स्वाप्त । देवा पिक । इते पिक । इता पाद रा विनायायायदिन्याक्षराकुरिकेयारिनायनाक्ष्मकाकुष्याद्वावन्त्रेन्त्रीयसायायहेत् वयान्नर्यायवे अळव द्ये धेत्रयान् दिल । अर्रेनायमाळम्याग्रेयानेयाञ्चेयाधेत वा देशनक्षेद्रायदे तुराद्रात्मेश क्षेत्र शुन्देश वहेत्र पर कद केद वस वहिता र्टेन्निजिनार् दिन्द्रिकेर्याययार्वे श्रीयायवे अस्त्राद्ये अस्त्रात्ये अस्त्रात्या कुत्र अवये दिन महवामि महिना हु केन सामाने विवस हु सामु महिस दिनि हु में केन र् स्वाधायवे रेवाधाय देवे कुवे वास्तिर स्वार्ट प्रते हिरा हा सामा वासि सारा हिंदा यवै अळ व दिये अहर हुन दिया कुव अहर दि प्राया निव में सिंग हैना णेव यर वया क्रियाये अकंत निय अध्य हुमाना विन्ती स्ट प्रवित की पुरा की अकंत ने क्षेत्र हिन्य मार्केत यस क्षेत्र के प्रत्यति के कि प्रस्ति है कि प्रस्ति के कि प्रस्ति के कि कि कि कि कि कि र्ट्सिन्डिन प्रवासिक प्रति स्ति वसादे स्तर पर्हे दाया प्रवासिक प्रति साम साम प्रति साम

गुनःहे। कुन्देरियायायदिन्याहराष्ट्री इदेरहवावर्ष्ट्रिराने हे स्वाप्ते स्वापते स्वाप्ते स्वापते स्व ब्रुट्जूट्जूट्जूट्जूट्जूट्च्याच्चाच्चारविष । पात्रवाशः श्रुद्रः देवाशः पट्चे कुदेः गर्कें चियारेवाशय ५ कुर्व श्रेयक ५ प्यंत्र सक्त ५ पे ५ हैं सम्बन्ध या मुदाप विवा ५ वित्र तत्.ह्येर। देश.च.चक्स्थ्रश.हूंचश.ग्रीश.वीट.चत्.वीट.श्रश्चश.दश.जश.वीच.तत्.शक्ष्च. 5येश्वास्त्रयायेः क्रुंश्वयेः सु'दे श्वरशः कुषः ग्रीः मा त्रवाशः सुवि हे र व्यवः मीः मार्सिर्यः धिवः हो। मुत्रमान्त्रवास्त्रमान्यान्याचेषाः स्रेतमान्त्रेत्वान्त्राः त्राचानुन्याः स्राचानुन्याः स्राचानुन्याः स्राचानु न्द्रमार्यद्रायायमा न्द्रनास्यदे युमारेमान्ने पुमासु द्रियाय विकास र्शासुनाइनास सुदे कु हो र यर हैं हे भेर यर रा र मेर साय खर हैंन वस य नर यदे है र है। युर हैं व यश हिर पेर मुर य र र हें न यश विस्र श न सुरा व ब्रेनावब सेन दे। श्रिमा अस्ति प्राप्त विष्य प्राप्त सेना परिष्य यात्री विव श्रूट्रा यात्र त्यत् क्ष्यूट्र विविद विव त्याय हेव विश्व या या निवास स्था क्ष्यु विश्व या विविद्य विविद विविद्य विविद विविद विविद्य विविद विविद्य विविद देशायर मुदाक्षे क्रि. भी तर द्वाश्या दर क्या यहा विश्व मित्र या क्षेय्य पा वायहेब बंशामाश्रवातात्वात्रिर तव क्रिय्वच्य प्रवेश प्रवेश प्रवेश प्रवेश । यायायअप्तुषासुदेवे सुपासुअप्तुप्वसूर्यापादावेग । वास्रयायायायर देरावसूरा प्राम् विषादे द्वावर्त्ते रातावार्त्ते श्रव् सेरावर्ति राववार्ति राववार्ति प्राप्तावार्था गीव कृत्यदेव पाश्चि अहिंदी | वित्याश्चित्र कृतायाये श्चायता है। । दे हिन दे अव अव क्वायगुरा हिंहित सुर्या दे हिन्दी केवा मार्य प्रायत हिरा मार्य प्रायत है। क्री.इ.चर्षा,थर्,श्रेयश्राश्चेहर्,थरे.ट्राष्ट्रश्चश्चात्राश्चात्राश्चर क्षेत्र श्चेर र्वट त्रार त्यर तथा.

यानार विना नि वे दिये देव की विद्राना सवा की अहर हुं सव हुं सव हुं या ने साया वारवा वसायवे क्षेत्र। विदेशके विवस मेस निर्देशके ग्री वा वर्ष वा वसाय स र्श्यासु सुर्थे अर्थे मुर्चे पर पुन हो। यर देव हेन पर रन्। यथे स्रवह सुर्द हेरा वियानु पर्वेद व्यवसायी केषा वार्षावा पायाय मुखा निका वा को दायी व्यवस्थित प्रेर हेश विव पु वर्षेत् द्राया ग्री केवा या वर्षेवा या या की हिया यह या यह या वा किवा दिया र् पश्चरम्यम्केषायराम्बरम्यान्वित् दिवः कुःस्कर्षस्य धिन् विवादिः षाःश्रम् र्राप्तः यद्भवाषाविषाः पुः यद्भाः पुदेः श्लुः विदेशागुः रेग्रायः वद्दे पुदेः वर्षः र्वेषिक्षर्भित्वेरसेन्दुक्स्यासुखेन्यसेन्दिन् हिन्सा स्योत्रा सेन्सि विर दे निविषारिक्ति दुने र से द 'दु 'वस्य सु 'येव 'य' विद यये 'कु सक्व 'मी स विव यये ' ब्रिमा व । गासुस्रायाने। सर्ने स्मार्याने संगावे खुग्रस्य व स्मिर्ने संग्री वाष्ट्रायराक्षेराणुरा क्षेत्राचेराणु क्षेत्राचेरायाष्ट्रायराधेरारे। यराखेताचेवायवेर अंचरा शे.लूटे. पुरारवारा तरा हिंद् हुटे त्रेश्चा केंटे हे.ह्वा श्रावहिश की. संचरा शु'णे मेश ग्री द्वा कु र्रा वह्रम य र्रा केर्पार्या वा वा यावर माया वर्षा न्द्राचे यदे यस हिंदि दिया हिंस हिंदि है । विशेष हिंदि है । विशेष हिंदि है । विशेष हिंदि है । विशेष हिंदि है । विवायवायमाक्रम्भाम्पानुन्गुः कुर्न्ह्रायम् विश्वायायश्च्राय्येष्ठ्रानु यदे प्रशाक्षित्ते दे वर्षे वरत बेन् ग्रेप्ये नेसरे यट श्रेन्य मे के वास्त्र प्रमान कर महिस ये मार उर में सिन्या सुरा ्रिंशके रद्रित्युवाहेन्यक्ष्रिक्ष्यद्रित्क्ष्रद्राविवाहाकुत्रा वे कुपाट रुद ा है दिवासर से बार्ष मासी है है है बासा तर वह बाता है है। वासा वानवर्रियक्षेत्रक्षात्र्वार्व्यायत्त्रिया वित्रत्तियात्र्रात्त्र् र् अर्थर्रो है ये अवेदा हित्य विषय विषय विषय विषय है या विषय विषय है । इत्त्रिम्भ्यश्रद्भा केंद्रियात्र केंद्रियाय केंद्रियाय केंद्रिय केंद्रिय केंद्रिया केंद्रिय इंसिंसेंदे र्स्नेय मुस्य न्वर र पड्डिय परि र्झि के यह पर्ट र पड्डिय र पट्ट र स्था स्था साम र प्राय र्देन्द्रायमा अविदायमुद्दायामहिमार्श्विदाग्रीमार्गयन्विदा ।हमार्गुणदार्दाणदा नुविर्वेर वीं विनिष्या किंदा वही स्वयं वहिंग हे व सर्वे व व व व व व विन्यं यवै वहिना हे व स्वर्गे के र हे न यश स्वत् व व व र्यो । निर र कुर र र र यस व व व व कुंबिटा दिःश्वात्वायायदिवायायदि क्यायाया विश्वेषायादवायवषादेरावेयवदि नियात्रित्व्या । सर्वः नहुत्रित्रेश्चेश्चेश्चेश्चर्यात्रस्य स्वाध्ययः स्त्रित्रस्य स्त्रास्त्र चार्यरक्ष.तपु.व्रेप रे.क्षेप.विष.शूर.श्राण्ये तपु.चरे.क्षेर.रिचेप.श्रर.ग्री.ज.ज.प्रा पश्चित्याया देंदिवःयुषायायावत्र्राप्यस्व प्रतिष्याय्यस्य अवत्र्यः पद्गिवः परेवः विश्वन्ते ने स्वाद्या विश्वन्ते विश्वस्ते विश्वस्ते विश्वस्ते विश्वस्ते विश्वस्ते विश्वस्ते विश् ते। पश्चिर हैनाम निरुधाना दिर पर हैनाम रेस की प्रस्म माने निष्यर र्ने माशुस्य न द स्थाय है प्रविव नु समुव पर प्रमें स न में स्याप माशुर स या न दिवा वक्कै'व'त्र'इस्य'यासनुब्र'यवे'त्ये'त्वे'कुे'वेद्र'व्यववाचक्कित्ववाचर-देर्त्रात्यः अधियं ततु र्या अर्था वी श्री जीश यश्चिश पश्चिर ता जाई हुव जीश जाया वर्ष रे निर्देश न्त्रेंबायवे क्रिम्ते। देर मेट जबा स्वार्ट्स क्रिया लुब्दुश्रायदे तव दूर है तकर नेश्वा श्रीरश्रावशा हर प्रश्निश वा श्रीवशाय है वा श रेम्बन्यमगुर-दे-दर-पर-पशुरमायदे-ध्रेर-हे। दे-हेद-पमा दे-पम-श्वर-त्तर्यक्षः दर्भे दिस्यवित्रं क्यायभूत्रायः वर्षे वित्रावित्रं दे हिष्कायः

म्यामा । देश मुमादे प्यादि में प्राप्त में प्र में प्राप्त में प्त र्वित्रायायम्वायायायाद्वार्रियम् विवयमावित्रमामुःदेसास्य द्वारायम् नास्यामु सुनास्यामु स्यामावमा ग्राटामास्ट्रायदे सुर है। रेया स्यामास्या वया ब्रेन्य क्रेन्ट है दावना गरेन । इता गरेना हे द नुष्टु र है प्रम्ता वेश निश्रम्यये भ्रिमा दे व निविदे रेश स्र ५८ मुन्त्र मुन्त वेषा श्रेषात्रषास्यानियरानु दुरावदुरावह्या देनायह गविवे देराव स्वार्णी रेसा त्तर्ता तक्क नर्द्र वाशवामी संत्वाशमी स्टायक्षर में नवाश्या ने वाहित सेयश ५ स्रेग्र भ ग्री देस या ५ मा वक्के या वेद मार्थ के मार्व वे वेद मार्थ पर्या की प्रेस या ५ मा पर देवे कुर जुरा दे निवेद हुं जुरा गुरिया परिया देश दे दिना साद निवी हुं जुरा महिशासकें के दि प्रविक रुप्तके पार्य र महिया के महिया के शासु रुप्त दे प्रवा वर्षायदेवर्द्धिःवीश्वेःक्र्याश्चिर्द्धाः वर्द्धाःश्चरवार्द्धिराश्चर्षाश्चिरावः वे गविदे क्षे प्रमुख क्षु विवर्षे । यद विषा गठिया वी यद दुष गी कुद विद्युद वह वा मेर्पिक विवासिक विवासि बूट अके द विच ना सुरु दे लगा ना दे ना नी से सस द से ना स ग्री दे सा या द ट । निहे द ग्री । द्रियासवाद्गेष्वयायाञ्चायो द्रियासवायी प्रशासन्त्र क्रावसायी वासायि तास पद्माना ने वा वी विष्या मुन्दर्भ के व्यय की व्यय सुर में है दाय वा नुवाय है यह यने विवानिका में भू वा भु विवादी । यावि वा रे आ स्वि स क्षर अहर या वा के शास्त्र। र्विषयपेरिदे । इयादर्विरयमानिवरिक्षयम् निर्देशस्य महिन्यर वार्यामीरिका ल्यक्षेत्रस्यायायमहेव वस्य द्वायर्भे रायायम्बिव रेस्स ल्वे देन वायसम् रेस क्तियीर मुख्य मेश्यापर मित्र करिया करिया मेश्वर मेश्वर मित्र मित्र

सहरायायाक्रेंबारुवा न्वीबायार्येन्ने। इवावर्धेनायबाविवेन्त्रामधुबान्न इसारा अर्वे तातु तारा ती से वार्षेत्रा व सुराया ताता व दे थे व था व व था वीर्य से व श्री व श्री य केंश रुवा दर्ने शया केंद्र दे। वना नरिना नि नि हे र केंश हु। के प्यस केंद्र श हु। श्चिमाय। विविद्यविष्यः स्विद्याद्देयाद्देयाद्देयात्वे स्वर्यात्वे स्वर्याः विष्याः विष्यः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष् वर्त्त्रम् मुर्ग भ्रि.क्यर.र्ट्.क्य.वद्.श्री.वर्षेश्चरी श्रिर.तुर.व्यवश्चायाः सकूवा. वरिष्येयार्ने । व । विश्वयायाने नेवानु कुर वर्षवे हेवायारे यावन्याया वश्वया यथ्रत्यात्वात्वर्त्रात्वात्वर्त्राक्ष्वायवराव्यात्वत्यात्रात्ता वात्रार्व्यात्रम् गुःसव रवायावव यर दे दर पहुन द्वीस य दर्ग हैवास रेस दिस पन् परि ५८ में है। देश खेव अव ८वा केट श शुं अव ८ खुवा य वे ४ कु ५ व्यव है। दे प्यशः रेश्रास्याअन्दर्भावनायायायायायायायायाच्याक्षेत्राक्षेत्राचेराकुर्पायया क्वामुसाझ्यान्याम्भन्याये भ्रम्भन्याये भ्रम् पर हुन प्रथान अपन् हुर नेषापद न्यायद स्वाय प्रवाद ने वा प्रहेन वा दिनेया है। देशम्यमा नयवास्वावनुषायवास्त्रान्ताः चेष्या विसर्त्रक्रिं क्रिं क्रिं ह्रायचेर्याव्या विः श्रुद्धात व्यवः ह्र्याय प्रत्र वि । गर्थरम्यत्रक्तेत्र। क ।गर्थमान्त्री इत्तर्यरायनास्यान्त्रान्त्रान्त्राह्मास् वतिरश्चराद्रश्चातिवृत्यरिशवाताक्ष्टात्वर् हेंब्राता है विश्वराष्ट्रीयाश्चर्रा तिथे. र्टा भर जैवाबाकी दुशास वर्षात वाबवाय दुर्श शेष वंदर यो वाबर हिर्या तत्रंत्रयात्रंत्र्वात्रया द्वापवाया वर्ष्ट्राय्यक्षा ग्रान्द्रवायात्रययाण्या

विग्राद्याः चित्राते कुर्तादराया श्रमाणी यविरादरा श्रम् विग्राद्या सम्मान शु'येव'यर'देद'य'येव'वें। अ ।वाशुक्ष'य'य'वाशुक्ष। हेवाश'रेक'दी'दि वें। वें। रेसर्ट्यारम्हिमा क्षेत्रास्त्रिक्षेत्रास्त्रिक्षेत्रा । इट्यायानिमा इक्षेत्रा इक्षेत्रा १८। रेअ:इर:हिर:दुन:वर्दुखंवार्वी ।१८:र्घंदी इक्ट्रावेदु:दुनाय:१८। देव.मूच्यावावादट.ब्रुट.पर्देश.क्षश्वावाश.ह्यश.द्रश्वावाजीश.ट्रप्र.ट्राट्र.विश. ततु.द्रश्र.त.रेंच.थे.वर्षरश्चरा हु.इ.ह.तुर.वरु.इश.शे.वचरश.थश.श्च्र्य.तुर. रेअ'स्'न्न्। इसमानगारेसप्र हेर्ग्यारेस'युषान्वेद'न्ग'न्वेद'में 'रेसप्र पर्वश्यव्या त्वाद्वेव देशयाद्र र्ये र प्रवादे र व्याप्त स्था क्षेत्र वायया मुं चिनासर पश्चित्रेर संस्थापाद राधित्ता हिनास रेसावा वुस द्वेस द्रारण र्वन पहिलासेसल र्वन की रिसायर पहुलानमा सेसल र्वन हैं जुला देरे. नामया बुर वहना है रेस पायनि र पुरान मा कुर देन मा समा उर रेस हर पहना क्री. जुरे. तुरे. तर्रे त्रिशात्र हु शासी तयर शायश क्री. हि. श्रेश हूं त्रा श्रेश हिं र देवा. नु न्यस्य के ने दे दे दे प्यस्य के के र दूर र र र यस सम्मान न र र । किंग के या रे यविव प्यह्म यान्ता हिषासु ५ व न्यह्म प्रमा । हिषासु ५ व न्यह्म । हिषासु ५ व न्यह्म । डेश ग्रम्या डेश म्युर्ययये धुरा देव यम्द सुवाद्य द्वार द्वार प्राप्त द्वार वाय वि वेजा क्रेंब केर दे। रग्ने पश्च राय प्रकार महिषा महिषा महिषा के सामी : वश्राप्रश्रामान्त्रसाङ्ग्रीत्राम्या वावा द्वापान हुत्वा व्याप्ति दे। व्यापान विश्व हुत्रा व्याप्ति वा ग्रेश त्मार्वेषाक्री अर्गाक्रिया वर्षे म्यायामी वहेषा मुरावह्यामी सहसा इब्द्रिं किर वहें ब्र महिश्य महुश्य यथि व यथि के मा विश्व यथि के द र्पु प्रवित्वार्यामु व्यक्ति स्वापिक स्वापिक वारा स्वापिक वारा विश्वापिक स्वापिक स्वाप

क् वर के द्वार विवयाया वर्षा हुन क्रिंट वर्ष क्रिंड हुन यन वर्ष क्रिंड क्रिंड क्रिंड क्रिंड क्रिंड क्रिंड क्रिंड याद्यदाद्वराद्वराक्ष्य वित्रुत्रुताव्याकुताञ्चित्रयायकुतावित्रयाय श्चित्र या मुजायर हिन्य हिन्य रायदे रेसाय इससास में में रेसस हिन्य हिन्य द्रयाययर या द्राया हर में द्रियं रेश शहरा है। इस हिं या हिं य श.ही.श.इशश.द्री.वर्वेट.ततु.हीर। ट्रे.लट.श्र.ह्यूच.ततु.बेट.वर्देव.हूच.त.ज.ह्यूच. यदे बुद वहुव विवय देव दुवर्ष दिवा देव के विवय हर्म् र वे र खेर की र वे र वह न सवाया हैन या हैन र वे प्राप्त की र विवाय के र बुद्र वहुव विवादा वार्षेत्र की विद्रा वासवाद हार्वा प्रवेश की व्यवस्थित पर्मेत्र की सा हे। बर् नु पहुन कुवे प्यानहिक्ष का यहाँ वका प्य बुर नु पहुन कु सेन प्यवे कुरा देस तायधुन्तर् द्रि क्री द्रिन्धिषय स्यापा ता द्रियाया त्रियाय विष्ठा ता विष्ठा ता स्थित प्राप्त हिन्दा प्राप्त हिन द्वीयात्र। देखायायिवेदायदे देव कु देद् मार्थया दे ज्वीम्यायर्थे द्वास्य सहय प्यस पर्याचेत्रायते क्षेत्रवर्षाक्षेत्र हित्यदेव स्थान् वायर दुर्मे वायर स्था हेव क्षेत्र गुरु पहनाबाद्दाक्षेत्र क्रियामीरेयामीरेया उत्राद्धिया व्यापादादावीय ।दिया याचा बुद्धायते हुं 'जुद्धाने प्रमुचाया मारका क्षेत्र का बुद्धाने प्रदेश का बार्गी हुं र खेव का की हुं यदे भुरा दे सुर्युदे हु 'युषार्ट्चिय याया सेस्रका द्वेत सहर हुना नी द्वेदे रेदि नामया वियमक्ष्रिन् वर्षे द्वेषिक्षिक्षे वर्षे देवेष्ठ वर्षे वक्षरीयानुन्य न्यान्त्राच्यान्य द्वार्यान्य देवार्यान्य विकास देवार देवार विकास विकास देवार देवार विकास यदे भुरा बेसबर देव सहर हुग हैं या या दग देव हैं ग है या गुसर ही हया वर्त्ते मुक्त क्षेर विव कार्य हैं विवास मार्चियात हूं व रें वर्षे रे क्षेर विव . इ.भरेटे हूं अतर श्रामूनाट र वैट वश्या कर तक नुशाह तवुष रे क्षेट निर हैंट.

श्रेषु सम्पर्व द्वेर। दवाद्वेव र्स्रेवा र्क्केवा वास्त्रा मी क्षेर विदेश सर्दे त्व्सेवा न वा वीसा र्वेद्रास्थ्रिवे इवावर्धे महिंद्रात्वे पूर्वा प्रविद्याते। दे वाहु हैवे सम् स्थाना साविम नावव र् कुर सूर या क्विर पर्वे र्वे राय वे स्वार के सा क्विर के साम के स्वार के स्वर वानश्चित्रस्यात्रसावसामुद्रस्यात्रस्य मुद्रमुद्दित्वरे प्रम्मेन द्राप्ति । दे क्रमश्राह्मस्राह्मस्राह्मत्रुप्तास्रित्राधुःस्राधुःस्रास्रक्षत्रुप्तस्याद्रीःस्राह्मस्य देशक्षाच वर्षेयाचे अध्याचिषात्वाच हुंशक्षाचे शाहूचेशक्षाच्याची व्यक्षाता वर्षात्याता यर येव हो दे यादे द्वर देवेर येदा दे यक मार शास्त्र के देवे का मेर कुर व श्चायन् प्राचित्र वित्र । अ । वासुस्रायायायित्र । निवायायासुस्रामी किराने वित्र । वायश्चयः स्वाद्या परेवाया विषया मित्रा मित्र वानासुरा वुसार्वेदा सुर्दे हेव हिरादे वदेव वाम स्वान्स्वा द्वा द्वा द्वेदा नास्र पश्चम खुवार्खी । दर्धी वार्षा विषय देवे देश महिषा मार पित दश्चर या मि से दि रेअन्दर्भुसन्वेद्राष्ट्रन्यर उद्देशी में रेअसा युसन्वेद्रभी रेसप्रहेदा युस न्वेब म्री प्रवान् है। ने स्रेर प्रश्रसम्भाष्टी प्रश्न प् वस्यासु वेद रहेवा वि । दूर में दी वुस देव देव में प्रेस देव देव देव हैं ह्निशःरेग्रानु वर्देन्य स्मिषावर्देन् स्वास्तरनु व्येन्यात्र । स्टायुन्याय्याप्यान्येवः वाम्ब्रीन हैं नश्या बहुबागाविक व्यन्ति। हैं र हिन्दिन स्याया व्यव हैं विश्वा हर इयाञ्चर भरायवे पुषाद्वेव द्रा व्यवेष र्हेट हेर् हेंग्यायाय पेव यवे हेंट केर्द्रम्बर्धायये विवेषात्रुटाइयास्त्रराम्रायये शुक्षात्रवेषात्रा कुटात्युयारानुगरा

गर्डित्रश्चा क्षेत्राच्या विष्याचेत्राच्या विष्याचित्राच्या विष्याचित्राच्या विष्याचित्राच्या विष्याचित्राच्या निवन्दर्वि'यथा न्दर्ये'ग्रुअ'म्ब्रुन्देश'मु: श्रूम्यश्रु'यद'येद्र'य'ग्राहेव् मुः अःह्वाबाद्रभाकुः वुषाद्वेव प्यवायवे मुद्रा देशव हिंदार्या वाषायवे स्ट्रेवः क्रे'निर्देग'देर'वर्रे हेर'ग्री'रवर'वीब'र्रे से ब्रुक्तिवाब सु'ड्रेर'वर्रा वार स्वावत र्यः अर्वेषायान्य वाह्यान्य वाह्यान्य वाह्य वाह् चर्द्याच्याच्याद्वेत् द्वा द्यायात्रवाद्याचकु वार्यवाद्याद्याद्वास्त्रात्त्रास्त्राच्याचित्रा त्त्रे ह्वाबार्म्यात्व.वीबार्च्यं त्विबार्म्य हिंदित्वर्द्धिवासी.विश्वासीववार्ट्टा स्रथेशात्व. क्रिन्द्रम्यायाया वर्षे नायदे गुन्यसम्य क्रियास्य प्रमायन । र्वार्ट्रिश्चेंपबटास्रराष्ट्रमा विटर्ग्यदेखेवाबेबाद्यावेवायुद्धमा विविधा युष्ठस्य वि दुष्य वा र सह द दि वि स वा सुर स य य दे हिर दि । वा दे स य से दि स रैसन्द्रायुषान्वेषाष्ट्रायराज्याम्वेषायार्गिरेसषानेषात्। पश्चिनारेसायर्श्वेसषा त.ह्र्यश्चरश्ची.क्रिट्र.श्चरविट्रालयत्त्रवाचिय वि.चया.वे.पञ्चेट्रास्त्रवा.सुत्र त्रात्र्यात्र्येश्वरात्राह्म्यात्रात्र्यात्रीत्वात्र्यात्र्यात्र्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्र रेव कि मुंदे कि प्रेर कि प्राप्त कि राव कि र वर् या व्यक्ष देश यवे च्चा वन् पुर्ये दे व्यक्ष ग्री मुन दे न ग्री या वेश या वश्या था त्रद्भाषात्रद्भाषायाद्भाषायाद्भाषायाद्भाषायाद्भाषायाद्भाषायाद्भाषायद्भाषायायाद्भाषायायाद्भाषायाद्भाषायायाद्भाय लट्-चेत्रीवशक्त्रेर्व्यव्यविश्यान्द्रिय् तत्त्रियः स्वाध्यान्त्रेर्व्यत्त्रेष्यान्त्रेवाषाः ठव द्वयमायायर युक्ष देश ह्व यम् ५ दुर्ये दे व युवे सुर में यिव दुर्व स्वर स्थित स्वर स्था

र्वेटश.तश.वीश.क्रथ.प्र्ट्ट.ततु.होर। प्याश.त.धेर.र्वत्त्रेट.यो.श्रशश.श्रशश.वीट. क्रमणवदर वुषाणी श्वाचन्दर् व्येद्रो दे क्रमण स्टिन स्थि स्टिन्य परि कुन र् अर्ट्स्वर्यस्रे स्रिर्पे द्विया दिस्वर् पेवर्षे प्रविष्य प्रविष्य प्रविष्य देखास्यानी सूर विवानी साद्येव कुर्दा दे इसस्यायाय दे हिरानी कुरायहया वसा इर पर्नेस्स्रायाने दिवेन पर्व देन विन प्रवे देन विन ही हिंद पहुंचा वर्षा सुदर्भे दिन प्रस्राद् क्कि. अक्टर म्हारा मी मिना अप्येर पान या मामा अवापिर एकुवा मीया ग्राम या मुस्य या है। वर् दिर्दे प्रविष्यं विषयाया व्यवस्त्र राष्ट्री देवा स्र रवा व्यवस्त्र व्यवस्त्र विष्टे रिष्टे र्निष्ठाने विषाम्बर्धर्यायदे द्वेरा चविष्यायाचे रुम्मार्मम्बर्धरे युषा क्रेत्र-देवाका वाक्षिया वाका दिवा हो। १८८ में या वादे हिंदा वी कुका वाद्य वाक्षिय विकास वि सुर्थशतिरात्राप्राप्राप्ताकःचश्राज्ञाज्ञप्तात्राज्ञान्यावेष्याचेष्यश्राप्ताज्ञावाप्रवाशाज्ञाच्या धे वशक्षिम्याय वे सुदार्या सार्या सम्यास्य क्षिमाय वे त्युका द्विव प्यव कि अकुदा यथा शर्र्र्य में दिर्गू सिम्माद्री । शर्म क्रिमास्य द्री राम प्रमाना क्रिमाना क्रिमाना क्रिमाना स्थान यदे हिरा दे प्रविद र पदे हिर्मी कुषापत्रपायदे प्रमध्यपि रे रे प्राप्त स्राप्त स्र है। तिश्रायध्यात्र्याश्वाक्ताक्त्रम् है। वश्वाह्मश्चायात्र्वे।वश्वश्चाव्यक्षायद्वे त्याचित्रायद्वे युषान्चेव प्येव हो। ने हेन यथा सहै श्रुव विषा सुप्य प्येव। । सुप्य प्याय सहै सू यागी । श्रेष्ठे में सार्गार से प्रेष्ठे । विर वे क्विया सर रा प्रविष्ठ विष्ठा नास्त्रायवे क्षेत्र देवविष्टित्ते हिंदानी क्षायन्त्रायवे क्षेत्र अकेट्रिना रेपेर था <u> च.कर हे. ई.श.ईट ब्रुचेश टैंचे त्र</u>ान्त्र येश प्रचीश के कि में हे थे था है था ता वे श्रीची श्रुचेश शेयशद्यर क्विंययंदे युषद्वेव योव है। दे हिंद यश है हिंदे क्वे यके द हिंद रा

ग्रिटा विटाक्रियासेससान्धवीयावित्रासकेन विसानस्टिसाधवीया है। चल्च र्ने चन्ने क्रिंट में किश्न चनियात्र यो बेचिश्र श्र्वाशाली वास्त्र प्राप्त सिर है। र्र. इ.श.स.व.य. ५ . इ.स. १ . य. ४ . य. १ . य. ४ . लवाही देखेरालया वाज्यवास्त्राचार्याच्याचारालया । इ.१८.२.व.१.४०.२. वर्सुमा वेषानाग्रम्यायवे भ्रिमा देशाव द्याया देनाया वक्ते व स्वस्य स्थाय स्थाप रेगमः वः संस्थितः सुरम्भितः पुरायक्रायाः । धुना सक्षार्याः स्वारायक्षाः वह्रवायाधेवार्त्री वित्राचरुप्तरामुग्रवायागावावारामहिषावार्रेहे विदेराचर व्यवा र्वेद्र'ग्रम्बर्गण्ट न्निवस'वर्देर'क्षे मेंद्र'च्ये क्षु अक्षद र्थेर दे। रग्राय देर खे. शुःरिम्नाद्दान्त्रम् स्मानीप्ताद्दान्त्रम् स्मान्यान्यस्य स्मान्यस्य स्मान्यस्य स्मान्यस्य स्मान्यस्य स्मान्यस न्वेन कु.कं.ता.केश.तर है.थ.तके.टेंबा.ठी हुत.ईंट.टें.टेंवे.वाच.कं.श्र.वाधेश.तसेथ. यस्यकुर्वे विश्वरेष्ट्रिं । विश्वर्यात्रे। वदे हिंदि वी कुस्यन्त्रयदे सक्ति हो दुर क्यामेश्वास्त्रमा द्वाप्तिया वृत्राप्त्यास्त्रा द्वायीया श्रापर्भेटाता झे. रेगमान्दर क्विराय के ने केन रेगमान्दर क्वियाय वे या राय के कि केन कि कि वया देश्वर इयाय स्रेर्यम् । वेषाम्युर्यायवे द्वेरा द्याय रेग्यायकुर्ये देणरारेग्राष्ट्रय्दुविरा द्वेष्यविष्यकुर्येदेण्यराद्वेषयविष्ट्रयद्दुक्षा इयासूर हैं स्वेर रवेद माने रेस पनिद स्पर्व दस में दिव माने सेंगा मा मुख्द यदे हिरा ग्रुअयात्री यदे हिर्मा कुषायह्म प्रदे हिंग् सुअर्थ रेत द्वर प्रदूर द क्याच्यामिक्यान्त्रीहि देवायुवादारावेदान्यमा अदाम्ब्राहि हि हि तकर

नासुरसायवे धुरा दवेदाना विष्टे ये दिला नास्य दुरा दुरा है। युकारना येदान सुका क्रायर द्याय है है या शुर्म की दिव पार्व र यद् यदे ही र विषय है। क्वें या शुर्म ८८.र्बं त्वतु श्रैंच.ता.तृ.हूं.हं.वाशेश.८८.र्बं त्वतु.हं.हं.तकर.वाश्चा.पे.हं.श्रूंश.ता.वे. चाबर क्रेब रेनाब निर्मा ने जुब रिवे अधर मुन खेन खेन हो क्रि से अप वा स्ना र्रे.हे.चोशेश,र्रे.हे.तकर.ज.र्तव.तव्य.व्येज.वीश.वर्द्य.त्यायायाय.हीमा सं.य.थी जेश. र्वेद्र, हें श्रच्चित. पे. तर्, हिंद बी. केंद्रा तथित. तत्र तीवा. केंद्रा ती दिशा ति हैं श्रच्चित. वेद्रा केंद्रा वी केंद्रा ति विष्ण ब्रैंन'नु' हुन'केर'। देवे'क्रेब'क्रिय'नार'मर' ह्यस्य कर' प्येन'क्री' मेथ' यस पर्ने हिंद वीर्टिन्दरावक्षपाने श्रीराहुराणेन है। कुराक्षित्राथम। दवदार्घावकुर्घात्रसम्बर्धातीः यदा । रद्भावह्मान्वस्य वस्य उत्तु। विद्द्य पर्से स्रेर् हुर्यस्य । स्रि श्रूर.बैर.त.पुषाचनरार्ट्री द्रवाचित्रवात्तराद्रीता पटाक्रीश्रूर.बैर.क्री.चरे.क्रूर. मी किश्रायध्याता वात्रेषावश्याचिराया वहूर तत्त्रा तीवास्ता वा श्रूपाशाया से रायक्षा वर्षा क्यावर्द्धिर विषयामानव विवासि क्षुर क्षे या वर्षा वर्दे र या स्वी या विवास वया विरश्कियात्त्र क्रियातालया विदेवातात्वयात्विय वेशाच पराट्री द्रया विवानु निर्मे निर्मे निर्मे निर्मे निर्मे का विवासिका निर्मे के साम निर्मे के स्मिन स्थान के स्मिन स्थान के स गुःइवावर्ग्नेरःबारःदेरःलुवं वं तोबार्ववर्षःह्रम्ह्यःगुःवश्वावेव लुवं याबानिय। ४८. क्रिंच, रहिर ब्रुक्, क्रिक् क्रिक् रहिर क्रिक् क्रिक् क्रिक् क्रिक् क्रिक् क्रिक् क्रिक् क्रिक् लर्पाने के प्रवाद प्रवेष्णव प्यम । दे प्रत्यस्त्र स्व मु पुरा से साम मिव सुर स

गुःचरे च के चरे चवे प्यव प्यम । दगव चरे दे गहिका दर व वेवा चवे हु र हिर्पा चल्रीन्त्र विराधराध्यक्षास्त्र क्षेत्रयादेत् याक्षयाद्वे क्षेत्रका क्षेत्राच्या विवादावे त्यावा । धेन केटा देगा सुमाने खुमाद्येन सहस्रामान गार्देन दमायदे द्वार्सिम स्वार्थ । दुगा यायान्यम् अ द्वार्मिम् स्वार्मिम् स्वार्मिम् स्वार्मिम् स्वार्मिम् स्वार्मिम् स्वार्मिम् स्वार्मिम् स्वार्मिम् त्तुः इवावर्त्तेत्रः प्रदेशः र वश्यः क्षेत्रः हे वक्षः वी द कुवावानावश्यः वशः वशः देव । क्षियायायायुर्वावत्रक्षाक्षरावीः द्वाः । ५६१ ५०४वत् वे ४ कुष्यादरा ष्ठिर्यम् क्विंम्स्यार्थेन्यार्भन्यार्यद्वार्यदेन्यार्याः विः द्वेत्रादेश्चित्रात्रा विः ग्रन्त्रर्भ्यायर्क्ययन्ता युवाक्चिष्वन् कुर्त्तेवन् नुर्वेवन्ति स्या स्पर्वश्यायायमा व्याप्तर्त्वात्रात्त्र्यात्त्र्यात्त्र्यात्त्र्वरात्त्र्वरात्त्र्या व वेशम्बर्धरश्रमवे द्वेर विर्यर स्वयं वर्रर हैं हैं वे सर स्वयं देर प्रेवे र्से.चर.प्रेर.ज.श्रम्बाचीयात्राचाचेषात्रे क्रियान्यात्रे क्रियान्या देव केव केव साव देवा हा। वेब ५८ । खुद्य अहिर गवि अदेवा वदा वेबा सेन्सप्त्रप्त्रप्ति । दे द्वरप्तित्रम् रक्ष्युर्ष्यस्य दक्ष्यस्य दक्ष्यस्य दक्ष्यस्य मन्युराधियाययम् न्युर्द्धाः ने विद्यत्वित्। ने यायहेन न्या कृत्त् शर.विवास.पांचस.इश्र.वार्थश.हेर.ला विवास.त्य.स्वास.क्ट.इ.तेवा.चस.श्येश. क् भेर अर्द्धरश्चर हर्या वर्षा । वर्षा नृत्य वर्षा से तेवा की के वा वर्षा मुनान्त्र, स्वाबाबी, बावशवाकी, वाज्ञ श्रामान्त्र होता है। के विश्वश्राक्ष होता होता है। नगर्ने न मिन्न के नियम अर्थेर ना नुष्य न न ना नियम होत्र हो नियम नियम

विश्वश्र बैट.व.ज.इश्र.तर् क्रियाव श्रर श्र.ववर व.क्रं वेद. बैट.व.वकर ब्रेट.ट्र. नेषायर हे द द में बाही वया युरायबा दे द बाम बराय दे हो गाये है। । रव हु स्यर मेरियापविदा । यह से समार्था प्रत्य प्रत्य प्रत्य प्रत्य प्रत्य । प्रतिस मेरि शेर्पियाविषासुप्वमुत्रा ।रेप्पराम्बुर्पिसस्य पिसा । ध्रिव विमास विका तर र्ह्न । श्चिम कु क्ष पु खूट पत्री । हमाय के दिर प्रेर सेयायर छ। । दे प्रवेद र् दे कि. जूर्यातका रि. च.के. चे. पर्वें ट. च.वे । विशेषातालय त्र प्राप्त प्राप्त देश। व्रि. ब्रे.इम्यायर ज्या क्षिर प्रथा । स्रावय द्वार प्रदाय मुख्य पर्ता । क्षिर व्रे दे प्रविद ज्या तकार्थ। वित्रः क्राक्षः तुरः रवः बूदः व्या हिनाकाद्वे वित्यः विकायरः विवायरः विवायरः ब्रेन खेन क्यापर नेया चिनापया वर्ण यथा नहिया थे । दिन पर ब्रेन सेर वर्षात्रापदास्त्रा । गर्षायायास्त्राषात्रे त्यायदे विषामस्त्रापदास्त्रे । गर्धश्याया ब्री वात्रान्स्रियश्रान्दरायाः स्थान्यस्यायायः वाद्यानाय्यस्यानाः वाद्यानाः स्थायाः स्थायाः वयास्वायाणीप्रयाप्यायाणीप्राया ग्रुटायेस्रास्तु स्वायवे देवासायवाया विवाया बे हु है र दश्चिषयाया वन द द पहुन सामवा हु महर सेसम द्वाराया से द प्रमा न्वायां अत्राद्भावी क्षेत्राणीयात्र्वीयापान्दायोग्रयायां विवादानियानीया कुरन्तुः अर विअप्यदे गुर श्रेश्रश्रयम् यायायायात्रे ने स्र मे ने श्रेन्वे शाने विश्वाते । ने प्या ब्रे.वेट.श्रंथश्व.वेत्.वेट.भ्रंथश्वश्वश्वश्वरत्तव्रक्तेत्र टे.क्षंत्र.वेट.श्रंथश्वी. मृष्याश्चीयता क्षेट्य क्षिता याबट्यायमासी स्थानाय द्यादाय विष्ट्रति या रेटे.ब्रेट.व.जग्राचनर.कुटा रे.क्ष.वेय.रेचव.व.वं.व.वेट.श्रमग्राचार. त्त्वचन्त्रत्यक्षक्षर्वव्याद्वेद्वर्यः देश्यक्ष्यव्यक्षर्यः विद्यां स्त्राच्यः र्भर्म्तवनन्त्रवक्ष्यं रेववन्त्रव्या नेववन्त्रव्यात्र्रम्

नम् दे। ध्वाकेद विवाये प्रभा रे केट सक्द स्वे क परे दस्य । दिवाय परे मिना वेपाय हु हुन हो। । अप्येद दिन्द मेश पर ही। । विक्र वेपाय है र देश पायश है निर्यं प्रमान के मार्थ निर्वे निर् गम्द्रभायवे भ्रेत्र। भ्रुत्रभाद्रवाव प्राप्त प्रित्र विभात्रे अभी हिंदा प्राप्त प्राप्त याद्यवानी प्रवेदायास्त्र। नुहासेशसाई हेवे इपाइहा नेदायद्वा हेंद्र चल्रे.चंट.ब्रॅंट.टे.वर्ड्य.तर.वाशेटश.क्टा सेवा.क्ष्य.हावा.जा.वारा.हीर. न्वयानि, बैटावा वित्ताला क्षेत्रात्रा क्षेत्रात्रा क्षेत्र वित्र विवर्षे वर ह्या याह्री विष्युक्षात्रेश्वरायार्वर नाशवार्वा नियानशिष्यायवे हिमा देणपराणया ववश्री न्वववि इत्या वि सस्य अश्रवहर्षी न्ववववि वे वे अश्रवहरू म्। त्राचीयायदेव ग्राटा वीयारे त्रवे भी भी वर्षा वर्षे मार्था वर्षे मार्था अव वर्तेर.तश्र्रीयतर्रात्रेरी क्राचीशंत्रात्रुत्तेरा लश्यवश्रात्रेरचवात्रात्रा सम्यानहर्त्ते मुन्तवाराक्ष्यासक्ता मुन्तू रायाध्या है। समायहर्त्ते मुन्तवाराक्षेत्रा समायहर्ते मुन्तवाराक्षेत्रा २८.ज.केथ.श्रेश.श्रेश.श्रिश.वित.ततु.होर। शश्चतंथ्य.बो.र्थ.श्वी.वेट.श्रश्च.बो्थ.रे.२८था. वर्षा है मैंदे न्तु अदे वर नु यहेव यावेगा निष्क है। ने सुर व स्वा है स के यावेगा निष्क है। वेन मुन्द्र या वर्द्ध राय वित्र या वे कि राहे। क्षेत्र केन केन वे वा वा वा वे वह केने वा वा वा वे वह के वित्र में हिर रु भी दि के सहित पर्यायनम्पर विश्वरा विद्वर है पर्य दिशा विद्या या निर्दे के वरायहर सुराया दि के अर्वे के रें वर्षे के वर्षे रें वर्षे के वर्षे रें

शें क्रें नित्र विकास वि वेशम्बर्धरश्रयदेश्चित्र। क्षेरम्बदेश्चर्यात्र्रम्द्रम्यूरम्बर्म्यत्यत्रम् तरत्रेथ्यासेयामिरक्षाभनेष्यात्रेश्वात्रेश्वात्रेश्वात्रेथ्यात्रेथ्या त.थ्री इंट.चर्चर.ततु.सं.शुदुःइवा.वर्चेट्र.चश्चेश्वरा.तथा.वेट.टचे.श्वर.विवाश.वाषश. इश्राचिश्राचेश्वाचत्त्रसाचेंद्रःक्षाचेत्रःचेटःश्रश्रश्यादेवेश्वदःयेटाचेश्वासाप्रमाचेः विरायर उन है। रेगार्क्षणया हैन दियायया युवा हैरा परे पा है। रेवारे सामगा क्रेब मुबायमाणे दाने हैं। दे दर हैं दा है दार्थ की यह मायवा प्याप्य कर दे हे रासे द र् श्चिर्व्याक्षेत्राक्षिताः प्रथिताः स्वार्त्याः स्वार्त्याः स्वार्त्याः स्वार्थाः स्वर्थाः स्वार्थाः स्वार्थाः स्वार्थाः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वार्थाः स्वर्थाः स्वर्याः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्याः स्वर्थाः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्थाः स्वर्याः स्व चबुब'ग्रीस'ग्रीच'पस'र्ह्हेट'प्पटा। द्देग'पस'चस्वास'ठ्रस'ग्री'क्ट्स'ठब'स्र'क्ट्रियस'स् वकरावादी रेंगिडेगानु सरावकर खुंवान्ता धराक्रेंस उदा द्वांक्रेंग्साम समा गुर्रर्प्तिव हैंद्र्यिद्र द्वि द्वि देवि के विषय के वि ने सि.चेव.कूर.क्षेर.प्रथ.तव.सेवश.शे.क्रंप.बी.श्रथ्याविवा.वा.वर्.व.र्यंपर.वेश. नेपार प्रस्वस्थ उन् यने हिंद की संस्थ र्यानु वकर यन्ता ने स्वर्ति यने हिंद विर्यम् अग्रान्तेत्र सवम् विवानायम् केत्र में हे पकट र् क्विंस पर्य प्रथम वित्र प्रथम ने प्यट स्वतः इस्रायर स्थित परिहेन निष्ठा निष्ठा स्वतः ने कित्र से निष्ठा स्वतः स्वत शुक्री मुनाकुन निवादा के निवादा मुनाका वा मुनाका वा मुनाक वा मुनाका वा मुनाक यायुषायदे द्वा वस्त्र क्षा वर्षेद्र क्ष्म् क्षेत्र में महिन कृष दिन क्षा रहेग ५८१ |देवेवेवासप्यस्यवयसेद्रा शिद्रसेव्सुर्द्वपद्यप्यसेवः ।पदेपः क्रेम्स्यकेषायदेषा ।वन्षान्यम्बन्द्रायद्यायम् ।यन्षान्यम् र्धेनमन्द्रता ।न्यानमहास्मान्यदेनमन्द्रिता ।दे दे दे दे द्रात्रम् स्मान्यद्वाया तक्री रिथु से वर्ट है नर के हिंदी वेश महिर्श पर हिरा हैं साम हूर. वहेंबा व विशेषायाम्बाद्वेषायादुव । युषाद्वेषाद्वा निवादिव के के कि रमार्वेबावश्चिरादेशाची लागार् पर्दरायार्गामाया स्मार्वेबाची मेशाचा क्रान्या वना मु त्यु र रहेवा म्यान्वेव है हिर देश हैं येव हैं वर्षे विष्यं निवन्दर्स्यान्वेव में में रेसरेय है। यदे य केव येव यो सेय झुर क्रिंस य र्ह्रगम्भारम्भारम् सुदे सवावर्षे र दर्ग रवाद्वे में हे प्रमाय स्वाया हे वामा रेमाय पश्चमायाये वापादिन विम्ना देवामा देवा देवे इवावर्ष्ट्रें र देवें दर्वे दर्वे प्रविषायाय विषय विषय येवे क्षेत्रा वावव व्यव देवे वाविषा म्रिश्मान्याने ह्रिया मित्रा के मित् क्षेट्रावद्यक्ष्यर्द्ध्यक्ष्यर्द्ध्यक्ष्यम् यावव्यक्षयायम् वर्षेत्रः गानव क्राबर द के देव अर बर पावर र पावर र पावर केर पावर कर पावर केर मध्येत्रपदेश्वित् महिस्यवि त्यान्तेत्रपश्चित्रपत्रित्यक्षेत्रप्रकात्वन्ति हिन नहुकासुने मक्केन देशायवे पुवास पिक्यार प्रमान प्रवेष क्षेत्र। मानव प्यान प्रवेष वर्भेट्रप्रसम्बद्धाः वर्षे भेट्रप्रस्थायस्य भेट्रप्रसम्पर्धाः

यानकृत्यरायन्त्रायवे भ्रिया हे त्रा क्रिक् केत्रेत्। यानकृत्यवे क्रिक् सवर र्न् मुन पु क्विं प्राचित्र के या विष्ठायायाय विष्ठा कुर स्वाय है से प्रतियाया निश्यायाद्रयानीयानवादाद्र्य। बिरामानुः हेर्ने नेयायानेयानी मुविरापना बिरा गु.क्य.त्र.रेग्ने.वा मे.व.श्.शुंदे.रूबा मैंट.क्यशह.हे.क्र.व्ह्र.ववु.क्वा मैंट. इसराग्रीशन्तरान्द्रित्वानेत्या दे.जनहेदावश्वरात्रमान्वेत्रम्भाक्त्या वी । १८ में ही हे हे प्रमण्याय प्राप्त पति पति पति है है १ १ १ । इस का ग्री है है १ ग्रियार्च्याप्ययाग्रीयान्याप्रियाप्रविवागान्वाप्या दे हेया बुटा स्वाया न छेर छेर। गुर्भाईर पञ्चराञ्चियायायायञ्चयान्त्रीयाने। देशास्त्र। दुराने ने ने ने रेशास्त्र। वै। विवायभी ने के रायट नवा यह व विवाय भी पश्चेर पर हे वाय वय वे। हिंहे पत्त्रवायायान्त्रे द्विम् ठेवामबुद्धायदे द्वेम् महिवायान्त्रे व्हिन्से स् वयावर्स्वेययावासुवार्येटाद्रायळेवाचीप्रदेशायुवासुरादुवासी देहिवसेटा व.नश क्रेन.तश्रु क्रेंट.वर्श्चिश्वश्र । क्रिंट.वे.ट्रश्र मीव.त्रूच.तर.वर्मेंट। वेषाम्बर्धरषायवे भ्रिमा द्वरामी दे दे राज्ये सेषाया रहा। मेषा ग्रह्म स्वयं स हेशायानिवानुके हे। हें अप्ययुद्धायका द्वारावी इवायर्धि राज्यानेशान्या । वारा व्या.मुबाग्रद्धार्श्वश्रवाता । दे.वे.र्ह्या.पर्ह्या.ब्रै.क्र्यावाग्रीवा । हेर.तक्र.त्रिर. वर्षः श्रेषः चर्रः वर्गुरा लेषामासुर संघरे धुरा मासुस्य है। सन्सः श्रुरः ५८ छ। नेश्राह्म गाव वारा प्रतिशायका कुर्र प्रतिशास वार्शिवाका वार्श्विक प्राया लय ततु श्रम्त्रीय वीश्वर्या हुम् हुत् हुत् क्रिया स्मा वह्या हुम् खेवा यहमा नवर्षा क्रेव.की विव.वेट.क्षे.इ.च.व.वेट.क्.टट.। कि.वा क्यातर.के.वा लट. र्यायर कें.वा रव रेके वा ह्यायर कें.व. झे.लय व्यया या केंट के झे हैं.वर्षय

ततु.श्राट.ब्रीश.ब्रीशेटशा हूं इ.हिट.टेट.वीट.हूं श.ब्रीश.बा.वाशा टेट.तू.हे.वा.है देग्वेब्रयम्हा कुःअप्टाया बुन्हारुषाञ्चयास्टब्यपन्हा । इस्क्रेब्रन्हारे चित्रमाक्ति विरासिद्वात्रमात्रात्रम् तत्र्यात्रमास्य प्रदेश विराम् वर्षु विश्वनायमा दर रेप स्था अपवि दुर दिए। भ्रिः आसः श्रेवा वर्षे के प्रवास क्षेत्र पर्व क्षेत्र प्यत्र विश्व वि वास्त्राधारातु विरायक् श्रायक् रायक् र्याव्याय्या विस्त्राक् स्त्राच्याय्या वेषा वर्रेषाववर्द्धवर्त्अपेर्गुरा स्रायुगमाकुरावर्वेषर्तुर् ग्राम्य व्यवस्थित में म्यादेश में म्यादेश में मार्थ में मार्य में मार्थ में मार्थ में मार्थ में मार्थ में मार्थ में सळव छेन वर्ष देव छेन की प्राप्त न निया प्राप्त न निया प्राप्त प्राप्त न की न प्राप्त न की न प्राप्त न की न प्राप्त न की न मिलायन्द्राच अस्ति शायदे श्रीदा वीशायात्र स्थायदे स्थित यवे या या न शुर्श इर ववे कुर द्वे देव वन् या वन का निक्ष देव देव देव वन या कुर विषेष है। द्युवार्केट वि देव वयन पर्वे । इन् पे दे इन वे कुन वि के पर वि व सर्गेन में ख्वे कुर र् वहेंग कुंव थें र रे। रेस प्रतेन से पर्मुर पा रेन प्र्रा दिन्द्यम् केन दिन् मुदा क्या सूर् अर्थिक या द्वारा की द्वारा प्रदेश प्रदेश स्थार की द्वारा प्रदेश स्थार की द्वारा प्रदेश स्थार की दिन्द देकेशक्रम हिन्यमम्बर्श्याष्ट्रन्यस्येन्ते। देशप्तवेन्द्रिन्म हिपा स्वीतः ता चलट वर्षा जैंग ग्री क्र्याम प्रमाय प्राप्त से में में में प्राप्त से मान रवास्त्रिरायमा भे नेवास्तर मान्याये र्जेनावहेन नेन मुख्य ने हिर्णावे कृ देव नर न मन मही दे है हिर्म क्रिय के में किर पार पार पार पार के मान या निम्मवाबिदास्यरास्त्रान्तान्दास्यस्या सिव्यूरास्त्रेमानुष्यानाहे। सिन निर्देन्द्रयायेद् देवानाबुद्रवायवे द्वेत्र ह्वेत्र क्षेत्रकायवे ह्वेता वे वाद्र सार्वेद

ने। वट्षेस्रम्न्त्रर्भ्यर्द्धा विवेदःदेन्वस्यान्द्रा स्वादह्र्यस्यन्तुः स्ताम्भाषास्य में प्रति स्वति स्व विग्रायवे कुर दर्। देर ग्रय भी कुर दर्। इन क्षेत्र भी कुर विया में दर पवे कु'यक्ष 'र्यूर'दे। कुव नार निषा गुर नार्वया रु क्षेत्र या दरा कुट हो समार नामा तास्थराहिर्ताताह्राताद्राचीवात्रात्यवात्राचीश्वराष्ठीदिर्वावायवक्रराचार्टा वैद नु'स्'वदे'सेसस'८८'वव्यारी'रु८'रु'ग्रम् स'यस'रे'सूर'वहेर्'पदे'धेर। विक्रम् नेन मु द्वाचि कुर सेस्रमायुवा स्वे कुर सेस्रमा दिन परिवा मु वर्दे द या सेप्यहर ने। इट्सकेन्वियम्ब्राम्टर्नियम्बर्मार्यः विद्याप्तियः चवि'कुर'शेशश'णेव'पवे'धेर। वि'व'रे। वे'व'द्यर'शेवामाश्रर'चर'मावश'व'ई' इ.स्ट.व.जश.सूर्याचित्र,यश्चित्र,क्षेट्र,योज् झ.ज्यूच्य.स्ट्रिय.स्ट्रेया.स्ट.याच्यात्र,याच्या यन्दर्यायार्थितेषा हैिवसेन्द्री दर्द्धित स्ट्यी इत्येषावसासु सुरायन्द्रा सेवाहेटानुकुपवे के हिटावि इस्तिन्यीय स्वापावापवि सक्स सामित्र वापकुन र्टा किं यदुः क्वा की बाबिर तर रेटा क्वा है। बूचा वहूं व कि विश्व ता प्राप्त रेटा ने चवः विद्वार्त्वारम् । कुं चवः क्रें न्वां चकुः यः स्वाः विश्वाः स्वाः विश्वाः विश्वाः वाद्याः विश्वाः वाद्याः पर क्षा मेव कु से प्यस्या विदेवा दसर या कु पर्य के दिवा मकु पा सवा विका इं.ची.चेलस.केट.बस.टेंच.में.कें.च.टेंटा अध्या.चेंबस.केंट.विश्वद्याता वि.ट्रेच. क्तायम कि.चंद्र.क्र.रची.चक्र.तास्चा.चेश्चा.क्रे.चेचा.चेश्वा.या.चेश्व.चेना.चे.की विवा में देश स्थायमिय नियं मार्थ निर्देश में निर्देश के देश सामिति कर है। में देश में प्रति निर्देश में प्र

विराधराद्रात्वरायधिवायवे धेरा विकारी सर्वे विक्या दे द्वार के विवार दे द्वार के विवार दे दे विवार दे दे विवार दे दे विवार दे ते विवार दे विवार दे ते विवार दे विवार द चर्चर्याश्चारवर्याम्या वयायुरायशाङ्गात्वावण्यावसाङ्गरः। वार्यवावसा क्षा महिषामान्यसाराखेदाकुरामहिषाकुग्नरायम्दायदाकुरा बेरावाकुन्छन्। दे। रटार्चे वे गर्डे रेवेर रवट र् पुरुष य रटा क्षेत्र वे विकार कु वे रेवर रवट र् नुषायाधिव यदे द्वित्र दे प्यार इत्यदे कुरायवि ये ते रेषा वर्षे नुषा वर्षा कु पर्य के नावव नामुख्यमी पविकारे पवितर पुर्मे विराय राय मि अपविष्य विषय विषय विषय ग्रेन दे हे देट यथा क्रिया क्रिया हे य दरा विषद पर्वे पहर पर्वे र्वेट द्विता विषामासुरसायवे धुरा देसामावन इससागुर सर्केन दी । सर्वेन ये चबुद्रः कुर्रः रेश्वाच कुर्वेश्वर्थः कुर्वदेश्वे। रदः रदः वी पुर्वाची शद्दः र्घः वृषा वर्षः झ्रें चिविदे कुंट नायमा क्रें र मीमा रेका रवा पुर्व प्राचिव हो। मीव कुंश मार्से प्रधानमा र्गु'यकु'य'स्नाम्डेम्कु'यदेके। र्गु'यकु य'स्नाम्डेम्'व्रह्मपक्ष्यम् स्वाप्तिर पर्वेष प्रदेशें स्वाप्तर विष्य नार सेंदे हिन है स्वापक हेर से से प्रवासी हैर वयाक्षा दे हे स ब्रिया अवे कुट झ दुना ने वेन स दना दे व व श्रुव अदेव द्वया १८। श्रुःशाग्रीवे कुरक्षाचकु हेर स्थायकु वायहर व्यारेशायविव कु यवे क्षेर **१८। १पने यह प्रहानी १०८५ मुझयर्थ के मस्दे पर मी १ मियार्गेर** पित्र प्यत्यम् दे। युर् हेंब यथा विष्ठ नगर य सेंग्र रेस पित्र निवर्ता हित ५८.वर्षेत्रकार्ट्यावर्त्व ।श्र.२८.वर्ट्यावरक्ष्येत्रत्वावर् र्शिवायविरःर्री विषानासुर्षायवे ध्रिया दे स्रयः प्रश्नाव विषयं समित्र स्थापित म्र्रिः देशान्त्रिः चेशाव्याः क्रुं प्रदेश्के सर्गेव म्राप्ति गार्षा श्राप्ति सार्वे स्राप्ति । रवाक्षार्थीयविवाकुरातु से प्रविष्ट्षार्थीयविष्टी रेशा रवा विवास के हो। वसूराके वा सी

र्गीवात्रिर्मेन्निर्मानिम्मिन्नर्मा वर्ष्ट्रम्भिर्मीवाव्यिर्मने विष्यः के त्वत्र है र र्स्त । विष्याय दे प्यव व्यव वी ब्रुट हा वक्षर द्वा ग्रेन यदि वावयः गु.इ.च.श्रुट.चेत्.सेश.भूर.श.श्रूचश.लेत.र्ज.तचच.तत्.इ.टट.ईट.चेत.श.क्षाश. येव है। हैर देर यथा ज्ञयं क दर द्वर पर दर्ग विदेव प्रगूर देना नव शकुषाताक्षी कि.धु.सं.लु.शुरालुषात्री कि.धु.सं.लबाकी.चतु.कुटा वि.रट.पेश. येवे वर्षेन गुरम्ववा मुर्चे रहे। रेस प्रविद रसर हैं सेरा नगर हर पर हे वर्षेषाम्बर्द्धः यास्त्रः वित्रायदे द्वित्र। दे सम्बर्धास्त्रवित्रं यामान्त्री तेषासु वर्षेषाया लट्राय्ट्रेयाची स्रुविश्वर्ट्या वा हिट्यावे स्थाप्त स्थापकुरा दे। स्थाप्त स्थापकुरादे। स्थाप्त स्थापक्ष यद्रा इद्रा कुद्रा युर्द्या विव्यक्षाम्या विव्यक्तिकु विद्यावयाः स्त्री । यद वनामी कुर सार्या श्रेना वहें र नायाय है दुना ये इससा ग्री हैर न या न बुर वहें न गुः इसर्हेन् भुद्रित्यवे र्ह्ना क दुर्यं पद्यापेश श्यावहेना या प्यति है। दे इसरा गुः हेर वश्रास्त्रामेशक्रिन्यादुनानियापुवावहेवायविकावश्रावहेवायवे कुराद्वा व्यव दुवा'वाबव'यर'ङ्कर'यदे'क'वब्यवाबुर'यदे'कुर'दुवा'तुं दहेवा'यदे'खेरा वाबुक्र' पान्ने कुट इस्रमा ग्रीमा मुन्य में दुवा पिट हो। इत्ये कुट इस्रमा ग्रीमा वुमा वा नाम म वशःश्चियःश्चिद्रःश्चवशःयुशःगुः सुः प्रदेश यवा वी कुदः इस्रशःगुशः द्वदः रेवे ब्रैंर विवाधात्रकार्यटा मेशालेका का ब्रैंट त्रांत वि त्र वि त्रांत हिरा दे त्याट श्राटका र्-वित्यक्ष्क्रणम्याप्रस्थानस्यानस्य प्राप्तः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः व वह्नाने द कर दना है हिंद ने दाये के आहर दु सुर देश द हर समाय वा मी केंना तृ'ल्वाब'हे'र्र्र्र्'वी'यर्हेर्'मु'ब्रेंब'यर'मेर् दिर'यत्वब'मेर्'पये'के'यो'वो बाबुब'

मुन्निर्श्वातवीर। वकुत्ववःष्ठःश्चात्रेचित्रात्तात्वःम्रश्चात्विर्धःत्वात्त्रःम् ग्रयायकरावराष्ट्रेरायाणे क्षी । अर्देरात्रात्रेया वर्दात्रे स्थाने या वर्षेत्र त.झी बुश.बैट.क्श.पुश.ग्री.पर्व्य.तत्र.पश्चेटश.प्री क्श.पुश.लेज.ज.पालू.प.वैट. वीबा में दे प्रायत में मा के अक्षर देव के प्राया के अध्यय के प्राया में प्राया प्राय प्राया प यान्वयान्यान्याः नेयाः गुर्याप्यायदेव या तुराया स्वाय्यया स्वत् रावे दिन् द्याप्तरंकीश्रक्ष्यानेशास्त्रराध्याप्तेशाम्भात्राच्यान्त्रात्वीतास्त्री वाताःप्रेतवीतायः र्वर्याणरार्वराकेशामु वर्षेत्राया हवा वर्षेत्राक्षेत्राक्षेत्रा दिश्व व कुराइस्याकेश कुष्पित्रियाधिताही द्वरादानार्वाक्षिणाख्याच्यापानाराख्याहास्य पर्मेर्यास्त्र। क्रालेशण्यार हुर वापक्रे व व शायुवायमेर् पाये व पर्ये हिरा दे वार्षे ततिवादकर श्रातकर विश्वालि देति । वि.तार्षे। र्थातिय मी.वीवायावावा. ग्रेन'ने'कुर'रे'वि'केन'र्ह्हर'रुन'यकु'य'सू'युन'र्दर'रुग्यविर'र्दरक्ष'यर् वर्षेन्यम्बुर्यान्दिन्म्वेनान्त्रम् प्रवादि । वर्षेन्यन्य प्रवादि । वर्षेन्यन्य प्रवादि । वर्षेन्यन्य प्रवादि । **३.८८०.पर्.टेग.प्राश्रक्षश्रग्री.३.पधु.ई**ट.तर.चेश.तठ.सेग.श.यालश्रथश्राशः श्रे कुट वस्रास्त्रवर यो नेष ग्री कुट दुव दिन वर्षे वस वी देस के विवाद वे कुट दुवा क् बिटा नामकाग्रीकानकानामिन की निकासानर विस्तान के बिना मार्च देशायका रे रे'व'ह्नेर'वकुर'वकु'रे'कु'व'णेब'यवे'धुर'री विंब'गुर'वर्धि'सळसम्रारे'रेर' र्युः अष्य र्युन्य य र जुना य वि क र रे कु य य व न न कि न य कु र जुन य कु रे व र स र प् सन्माकुण्यरादेश्यावस्यात्रुरायात्रीयर्देनान् ।वर्षायवे युन्धायाः वनानिकना

यानेरावि दिन। देवविन दुर्गीयाविर में विस्व दिर स्वाव दिन से विस्व दिन स्वाव दिन से विस्व दिन से विष्ठ दे दे दे दे दे दे ते विष्ठ विष ब्रै.चेब.ब्रे.वर्त्त्राचानके.ब्रेड्स.से.चेटे.क्री ज्रूब.बेर.ब्रेड्स.का.क्रंस.का.क्रंस.चरा. लट.के.शू.चधुवु-द्रश्रातश्क्ष्याचकी.क्षेत्र.कि.तात्त्रवा.चधुत्र.कुट्रेट्रवूश.हे। व्यात्त्रवा. वया स्माक्तियं वर्षेवारे में बिरा हिया वर्षे स्मानक है। दि पर्व पश्चेया यसर्ग्यकुर्वे ।देवे वर्षे वर्षे वर्षे भ्यविषा ।वर्षे स्यस्य द्वि स्वतः विश्वर दिने ।किया ईट्रट्र वे द्वापकुर्व वेषायश्रद्धयाये द्विमा देषाव विषाय वेषाय युट्र केवा विविधित्रे त्रे व्यव दुवा दुवा पुवर्षि वया विधिक्ष केत्र विवि प्रति । दे त्रे त्रे क विवि प्रति र वर्ष्यायसाववृद्यकुटावी वर्षे कुटावी दुवा नु विकुटार्टी विदे दिवी साथी खुवासाया ह्य के देर पर्मा विषय विषय के प्रकार के विषय क वर्षेयाम्कुत्। वर्षेकुत्र्वासुर्श्वयवित्रःकुत्या देःष्यत्वयाम्कवामिःकुत्रस्रम्। हिराम । अमेरामा है। में हे पर्व साय मारामा के पर्व के मेरामिर है। क्चर्न्यक्चर्न्द्रा वर्षेन्व्यकुर्दुवार्ट्स कुःक्चर्र्श्यविष्यर्द्धा र्व्यवागुर्दुवा दुः इतिवैदे कुर विषागुर पम् दे विष्य पम् द्वापि कुषा के प्रदे पारे किया हर देशकी मिर्नायर है द्वर वर्दे र के वा नशुक्रा गां झे हैं प्रविव र प्रायम विव में क्र्य-रे.चे.चतु.वर्वेत्वेत्वेद्वेद्वेद्वेत्श्चायर्यः त्वेष्यः यार्वेद्याय्यायाः गर्षिय विमेयानेराइस्स्रमामुकामुराङ्गादे प्रविद्याप्य राष्ट्राच्यापरे सुरा सापरे चैट्र हे. क्षेत्र के विद्य के वालटा के अविद्या विद्या विद्

वया । वर्षा निर्मा क्रिया है देव निर्मा । वर्षा निर्मा । वर्षा क्षेत्र निश्व के साथा विश्व स्वायान सुरस्य मिरा दे सुरित कुर सुर्य स्वायन किया याक्षेत्रयुद्धरायपदा देविरायमा विस्मानुगानुगर्वेनायायमा ।गयाने कुदाने कु यन । दि के के प्रायक व ये व युद्या । द्विव व व विव के विव या व व व ब्रे.क्रबंधागुबर् प्ययुत्। धिन्यानिहसाधिव के खेनायायया क्षित् सुनामहेन क्राबास्तर्भेर्तात्रा हिंगबानबियाहिषाकुर्यातात्ववा वि.ट्रेगाक्रायाहिषा वक्केयरविश्वा विश्वाम्बर्धर्यायाक्षरार्थे ।देवविश्वाम्बर्धेश्वर्यावदे तत्र्रेष्ठ वर्षियः श्रावर्षियः ग्रीटः। दे हेरे वाला श्राम्य मूर्त्र हे हे हे हे विष्य वार की विगागायिरमावसायदिवसा ।गायिरकुषाष्ट्रायाष्ट्रायाष्ट्रायास्या यर वशुरा । निर वश्यर्मिव में दे शुप्ता । देर नवश्यव विन वह छेदना । दे क्रेर्व गुव प्यत्र्वाचा विदेशगार वव श्वायश क्रेस्य व्युरा वेशवश्रित्य र्षा । दुनायदी दुन्नेशवायवायायाद्यायादी महितास्त्री है। मियर देन सुरा कुरमिषान्ते । पार्वे में राये प्रत्ये स्वापित प्रत्ये स्वाप्ते ने प्रत्ये स्वाप्ते स्वाप्ते स्वाप्ते स्वाप्ते स वया देश'विर ववे इन डिमाडे द के ने दे दे पवे है र के विर के विर विर यवै इत्यानार विन । देवे पर्वेद या कुर मेश छे द्रायवे छे द्रान है । यम्यामी दुर्द्रसम्भागीम हुन में राष्ट्रमा हुन स्वामी मान्या हुन हुन स्वामी स्वाम प्रमान हुन स्वामी स्वाम प्रमान स्वाम स् कुरणान्वास्थ्यान्वराधिवे क्षेत्रावदेवायान्या के खेटायान्य विकेशविष्या प्राप्ति मुन् क्याकुराकूर प्रदेशविरामधामा सेनायामु मुन् सर्यापान्य गीया त्रमान्द्रमान्यत्वेत्रहेत्रहरूत्वास्यस्यमायुषायायदेव्यायेः ग्रुत्। सुरः

गर्भे त्रगुवार्सेनामाग्री द्वारा द्वेद। यम वान नी द्वेद इसमाग्रीमा दवद नेमा समाया वह्रम्यव्यन्त्राच्याचेर्यव्यक्षेत्र। विर्ययर्त्युद्धराम्यस्यीश्राम्यावर्चेर्ययायानुप्ता ब्रुवार्स्स्रान्द्रम् ब्रुव्यव्युवार्द्धः। देःवावहेवावस्राक्तंग्रेगावीयरसाक्त्रसः वर्चीय। लथ्.वर्चा.ची.चैंट.प्रश्रश.वा.हूर.पश्चश.विश्वतश्चार्ष्य.तर.चेश.त.के.वह्न्य. कुर जीवा बैर वाश्वर राप्टे कुष तयर यद त्रीवाश शे तरीर त्रीर राष्ट्र हीर। यरेषे यान्त्रस्य वेत्र मी नवर पहेत्रयान विद्यान स्थाय मान्य स्थाय मिन्य प्राची स्थाय स्थाय मिन्य प्राची स्थाय स्था य हे द खुंवा ने बाया वाद में बाया व्यदि दे। गुब है ना न व्यक्ति हु द ग्री कुट वर्गे ना यदे हि र कुट ह्मास न् होर से न कुर मान है न पर हो न पर वश्रक्षराद्वराद्यक्षरात्र क्षेरायदिक्षाःभिवाधायायायद्वरावस्क्रियाव्यव्यक्षित्रात्रव्यक्षित्रा वश्रामी क्षेर मूर मेर मेर ताल राष्ट्र होरा चर्ष ता वालर हवा श्रामी विषयामी. वदा इनबागुःदेवा इनबागुःदेव'द्याया इनबागुःस्याखाद्यरायम्दायि र्राये दे। दर्देव कु र्वर्र् पुरुष दर्व विरयम्बय कु थि मे दर्ष स्वया वि चविःगविःभवः है। हैगानशुर्यायशा ख्रुःविःगाःविदेः में ८ विदः है। । नासरः ह्यासः वर्वेर.चव्.ऋ.च.ड्री वृश्यविश्यातव्.ह्येरा चर्थशतव्.ह्याश्चर्या चर्थे.चव्. क्वायाम्प्रिन्दे। वर्दरायक्ष्वाक्षायुः दुंगासुर्यात्रा कुन्त्रे प्वविदः स्वास्त्रे नासः इ.श्रेर.त.रट.रट.मी.कैर.ई.वश्यचनर.त.चध्यचिरे.त.लुव.तत्रहेरा चरे.बंध. १८.वर्षेश्रत्तुः व्यवश्रक्षश्चारः प्रचारा वार्षेश्चारी वार्षेत्रः विश्वार्ते वार्षेत्रः विश्वार्ते वार्षेत्रः व ग्री जि.मे अभारता के तुतु क्या शक्ष अभारता क्रू भेशातारता रेवेट बाल्या. क्रमण्डरा क्षेत्रितः ह्यामाक्षम्भग्ररा खुः तुर्भेत्रात्रा देःवीयविष्टरा झ र्धिसंगित्रेषागितः ह्वाषा इस्रया ५ । द्रै संवेद की प्याने र वहेवा पाणे व पर्वे श्वेरा चर्यश्चर्यः इत्याद्यः अव्यात्ते व्याद्याः व्याच्याः विष्यात्त्रः विष्यात्ते । व्याद्यात्ते । व्याद्याते । व्याद्यात्ते । व्या कर हे हैं न बेश दें त्वर कर विया कि ने न बेश में हे हैं न बेश में के कि के कि लय ततु हिरा लाग्येयार्ग्य हिर्या वाष्ट्र वाष्ट र्वाबायाय्यर्दि है। व्याबायबाय उर्गी दह्या युवाय युवाय वे बायाया वे या बाबा वार्ण्यन्याने विषायम् नुप्तवे केन्यव प्रवे प्रवे । विष्णे माष्ठ्र प्रवानि प्रवे प्रवे । लट.लूर.री विष.शूट.च.रटा विर.त्रप्र.क्षत.वर्त्त्रप्र.च.ज.वे.च.वेर.क्षत.वर्ष्व. र्थेर् पव द्वेरा र्र रेप्येर् दे। धे नेव मह्स उत् में कुर ने मा युषा महस्य १८। विदेशसम्बद्धाः व्यामुन्याम् । यद्भायाः विद्यान्याः विद्यान्याः विद्यान्याः विद्यान्याः विद्यान्याः द्रयायान्द्रायेवे अवश्रादे नश्रायश्चा भुद्रिन् केट व्यु नश्या न स्वार्थ भुद्राया क्ष्रमुश्क्ष्यार्थेश्चरीष्रमुष्या व्यास्त्रम्यात्राण्याः व्यास्त्रम्यायाः मेन्ब्रम्भे दिर्पत्त वा विवर्षे दिर्पत्र विवर्षे विवर् गुरुषान्त्राश्चित्राः हुनाषाञ्चरः नाष्ट्रयः ५८। इतात्त्र्येरः चात्रवेशान्यायायायातः नाष्ट्र व्रेन.क्रवश्राम्यामान्त्रेन.ताल्यन.तत्.ह्रेन.स् । द्रम्द्र्व.क्रु.ह्यम्यन्तुन्स्वायानःस्ट्र ब्रे.चर्नु निविदः स्वासाग्री देशद्व ५८८। श्रे.विवायायायया प्रदायदे स्वामीया वहवा गवश्रःस्ट्यासुअभित्रः याद्रस्यायो मान्यस्थः मी यास्यायो स्ट याद्रस्य स्यास्याया त्तुःह्र्राच्यक्ष्वे विश्वकार्य्यकात्रार्टे जूट्रियेटा वर्ट्रेय वे वेट्रियं वे वे नासुक्ष की नाद्र राष्ट्रियों नासुक्ष की नाद्र राष्ट्र राष्ट्र स्वाय ग्री प्रदर्शक रहेता दे जाया शुरावा दयाचा द्वरा शुरावा शुर

य'दर्। ग्नेग्रासुगिर्सेव'वदे'वइ'वन्द'र्जुर्जेद'दे। युर'ङ्गेद्र'वस। वह'धिस' बुरा नमुस्रायकी ब्रुराष्ट्रनमाग्री देवायानु सालेना व्यन्ति प्राप्त विकासी ने नमुक्ष मी स्नाम देव प्येव या दे या पर सक्कें देव दरा दर्ने महिन महिन वरार्नेयर्वे प्रेंदेव प्रवास है। बुर ह्यायर्वे र खेर ग्रीर्देर प्रवास श्रें भेवाया त्तृ हुव ज्वा वा बेव श्व व शहा श्रा व श्वा है श्वा व व शहा श्वा व शहा है है । व व व व व व व व व व व व व व व व देख्रिं जूरश्रासी किंदाता वाश श्री श्री श्री राव्ये रश्रात दे स्वाधारी द्वे ज्याय स्वी स् है। देवेदायमा देवेप्रस्यासुण्यारायदेगानुगमा । इ.र.वे.परादेशममायदे वेषामग्रम्यायवे द्वेरा पवे यंत्री हमाक्षर र द्वयापवे दे पवे व दे र इव क्षेष गुण्यदे या क्रेब पेंबा स्रोटेंब खुसा दु हैं गबा यदा देंब दसाय है। ह्या बा गुण्देंब दसाय प्येव । है। दें देर प्यमा वयाया खेर रच हुं वि च है। हिया दिया दिख स्था हिया प्र र्गाम्युम्भक्षेत्र स्थाया मुनाया हिनायान्यायावयार् छेर सेरासक्षा विरे विन्तिन्दिन्दिन्द्रमः हो। विर्धिन्द्रन्दिन्यक्षविन्दिन्दि। विष्णान्युन्यायविः ध्रिम शर्ट्रतर्रे. वर्त्वारात्ये. तर्रा इवारात्री. तर्राह्र त्वारात्री वर्षात्रेया ह्मार्या में देव दिर हमारा की देव दिया या महिरा की राहिर महरा में साम की में स्वाप की स्वाप की स्वाप की स्वाप की चिर्त्ततु क्षे जेश्चर र तूर् बाबावाय संय ताला व त्रा विता संबाधा स्था स्था है। नेषान्वीषाने। दे नेषा व व्यवसाय व श्री देश देव नेषा यर व श्री दे वर्षान्वत्रुं नेषायरक्षेत्र्यूरवर्षेत्र इत्र्रेत् इत्र्वेष्ट्वा वर्षावर्षावर्षात्र्र्येष्ट वर्द्रान्त्रिक्षे अध्याद्या देशर्द्रेष्ठ के स्वायाध्यय उद्यो स्वादेष के अ

र्नेन मु । अ मु ८ : ६ ता अ 'यु अ पये अ प्राप्त के । हि द निव के विव के प्राप्त के प्राप्त के विव के प्राप्त के वाश्वीनिषायदेविनावाद्मा देशदेव मुष्टा हुदावेषा हु वा दे दिना सायुषायदे इ.च.लुच.ततु.हीर.धे। स्च.श.जेश.ततु.इ.च.भुेश.वेतु.केंट्.गुेश.वर्देश.ततु.र्थेर. गर विग दिव कुर ग्रीय पहुरायवे कुर इस्रया ग्री कर या खेँगा पहें व सेव पुर सामा प्रे यवै भुरा अर्देर व सरमाययगमा सममा उत्तातर र गीर प्रति में मूर गुर यवै रेम रेन मु स्मानु त्यकायम् द्वाद्याया भेत्र है। हुँ द र स्वायका दे यहित या ने या ना सामा स्वायका क्ट्राक्षद्रम्यात्रम् सुमुद्राच्याद्रम् अ.क्याह्याच्याद्रम् अ.क्याह्याच्याद्यहरः चत् वेश.चेश्रेटश.चेटा अक्ष्ये.चर्ह्रेट.जश.पीटा र्ह्चाश.ततु.शटश.केश.ल. वर्षानुद्रा । अद्भेष्वेना वर्तु गुद्र मुक्ति । दिन केन के ने द्राप्त है। वेरा ना सुद्रा यदे द्विरा ब्रिनाके वर्षे की निन्धायदे होना चे दे पि ने दे ना हुन का सु के द रहे र किना मे द्वार लट अ चीत है। ह्वा क्षेत्र कर्ता वा है जिया है जिया हिता हिता हिता हिता है माही विश्वासीय सामत् हिमा त्वायीर श्राप्ति विश्वायात् हिमा वालका हिन्दित् हिन वर्गवानेग्रान्त्रम्याम्बर्ग्याः देश्याम्बर्ग्याः वर्षाम्बर्ग्याः स्वर्थाः वर्षान्याः वर्षान्याः वर्षान्याः वर्ष नियाबनायर हिन यालव है। यह रायाव मी क्वा महिन या किया मान राया है य वर हेर्। देशवासुरश पर्व क्षेत्र। हैर विवास पर्व होवा वे वा बुर होसाय वस हुर चविद्वामी वृद्धानामान् विद्यानाम् विद्यानामान् विद्यानामान् विद्यानामान् विद्यानामान् विद्यानामान् विद्यानामान बर्की मिन्यायये विना के दे प्यट दे प्येव है। दे हैं के कुर क्या अवे किया वेद तत्र हैर क्रमां समा कर ग्री हिंदी वेश य दर्श हैं द्रीय विषय क्रम के दे ही क् वसाग्रार क्रेर विदेश देश देश निवासामा विद्यार्थिय विद्या विदेश देश युराक्षेत्र व्यक्षा द्युरा दुक्ष युक्ष रमा मु व्यक्ष । मुर्च मा क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र विका

यवैर्द्रवानः विवादेवा देशर्द्रवानु । विश्व विष्णानु द्वा विष्य विष्य विषय । या दे याचे सारे सामी कें द् सारा पेत्र विशायवसा यह का से ग्री प्राप्त होगा थे षानुरादे द्वासायुर्वायये विद्यान्य विद्यान्य विद्यान्य विद्यान्य स्तर् में निक्तु स्वत्वे कुट सेस्र पादिसार्ये देवाय पादिन प्रेव प्राप्त के निक्ता यान्डेनायाध्येव वा देन्दि व ५५ गुरायाध्येव वे लेश पर्वे । इ याद्वा ५ वेव वेवा क्र्यामु अव वमा दुर्व क्रुवाकी मिल दुर्वा में अपने साम दुर्द प्राप्त क्रियाम वर्ष स्त्रिः वीरात्रुवेदान्न्या ज्युत्वाचिया श्वीचित्रात्रुवेदार् हिन्द्रात्रा निवास्त्रुवेदार् शर.बै.उत्तर.शक्शब.बी.बुश.ता.को चंबर.चंतु.बै.डुर.इ.ब.हुच.बुश.तंतु.बुंच. क्र्यावृद्यानुष्य मुन्तु क्रुन्य व्याप्य व्याप ल.ल.म्.च्युरावान्यवात्राज्यान्यवात्राज्यान्यवात्राज्यान्यवा वेषामग्रुत्यायवे धेरा धेना वे दे के राधे ने मग्रु अ की रत्मा द्वार प्राप्त है । है। ने किन व्यवा रेन के नाय देन हैं ने स्था श्रिम दर हैं वाय विषा ग्रुर यमना रट.र्ज्याचा वेश.पार्थरश.ततु.हीरा श्रेट.पार्व.ऋत्वर.वी.रेवेश.गी.र्टे.प्रेव.यट. र्शे नेवायार हिवाले सद्दर्भात स्थाप हिंदा प्राप्त स्थाप स्थाप विद्या स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप मुस्यायवार्त्रेमाङ्क्यावेषान् हो देखेदायया हिटावरावसस्य सन्। श्रिमाने म्रवालिया विषया विषया । विषया द्विस्थायायान्तिहायायेन्ते। हुस्यमभ हेर गदिक्षिकीम्साया याह्नपदिकेन् लय्तव्यक्तिय। ब्रिवाङ्ग्यादे वाश्वेश्वाङ्ग्यातव्यवाद्यावाद्य देर प्रमुख्य सप्ते दश्चा शहे ब ना सुक्ष प्राचिना के ना सुक्ष ची छ हो दिर हिर ने दिर

ब्रेट प्यमा इस्ट्रेम सुरा कु स्मान हैं है। विस्तर प्रहिट वा पर्दि हिंदे से हा। ब्रिट र्ट.र्च्यथार्टाइशाइशथायी। विवायायाविशाक्षेत्रवायाया ब्रेम इयाद्येमने नमुख्यायार्थेन ईयानेशाद्या है। इयाद्येमने ममुख्याद्वेसरा यायायहेब बबार्खेना हे के रेखाया हे पश्चिरायश ने हिरायदे खेरा यर बा रुषाय्विरःस्ररात् इयाय्वेरःदेगासुक्षायादेःस्रराय्हेर्प्यये कुक्रक्रवर्णेद्रादे ह्या वर्चे र दे न शुक्रा वर्षे क्राया वा वहे व व श्रार्थेना है। र कि ट वा कु वर्ष हुट है वा वा है। न्तुं अवि वर् न् प्यह्मायर हेन्यबाने ह्रर वर्हेन् यवे हेरा ह्मायायाम् स्था र्थेना क्रियामस्मार्थेम् स्वापित्रस्यायापन्या दिनावस्याग्री हेनावस्यास्त्र यायम्द्राया श्रृवाक्कियायश्चित्रवायकात्रवात्रवाश्चिद्वाश्चित्वे विद्वार्थितायम् म् जामश्रमा क्षेराचादा ब्राइर म्हण शामिना खेदा हुन। चार्टर वी संइर द्रन्गुः ह्रेवा खेदः श्रुवा क्रिया वाबरः चदः इत्रः इत्रः हुवा ह्रेवा खेदः श्रुवा क्रियः स्र्यः स्र्यः स्र्यः म् । र्टा त्वापिका विवाध विवाध के के पार्टी विवाध ग्री विवाध में विवाध में विवाध में विवाध में विवाध में विवाध न्दर्भेद्री ह्रेर मेद्र वर्षाचन्द्र पर्व महस्र ह्या नव्द पत्र प्रदेश प्र रर.जैश्र-पृष्ठ.में.ह्.ड.तकर.मे.र.केज.२८.र्चथ.तव्.क्षर.पिष्ट.क.व्.च्रि.में.चे.रेचेश. गुः हुं देव वर पुंचे वाये प्राप्त प्राप्त वायु विष्ठ र प्राप्त विष्य वे प्राप्त वाय वाय वाय वाय वाय वाय वाय वाय चवित्रम्दरमञ्बरणुदरमान्यान् की वद्युः स्वद्याकी बद्दर् दुः विनानामा स्माह्यद्वरे द्रवाश्रायक्षित्रायर मित्राया है। इ.क्रिंट वाश्रा द्रवा क्रवा क्रवा विद्वा निर्देश है। विद्वा गर मुक्ति व मुक्ति रहेका । इप्ये के क्रें र मन मन मुन्ति व मे या निवाद मे व तर द्रवामुक्तक के के मिनवायर प्राणवाय पा है। बार बाकि वा मिन्द्र मिक ही रागवा र्शे लिटबार्यात्र क्रीति से स्वाप्त करात्र क्री हिया जुतु त्या से विद्य हैं।

र्श्वरावेशन्त्राचे ने हिरापिय इति हे प्यरासी विवादि निष्या दे दे या वेदाय वेषामग्रद्धायावे द्वेर। ह्वमायादगार द्वार मदिवि ह्वेर ह्वियायागापर यथायन्तर दे। देन्धाः क्षेत्राच्यायाक्षा विष्ठित्र्योवाक्षेत्राचे वात्राक्षेत्रा । द्वीवस्रके पाद्रावः ह्येर.तर् । ध्रि.श.घघश.वा.पेश.प्रच.श्च। प्रेश.वार्थंदश.तवु.ह्येर। रेगार.वा.रेशर. चवःसन्दर्भक्षम्भायःवयःख्राःवयःचन्द्रक्षः। देवःन्व्यःसुःष्णःद्युद्दर्भयःयः रें हे हिट यें कुन के कुन निर्मु कुन कि सामित्र के मान कि षाद्वीयार्स्टिन्सायर्थि विश्वायात्ता कुन्धुःस्वीयायमा क्षेरायादे यहुःया लाह्मरायम्यकाने। वेषावास्त्रसायविद्धेर। ह्रासेरायमा देवाद्यास्युर्नु षेग्'वर्झेंअ'यर'ग्रुर्श'हे। हिर'ग्वे'यड्वे'हे'य'वश् । १ पुर्शसुं हैं वे प्रश्यः तर.वी ज्यापशेरयात्तु.हुरा ट्रे.कंर.वर्श्चिषयातय.वेट.जय.विट.तर.क्य. वर्द्धा वर् हूर्रेट्र वेर श्रुर्णे जा प्रेश क्षेत्र व श्रुवाय हूर्या व व व या साम ठवर् प्युरप्यवे ध्रिरित्रो अर्देव पर्हे र प्या ह्या पु क्षिर या नाय सामाणी विवा पर वर्गेरा प्रेश्चरता हेताने विषया ग्रीशा श्रिट्र हुवा जुर र्वेथ तर्व श्रुष्टशा क्षेट्र प्रम्मानम् विष्युदेव। क्षिट्यप्ये स्वास्त्र स्वास्त्र विष्या सहन् सव। स्वास्त्र पर्वात्रक्रात्रेयतिराविराधी वृषाविश्रात्यक्तिमा वृष्ट्यात्रे विवाया विष्रः श्रीमायाकुर्तरा यम् श्रम्भम् सम्मानीमामायायायायायायायात्वर्गात्वर्गा मार्जे पश्चाम्ब्राम्याने नेत्र मुद्राम् योग्याने। यात्र पहेंद्र मुः प्रति मुद्र स्रामा हिर न्र हिर्म्यत्वाचनश्राम् विष्यत्वाचित्रं भ्रम्यत्वित्वाचित्रं विष्यत्वाच्या ब्रैक्याबाक्ष्याक्ष्याक्षया श्रेशकातकात्तर्रितावरीरावकावना विष्यानेवाल्येया

वै.पर्न.पर्यःहेव। ।क्षिरःगरः ह्यायाग्रीःपर्विरः वीं पर्विया वेषामगुर्यापदे ध्रेर। मुंशक्तांत्री क्षेटाचर इ.वर्वाश्रावक्षेर्तात्र में श्राव्या क्षेट्र वेद्यात्र इ.वर्वा वर्क्ष भी स्वित्र स्थायवे यङ्ग द्वार से वर्ष स्थायक्ष न सामुक्ष त्रेस मार सुर में भ्रिवे वर्षायाप्तविष्याचेषापञ्चातिषाः स्टायास्त्रित्राचित्राप्ताराची वरासा वासाधिनार्देरायवे नामवा हेरासकेरायासकें नयवे निर्देश समाने सरामी सरामी स्वामा प्रविदे प्रद्रपासायारी वीप्रवि हेर विप्रस्कित स्रवे प्रार्दे प्रार्दे प्रवि वि वी वि वि वस्त स्रवि । गुःसर्विद्रदेवा'वेषासळ्द्राय। इत्तर्वा श्चेत्रदर्दा यद्यद्वायावद्वेरावा वश्चेषयायवे द्रयायर वार्यायत्वा दे हेश द्व्या गुरी शे वेषाया य श्रेयश वहेंद्र याध्येत्राते। देवेदावया द्वेत्रेयावेयारवाद्वित्याध्येतायस्त्रा विराधान्यवा मेर्मा विषय प्रकारण । पार्वे वर्षा केर्रा यह स्वर पार्वे वा विषय विषय विषय विषय यहिषाता है हिया करिया में निष्य शाहित महिता में निष्य करिया है । वहीव वार्य विष्मुव्यविष्टुर्द्राद्धिर्वर्षर्वादर्वर्वादर्वादे व्याद्धाये कुर्वादे विष्याद्दर्वाद्वाद्यात्रे प्राप्ता सर्देव नेश ए हिंदा पर्व हिंद र प्राप्त वा वा वी कुर वा देंद्र प्राप्त हिंद पर्दर । श्रेसश न्वेब पदेव के में मार्च के प्राप्त के प्राप् पत्त्र में प्रत्याप्त स्वाप्त विक्रिय क्षेट्र.वोठु.क्षे.क्रेच्र.क्षेव्याच्चवा.क्षु.स्वायायाःव्याचस्वायाःच्चाव्यवाद्द्र्याच्चेवाः डिन्याधेन है। येत्रमध्यायम् नेन केन यहन निर्देश हैं। भिर्देश यह ल.चीर.ल्ट्रश्रुश्ची वेश.चेशेटश.ततु.हीरा चेथश.चट.वश.ब्लेल.हु.हेर.होर. यात्रे श्रीर यात्रे क्षेत्रमेगमार यान्क्षेत्र भ नयने यस सुर विदेश कुरा कुरा कुरा सुर सुर वहना वावकाचानिकानी,वार्टकानुवानिकानी,पटावार्ट्यानी,वार नार्ट्यानी,वार नार्ट्यानी,वार वार्ट्यानी,वार वार्ट्यानी,वार्याची,वार्याच्याची,वार्याची,व

पवि र्व्यान् दिन प्रति होन्य प्रवेत प्रति वुर स्वाया सन्ति । वुर स्वाया सन्ति । नग्नानुः धेन पदे हिराहे। युराईन यहा इन् एथे में हिर हर से धेना दि पर्देन यंत्रे अपनिश्च दि द्वार्श्वेद्यार्श्वे अपनिश्च क्षान्य स्थानि । विश्वन । र्दर प्रमुखाया र के वायह पार्ड पार्ड पार्ड पार्ट रो। देवा बार्ड पार्च रेंदर प्रमुखार हो। वि द्वात्रम्भाता रेवाताशेशकी,पष्टभाता श्राध्य त्वाता प्रभाव भारता स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान धुरा वेश बेर पक्ष प्रवादी दर ये दुन के देर प्रमुख में के रेन शर्म गर्म स्वे स्वावर्धे र द्यार्टा पर्वायके प्राप्त वास्य प्राप्त है साम्युया के र्वायायुया उव मुै सेसब उव देन वाबवानु हुन यान्ना वासब वे देन वाबवान्य हैसाया पर्वेष तालुषे तालु हो प्राप्ति कार्त्र प्राप्ति कार्त्र प्राप्ति कार्ति कार्ति कार्ति कार्ति कार्ति कार्ति कार् अपार्टायम्यायाम्याञ्चरायाद्रवेषायायवे हिरावत्रमाष्ट्रयास्याप्टेशास्याप्टेशास्य जुत्रपर्श्वे चर्षेश्वरत्त्र द्वे क्रि. इंश्वर्त्य प्रमुत्त स्था वृष्यत्तर्भाय स्था दे ता. द्वे तर मेरे राष्ट्रत में बार का के राष्ट्र से रायहें राष्ट्र मेरे वाहे बार बी बार बा के बा बिट इस्रमा सम्बद्ध कर् वि.क्षी रवर.मुबाल.सूचार्कर.बी.लीवावास्चायाःश्रर.दे.वर्देवाःवेशाःशीःवश्चेवात्तवः प्रमायाक्षेत्रप्रे स्मायहेन्यवे म्याये स्माये विष्या म्याये विष्या मिर्माये विषया मिर्माये विष्या मिर्माये विषया मिर्माये मिरम्ये मिर्माये मिर्माये मिर्माये मिर्माये मिर्माये मिर्माये मिरम प्रमण्यर हैन यात्रे या केन हो । यद हैर प्रमण्य पर देवे के प्रमण्य हो । य ने न्युरुष्य में प्रस्ता विष्य में प्रस्ति विषय में प्रस्ति में प्रस्ति विषय में प्रस्ति वबर्चे व व में रे. देशया स्वार्वेव या श्रेश्यर्वेव या श्रुप्या है. जुराया हर. वहेंचात्तर्द्र्यत्वशादे त्राच्या देशवर्द्यत्वशक्षात्व हिंदे वाहेशवर्ष्युव.

पश्चरायां ने राप्ते के प्रक्र के प्र वर्गे.तपु.वश्चरात्राप्रथे.तथा.दे.संभ्रत्वहूरे.तपु.होम। योवथ.लट.हु.हु.वश्चरात्राक्चरा. ठवा हिन्थाईरावस्यावेषावईन्यवे स्थावं स्थावं स्थान्ते हेवे सन्दिरावहं विषयक्षे भेत्रयायायह्वायमा हिन्युट दुट ह्वामान् हेर क्षेत्रय भेत्रय हिन्य हिन्य विष पञ्चर्यायायेव पर्या दे स्मर पर्हे द पर्या क्षेत्र दे । पासुस्य पर्वे पर्दर पर्या कु पादेश क्षेत्रयायर विवायायायया चिर योगया क्रुं देवे यर ख्रायदेया व स्टायक्रयया सुप्ये श्रेर्'र्'वह्रब्'रा'वावाबर'राव ब्रेडिंग ह्रबाह्य ह्रियायर वार्यर्था रार्टा रूटा ८८.ल.केयुर्हे देवाश्वर सै.व.४४.व्हे.व.४४.व्हेरावस्थान्त्र भारत्य विवादात्वात्र स्थान्त्र साम् न्तर्भाष्ट्रित्रे दे दे दे स्टूर्स्य में अप्याकुर हु किया अरा बूर हु दाय दे आ मी खेरा आपि के नि हर पुरा दिव में भी मारा सुपा हुया बेद पार्य हिरा देश द नायर पार्य हुर हरा विनापर्देशियायायार्वेशियायायेर् दे। श्रेनिः हैया स्थानिशाग्रीश हर हिरानार द्वर इन् अनुषायायमुषायानेवि र्वेषाषायमेव र्वेषान्य स्वार्थान्य स्वर्णान्य स्वरत्य स्वर्णान्य स्वर्याप्य स्वर्णान्य स्वर्णान्य स्वर्णान्य स्वर्णान्य व्यवासक्रिन मुन्यूर पाणेव प्यवे द्वीरा निवेषाय देर प्यञ्चरा ग्री खुव सेंदि साथेव प्यवे में दे त्यक्षयम् द्रायायायात्रिक्षा दे राव सक्ष्या में क्षित्याय स्वर्ष या क्षेत्रागविः इत्याद्भावानः इत्याद्भावानः वर्षे विष्यानवे वर्षे विष्यानवे वर्षे विष्यानवे । विष्या र्येन हिरावत्वराग्रीशक्षराविष्ठायपुरावर्षीयावराष्ट्रेरापिराहेरेशक्षराविष इ.रार्टे. त्म्त्रियार्थे सातायार विचा विराददेश, रूथ त्ये प्राप्ति के स्वीता विरादिश क्षेत्र त्ये दिश सर्दार्विवायराद्वीयापदे ध्रिमा दरार्या मुदाक्षी देरा खेरा वाषा ह्वाया ग्रीदे विन्शी ने पद्येता । इया वर्धे र अतुन या वर्शे या वर्श वि । क्षित वी ने विन रे वा या दी। वेशन्त्रमुद्द्रश्चर्या दर्जेवाकुवायदार्येद्रित द्येत्रमुन् सुवश्यवन्य

त.वीर.श.इट.तूतु,ववैट.वर्चे व्यक्षाश्रवाय.केर हर वश्वतायुषा पर ग्रीश. विन् गुर्भाक्षेट विदेश्व अर्तु न विन् चिर्रा द्वारा का अर्था प्रवेश विवस विदेश विरा न्वरणराहरावन्यामे क्षेरान्वर अर्ड्रावर्मियार्ने श्रीरान्वर अर्ड्रा ट्रे.इ.सर्ट्रे.चावव.रश्व.क्रि.इ.च.लुव.तश्व.श्वर्थ.व.स्थ्या.तश्च.व.च्य. यम् विव । क्षेर्यविष्ट्रस्त्र्र्यं विवय्यर क्षेत्रक्षर्यन् स्वयः सुवायी दिन्यावयः वकर प्राक्षे श्रेन प्रवे श्रेम न्दर्ये मुद्दा है। हिन्यवि स्यान् नि स्यान् नि स्वान पदेक्षियासाध्येव वित्। इत्सर्त्रणविव इसस्य वार्ट्र कृत्यी वार्त्य स्थापार्ट्र पा रे.प्र.कश्रमी क्षेट्र.वाद्र.क्ष.ये.रे.क्येट्.वीश.रे.वीश.रे.वीश.ता.सर्थे.वासीश.वासीश. युगुःकुन्दु र्येन्यवे क्षेत्र है। देर खेट वाका ने ववट द्वे वर नगव व की । नवुका सुः अर् र्'या मुख्या मुक्ष र गोक्षा विकाम सुरकाय विकास देश हो। सक्रमानीन्द्रायुवार्चियायायसाहित्यारादित्यसयार्द्द्वसायराद्वस्यस्यराद्वस्य याक्षेरामरार्श्विमाह्यराव्येप्तेषा देणाक्षेरामावेष्ठा स्वार्प्तरावर्षेयाप्तेषा ने वा क्षेट वा वे दें र प्रत्य खें न ने वा दावे हैं र वा वा वे बादा के उत्तर के वी वा बा वा वा वा वा वा वा वा गुःमतुः स्वानेषाद्रीषाय। देः यदः हुँदः महुषायषात् गुःगसुरा रे रे यदः यो गे निश्चानश्चायश्चायश्चायम् । इटार्ट्रे में खें प्येन में प्याने प्याने प्याने प्याने प्याने प्याने प्याने प्याने यान्युयावयान्त्राच्यावेव न् । क्षेटानिव खेनावहेव यानेव पर्व मेव कु है। है। देवे निर्मायमार्थे प्रयापिय काली मार्थे में प्राप्तिया विश्वापित कार्ये स्थापित कार्ये स्थापित कार्ये स्थापित कार्य विना ये दे न सुम्र हु। देवे इत्विर ही द्वाय वित्र ही द्वाय वित्र हु द्वाय वित्र हु द्वाय वित्र हु दि देवे दि त यवै देश देव व्यव है। देर मेद व्यवा अवे केंब विर पहर वाववा विद वी. विषर् वे विष्य । विर्वे के विषय द्वर के व विषय के प्राप्त विषय के प्राप्त विषय के प्राप्त विषय के विषय विषय विषय

विषाद्रा अने वेर्षा हुर विराधिर वेरावावया । क्षेत्र हे साव रायी । सहीव तत्रभवर विषय्व अवरा वियाम विषय देश के विषय हैं में अ'ने 'हैम' वे 'रं आ । अहीं 'पवे 'सं दं ने 'र्शे र 'परु पहिला । कुव 'रेवे 'मरु म हिर नव्यान नव्या वेयान सुर्याय देश्या दे प्रवित दुः खुः खिन खे ने खाखा दे ना सुरा वश्रम् द्रायायवेत्र पुर्वे विदेश विदेश अमेत्र पर्वे मेत्र मेत्र मेत्र पर्वे मुक् सेवानसुरादेशयायविव रुष्णाष्ण नामसुरानी देश देव दरा सुरानसुरायायम् यव है। दे हैंद वशा ये ने अंदे हर वन देवा किंग ने कुर दे अर्केन येव वै। वेशन्ता अहे केशविरायइ वशा विमेन्यर येने अपिक प्रमेश्या र्धेगि'हेर्'र्र्'हे हुर'सेवाया । वि'वे 'ह'विस'गुड 'इसही । समेड 'यदे 'र्युस'ड ' मान्यायकेरमा नेयामस्ट्यायवे देश देश देश मुं भी भू भी मान्यु स्थाया र्वृंधिवाधियोज्जाम्बुर्यावास्यायमासुरायायवित्रपृष्ट्ररायेवा सेत्रस्य स्वा निश्रार्थित्रयानानिवर्तुः प्रायानाश्रयमी देशार्देवर्ता कुरानश्रयर्थि क्षेरानिवः इप्योवित्र मु द्वास्त्रवेष्वत्र दु दु द्वादेष कु व्यवा क्षित्यात्र पर्वे द्वादेश देश देव व्यव है। देविदायमा द्विष्ठ्रस्थयाक्षरस्व कुरा । पन्दार्श्वेषायर पर्व द्वाया नवमा विभाष्युवि होत्यवि द्वता । अर्थेव परि यद्वि देव नवमा वि ने अने र्श्वन दुर भेता | न्ययम् दुर ने योवर खेर थे या । ने न्य महिन यश्वर क्षेरमाया विवाधग्रीसर्वेदर्वे विवाहित देशमासुरसप्ये क्वेरा देश्वरमासुरस यायास्त्र में देर के बा दि है मासुस के व्यापित देन देन विकास के वि वा विदेश्वस्थान्त्रस्य निवासिकार्या विद्यानिका विद्यानि

वाचार्या वेशावेश.तपु.वार्य.टी क्षेट.वायु.श्र.शर्टेट.ज्यावश्रासूचा.सेर.पश्रेथेश. त्त्विद्भार्म् क्षेट्राचरार्म्यावित्राच्यावित्राच्यावित्राच्यावित्राच्यावित्राच्यावित्राच्यावित्राच्याच्याच्या पश्चित्राच्यान्त्रा द्वित् द्वित्याद्व स्थान्य द्वित्याद्व स्थान्य द्वित्य द्वत्य द्वित्य द्वित्य द्वित्य द्वित्य द्वित्य द्वित्य द्वित्य द्वत्य द्वित्य द्वित्य द्वित्य द्वित्य द्वित्य द्वित्य द्वित्य द्वित्य द्वत्य द्वित्य द्वित्य द्वित्य द्वित्य द्वित्य द्वित्य द्वित् ग्रद्भावायमानियातप्रक्तिया क्षेट्याप्रक्रमार्थिक भ्राप्त हेमान्य में त्राप्त हे मान्य में त्राप्त में त्राप्त में न्युःसंविवद्विवाद्वस्कुः कुंपसर्हेवासेन्युः कुंदिन्वस्वर् देनावर्षः ववि कुर क्रम्भ वर्षेव प्यर हे द प्यर्दा व बुर वहें व है । क्रमें व वर्षेव प्यर हे द यवै क्षेत्र है। दे दे द वका निषट य अर्केन हु निषय य प्येता विषय यवे देव दे हिन्दिन्। किन्द्रभग्याप्रमान्याम्। । रयः मृत्यस्य विश्वस्य वि मुषा विवायामे यात्रेयात्वात्त्वात्त्वात्त्वात्त्र्याः विवायम्यात्त्र्यात्त्र्यात्त्र्यात्त्र्यात्त्र्यात्त्र्या गर्रिक्षण्वत्रसम्भावे। विद्यापाद्याप्तिवाद्याप्त्राचेता विषापास्त्राप्ते। न्त्रेर। पश्चिरायायायिश। क्षेटायाराक्षीयश्चायायाविष्यश्चायशास्त्रास्यात्र्यस्य श्चे.त.रटा श्वा.क्र्वा.क्षेवा.श.पश्चेशश.तश.थशश.श्चेट.ह.संप.श्चे.पट्टा ।रट.त्. वै। दे स्र र हिर गर के मिग्राय पर्हिक्य या या पहेत्र व्यासक्त्र साम्यवस्य प्रमुद् वर्ष्ट्रायाये के विवायुरायमा सेसम है विवाये रामाववायर छ। । रहा वी न्वर्यन्त्रप्रवाहरम् । सण्यन्त्रियप्रियक्ष्यानुष्या । कुन्त्रस्यानुष्या श्रामटाक्रेट.ज.रच.पे.र्वेगमा विट.लट.सुश्रह्म.ज.र्वेगसारार.वर्केर विद्यापसेट्स. निमा गुमक्रेमगागारियमगणमा निम्हात्वम्यविष्यस्ययायस्य । १५५०म गुःविषा वेष्ठित्यायह्म ।दे याया देवेष्व वाष्ठ्र वाष्ठ्र । । सक्ष्य साह्य साम्य प्रमुद् ह्। वेशन्तर्भरत्यत्त्रेत्रा च्हेशत्तत्वचिश्वा ह्रत्यव्यवत्वयाव्याव्या

स्ताक्किट्न भ्रि.तीवाकारेटा ह्रूरावञ्चकाग्री.विट.हे.हेर्य.वाकात्र नेरात्र । वार्थे श्रुत्वरायर मेर में राष्ट्रिय र्जी । इंटर्ग्य ही वर्श्वेर रेश संस्वाधासवर में देव विदायुषा र्वेद्र'वास्त्रवस्यार्वसर्देरावस्यात्वस्यात्वस्यात्वस्यात्वस्यात्वस्यात्वस्यात्वस्यात्वस्यात्वस्यात्वस्यात्वस्य ब्रायाद्गरायादेवावावादेवावादित्वाक्षेत्राक्षेत्राद्वायक्षेत्रद्वायक्षेत्रद्वात्वर्वाक्ष्याः त्र क्रियंत्र प्रतित्व क्रियंत्र हिंदारा क्रियंत्र हे त्राया त्री वा त्री त्राया हे वे त्राया हिंदी है। हिंदी यानिश्वायायाद्वेत्रावनायिनानी द्वारायाद्यत्र क्वेर् प्रमुद्दा प्रमुद्दा स्वादा स्वादा स्वादा स्वादा स्वादा स्व ี่ นฺชฺรฺาสฺทฺรฺิทฺๅ๎ฺรฺะาบฺรฺลฺาบฺชฺา≿ฺ๛ฺมรฺมฺรฺบฺรฺฐานาฎฐนฺนาณญญ๗๗๘ฦฺลฺาน่ณฺ लूब. ध्य. तन्नवा भारा वार्षेत्राता वार्क्ष. वीत्र भी स्था वार्षात्र प्रमूट । वर्ष त.व.इ.४८.४४.वेट.कें.क्व.२८.वेट.मु.चि.ट्र्या.वशवतप्रश्राप्ट्रा कंतावावेट. र्युःसरः बुनायावया सेनायाया वेसायर हेंस्य दुनायाया हैरानाये हासर्र हैनाबायर मैवान बाबेयाबर देन में हैन बाय प्रत्य यें र वर्षे वाय पेन हैं। दि सूर कुट या व श्ववस्य या सहर देव व पर्व कर गुट प्वव प पु र्ये दे । व्र प्यह् प या व स नासुम्राभी रद्रान्द्रसाई हे नासुम्राभी रद्रान्द्रसासुर्रह नी रद्रान्द्रसास्य साम् वार्यर वे. ट.के क. टे.क् ब्राया २ ८ । क्रिया क्रया क्रिया क्रय क्रिया क् वुषागु दर्द्वाद्यादेशक्रामेर मेरायादर् रा रहायी द्वरायी हरिया खुराये विषा बुषानिदःधुःबदावीःद्वदाविषायशेषुषायद्वान्। द्वदाश्राषाकुविःद्वदायद्वाने। रेअम्बेब्रब्रावरवयुरवर्दा म्हारवर्द्रकेश्रेश्वर्षेत्रया क्रेबर्ग्यश्रगुट्सुवरश्चेष्यभ्रान्द्रा यब विषयि मि हुट वर्ष्य स्त्राम्य हुव वर्ष निट्रार्ग्यार्ग्यार्ग्यस्य निट्राम्बर्गावयः स्वयायस्ययाय् स्ट्राम्यायः स्वयायः मन्त्री क्रियात्री ह्रेरावश्चराश्चिराहर्षेत्रावहर्षा यात्री स्वर्तरावश्चरा

शुक्रागुट कुट कु दिर नावश्य पट विश्व पर हो देश कु शही देश कुट वर्जे देट. श्चेयविषायम् मर्स्सम् वर्षेत्र वर्य वर्षेत्र वर् निस्याक्ष्राचि स्थापि द्रिया मार्थि हिया मार्थि स्थापि स्यापि स्थापि स्य म्बर्धायाहे देराप्राय्युरायह्याहे हुरापु विदा अवराम्बर्धायायवया विवा नृ'व्यूर'ववे'ध्रेर'ने। दे'ह्रर'णट'युट'ह्रेंब'यश। वद'णे'दे'हेद'ग्रंब्रा'ग्रंब या । निर्वित्र पत्ति स्वति स्व क्वाक्षेत्रकार्यकेषा वदी विवर्ते । विश्वकार्या दे देन विवर्ण स्था विर्मे वाक्षेत्र विवर्ण विव केट दिट पा के दा के बाब बाद का पाये हिया है हिया के बाद में किया की बाद का किया की बाद गुःह्रियाञ्चरागुराञ्चर प्रयुप्त स्वाप्त स्वाप्त विद्याप्त प्रमुप्त है। देखा नावश्याक्षेत्रायि क्षेत्रावे क्षेत्राक्षेत्राचे नेश्या एक्षाया क्षाया विष्या विष्या गुःह्रियम्बर्गाद्रायद्राया देवाळाडुरानेशायराने इत्यवान्यश्यायां प्रवेशया क्रेन वहा क्रेमी वहा ता वा वह वा पर वश्चर पर है। नियं का वक्के रेका पर्वे क लय्तव्रक्तिर्भ्या विश्वयायाचे। द्रायाद्मेराचन्नयाग्वयाद्मेराप्तव्यायावया वियानमुयाने र ज्याका देयान द्या स्यान्याकी स्वर हे स्वर क्षेत्रया तत् ज्या यया नेवा पृत्र्वाते। मुरक्षेयामुद्दिरावत्रवाण्यामपुत्रास्त्रिरविदा। मानुसास्त्रिरोक्षाणुदा यविवादम् यदानु व्यवादन वाक्षेत्रहरणा में वाक्षेत्रवा में वाक्ष वहारक्षा वर्षेत्रश्चावरवर्षेत्रस्य हरिया दिष्टित्र वर्षेत्रयवे स्वावरवर्षेत्र मह्री डि.चव.रचिश्व अस्यानविष्यामा विषयाक्ष्रिं र्राट्य क्ष्रिं वर्षा मव वर्षे वर्षा विषय मेबक्र र्येदे से दुर प्रथा । गुर हैं ग वस्य उद पर्ट स्थाय र दे । देश ग्राहर श यवे द्विरा गृतुम्र सेवे से दे प्यत् द्वर सेव की संहर य प्रमा नव वा वुर वा मा

क ।। मश्रुम्याया सेम्राया निवास मित्र हिंदे हिंदे हिंदे हिंदे हिंदे हिंदे विवास वा स्वाप्या वा स्वाप्या वा स्व वारा वार्य स्वाद्य स्व बेर्गी कुर्णे रामराम्बरमा कुर्गे रेव इरामा मुख्यार रामरामिव सम्मा पक्षत्या ने दि पतिव नु सामेश परि हेश न से वा शन्द मेश परि प्यव पिव पक्षत नर्त् । रट.त्रु.श्री ह्र्य.पञ्चरा.वाचश्चवरा.च्रीट.ज्यवरातशा क्र.वर्ट्य.सटरा.केश. वर्षेवायमावर्देनायमाम्रेममाग्रीनिवादिक्षित्राच्यामान्त्रीमाग्या वर्षायम् दे। दे हैर यह बायावर्षा देवारा ग्री है। सहस्रायर यह वायर र मु.शंशका.जा.श्र.श्र.प्र्यंत्रां सेचा । कुरा.रेटा। अत्रा.संट.श्र.प्रय.वेटा.जवा.ग्रेटा। वेटा क्वाने रामा के स्वान र्बूर पासुस्र मी स्वाप्यस गुरा । पारेषा मुख्यें विर रेर र् मुं । युस सेर र् नमर र्येदे सुना मन्त्रमा । मनुयाय राम् गादावि सेस्र साय द्वा हो । । वर्ष मारी विकास वायमार्मेवावमूना वेमानगुरमायवे भ्रेत्रात्ता वायमार्गे मुत्रम्यमायमार्ग्या

वि.य.म् अथवार्वयं क्षेत्राक्ष्राक्षात्रीःक्ष्यं केर्ट्यं वातात्रात्वरात्रात्वता वाता. ने हेन्या व देव के वेद नाय व द हिंद प्रया के द प्रयो के रावे के रावे के विद्या कि देव हैं। येयया ग्री किया है दायदेव नास्या श्री या है नाया या है नाया ग्री । सुदाय देव । या देव । सुदाय है नाया या है नाया ग्री । सुदाय है नाया या है नाया ग्री । सुदाय है नाया या है नाया ग्री । सुदाय है नाया । सुदाय । न्तर्यायात्री ह्रेन्यान् संस्थान् संस्थान् संस्थान्ति संस्थान्ति । क्रियायात्री स्वास्थान्ति । स्वास्थान्ति । र्थेर दे। बेबबरे व क्षर रुपार्य देव रूप रूप विषय केर या रूप वे पुरारेव केर इस्रामेशनाद्रान्त्राच्यादेराक्ष्याचाद्रीत्र्वाणाद्राव्यस्यावित्रावद्रशास्त्रस्य ग्रीक्षाचान्त्री स्थायाग्रीगावाह्यायवानसम्बन्धान्ता श्रीमवसम्बन्धान्त्रास् शुः त्वायाग्राद्देवे के यादेश्याप्य स्वाया के द्वाप्य स्वाया सक्षा स्वाया स्वया स्वाया स्वया स्वाया रुद्राद्रम् म्या दिवादे हिद्रायम् वाष्ट्रम् स्थान्य स् शेशवातीः क्रवाति र दे शेशवातीः रेव र शत्त्वताविषाक्षाक्वारः हुँ र पहुंचा सुत्वर र अवा पर्सेपश्रतपुर्द्धिम। पर्शेश्वरत्तु। ह्येरि.पर्देश.ताशा पर्देश.त.ता.सूर्यश्रतपुर्द्धता. वर्चेरळे रेवेदे कुर्वाया मुन्याया वर्ष्म्याया निर्म्याया निर्मा के सामित्र के स्वार्था के स्वार्थ के स याक्षेत्रित्रीपन्नवायावस्यवारुत्रिवागुत्। रत्नीक्षेस्रवागीपत्रत्वायाद्देश्वा क्षेर् मेषायर श्रेषुषा मेटा गुव हैंच ग्रेष्य देवा सर्वेट यर श्रेष्य ग्रूर देवा वह्नान्मियायर पश्च या साधिवाते। कुं हे र्वेना सासव कर ग्री वसायाय हे व व या र्हेन्देर् अन्याद्व सुम्रानु हैन्याय प्येन प्येन धुन्। नेसाव ख्वा क्रेस क्री साम्री प्रेन हेन्द्र ने हेन श्रेन्गुं यो नेश्वायान्द्रेव वश्रिष्य पुर्वा क्षेत्र मुक्त म बेर्गी वसावायह्मार्वेषायराम्ह्रवायायेवाहे। बहुतावबा देखेरादेकुषा

यथा हि. श्रेट्र अरथा कुथानाट वर्षेयाया । नाट नी द्रायये वर्षे वर्षे वर्षे । श्रिप वर्दरान्ने विवायर विवाय विवाय सुर सामवे सुरा देवान सुन सुन में सामित वर्षेत <u>र्चेरक्षरणुष्ये मेशदे मेशक्षेत्रक्षर्या वित्रप्ति सुरावे कुष्यक्षर्ये दे। हिर</u> कूट्ध्रेट्सूचश्रातव् नेशारवाजीशानेश हीय हिंदाव वेशाव के केटा जूनशाव हार्र. वस्तराग्री द्वित्रा वुराया के कुर मी बेद सा बेद मी क्विर सा विद्या या पार विगा विद श्चेषानी यदे हिंद दिन स्थेद नी यो यो सेया महामार सुदि देन माया पद देव सुद्र स्वार पद देव सुद्र स्वार स्वार मिनाया पर्शर्वा मुराया मुक्ता मिना हो साथ मिना पर्वा मुराया मुराया मिनाया । ५८। ४८.विष्यत्वर्त्तात्रः। क्रॅट.वद्र.ज.पुषाःभ्रेष्ट्वावन्द्रत्त् ।२८.त्. वानिश्वा बूटायान्युम् कुरानी समाम्या बूटायान्युम स्रित्याम् स्रित्यान्य स्रित्यान्य स्रित्यान्य स्रित्यान्य स् वनद्रायदे ।द्रार्थायायराष्ट्रीवाचेषायाद्राष्ट्रवाक्षेत्रावदेश्वेदाषीक्ष्याण्याद्रा वा मेश्रास्ता व्यवा व्यवामेश्रावहेश्रायाम्बुसाहरा श्रेस्रवा धेरा इस मेशनाशुक्रान्दा नालवान्यदा गुवायहनाशा स्प्राम्ययानाशुक्रान्दा ले. इंटा वर्ट्रक्रम्बा गर्दे स्रुमामस्रुम्बेशमवेशमवेशमवेशम्बर्म ।देशन र्द्धर प्राच ब्रिस प्रमुख रहते। विद्राच नेवा स्वया। स्वया स् मु अर मेश वर्रे नश पवे मु अळव थेर दे। वस दु श शु मिर फ्रस्स शु से र पवे क्रा द्रमान्त्रेव पर्ने क्रिंट पर्देश ग्री वट वश क्रेंट म्बाक पर्देश पर्देश करें पर् र्टा चरे हिंदक हैं समायदे के सक्षेत्र में सम्बद्ध की मारे हिंद चर्म मार्थ पर हिंदा हे मार्थ स क्रियाच्या हिन्यायेयया धना इयानेयामयुर्यानीयान्यन्तियापदेन्

सक्षत्रे प्रिन्ते विद्रान्ति दि स्थान्य दि स्थान्ति स्थानि स्यानि स्थानि स्था मु अपर पहल पारे प्रवेश मुंदि गुर गुर गुर के अध्यय ४५ गु उर पर हैन र्यात्यानुयान्यस्यानुः स्टार्म्यायदेनियायि कुःसस्य व्यापित्ते। मञ्चायदेन कुरः कर्र् पुर्यंदे दूर्यादे प्रदान वि पान् वि पान् वि पान् वि पान वि व.22.2.मू. तथ्यातायीयात्या वर्ति प्रमानिकात्या वर्ति र श्रुट सूर्या वीवाश्रुट्य. विश्व यवे कें। दे निवस्य के इंट य यवित्र द्वा विद या यह ईंट या नस्य मी विन अवे निवा बूट्याधेन बिट्रा दे यहा सके द्याय वृद्याद्या हेर हिंग की के दे पहिना थी. बैट.चतु.वट.कूश.चीच.तश.ट्र.डेंच.चर्ड्ट.ततु.होच। ट्रे.चशेश.कूश.क्श.वर्षे हिंट.ता. वे इर वर्दे क्वा विषे सुन वसुरा की सेर विश्व वर्दे वा साय के सकत पेंद दे। वसर्षात्रे वासुरावरे वासुराव दरा है वादरा वरस्य वाद्याय मुख्य में श ने स्राप्टेन प्रते छेर। ने प्रवेग मुंस्युंग का ग्रीस्य केन। सूर खेंग का ग्रीस् मुक्षायाकाष्ट्रभायाकाष्ट्रभायात्राह्म द्वाराह्म द्वाराह्म विद्यान स्थायात्र क्षायात्र क्षायात्र विद्यायात्र विद्यायात्र बूट'य'नश्रम'य'यप्तत्वय वानुक्रिंद्राचामाधिक है। सम्धिक नेनायम बूटमाकेन रे रे वय है य दर्भ । वित्य रेस य प्रवित पु न्नूट सके द विष्य सुस की कीट वीय वर्षेत्रवायविकुष्ठक्रियां विक्रियां विक्रियं अत्रिक्षिताताक्षराद्वराराद्वरा देत्रिक्षिक्षिताताक्षरावर व्यवस्था क्षराचाले न्यायान्य अकेत् यान्या वेद् न्यायान्य के वियाया व्याया वियाया वे

स्र पर्हेर्पवे भ्रेरा गर्या में रे रे वर्ष केंग रवा हिंद पर रे या विव हैंर पर विश्वाद्रा क्षेत्रकाक्ष्रकार्युट्याद्रवायाव्युत्राद्रा कवाक्षाय्ववाक्षायाः यप्तरः यान्तु अप्ति के का पर्देण यापवे कु अक्षव पर्य दे। देश प्राप्तिव दुःगुवः हैना'वर्देद'यदे'दुद'द्द'वरुष'यश'हेंद'य'द्द'। बूद'व'वदेद्द्र'यदे'दुद'द्द'वरुष' यशः हैंद्रियः द्रा अकेद्रयापर्वेव यये कुद्रद्राप्त रायशः हैंद्रयाद्रा दे पर्वेव र् ब्रिट्याम्युर्वाकुत्र्वाद्वराष्ट्रयाप्याद्वराच्याक्रया देवानुरायर ब्रुट्यया श्रेमश्चिर्। यहरालेवाश्चायात्राचेरावश्चात्राप्त्यात्राचा देवहिष्टी. यदे नशकुर यद्या के यद्या वर सर यद्वा यश दे द्वर यदे धेरा ने प्रवेद नुः चूर्य प्रायुक्ष में किया कदा हिन्य में सामवेद कि निर्मा खुन्त। ख विषायान्या त्राया केया देविक्षायदेवायावेवायान्या यहा देही दे महिषायनुषायाम्बुअभिक्ते केरामेश्वर मेशायर्ने महायदे कु अळव र्येन ने किन कुषाय केर पदः श्रुः वुका ग्रीः श्रेव छित। देशाया ५८ र रेवि ५८ र रेवि अर्वे व रेवि श्रु र दे दिशका श्रिया न्वेषायमायन्यम्यानुविक्षेराचेषायन्वयायाचिषायाचिषायविष्ठेरा नेकेषाच्या हिन वार्रिकायविवान्यिवान्यवार्यम्यान्यस्य न्ता सुन् सेन् सेवार्यस्य वेदान्यस्य १८। वहस्र द्वाप्य स्थान्य मुस्य १८। सक्त र्से हेत्र से मुत्र सक्स्य मान्युस मुः श्रर्भेशवर्षेषशयवे के अक्षेत्र प्रिं ते। तिवा बैर केश श्रेक्ष रेटा। चरे निश के कु ८ ५८ । वयम ने मार्ड रेग माये के ज मान नगमाया पित परे है । विज इत्। अत्रेषायावेषायवेश्वराद्युवार्वेरापराव्युरापवे ध्रेराते। देषासुकासरा ध्वानिनायमायम् प्रविधिमाने ना क्रिनाये देन सम्बन्धनायमा दिनायमा

व्यतिवार्श्वत्रविद्वत्र श्रेश्वराश्याश्या वृद्यार्थवा यात्रेश्वरा विश्वरा विश् वश्यविद्यायास्त्रेन्यवे स्त्रेमा विदेशयात्री युवशय सुन्या स्निन्यायास्स्रायाः वार-प्रदःवार-बिवा । प्रदःश्चरगुर्व-हिवाश-चिविव-धिवे-धिव-हिर-प्रदश्य-धिक्ष-धःवाशः चुराबेटा हेंबानवसानाययदानायासस्य से हार्दर ग्रीयामुनाया सुर्वे हेंदासर न्गर वस्तर्य स्ट प्रायक्षर है। ने वस्त्र विव प्रवे विदेश हैं र र वस्तर विवा म्यार प्रतापालिय । प्रत्युः इत्यापतित्र प्रये कुत्र द्राप्यस्य प्रयापालसः पुरः बिटा क्रिंब नवसामायय द्वा या है रेंदि गी शाम्र दारा है प्रदेश हैं दास दसर यस त्तु.हैंट.घ.वक्रर.मी ट्रे.जश.येवर्त्रातु.येदेश.हैंट.प्यश.घ.वयंयश.घंट.लूट. ग्री मेशपादे युवास वर्ष्य में इंट व सके द परि सक्त हैत। युवास वर्ष्य में हिंद यापासुम्रायापार्त्रदापादावेषा । यदाक्षु स्रकेदायापविष्याये कुराद्राया विमा यायश्चिर्विर। ईव्यविश्वायायवार्यायाः सूर्येत् ग्रीः स्वायव्द्याः प्रश्नाद्यायाः स्वायवेतः क्रूट्शट्यन व्याप्याय वक्षरमी दे व्यक्ष मान्य परि महिषा क्रूट्र र मान्य प्राप्त वा मान्य यवै चि नी में स्पाद दे खुना स व सुद नी खूट व के र विव मी अळ व के दे चि च के क्ष्यत्वे हिंदायम् सुरुदि यावि वावके नुसासु सक्त हिन्यावकर विद्याहिन नुसासु बेटा देव हूँ व र हे बारा हुव या वकर है। विदेश या दी। ब्रेट पर्व र ट प्रवेत गुःस्वायःस्वार्यस्याप्त्राच्या देश्यःस्या देश्यः स्टायहेव वर्षेष्वयाचा दिः वैरमानुमन्दरम् । कन्याम्याद्दर्वामराअन्ता ।देपनेवर्त्वकेवर्या

५८ इस हैन वहेन सम्पर्म विहेन सम्यायमा स्वित्त वहेन स्वा सिन्दर बेर्यायम्बर्म विवानु बेर्यर हेर वेब्या । बेर्यम्योबर्यर क्रिया ५८। क्रिंद्राच्यरअ५८। विद्युक्तिर्यदे न्न्र्रिकेग्दरः विवायः र्येन्द्रियायदेवायवी । श्रीस्रिरिक्यान्द्रियं नेषा । क्षेट्रिन्द्रियके या मुख्या रैणयर्ट्ययगयायाकृत्र्द्री। विगारेगार्ड्याद्वीय प्रस्तावाया । स्टाय्वेद रीमा दे हे न बीमा ना विमान्य में मारा है। विमान है विमान है न नेप्यत्कन्यान्यनेप्रम् पुर्देश्यर्ति यहित्यायकत्त्रीहेनायकेवित्सूर प्रकृत त्रा भेरवेरप्र प्रथम्म प्रमान्य । स्थापि । स्यापि । स्थापि । स्थापि । स्थापि । स्थापि । स्थापि । स्थापि । स्था मेसमानियान्दर्भेन्याविष्म्यमाण्चिस्राम्यक्रियान्द्रा विद्दुः सेर्दरवावाः श्रुमायवे श्रेस्य मन्ता श्रेन्यवे प्युवाया वेत्र यवे श्रेस्य महिसामा वाके देते न सुन गसुसर् पुरायप्तर वर्देर वेंब केर वहेंब वर्देर के सेसस हुर दरा के मुर्गित्रेष दर्भ केर या परे द्वापित र हिंदा महार हिंदा महार के विदेश कुर मुख्य ५८। रेग र्ये रेग छे ५ रेग छ मा सुद्ध या है ना पर्व के स्वा हु र ५८। रेग श्चार्यकार्श्वर्य्यम् मृत्यवे संस्थानु ८ ५८ । विष्यु सार्धे विषय विद्यायार्धे स्वास्त्र सेया त्तर्ता र्द्यान्यस्यार्टान्यायर्द्राणुःक्षेटाहेर्ना रक्षेणकानुःबुटाववे पक्षे यद्रा द्वायद्रायद्रिद्राद्र देवायय्येद्रविवायद्रा वस्रवस्य र्वे इन इन वर्नेन यन्ता स्वानियानालक कु स्व केवाया वाय द्वाराय के सहारा स्ट्र क्रममास्त्रिम् अकेन्यवास्त्रिम् अकेन्यवास्याने प्रति प्रति स्त्रिम् स्त्रिम् १८ देव १८ दे प्रदेश १८ वर्ष १८

नुःअगुःचन्दरा दिंअळरनेपविवार्वेदायन्दा छिअन्दर्नेपविवायप्तिया ५८। विरोधेर दे प्रवित वहेवस्य पर्दा विहेत्र ५८ पर्देत्र ५८ ८ कुया ५८। वि ५८-५५ में प्राप्त हिंच वा देश हिंदि । विकास के पार्श्व के पार्श के पार्श्व के पार्श के पार्य के पार्श के पार्श के पार्श के पार्य के पार्र के पार्य के पार्य के पार्श क्रिया श्रीयाय राजा विवाद देव देवा श्रीया १८ देवाया विद्याय सेवा १८ देवाया हैन। ।नवीन्दरक्रेवावायवायनेवायन्दा ।श्रेयनेवायन्दर्भेयवेवानेया ।वे वरक्षे वेद हुद यां विद्याद हो विद्याद हो विद्याद के दिला कि के के दिला है गर्ग । श्रेश्व यर् र ग्रु केरा । यळव केर प्रति यकु गर विवय । भिवर ह हैंद यदे 'सद हिंग है। वेश मधुरश यदे हिरा दे 'दम में देव 'यद मवब द येद दे। किन्रश्याक्षेत्रार्धेनायवै खुवाद्दा विद्यायवे सेनायवै खुवावाये कन्या यन्ता न्ववायक्षेत्र्याक्षेत्रक्तिक्षेत्रक्षात्रवादाक्षेत्रक्तित्व्या १८। रस्यायाने देव बादाययायदे यदे सेस्या सुद्दर्दा सन्याय ने इस्यायायदा यर क्वेर पर्व क्षेत्रक कुर ५८ । दे अळ ४ के हर के र ग्री देव अहिर पर्व क्षेत्रक र्रुट्ट्रा केट्रयंत्रे खुवावामयेट्स सेसस ५८१ क्रेंस्य के खुवादे स ट्रेंसस १८ हैन्या याद्रा विद्राद्र देवा प्राची के देवा माने देवा ्रा यहत्यविश्वेष्ययुर्यवेश्वअयाञ्जामी हिंग्याप्रा य**हेन्यवे**प्नोपा गम्बियायते हैं गाय ५८। ८ कुवा५८। छ यं बे छ या है गम्रायर छे ५ वर्दे ५ छैं। स्मान्ता न्यान्यवेगावव वेरायर्थेगायर्ने न्या हेन्यवेगावव शेन्य हिंगशायर्रेन के अध्यक्ष स्ट्रान्ता वर्डेन यन्ता इन उपाने क्रम के आर्थन गर देनामायम् केन्नोय हुन् वर्देन दे। वर्दे वायम हुन वर्देन के नामुक्य विन् देनामा भवे कु सेन पर नसमा कसमा वार्डेन पर्नेन निमा क्षेत्र पर्नेन पर्ने परिन् दित पर्दित

नमाक्षेत्रिन्दा वेत्वारावेत्वित्वह्वाम् सेस्यान्दा नवावावे देवे वारा वाईवावर्द्दाग्री नेषायाद्दा द्वेषावाषायद्दा द्वेषायद्दा क्रेयदेवयाते. ग्वन ग्रीस में वर्दे न्दर द्राये हु। वर्दे न के वर्दे न या हु। वर्दे न या हु। वर्दे न या देशयां वे प्याप्त व्यापत्र वे शया प्राप्त वे प्राप्त वे व यां वे प्यापत्र व प्राप्त वे व या वे प्राप्त विवाद व वर्देर् यवै नेषयाद्रा हैवयं वे वर्देनायान्दि वर्देर् यवै नेषयद्रा सूवा यात्रे वे वे वे व तुव वर्दे द शु मेराय दर्ग दयव व ते ते द्वा वर्षा कुव वर्दे द शु मेरा यन्ता रेक्सेन्यवेश्वावहेंब्ययरक्षित्वायायायह्वायर्द्राक्षेत्र्यान्ता श्चु वे पर्देशयम् श्चु पर्देन ग्री मेम्रायान्ता नन्नायां वे साम्य पान्याये सेम्राया १८। श्रे.श्वर्यादे अहे तक्ष्यायदे मेशया १८। मु.मु.दे श्रे र्टरायदे मेशया वा वित्यम् कन्ययायरास्यत्रेत्रित्रित्रा । यहेत्रात्रायात्रायव्यापात्रा विन्नामिनिवायरायिनाने। युवाविनिविविद्यायरायवित्रस्यायाच्याची क्विन्ना पहेर्राह्रम्भाद्रम्भाद्रम्भाद्रभावत्र्र्यस्याद्वर्ता श्चिम् श्चिम् स्वर्त्रम्भान्याणीः स्रम्भा इत्राह्माक्षावर्द्द्रायवे सेस्रसा हुत्। हुन्याचित्रसुद्रायवे हिन्दा वे वे द्रान्ता हे क्ष्यामन्त्रायाचेन्यवे द्वा विद्वा सूर्या निर्मा मान्यवेत्र स्या स्वाप्त साम्रीया ५८। वैभागर वर्देर यात्रे भेषव रात्रे नेषाया सारमाषा होवान षा श्रेपा ५८ हो भा याश्रीद्रायदेख्रिय। देशाव क्षेप्यदेक्षिक्षा इत्याव स्थान क्रमा भे ता हुश त्यु कु. र ट. त्यु वे .इ. श्रमा हुश त्यु हु श श से से ट. त. क्रम हुश ता. लुब है। श्रुप्तदे के मेश्रप्य श्रुप्त का रवश्र श्रुप्त विकायदे के रवश्रदेश

वशस्त्र वर्गे पदः भ्रेर देशकः हेना यः कवायान शुक्राया सूर पान शुक्रामी रूर पति व नुष्म स्याने अळव किन्या ने प्यत् हेना याळव या नुष्म स्वत्या नासुस्रासर्केन,तस्र सूर प्रदेशस्य हिन् हस मुद्रा । सर्केन सुवायर दिने निका यदे क्वें बबा अळेंब या अपीब है। दियर ब मु रेंचा ची बाव दाय ब ट्रा सेंबर ्रिं : इ. ५५ . यद् . सु. व बा शक्रु व ता लव . तद् ही र . ही . ही . य हे बा तवा . व शायर . वेषायान्नदायायदावान्यवाराक्षेत्रयाया वर्देदाकवाषाद्रदाव्देदाकवाषाद्रदाच्या यद्रावद्रिक्षवाषायराम्यावार्मवाषायदेरस्याविष्ठास्रम्भावषादेशासुद्रयवापरः नेत् वेशन्ता वशवास्त्रेत्राया रत्वेत्रास्ताना स्याप्तेत्रास्ताना स्थाप्तेत्वा त्रामश्रद्धात्मश्रद्धात्रवेदावदात्रक्षेत्रचेत्रेत्। विद्यमायुगमात्री रदावित्रचीहेना तालानिकाकुक्टित्यरामानीमान्द्रतामा दे स्थलामुद्दीरापदे मेटानाकुरा यञ्ज वाया वार्याय निषाके कुरायर अवाशुक्राये पर देववाने विषावाशुर्वा तत्रिम वर्त्वे त्यम्मास्त्रिम् त्रम्भान्यम् स्टानमास्यम् स्टानमास्यम् स्टानमास्यम् गुर्ग दे वर्ष अप्येत पर वर्ष वर्ष वा वा अर्कें दे विषय प्रेय वर्ष वर्ष वर्षे बैर.प.चेश्रीश.मृ.क्र्या.क्रेंच्या विर.ग्री.पब्या.तप्र.श्रीट.ची.चाल्.प.चथा.क्रेंट.टी.पर.श्र. क्रेब्रायाम्ब्रुयायेद्रिद्री हिंद्रियायामाहेषायवमायायायहेब्रब्बासुद्राययेहेवाया ळॅब्र या ना सुक्षार्थे दे त्या कुट मी मार्थि या सुद्र ए द्र द प्यत्र क्षा के ब्रा या सुक्षार्थे द्र प्यते क्षित्र विसन्त्वसः क्षेत्रः इसंदिना वसः दूर्या पार्या वर्षेत्रा वित्वः व्यवसः क्षेत्रः वीत्र स्वानीः स्टाप्तिवः क्ष्रताचिश्वस्य द्वित्ताचिश्वस्य मित्रस्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान र्चेनामि हेर विपायी प्रविधान दिया प्रविधान के सके राय र र में मा सुसा सूर प्रविधान स्थाप नुर वहेनायवे कु अळव नाट व्यव लेवा युन्य केना नी रट पतिव पत्र केंग

क्षा हिर्.जीयमार्क्त्यामी सैर.च.यम्भिमायद्गादास्य नि.लया है। स्वापि हेर वृत्रुति वर्षात्र वर्ष्या मार्थः के अक्षेत्र हो वित्रेत्रे वर्षा मान्त्रिता वित्र गुःपर्वेद्रायदे कुर ने मर्थे पा मेद पु बदाय दे खुन्य के कि मे कि र विवासी पर्वेद कुर निर्णय निर्म दुनित्र यादेव यापा है सं प्येत यस दे स्मर प्यत्न प्राप्येत प्रवि हिरा देश नालव निर्धाणितः मेषायर पुर्वि । देशाव दूर पादर। रदावेव प्री ही स्वादरः विसःस्यामहर्याययायार्केशच्हा न्वेषायार्थेन्ना मृति यसमहिषाम्यः अवशासुर्रायिक समामियायाद्रायाचियायावे अवसामित्र वाया सामियायावे र्श्यास्य प्रतिविद्या में देवा पाद्य स्था हिसायते प्रति स्था स्था स्था प्रति प्रति । ग्रयायकरावेटा यम्मी वर्राम्यायायमा श्रुप्ते स्वाप्तमा ने स्राम्य वास्तानाक्षेत्रपदास्त्रीमा नस्त्रामही त्नान्वेत्रम्मावतास्यास्यास्त्रम् इ.भरेट. ह्याबात्र ज्ञावाबेबा इ.चतु.श्रेट.चधु.श्र.चेवाबाता.वा.र्ह्य. वेबात्तवः शक्राबा वयास्त्रमान्त्रे कुःह्नवयायदेवयायवाहे। द्रमास्यवाहे हेहे पत्रमावया इवायम्रेरायम् । मेम्रमायाद्रमामायार्म्यायर विद्या हेमान्युरमायवे भ्रिया वर्त्रायाक्षेत्रमानी के निवस्ता वर्षा वर्षा के निवस्ति हो निवस्ति १८। द्रवायहेब १८८ हेब मिलियामी सुर देश मी सवाय में र सिया दिया है। वेयु गस्यायदे क्रिंब गस्यायस्य वहुगाय दरा ग्रम्याय दरा वराय दराय दराय दराय दराय तत्रस्यात्रेरित्वीश्रास्यायर्षेत्रसळ्त्रत्रेस्यायर् वृत् वेशामस्तर्यादे हिर ध्विः क्रेन ने के विदेर सेम्रमाद्रित सहर हुना विदेन या वादेश पर वाम कु द्रारास्य पर हैं र र में माही थे में माहे हैं गुव वस पहुंचा वस हैं है र र पहुंचार र व पर हैं र पंत्री शेशकर र शेशका जय में दिर पर प्राची विषय से की र पर्ती विश्व

र्राश्चिमायमानुरावादवात्मम्भायराष्ट्रियावादी वदेःवाळेदायेवादेनः ग्रीमान्यासुन्त्रास्त्री वेयान्या ह्यायान्यासुन्यास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रा विषातत्र्रे हे द्रा प्रस्कात्रयम् क्रिं प्रस्कात्र नेषाया निष्या निष्या न पर अर्टेंब पर के बुबार्के । इना पर विक्रापर प्रवापर हैं र के बुबाय देश है। वर् वक्त रेवि हिर्दे वहें के के दिन के वहें र के के वहें र के अधर होता. गुःर्र्चिश्रायाञ्चेतास्याक्त्रायार्थायम् द्विषायार्देशायक्त्रीत्ताः द्वियायवे द्वित्यायवे द्वित्यायवे द्वित्याय चतुः श्री र प्राप्ता वार्षा वार्षा वार्षा विष्ठा क्षेत्र वार्षा विष्ठा वार्षा वार्ष अनिर्तरत्वतामा जि.पंतरावश्वरात्ते रहे.तथी विमन्तर्यर वर्द्र जमासक्त्रे त्र वर्षिय। कुरा वर्षित्रा तत्र हिया पूर्व प्राप्त विष्ट्र देवर रेथा देवर विश्व देवर विश्व देवर विश्व देवर विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व व १८। विद्यार्यवर्ष्यवर्गी स्रवद्यार्थ वद्या के क्षेत्र रे में र व रे व क्षेत्र व द्या के व के क्रिना है। दे दना मुं के हैं के बाह नाया की प्रमाय प्रमाय प्रमाय के विषय हिना नु'यदेब'यवे'भ्रेरपोब'या यदेर'वे'यक्के'रेसाहे'ह्र'य'यविव नु'क्रेरायर सेसम र्वे की केंद्र यं महाराष्ट्र मान विकास मिल केंद्र मिंद्र प्रदेश मिल केंद्र प्रवे केंद्र प्रवे केंद्र में केंद्र पर्वेश.ताशा ट्र.इ.२८.तार्थ.श्रेशश.तप्र.विधाश.त.ताश.ब्री.मू.थश.तक्रशश.धे। क. नर्वाविदेशार्ह्स्टायमानुदासेसमायह्यायमास्यास्यादा स्वामान्याद्वा क्रवाबान्यम् अद्भुम्भ मीबाद्ययान् विषायार्थर्षात्रः हीम विषयः याराक्षस्य र्वेद की अवसर्दर कुर र्र प्रति से से से किया में श्चे प्रदेश म्याने प्रदेश म्याने प्रदेश माने प्रदेश मा र्विषायानारावेन ।देप्तरादाद्धरान्यियराद्युरान्ये द्वरार्थे ।देशदाशेश्रश

न्येव अव र व्यापी हैं वा या श्रेट वि र व्येव पा के वा के वा के या के वैद्वयम् रद्यो स्वाकु द्दः इव देवा देवा प्रदेव प्रवस्त विवापवे देसः मुंबर्द्रवर्ययदेयदेवर्यायायह्नाम् विद्यान्यस्यायदेष्ट्रियः देख्रस्ययाद्येतः श्रवर विवादर्य प्राचित्र के वार्ड्स वा र्या क्षेत्र मुं व्यक्ष मुं दर अद्रय प्राचर हिंर यायार्ह्म् राम्याने वा क्षेत्रिक्ताने। यव देवा न्द्रिकाया अर्ह्में व का द्वेका यो कु न्द्र वचेवाचर् रेष्वा द्वेवाच द्वेशकाचर द्वेशकाचर के के लेखा है। या वाच हेवा वका के सका देव सह र बियातर्थर्थेशतत् हेर.हे। दुश्राचिताया यटावया के मेश्राई हे हैरा गिय. कृतामुण्यराखेरास्। विक्षित्रास्याविवार्ख्याविवार्ख्यात्वारा। विवादर्वेराकृतिया गु.वर्गेव.तत्र.वर्गेत्र प्रत्यसिंदश.ततु.होत्र वृत्य.त्र अवस.वर्द्रत्रम्भाषा. र्वेब प्रदेव पर्व क्षेत्र प्रश्न के प्रदेव प्रत्य मुख्य सामा प्रता मुख्य प्राप्त प्रता मुख्य प्रता प्रता मुख्य र्तुत्र जबा के बार्ड वा तार हो। चे बाजबार टार्नुत ह्विबार आयार टार में हैर राजबार वसक्तित्रस्य प्रत्मेश्वर्षरम् वार्षे स्थायाचित्रस्य वार्षाचे स्थायाचा स्थायाची वार्षे राष्ट्रस्य स्थाया र्वेब सहर हिना वर्डेब पर्व हिर र् जीब वर्डि साई साई स्वर हिना रहा हिन्दा वर्षे र यदे.हिरा वश्चेर.प्रश्नात्वर.ह्र्र्य.क्षेत्राच्येत्वर्थःक्षेत्राच्येत्वर्थः शुकुर द्वायर विवाय वावय हिया वायुय की है वाया यदेव य विद गुरा है ये ह्निमार्रिया कुर्मिमार्रिया या सुरवहिना या प्रवादि । दिसान सुना कुरवाद के ना सुन बिट क्रेश इंगश क्रेश ग्री क्या पर्हेर अप ब्रुक्स प्रिंश स्ति। इंट पर्वा प्याप्त का स्ति। स्ताक्तरा र्वेद्राम्ब्राक्ष्यः श्रुर्यायायायाव्यायेत् स्ताक्तरा वर्श्वर रेयायान्वरापदे सुना कु इसरारेयाया प्रवित रु दे इसरा ग्री सक्त हिन प्येता नार्डे केर द्वे याय पर्दे रुवे। रेट रुवे या सट में रुवे या दे रेवे बार वे या प्रेट

बरकी क्रेब विश्वाच ने ब ब रहिर या गर्म अं अर्डि यो गर्म अर्डे गर्म अर्थ है या गुनिन्यकेष्रयेष्ट्रिन्स्भेन स्टानम्ब्रुश्चित्र्यं स्टानम्बर्धाः वाबवानावु द्वादाव विदालदा देशहर द्वादाव देशहर विदालदावावा वहा हिंद केर वह व इत्यागुः पुवानु नुषाने। क्षेत्रविषानु क्षेत्रायर नुन्याधिव के । इत्याप्य स् गुःदेवित्वक्षदक्ष्मियावयावर्ष्वयायम् च्यायदेक्ष्मियायम् च्यायदे । यास्त्रक्ष-क्ष्र-प्राचासुस्र-प्राच्युक्षान् कायक्ष्र-प्रवे क्रु सक्त्र-प्रेन् द्रेये देत चार्याक्षेत्र.मृत्यपुर्वेषाव्यक्षायक्षेत्रायुर्वेत्र। स्यान्त्री मेर्यानुस्यान्त्री द्वरः याम्बुर्यायमान्त्रीर्देन्द्रमुद्द्वामानेबायायानुब्द्दान्। नेबायायापेन्द्रम् मुंबाक्षामुनायायि दी क्रिन्स्यायानेबाक सूरानाम्ब्रायवारारानेवा मुन् द्वे देनाय है। दे वया वहना स दरा दे वया हैन से दया नाम समय है। देश जयान्यवायात्रयास्यास्यास्यास्यास्यास्यास्यास्यान्याः कुं दिन्दर क्रेन क्या नेबाबबाय क्रेन वा द्ये देव कुं देन प्रवय देव के बार क्रिय क्रिय क्रिय क्रिय क्रिय के प्र वर्षः मुं मेर् विषयादेव पर्वे पर्वे मुं पर्वे मेर हैं पर्वे मेर हैं पर्वे में मेर हैं पर्वे में पर्वे में पर्वे है। विश्वना श्रीत देवाया पर्दे विश्व देवा के विश्व हिरा श्रमाता मुद्धतः पात्रः दिव स पठवः ग्रीमः त्रमाया । सः रेपः प्राप्ता समुग्रायम् रम् दियास् विस्रा । हिंदावस्य दिया विस्राद्धा विस्राह्य खेराई द्वा क्रेशन्वव परि रेवायके। वित्यन्व पर्व नियं परि रेवा गुन्देन्रह्मायकेन्द्र्यं । रवःवव्ययान्त्रीयःविरःवेष्यावका ।ववेर्वेर

रे से अविव विशेष

अ ।। पहिषाया पदेव या पहिषा ग्री हैं वाषा देवा वा पहिषा वदेव या पहिषा श्री स्विःह्निमान्त्रसाद्या पदेवानिवयादियादित्रमान्त्रसान्त्री हिनामान्त्रसान्त्री । द्राच्यानिवया गुवर्ट्स्य श्रु अवेर्ट्स्वय देशन्य दिन । दिवर् अवेर्ट्स्वय विर्ट्स्वय देश श्रि । १८० र्धे या नाहेश हु युषा ग्री ना न असाय दिसा दरा दे दर यहेवा यदे न दससाय दे र्ट्यायान्त्रेमा व्रवायायाहीय निवानीयाही स्राप्ताया । विकर्यायया यम्द्रायदे निर्द्या विष्य विष्य मुन्त्र मुन्त्र मुन्त्र मुन्त्र मुन्त्र मिन्त्र मिन्त् अष्टिर क्रियाचि त्वे देवा देवीय है। देवट देश प्रस्थय है पश्चित देश स्थाप श्रव्या क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्र र्येवसाया परेव महिसा बुदा यह मानी हैना सारे सा या से साया विमा देवी साय ये हिया दे द्वानुवे क्विं अप्ते अक्वु व्युक्ष ग्री वाद्यक्ष या त्रव या विक्र में दे द्वार में प्रवास क्विं वा विद दे। इ.स.ज.है. बट. बाबट. दव सके दे. त. से जा विट. हैंट हिंद ही हैं जो श्री जा होता डेबार्स्यायाणुकायहूँदा गुवासिवाणानेकासुदार्या उवा वेबार्स्यावाणीकायार्थिया यत्तर्वत्रस्य श्री तीस की यो प्रमार्थ तद्र तालय तद्र तालय तद्र ते हिर तर्म तस्य प्रमार्थ वित्र त पर्वःत्रेअःगःवश्वाचक्कस्रशःह। युश्वःइअःयतः द्वेवःयवेःस्रवतः स्वृत्वःयवेःयतः द्व्। हैं इ.वार्येश.ज.शूर्वायात्रात्रीट.शक्ष्ये.धेट.ज.क्षेत्रात्तर.श्रूरा.त.दश.ज्यायायाःहे। ट्राचया व जुरा क्रमा पर दिवेद पा वा क्षेत्र मा जुरा के दिवा दे पा दे पर पर पर मा वा व दश्राणिक प्रविष्धि रात्री । त्वा इश्राप्य प्रविष्य प्रविष्य स्वराधिक प्रविष्य प्रविष्य । श्रुणश्राततुः द्रश्राचीशः हे. ह. पञ्चशायान्द्रश्रात्त्रात्रां भेशायाः हे। दे.वाष्पराञ्चेतः स्था यास्त्रिन्द्री स्राह्मस्रम्भान्ते स्त्रम्भान्ते स्त्रम्भान्ते स्त्रम्भान्ते स्त्रम्भान्ते स्त्रम्भान्ते स्त्रम्

ततु.श्रधर.विच.त.लट.४८.वधुर.वी.वैर.व.२श.तूटश.वी.वेश.त.२श.री.वर.तश नेरामराम्यायाम्यश्चरागुःसर्केनान्द्राष्ट्रवायदेःकृदेःस्वाद्रेन्द्रनायराभ्याद्यम् है। श्रम्भात्रे क्रिट पार्स्माणेन परि द्विर रे । दिवामायायदेशने गान हिंतायायहेन वशमवश्याकेरायरक्षेत्रप्रकारक्ष्म ।देप्यश्वाचेशसंक्षानुः द्वानिः क्षेत्रप् श्चित्र द्वित्र मी लया हात्र शायश है गराय प्रमीद प्यर पर्य वार्म विश्व गर्म स्थापि हिरा जेट.र्ट्युडी चंबाचे.क्र्यात्रयी जानंबाद्याची.हैं.शरु.धेर.हैंट.व्हेंवा.स. स्त्राव्यायम् म्वायाद्वीयाते। पश्चेदार्यस्याद्वायम् स्वायाची प्रमायायाची इंट. वेब क्ट्रियायय पु पहुंबा परे प्रत्या रहा वी सेस स हेरे हु में र हिंगा वन्द्रवायायदेग्यास्याद्धेद्रच्याचीयाद्वद्रवा वयाचीयस्ययादेवावया र्श्वेषायान्द्रसासाधिवायदेग्यो नेवान्द्रसानी झानुरादिवानु विवादिवा यायार विवा विश्वेर रेअवश्येअशर्वेद श्रीप्र र पुरेश देश श्री श्रीर विश्वेर यासेन् पवि देना सामवे स्वापदे सहि। ने न्नामी स्निम्स सुगात हिन ह्या स्वाप यहेब्रायवे हिरारे वहेंब्रायाम्बद्धायाहेर्यय क्षेत्रय क्षेत्रय विश्वेरा यहेर्त्रय व्य लुषान्तेव कुष्यराव कुर्भुषळव केन्या केन्द्री ने निष्या की कुर्व भूर केंब वशर कुवायवन उग्नर्। देर्नानी क्षुयन विदे वुषा गुर वर्ष्ट्र वुषा स्वाय रवायमन्यायार्थस्यसम्बद्धिः सुराद्दिशासुः स्टिप्यास्य स्वर्षः सुराद्वे स्वर्षः देवा **到、当口が、好、内に、高、治、知味な、多く、口、別く、う」、美、、口里が、別が、多く、まかか、山かい、うく、** 2.विश्वश्र है.तेब.क.क.विर.है्ब्य.त.क्ष्य.लुष.तवु.हिर् श्रेष्य.ट्वय.कु.ध्रेपश. सुम्मद्राञ्च भुग्रळव हिन्या सेन्द्री मेव द्राय विषय से सम्मान्य क्रूट्रत्व ब्रेट्र प्रक्षाण्य प्रवृत्ते न वेश पर्ता विश्व प्राप्त विश्व विश्व

र्हेन रु है द्वर छ मर्रा हु खुरा की रेस य हैर मन् यदी । दर रें है। दे हर म्ब्रियायायह्मायसार्दे हे क्वियाद्येव मुक्षा । यदेव मुक्षा अव कद या मव बाय थे इवाद्भिरामक्ष्रमाग्रीमद्वास्यम्भियाची प्यायाय्येषाम् सद्यास्यस्यसाग्रीयार्ह्स् रेट.बी.बार्व.व.व.व.चचर.ता व.म.वर्केर.तव्.प्रभात.वम.व्टमाता त्र.हिय. विवापवे सामकुवे सेससान्यव इससाग्री सागु हा सह त्यसानी सासह ने सुसानु हो न श्रेषुषायाक्षे । विन केषापति द्वा के क्षु पुषा केषाय न्या प्रापक वापा धिन हो । विन पर्देश,तथा केंद्र, पूर्व, धुरे तथश्चीशश्च विचाता शरशः केश वशश्चर विश्व वनद्राता सः अवर्षेद्रात्रपुर्भाता वद्यात्रा । श्रावर्षेद्रादेवद्रात्री । श्रावर्षेद्रादेवद्रात्री । गुवर खुवासाधेम यादे र माविर दुः कुद्र यम दुवी विमाम सुर मायवे द्विमा ।दे लट.म.श्रुव.श्रव.टव.व्रि.व.जश.चेश.ट्वेश.ट्री चटवा.चेव.क्यका भ्रि.जश. श्चि.श.र्क.वेद.क्ट्र्या । शरशक्रिश.त.भीय श्चि.त.द्या । पर्वेय.त.र. द्याच्च.प्रया.शया पर्वाक्रियाक्षपायक्षापाक्ष्रियाप्तस्या । इस्रामेश्वाक्षरार्द्धरायाध्ये । विराग्रीः रद्यविष्यानुष्द्रय। ।रद्याये येषदेशस्यस्टिं। ।श्चुस्यदेर्ययार्सेद्रः गुरायबा विश्वयापद्यमानुक्षेत्रयार दे। विषय्यवेष्टर्या ध्रेत्रयाण्या । व्र यद्राचनावास्त्री । स्ट्रिं सुयानु चरासी विषानासुर सायदे हिरा दे.तर्यत्रश्चीश्चरत्रश्चीराष्ट्रेट्राश्चर्याश्चित्रात्र्यत्रस्य स्वित्रात्त्रे क्षा विश्वर्यत्रस्य द्वी.श.वेश्वेश.शब.कर.री शरश.केश.च्य.तत्र.हेर.री.च्य.पश्वा.ह्य.व्यंश. कुःरयम् मुष्यम्दिन् येद्रपुर्या हिद्रम् क्षेत्रस्तुष्यम् छित्रम् बर्बाक्रिक्ष श्रुर पुरर्विय पर्वे क्षेत्र हो। रेश्व स्था स्वापा पर्वापा प्रीव मीका प्रक्रा व यवै देश । निर्नेष के दे पर अ शुराया । अर्दे के दुर दर है नाय था । दे थे

गुब्दन्न हैन। किंवि हैन नुष्य का की विकेश केन यर विवयर वश्री विसम्बर्धरस्य परिस्य प्राचीत्रस्य व्याचित्रस्य स्वाची प्रविद्व स्वाची प्रविद्व स्वाची प्रविद्व स्वाची प्रविद्व वारटाचरका शुर्णेद्रायंदे विकानु स्थायंदे कुटाक्रेश्चरा विका शुर्वा शुर्वा शुर्वा विका विका हे। हीर श्रेश्वरा रुव इश्वरा पक्ष पार्य निवा स्वा हिंव पु सिंद पाय से स्वाप र र र २०८.२.श्र.वर्वे त्राच्या । ४८.के.वश्यात्र्य हेंद्रात्रार्द्र्य वश्वाकी.विराश्रिश्यात्वरा वरर्देर क्रेश हे विवर वर विवर वा दि है द ववश्यवश्यवश्यवे इवावर्धे र या वा श्चि अदे श्चिर न्यायक र कि पा कि हो देश त्या वर्षे गुवर र र प्यर केर याक्षे । रूटान्यटानु के व्युटा साधिका । दे भी कु के विन मामवामा विन मामवा वस्रयः दर्दे । संस्थाना निष्यं वे वे साम स्थाना । विवित्र विवे पकेट प्रश पश्चरमा विस्रमादेशित ग्रीमाइवादित्राचा विस्नासुद्रमाधित्रीया सदिर ब्राबेयबारुब्राची क्रेप्तक मानवाम ब्रुयायर में प्रायस्य या मायबार प्रायस्य विवा नु स्प्रिक् केंग्रम् में स्थायस्य प्राप्ति स्थाय केंग्रिस्य वि केंग्रिस्य विकास विका वर्गे.च.च बर.टथ. बै.कूच श.श.वर्गे.च र.च शेटश.ह। हि.ह.हेर.च.वाश श्रे.८र. म्बर्गन्द्रवायान्द्र। श्रिन्यायम् अराम्बर्गयाः है। दिश्चिन्यदेवाहेव क्रिया यन्त्रम्या विस्रम्भित्र विस्तर्भा विस्तर्भा विस्तर्भा विस्तर्भन्यस्मित्र वर् नेमन्द्रान्त्र्रम्भाक्षेत्। भिर्मण्डम् प्रत्मानम् वर्षाय। दिः सम्मा चैट.जब.वैट.च.ड्री विट.जब.स्र.जट.जबच.त.जुरी वि.ह्चबात.जुराश्राका ने दी विवित्र पर्व कु अर्क्ट नवस सूत्र गुर्ग दि दे दे दे के विना से रवस । हि

१८.८. ब्रैट.सट.मू. १ ११४४.१. क्षेत्र.लट.वर्ग्यूचर.वर्ग्यूच्य वेश्वासीटश.त्तु. हिरा दिश्व संश्रम छव वस्तरा छ र ग्री कु र पा क्षु पुरा ग्री क्षु त पा वि र र र य ठ श श अवे 'युष' महिष' स्पेन् 'य' मह 'बेम । स्य पातुम अवे 'युष' ने 'देवे 'श्रुप' मिबे 'से र पर्वे ' हिरा श्रेयशक्त मिया श्रीयश्रायवे खुरा है श्रेयशक्त मुं विके मिर्पे के विराय कें'वर्देर'वेब'क्षे'ग्रेद'दे। बिस्रस'ठब'दर'देवे'ग्रुग'युस'ग्रिस'द्येर'व कुं'य' ग्नेर'व'विवेष'र्'ग्नवश'य'णेव'यवे'ध्रेर। । ध्र'व'ग्रुग'यवे'युस'रे'वे'ङ्क'पवे'र्सुर' स्विष्ठ दाव्यक्षार्श्वेषायद्वेष प्रदा ।दे वाष्य प्रस्य मार्था प्रवेष विष्य विषय हु'झ'च'चैक'वा विश्वन'सर्वे मेर्बाय'दे'चर हु र'चैद'मेर्बादरा दि'वाचर स' रम्बानिकार्येर्प्यायकानिकानुः स्यायायकानिकान्यारम्बा याम्बर्धाः श्रीवर्धायदे । युक्षा बेस्रसा ५८ । । यु वा मातु वा स्रोदे । युक्षा स्रोद्धा स्रोद्धा । युक्षा मातु वा स्रोदे । गुर कुर्म र्रायर श्रेष्य गुराहे। । रग्याय प्रेयारे ख्रादे ख्राय ख्राया ख्राया विषा र्ये देव देव व्यव या नाट दिन । नादि वा स्वाधाय वे व्यव श्रेस स्वाधाय है प्राप्त है। स्यानातुन्यस्य युक्षास्रस्य विद्यान्य वात्राचित्रः स्वाप्तान्य विद्यास्य विद्यास्य विद्यास्य विद्यास्य विद्यास्य श्रमात्रीमान्नान्तेन्यदेन्। । न्यांनित्रमानायान्यान्यदेन्स्यानुर्येन्यदेन्देनः है। विके सेसस्पर्टरपर दें दर है यस में खुराष्ट्र पर रहत में निवस प्रवेत प्रवे यवै धुरा दिस्त महुन सवि नार इन रेन गुर यहन दिसे हो देवे खुर दर देव सेस्र मानिस वहिना याना दिन । केंच्या सर्वे हिन प्राप्ते हिन प्राप्ते हिन प्राप्ते हिन प्राप्ते हिन प्राप्त नी'मानमासामानि'यार ख'रमासामानिस'यहेंमा'नर्वेस'यये खेरा नेर खया मेन 'तु'

युप्तते कुर श्रेमशक्रिवा रहे या प्राप्त विष्व विष्य स्था विषय स्था विषय स्था विष्य स्था विषय स्या विषय स्था विषय स्य नमयार्म्मेन यमा ।नार जना पुष्टा रहर पर्देनमा प्रवे निविद निर्दे के समानिमा धेर्जार्भि गुर्ग । रम्बायि युन्बा गुर्दि देवे हे व दु की यम्याय सेन्बा मेर्बा यर त्रेत्। विश्वामश्रीत्रात्तराष्ट्रीत्र। विश्वश्वातातात्वर्थशा लयःस्थात्वर्थशायीःवरितः वश्हिःद्वराववृद्यावन्द्रायान्द्र। ब्रुवःक्वाक्षेत्रः पुत्राव्यवावः वित्रः पुत्रः पुत्रः प्रवाद्याः याम्बर्धि । दर्धेदी विविधायक्षेत्रादेर्वाबयामु दुर्धेसस उसायसायर र्दरम्दरम्यरम् अस्य प्रति व्यवस्य । ी हे ेल देव राजा र न्यायवे शुःसवे सुर प्राधिन है। रिस्राष्ट्र विश्व दिस्र है । दिस्र है विदार दिस्र है । मेबान्यश्वरात् स्रम् याद्वी । इवाव्हिर्यायायी व्यास्तुर्या । श्विस्ति व्या ट्रे.क.चर्चरी क्रिश्चविद्यात्तवु.क्षेत्र । ट्रि.क्ट.चवु.क्ष्मै.क्ष्यत्त्रद्या श्रुश्चश्चर वसमन्द्रियास्वास्वास्वास्वास्यात्राहरू बिटा । ब्रिन्यकुन्सस्य कर्ना स्टान्स्य कुन्तुन्य सेस्य क्या मुन्त्रस्य प्रमुख्य प्रस्ति । यथिता दिक्ष्यका दिवसप्दिक्षरपर्केष्यगात्रा श्रिस्सम्पर्दिरप्दिरप्दिन गस्त्रायते हिरा हिंदि पहुंबा यका गस्ति संस्थिय है पे दे हिदा यका रहा है। से सम् लट्रवाराह्र के चत्रवृष्ट्र लूट्यायी मेथारा वृषा च तास्ट्राट्ट विश्व या र में अकेर इयमायायायाद्रभेत्या यो मेमल्यात्रु यात्रासु द्वराव द्यामीयावस्य द्वरात्र स्व,त्रंतु,क्षेतु,श्चें ४,तविर,त्रंतु,लर्ति। श्चिंश्च,८र.श्च,त्रश्च,त्रश्च,त्रश्च,त्रश्च,व्य,त्रत्य,व्य,त्रत्य, पङ्गितेशभीशन्ते प्रमास्त्रीं । यद्या क्रिया मु अ प्रवास मिल्या विदेश देव देव में से बार के बार के विदेश हैं में में बार के बार के विदेश हैं में में

सु'मेब'पदे'शेसब'द्वेद'मु 'बूद'प'वासुस'मु 'प्ये'मेब'पश । विस'द्व'गु सळ्द र्गार्ट्य्यं पर्वे कुट्रायेश्वराष्ट्रश्चायशायुवायाः कृते सुः श्चुः श्चायाः पर्वे प्रायाः पर्वे प्रायाः श्रद्भावेद्यायाद्या द्रश्चाक्षेत्रव्यास्ट्रियारायाद्या द्रश्चात्रवाद्या द्रश्चात्रवात्राच्या वश्रञ्जु वुश्रञ्जू वाया वर्षेत् द्वा वि स्र रायस्य या वायो मेशास्त्र अविशयवे स्या श्रुशः श्रेयस्कित्रयमित्र्यस्भुःयुष्णिभुवन्तित्रद्रायरमित्रयदिन्यया दे विन प्यमा हिन यदे पुर्वा सेन्य राम्य सेसमा की रत्य विन प्यत् सेन्य सेसमा सेन्य यर पट खुरा दुर्श में अने ही विश्व खुट की किया वारा मार्थ है। है से र व सेमकात्वत्विमार्स्यामीकासिमार्ट्याचिकातास्यम् र्वे ततु सेतु सेर रूपिशतर वर्षेत्र रेश्चयशतु से तर् से प्रश्ने स्था है जिर रेट. हैंग्रायाक्षेत्रयराधेत्रक्ष्यायराक्षेत्रयम् होत्ययान्तेत्रम् । यदाक्षेत्रेने किन होन प्रमान समान स्थान स् मुत्र-१ मुर्थ-१ मुर्थ-१ मुर्थ । विद्याना सुन्य मुत्र-४ में क्रिया द्वा म् वश्यक्रवर्त्रात्रात्र्वेवराष्ट्रास्त्रात्रात्राचित्रात्राचित्रात्राच्या । श्रम्भः विविधित्रहेत्रत्युक्षान्दायहेत्रायाक्षेत्रकाविकासुक्षायाविष्यासुक्षायाविष्यासुक्षायाविष्यासुक्षायाविष्यासुक्षाय युर्यमागुर्। युमामेममानिमाहेमाहेन्यहेन्यस्य प्रियाप्य परिवाप्य किया विमानिमा ग्रटार्च्नायर मध्द्रस्य पर्वे द्वेरा दिश्व द्वित्रम्य देश स्था हे स्था च्राम्मान्त्रे नेमानुन्यी खुर्रिन्या स्वाप्ता स्वर्धा स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स्वर् त्रतः क्षेत्र श्रीम्रह्य श्रीमार् किर्या विष्य प्रति । विष्य प्रति । विष्य प्रति । विष्य प्रति । विष्य प्रति ।

र्ह्मेन यायादे हिन वसा । गर सर्दे हे या से ग्रायदे ह्याया बुग्राय दिन प्रेहेन त्तुः द्रश्रातात्तावेषश्रातुः श्रुश्रातात्ताम्भश्रातात्ताभ्रात्तात्त्रभ्रातात्ताभ्रात्तात्त्रभ्रातात्ताभ्रात्त वसास्युन्ता वाज्यवास्त्रवास्युविषान्येत्रावहेन्छेन्यस्याय्या त्रध्याम् मिन्द्रम् मिन्द्रवाद्यायाय वित्राया मेद्यायाय क्षायाय क्षाया वित्राया वित्राया वित्राया वि वर्त्ते र.मी.कैंट.ग्री.इंश.शे.वचंदश.वंश. द्रि.इं.शंत्रश.रेनव.हूबंश.तर.वर्तीर.वर्ष. ड्रॅट.ब्रै.श.क्.वेर.वर्सुशशतार्टर.। केंद्र.श्रे.ब्रै.श.के.वेर.वर्सुशशताता.ब्रैं.जेश.व्रे. र्ट्रेब.भ.क्ट.तथा ट्रेश.ब.ट्रश.क्व.एट्रेंट.क्व.पूत्र.क्वेट.तट्रेश.तपु.हंश.से.पचेटश. वश्रञ्च युष्य ग्री केर वेव ५६ । वित्र हिन हिन के वित्र वित्र विष्य हिन दें व कु क्रेव पहिषायें पर लेवा दि हैं व या या दे हैं द यथा विदेव यर व शेसरा वै निष्ठै वर्षान् निष्नि न न न व्यापा सून पाउँ या वया याव पन स्थापि । विन्दिन द्वायवे यदेव यद्दाय द्वाय देवाय द्वाय पर्वे ।दे स्वर्थे प्रमुद त.र्श्य.मी.बैट.त.वेश्र्य.तू.बैट.ज.वध्येत्र.सी.रत.टट. विथ.शूट.टे.सी.र.तश. लट.व.झी ट्रेश.च.चेश.क्ष.तर.चेश.त.च.क्षटश.त.लुव.ब्री ट्रि.चेश.चेश. रवर्टा विवयत्त्री वैट.व.च्युषात्र्रे जेर.टट.वश्यत्तरा वि.स्वायायते. स्वाद्धान्त्राच्यात्रा पर्वित्रायाना ध्येत्रावे वा । हिन्दिया ग्रुप्ता हे से अअस दे हे नन ध्येत्र या न स्वापार्वित वयमार द्वार प्रति । यहेन व्याप्त प्रति । यहेन विष्यम् स्था वहेन हेन हो। यहेन यर व विषाया व षा ५ गाव पर्व विषायव पर्व पर्व में का क्षेत्रका व देवा ५ ८ ५ की व षा शु के ५

हैंगशन्तायायायनेवाँ । ने संस्थिता हो से सम्मानिव सम्मानिव स्थान विस्ताया निवास मु दशानेश ने न दि त्यं प्रति द्विर ने शायकेर शाया वि न दि । वि राया मुखारी द्विर ने शा विवायास्व दुर्गुरायाद्या विविवायवात्तुरादे व्यटा हुव सेराया है। । सूराया मसुस मुःइस्रानेशन्तर्वेशयशयायायाः हो निवित्तुः स्वयः मुरायायि स्वरेष्ट्रिया विस्रा र्वे अवर विग्ने के स्थाय राज्य वा साम के प्राप्त के प्र क्ट.ट्र.र्ज्य,तपुर्वि,वीबाववीट.व.लुथ.हे। क्रंट.व.वोश्रंश.तुपुर्वेट.शुश्रंश.ट्र.पूर्वेर. श्रेर्'र्'ववश्राराद्रे'वश्राहेर्द्रवे क्रुं'अळव क्रीश्राधेक्षराद्रवेष क्री वेषा रवाद्रत्। व्यवश र्ट्सियश्मेशवर्ष्यायान्त्रिश्गीः रेक्ट्रिय्युर्ध्याये मेश्यप्रद्र्या दिवे पर्वे व्या कुट र्वर : बेर ख्यार ट पठ राय हु युरा गु हु या विषय पवि । विरास विषय । त्रत्री श्री जैसाववीयातातात्रश्चिष्रश्चर्ह्यमात्रीशाजीशासारमायाववीरावेशातात्वेया र्विषाति। ।गिर्विषायप्राप्तरार्देष्वयुवायावसार्देव क्षेत्रायुषायासारवाषा क्षेत्रा त्तुं हुरा विश्वस्थरविश्वदेर् व्यवश्वायायात्र वृद्धित्तर्दा मूट वहुन द्रा हूर. वर्तेन्द्रमण्यानः स्रुप्तक्रम् द्वन्याक्षाय्याना द्विष्ममः स्वेतः स्रुप्तक्रमः देन्यावयाना त्तु हिर् दिश्व देश प्राप्त में श्री प्राप्त हैं जिश क्र श्री विर प्राप्त हैं हैं रेट. द्वायायेवाने। कुवाहिरायमा रुषाग्रीहिरायमा नवषाग्रीहिरायमा मिर्मिवे खर्यमा विर्वानिष्ठरयमा र्वेपश्यीखर्यमा सर्वेरःक्यमीखर्यमा द्री वर्षा वर्षा वर्षा विद्या । विद्या वर्षे वर्षा विद्या वर्षे वर तत्र। लूब.ध्य.वि.वि.तत्र। रिग्रम.श्रकूब.तत्र.वि.तत्र। श्रक्ष्य.वि.वंशाचरशः

ग्रि.विर.तत्रा १५४.कृथ.बी.विर.तत्रा लेब.क्र्र.ग्री.विर.तत्र क्षेत्रारा.लंब. यवै धुरा १८ में मुद्दा हो। बिस्रक १२वेद समर मुना ने १२वे वेद मानव में कुर मुनानी खुनाका र्स्नानी के र विचार र र रुषा सक्स र जुनाया प्रकार के राजि सुना । ना सुस यायुवाक्षे । इवावर्धे रायदे पत्रे दावे राय हु हुवे द्व्या गु हो वा वेदे दर दर है रेवा केरीन्यायर स्टायक्षेत्रपदेखिरा देरावया हिन्यस्याग्री पदेवे पर्वेत्रपान्र ल्य दिया विषास्त्रवाषा गुः दे प्रमेव निषा स्वापा स्वापा निष्या प्रमेष प्रमेत हैं . श्रमधान्त्रिकामी निर्वास्त्रेयास्त्र विद्यालका हैं स्रिट में त्यीयात्र दिसासी विद्याप्त । यायसार्वेग्रसासु देव्हा व्यायुक्षा गुः द्वे देवायमा वित्यात् दुन्या देवाये र्रेव.र्ट्या विश्वअभग्रद्यव अवर विवाची विद्या अभग्रद विवाची विश्वअभारे विवाध अभग्रद विवाध त.त.श्रुर.व.यु.हो ४.८८। श्रु.तथातयीय.ततु.रेथ.लथ थ.श्रु.तथा.यीय.ततु. रुषासाधिव दर्गियायदे श्रेमा दियाव पक्ष पर्योद्या विश्वाद विश्वेष दर्भव केर र्श्वेष्यःश्चान्यंत्रदेरःत्रवाधानेवःदेत्रःयावेषःतुः ५५५ त्रवाक्रवाश्चेषाशुः हेवासुः वर्षः पर मुद्रा । नालक यारानाले नारीना वार्स्सा हे ही स्ट्रा प्रताय प्राचा ही र नेपिष्ठश्रियायाने। पिषिपारिषायाहिषानेप्य रेपिष्ठा स्ट्राप्ति स्ट्राप्तिषायम्य लटा ब्रिज्योग्नर्दे श्रे स्टब्स्यिक्षणाविष्ठर्यते श्रेरा श्रिष्यक केवा में निवेत्त्रमुपक्ष किर्म्यस्य द्यायसम्बन्धियात्र दिस्य विर्मेषाया सेन्यते वहतानुसाये प्रति द्वारा मुक्ता विकास देन-द्रम्र र्ये प्रेव परियावद के सञ्च प्रवाधि वर्ष्ट्रम् स्री स्री स्री स्री स्री प्राप्त प्राप्त या श्री र श

तत्रहिर। विवातावीय है। सेवशायदेर विवायश्वेश सेवा विवातालेशायर शाशे. र्षेर्पये द्वेरा नर्वा पानुन हो । दे देर् हु पुषा अ हिन पवे के हु बा अर्दे व सुअ रुक्षे अर्वे द्वा वर्षे रा वर्षे राता वीय है। विदे त्र वे र क्षेत्र वह वाहे व की विश्व ग्रम्था अर्था द्वर्यं के स्वति गमयानी रद्दा मार्च स्पर् हिंदमानी मार्च प्राप्त स्थित निर्मे ने निर्मे निर्मे ने निर्मे ने निर्मे ने निर्मे ने निर्मे ने निर्मे निर्मे निर्मे निर्मे ने निर्मे ने निर्मे ने निर्मे ने निर्मे वर्चर वर्षा वेशवार्थरश्चरत्रिया वर्ष्ट्रविष्ठवायाः वीयः है। विश्वासी शक्ष्यर वेश पक्षेत्र। व्यास्तितः सहूर्यः वर्षः क्षाः वर्षः देवरः पश्चिरः ह्या कः हे.व. वळटाकु वर्वे खेंब हुब दर इंब यर्वे क्षेत्र है। त्रेश स्था विकेषे वरे वरे वा गुर्वे रद्यविद्या विश्वयाद्यवः केव र्ये वर्षे द्दायन् वाषा विद्याद्द विष्टु द्रा । वार्श्ववा । स्रावदावा स्निन्दिवा नवा वी सामहेसा । श्रेन या वर्षेन यम वर्षे माना निवास वर्गेन रामकेन देव पर वर्गेरा वेशनशिरशतत् हैरा वेष तर्रा राष्ट्र र् अ.वेश.योटा श्रे.वीश.यी.शक्ष्य.धेर.वाधाराप्र.पंता.पंटा.श्रूश.ता.द्रश्र.वा.लट. पश्चिर रेस स्राम्य मारा सहाम द्वित यदि यद स्पेत स्पेत स्पेत दि है : स्नेत द्वित पेदि । हिरारे वहेंब वाक्ष्माय स्थाय स्थानी बाग्यरा वाबार राष्ट्री सव बावार र वर्चेर.धे.हैर.श्र.क्वातालट.ब्रुचातर.वर्चेर.स् विश्वविश्वरातव.हेरा विश्व. ब्रिश्रामाचीयाङ्गी श्रीश्राक्ये. श्रिश्राक्ये श्रिश्राक्ये श्रिश्याक्ष्ये श्रिश्या वर्षेतातहता श्रिया. र्ट्स् प्रत्राच्यायायहर्त्वा विषाश्चराद्यायाद्यायाद्यायहर्षात्र्याया चीबीरकाततु.क्वेरा चर्वे.चीबीकाताचीच.क्वी प्रश्न.कि.जबा चर्चा.क्वेथ.चश्चच.क्रथा.

र्वेनायर मेर् दें दे वार्षायदेर है सेससर्ट सेसस्य यास देनाया वान्यस्य र अर्डिण वर्ष मार्मेर पर्व विषये नहेर या वर्षेर प्रेर प्रेर विषये के में वैर्दिन्ग्रयायदी । यदार्म्यायाव कुरम्बराय रायत्व के के नाने। ग्राम्य के या ग्वन्द्राप्त्र्र्द्राचेत्रा हि.श्रेट्र्स्यप्र विषय्य श्रेष्णिय देश्वेट्र्प्ति वसर्दिन्यमयपान्यान् हो नेविर्धेर्मे रानिस्ति वस्ति पुरान्दान्य स्तिस् यायदेशायुषाग्री द्रीयायिर यामान्यायये दे प्रवित मानेमाश्रायये स्वित स्वस्यामाश्रद त्र मिन्नि दि त्रिक्षेत्र केर वापविषा तर मिन्न । सेवाय प्रवर पूर्व रहिना वीय मृत्तराय वर्षे र.पे। व्रिमाना र पान काता र पान क्रिमाना मुन्तरा मुन्तर ताश्चरत्तर विष्टिकेर तर वर्षर र द्या विश्व शेत्र श्वर वर्षे तर विश्व श्वर है वर विश्वर है विश्वर निर्पेरिकेषा दिनिर्पेषा किये द्वीर प्युव रेट में निर्दे पेनिष्व के किये द्वीर जैश्री, प्र्यानानूर हे झ.जश्र. रीश्र दें इ.पश्यानव्याचेश श्रा । तिजा है येश. गलन नग मु र्सेट न स वर्दे द पवि र्येन मन स र स स स से र हैं । यह युस वर्दे र र्द्रमान्या द्विः द्वेर द्वेर द्वेर क्वायम निया प्रति । या महित्य विषय प्रति । या प्रति 55.त.राष्ट्रशास्त्रात्र्येषे.श.राष्ट्रशा चेश.वेशेटशी वर्टर.टे.व.वच्च.शहर.त.

वस्त्रच्यात्रम् की वयस्त्रम् स्त्रम् द्रायस्य व्याप्त विष्ट्रप्ते की त्रायस्य विष्टा लैकाक्षर क्षमायने बायहवानी मिनायर लूरे ख्रोर क्षमानुषायाल्य यदा क्षेत्र। हेतः वन हेन पावा हैन वहरा राज्य । विराधि विराधि सकर राहि सकर स्वासाना विसानात्वेसान्त्रात्रेत्रान्त्रात्र्यात्व्यात्रमा हित्रक्रेत्युरामसानातः विवानिहरें विवास । शिर्ता सेवास ग्रीस श्री तथा श्री र तय र वर्गे र । श्रि. तथा शर् वान्ने निवानीवयात्रीर तत्रा विवारि हैं वात्रका है वात्रा विवार्थ हैं त्या विवारित्र क्षेत्र अक्षत्र के प्रमानित विविधित क्षेत्र । । सार्य स्विधि स्विधा मान्य प्रमानित विविधा त्या श्चेत्र प्रवायदे वक्ष स्रवायु । भ्रि वदे र दु दे श्चर प्याय प्रवाय । वन्यानु द्वीत्रायर मुराव द्वार विदेशिता विदेश हेव विदेश मानव र सुराव में र वर्चर। इ.सर.स्विषाचर्दरावर्षेवासान्द्रम्वा दि.ल.स्वामरार्था न्येर्गुर्ग विस्वयंद्वयम् भ्रिम्प्ययं वायम् न्यायम् न्यायः वायम् न्यायः वायम् न्यायः वायम् वायम् व विषानु पायहर पायवा दियापारे केराविकर विवासर परि केयमा विनयानु वर्रेर् यविष्म्यार्हेना रायारा । दियारा केया गुन के या साम प्राप्त हो । यदेन पर यहन यन्नागुरायेन्यायेन। विश्वासुरशा निवाने हिराने हिराने निवाने । त्र विश्व तस्वालिक द्राप्त के लूट है। विष्ट शूर्वा वा प्र वा बारा छे र कि द्राप्त की वा विसानमाञ्चरासकेराग्री नेमायामहिमाया हिंदाकेन हेर विवाह पदीसाया ने लटक्ष्याचेशविशवशा । र्योकात्त्रियात्त्रियात्त्रियात्त्र्यात्त्रात्त्र्यात्त्र्यात्त्र्यात्त्र्यात् यर प्रमित् या द्वरा । ब्रिट विर ब्रुट प्रदुष या देवे कु सक्ष कुष प्रोक प्रवे हिरा है। क्रिन्यये कु अळव चेन्ने । । महिन्यी किन्यव मी प्रविव प्रविक्र मिन्।

वेर् नामवारेव द्वर संसम्बद्धानवे वुस सुवद्या सम्बद्धा विष्य स्वत्य सुन्य विष्य । वि यदै'यश'गु'दवेय'य'अ'क्वेर्'य'हे'अ'बर्'य'भेर्'यदे'द्वेर विः वस'यबर'रद'वी वर्षानु षद् पुराष्ट्र हुँ प्रवे कु अळव रेप्ट्री । षद् क्षे प्रिक्ष में कु द परिवायते क्या विश्वास्त्र में स्वादेश कर के निष्या वाय देव हुव के विषय स्वादेश गां श्रु साम् प्रमाय स्थित विद्याय विद क्रेयम्पर्याप्तेयप्ता वक्रियप्तर्यम्प्रियापित्र पर्यायपित्र परित यामित्र ग्री देन मामया हैन नु वर्गे निर्मा निर्देश विद्या सु या प्रविदेश हैं । पश्चिर देशायदे विरश् श्चायादे के सामा हिन दुर्ग देशा में साम प्रति हिन। देशा मा विश्व गुः दिर्देशया बुर्द्व या बुर्द्व या बुर्द्व या क्षेत्र या विष्ठा या दिर्देशया के या विष्ठा या वि न्दर्यायार्वेद्राम्बयामी देवा सेद्राष्ट्री सामानेद्रामी विद्रामा विद्रामा ब्र.चेबाची कें.च.तकर हर हैंट तात्व श्रेट हैंचश ग्रीश देश वेश तत्र हिरा दे हैं नुवि इव पर्दे र य देश महिद ग्री वेद मायव ही द ख्य पेद दे। महिद वेम य द र बुँग्राईचान्द्रयान्द्रयान्त्रयान्त्रयान्त्र्यायाञ्चनायान्त्रेह्नायान्त्रे न्द्रद्यात्रयान्ते हिन्दुं नायावा है। वृष्ठिन व्रम्भान्न विन् वास्त्र विन वास्त्र स्त्री विक्रम विन विक्रम विक्रम विक्रम विक्रम गहन्यान्द्राव्यान्द्रावितान्त्रीप्रविष्ट्वितान्त्रीयान्द्राव्यान्द्राव्यान्द्राव्यान्द्राव्यान्द्राव्यान्द्रा म्बेर्यायरायरायरायप्रेरायोप्त्री में क्रियायुक्त देरा क्षेत्र या व्यवस्था परिता त्तु विषया विश्व में श्राम् क्रिया प्रवेश प्राप्त क्षित्र विश्व प्राप्त क्षित्र विश्व प्राप्त क्षित्र विश्व विश्व

वह्रत्यान्त्रेशायश दरार्थाया नहेराग्रीर्वेदान्नश्याकुराह्नेवशाग्रीशावहेताया वसाम्यक्षाविष्युः अपूर्विषाय। विदेशायां वे देवायर मु । वूरायाम् अष्य उर्दे अप्या र्ने निक्षायास्त्रवासार्वेशक्षासार्भेशायह्याताल्येश्वाच्या र्द्र 'वळट कु'यदे 'चब्रे'च। क्रुं'च 'चकुर 'वक्ष 'वळट 'चकु' चदे 'चक्रे'च। चब्रे'च इसस गुः न् चुः वह्न वह्न वर्षे । न् न् र्ये दे के वर् र के अश्वर्व मुं हे ग्राय में वा वर्ष हुरित्रा हिर्के श्राचिरावद्राचार वचार्त्राचर रूप तक्र म्थान ला हिर क्षेत्र वि वर्चेर्यादेशवक्रियवेक्टेंर्र्यावन्त्रभाग्नात्रभाग्नपत्रभाग्नपत्रभाग्नपत्रभाग्नभाग्नभाग्नभाग्नभाग्नपत्रभाग्नभाग्नभाग्नभाग्नभाग्नपत्रभाग्नपत्रभाग्नपत्रभाग्नपत चुरायसप्तक्केन्द्रम्मार्थायसप्ति।देद्रम्मार्थानुन्द्रम्मार्थानुन्द्रम् वशःश्चुःस्रदेःश्चुरःवृदःविदःदेशःरग्रायदेःश्चुवःश्चुःवत्रुद्धवान्तरेषःवेशःवहेषःदेःवावहः कु'म'णेब'मवे'धेर'हे। वय'युर'यशा |मश्राम'दे'णे'क्वेब'मीशंबी |मद्ग म्रम्भार्त्वेरम्भार्युत्वम्भार्यदेक्षा ।वामयाविरास्याद्यायदायदार्द्रम्ममा ।दे ष्याह्र.वर्तेवासीवासार्वेषाता ।क्.र्ज.क्य.तपु.प्रीयातपु.वार्चेवाया ।वर्वीय.क्.र्जा. अर्परे हैंग्राहेंग्राहेंग्रा दिव्हा ही प्रवेद पर हो दिवेद पर हो दिवेद पर त्रुत्वाश्चवाश । त्यर्द्धवाश्चर्या प्रत्या विश्वावाश्चर्या विश्वावाष्ट्रपत्र विश्वावाष्ट्रपत्य विश्वयत्र विश्वयत्र विश्वयत्य विश्ययत्य विश्वयत्य विश्वयत्य विश्वयत्य विश्वयत्य विश्वयत्य विश्वयत्य यही । नियम् पति क्यान्य विवासिमा स्थापा विवासिक प्राप्ति । यमित्र मुर्गायायायायायिक्वयाया पर्वे स्वरायायायायाया पर्वे द्रियाया युषान्तेवन्या । त्वान्तेवन्या इससासुर्येन्। विष्ठेवास्मस्यान्तेवन्यासुरा वर्षायळटाकुमार्येद्रायरायदेद्रायां वे श्वीयवादादेश । ह्यायार्ययाया । दे हिर बक्षेत्रेरत्रत्यंत्राक्ष्राचन्द्राचराद्राच्याद्र्याक्ष्राचीत्र्याचीत्र्याचीत्र्याचीत्र् मीसावन्यानु ताने दिए प्रायानित्र वा सम्मावन्त्र वा भी प्रायम्

वस्त्रमु व दे । दिवर मिव दे व दे व किव दे किव दे व दे व किव दे व क वसक्तरमान्त्रियसपान्दा वर्त्त्रियसपावाणदा विश्वेद्ररम्ययद्वरक्तर्दा शेश्रश्नाद्वेत्र मुंदिन्याया सर्वेदाया सुन कर् मुंदिन्या देश विवाय स्पिर दे। वदे प्रण मुसामकूर्यावयाम् जात्रासम्बद्धाः विद्यान्य प्रमान्य दिना चर्षेत्रात्रव्याच्चेत्र स्थित्वर्षेत्राक्चेत्र स्थेत्वर्षेत्र विष्याप्तर दिने विषय प्राप्त विष्याप्तर दिने विषय लूर्रा इ.वे.स्.तथा । तर्र्राक्ष्मा विश्वाविश्वाचिश्वाचे हैं। वेशाविद्याता हैरा । वावे वसकी वक्क प्रवेशक की सामित्र का से का से कि प्रवेश की से का की से का की से का की से कि कि से कि पवे अर वे बा पत वे बार में वे प्राप्त में विष्ट में वशयम्द्रायवेषातुम्रार्भे क्षायायायास्तुन् ग्री देशास्वि देन स्वापादायेवावे व यर प्रेन्द्र। क्षेत्रकान्वेव वहेव पर्व प्रमान्वेव की में निमान क्षेत्रका र्वेद कुर्र् पातृ अर्थेदे द्वापदे र वापदे द द का कुर र पु अर लुग का पाद का हो अ निश्रमः चिषायायमः चुरायवे प्रवादायि प्रवादा देवे हिरापु देवा स्थाया कुषा निश्रमः पश्चर्यम्भःरस्यः स्राप्तः स्त्रेन्यादे स्त्रेन्यायस्य स्त्राप्तः विष्यायस्य विष्या । दे स्राप्तः स्त्राप्तः ब स्रायव हैं दि स्वास से वर्ते त्वते वर्ते त्वते हैं स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स र्येदे में ८ दिया ता में ८ वह वा वी अवा वहीं र विश्व वा के वा हु । वश्व अव अके अ दुवा नु हो न या प्रेम हो। । रेस स्याप स्थाप यहा यहा यहा से विकासी स्रमार्श्वमायान्ते पाळे द्वात् क्रि.जम.ब्री.मा.ब्रिया.वे.ब्रीटा विस्ट्रिसमान्या वर्षेत्र दी। हिन्देश्रेम् श्राणे नेशाययानु वर्णुरा । यथासुरा गर्केन वर्षेत्र हैं। मूट.री.पर्वातालयात्वात्वात्वा विद्यावादीरद्यात्वातु द्विता विद्याता काम्बरावाद्या यान्ड्र्य। यान्ड्र्य। यान्ड्र्य।

क विश्वभाराद्वित्याद्द्वावावानुःह्विषाद्वयावान्त्रेषा विश्वास्ट्राट् ब्रैंद्राचर्ष्यासुःवासुहसायदेःदेवायम्दायाद्दा कुद्राधुःस्र पद्देवायदेःपवःयवाः मस्त्रायवे देव प्रमानवे । १८ में या मस्या में देश देश खुंय रें ५ ५ ५ ५ वु य द द प्य क्षाय द द दे व्यावेद वाषवा की वाद अक्षाद वा प्य वद द द दिया यादे वायापावन की सहर दिट खुवावी । इट में है। । हुँद पहुंबा वाया रेसायापिने त्तुः रूषे की दूर वाशवास्याता में जैशा हूषे दे त्यों रे वृशात्र वाशे रशात्र रूषे वे। हेंदरेंदरअद्वरस्य र्यंत्रर्रे नेयायायाद्या हेंदर हीया हेंदर पाया ही खुका हेंवर दुर्वे न्वीयायायायायान्। १९वास्टान्यायर्डेयाययाक्षेट्रिंद्रायस्वास्त्रम् देव हैं य हिर राय खेर पर हैरा विश है य र वशय है या या है र य या है हैं र य वी र विश यासायित्राही । यस्रिवाचेवायवे मुद्दाययवाषा इस्रवाणी वायझवाया वाद्यासे । निर्मेश्नर्ने कूर्वाश्वविश्व बेट त्वेजारी श्रेश्वश्व श्वीच श्वर्तात्व त्व हेश वेश ही तः रवाश यार्श्वरात्रुषायवे भ्रेरा देषात्र रेसायायि यवे देत मी वेरामाया मी बामी या ब्रिट्याया बुद्याया अद्या उद्या पुराया श्रुप्य व्यवसार् विवाद विवाद विवाद । । रियाया यास्यायदे श्रु खुसादे खेवायावावद की वार्षा के पास्या की वर्षा न स्वार्थ की वर्षा न स्वर्य की वर्षा न स्वार्थ की वर्य न स्वार्थ की वर्य न स्वार्थ की वर्य न स्वार्थ की वर्य न स्वार्थ की गर दिन दिवर्ष श्रुप्राया देश श्रुपिर्व श्री प्रेया श्री विषय दिवे कु दुश्य अत्र अदि दिवे र केर्-रु-छेर-बुक्ष-पर्व-छेर। रूट-पेरियामणा । बर-छेब-मेग्यर। कायकुर्या वृत्यं बा.पीट.केंताता क्षेत्रवा,पीबा श्रधेशायोषची त्वाता पश्चित्वा होत्या है. विश्वाता क्षेत्रवा वि

क्रिनानि हे शर्चे न मुन्दर्शन व अश्मी क्रिना शनाव न न स्वा प्या था अर्देश पद मुन्दर्भ इ.६वाश.वार्ष्ट्रश्र.त.वीच.ही । द्रश्र.त.वाश्रेश.ततु.ही.तीश.तूर्ट.वाशता.टी.वर्द्धवा.ततु. कें भिन्न 'तु 'सं'पये 'कुर' दे 'चना' सेन 'ग्री 'कुर' 'तु स्' मुक्ष मा सुन्य 'सुव 'हेर 'येन 'हेर। दे यानार विन । श्रुपितेषाग्री रेनाषा ५५६ वे अत्रामावना स्नेना श्रेवा पुराप्या नेया ब्रैन संश्रूलर ब्रूट न व के न हैं र न ले न व के मार्च के र वित्र के र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र मुनित्रम्यान्त्रम्यवे श्चित्रम्य दिन्द्वरम् नित्रम्य स्वाप्ति । दे हे श्चित्रप्ति न्या सक्त भ्रेत्र्व मेर्द्र प्रत्र द्राप्त द्राप्त द्राप्त में स्टर्श द्रिय विश्व में विषय में विषय से यानु यते द्वेर द्वा विषा दर हु वाषा इस में वा निषा से वाषा ग्री स वा से वा या वरेवबायाचिव यवे द्वेरा विवेषायावा गर्या द्वेष्वर ने अर्देव यर द्वर क्वा न्त्रियायम्द्राया दे अर्देव दु क्षेद्र यदे सम्बद्धायम् यात्र महिषायम्द्राया अदः मै इस मार्थ के द हिंदिर पर व सायाय मर पर्वे । दिस में है। दिस प्रायाय में पर्वे र्नेन कु देन नमयाने। विवास के सेन कु स्वामस्यापन्यापव के प्रत्याकी न्या सु'सर्दि 'र्' मुक्ष'यंदे 'र्स्का' क दक्ष' मुद्दे 'सर्दि 'मुर' दर' वर मी 'सूर' सके र 'र्से प नासुस्य वर्षायवे दुषासुस्र हेन दुष्य यवे वेता क न सन्त ने सहेन सुर दुर देने यध्येष्ठाहे। रेग्राष्ट्रायमा सक्ष्यार्थे द्वरायदे का क्षेत्रम्यायया दे सदे वेरावित्र बूद प्राथके द्राया प्रवा । अक्स्रका है बूद प्राप्त प्रया प्रदान है वा प्राप्त प्रवास के वा प्रवास के विकास के व यम् मुड्रम् श्रम् यम् पर्मा । सक्तम् श्रम् द्वेन प्रम् संग्रम् स्वर्थम् स्वर्थम् स्वर्थम् स्वर्थम् स्वर्थम् स

चलेन म्मर्थान्य विवास । दे ने सुर कुर स्निर केन प्येन यम स्राम्य स्मिन प्रमिन इयायर्ट्रिम्पा । अक्समाग्री अवव है वहिन से म सुन दन किन माहिन माहिन र्वास्वयः रु.वन्द्रा व्रिवः द्वेब सक्वां वे रूवः देवः वयः वयः श्वेवः सः यावे धुः रेवः विट.क्वापक्षा विट.म्यापट्रेयाच्यायर्थाक्षाविट.क्वाभूराद्वेगाद्वायाय वृत्तरायम् विषानाश्रम्यायवे द्विमा निष्यायद्वी ह्या व्यवस्थायस्य वर्वः देव कुः देन म्बयाकुन या वश्चितः यदे कुरः न्। । रहः कुः युषा ग्रीः हेन अन् वषा क्षेट्रावितामर्वेद्रावाम्यानुःमेयानीमायहेम्छेट्रह्नुःयवे स्वावर्नेमान्द्रा । यदः र्द्यूर पर्देर विषय स्थार पूर्य विषय र स्थित पर्दा है श शे र र वी विश्व विर हिर हिर र्देर् प्रथम् प्रविष्यिय परिष्य मान्य परिष्य हिंग देश है। देश या प्रविष्य प्रथम वह्रम्यवे रेम्प्याप्ता दियविम हेम्स्याम् नियापि विभागस्य स्थापवे हिमा पर्याची त्रेषा स्थित स्थित तात्राचा स्थान गुर्ग विमेशायुन्यायाद्वस्यार्थस्य रायात्र्यायदेन्यायात्रेन्यात्रेन्यात्रेन्यात्रेन्यात्रेन्यात्रे त्नापुः में क्रायमा मेक्षापुरा विकास विकास क्राया विकास क्राया विकास क्राया विकास क्राया विकास क्राया विकास कर नासुमा मेमन रुद्र वसम रुद्र ग्री खुम रना प्येद नासुम दर्र हैं दे हैं र सेद द्र है य है। भिर्दे है क्या बर्ग वर्षर है है देर रचना छर। विवय है है के पर्केर न नसुअर् क्षेत्रायके। भुनासुद द्वन्याग्री द्राक्ष्या सेस्रसद्यव नसुसद्द दे इस्रम्भी म्याम् द्रम्मान विष्ट्रिक्ष म्याम् म्याम् विष्ट्रम् गुःभःनेषासेस्रयः न्यवः नषुसः न्दाः विः ने दे नषुसः मुः विना वेदे द्राः नुष्य सुदः है। इ.कैंट.जबा ।बर्बाक्रिंग्ट्रीज.उत्रूर.ट्वेंबाचेंब्य.त्रां चरवा.वी.जेंबा. ज.बैट.शह्ट.वेषव ।श्रुट.वर.ल.मु.खू.घशश्रश.जा । र्विवश.ज.प्रश्रातर.प्रश. त्त्रमुंश वेश्वर्रा श्वर्याक्रियर्ग्नियर्ग्निर निश्चर्या वेश्वर्य । र्हे हे श्वर्में रपः तुः पर्देश क्षिरापर धिनो द्वै पर्देश दशा शिस्र श है विना चेर मुरापर न्वन बर्षाकुषान्ग्रीयायविरान्त्वयाग्रवायरा ।क्रेन्यगाग्रेन्यारवानुपर्वेद्या ।हिन वर थि ने खुः नषस्य है। वेश न्युर्य प्रेर हिंदा देव न हु व रेस प्राय न युस प्रेर श्चि.तीश.तथा । श्वथंश ईथ.ग्री.ट्रेज.श्चिंट अंश्वरी ह्य.ग्नी.सूट वाशवा. हेशन्त्रसारमार्देन । वित्रत्साष्ट्रीदर्भी व्यवसम्बद्धार्यायहेद द्रसारेसायायहे यदेर्द्व मु वर्द् न्यम्बयास्व द्वे पुरायम्ब द्वे दिव क्र साद्यायव हु युमाववायम या । इत्र क्रिया क्रिया केत्र प्रेया क्रिया केत्र प्रेया क्रिया क्रया क्रिया क्रय क्रिया क्रय क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया गुः अर्घर व्ययन्ता इत्येर गुःषन्तर पेविया। विदेव विदेव स्व क्षेत्र क्षेत्र मुख पत्रवाद्यान्यान्त्रेत्र'न्रात्रक्ष'प्रवे 'न्रेर्स्यावित्र'प्रात्रक्ष'या क्षेत्र'प्राक्षेत्र'प्र न्यायद्यार्था ।नेयाय नेयायायि यदे नेया की विन यायाना स्थित हैं नियाया बुद्र वह्ना विना स्रार विद्यायवे पुरा धित्र विद्या विद्या विद्या स्था विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या म्रमान्हिन्द्रवामाणी म्राविषान् । ज्यानी प्रतिपानिष्टिन् वाम्याप्ता प्रवास्त्रम् नम्यानिकार्येद्रादे दर्भेद्राहिकारीद्राहिकारीका निर्वेषायायाञ्चरामहित रेगमणी क्वेंन्यर हो व ही देव दर्ग । इस देव दर्ग । अवर हुन ने देर ग्रय नशुक्षाचित्रे । नशुक्षायाकी । दिन मु दिन नश्वयाक्रिशकना । मिन व्याक्षक मु

त्र विवात कुथ कूरिया बुधावी शेर शात्र अरूथ त्र विर क्वात्र क्वा त्र है . व. सूर्वा श त्तु विरक्षित्र भी श्रेश्वर्या भी श्रीटा इस्मार्थी सूर्य देते होता है से विद्युत्त स्वर्या भी स्वर्या भी स्वर् ग्रम्भायां हैन पवे व्याया केर पर्हेर हेर हुवा यह थेर है। विदु प्रिमायर तालुष्यात्र क्रिया विश्वेषात्र ही विश्वेषात्र क्रियात्र स्वाप्त साच क्रिया हा या यादे देशायाम्बुर्यायवे हुं वुषाव्या ह्वायाव्यावावह्यायम वर्दे पारी वहा दे। क्रियाचार दिव दिवदवे क्रिया संसादेश यार शरी क्रिया सुन्य में प्रमाती क्रिया मा यमग्राज्ञेत्रयायेत्रयदेष्ट्रम् ।देशदर्भत्मेणेयेद्रणामयानीःरस्यावसायह्गः र्विशक्षा दियास्त्ववाषायर पळेट कुप्तर से बुबायवे हिरा दिर वया । धर ब्रिम होगान्त्रः प्रत्या क्षा ही द्वित् अस्त्र सुम्रानु देग्या प्रते क्षेया प्रतास्य मीया हूरः वाम्बुं अप्तु विकासूट ख्रा केंद्र वायर हिन के बुबावा देन की देन वा बवा की राने र्वाव्यायदेश्वेराते। वद्यायवदाइयाववेरावया पश्चवायायवदाययाइययः सुष्परा । अमीन्दर देव केव स्वाया हिन राया । द्वर या इस या स्वार सामा हिन क्वायम्बर्धियाक्षायम् । हाह्यायस्य भवादाः इस्यास्यायाः ने प्रविव क्वा श्रुत्वीर। ।श्रवतालक्षात्रश्रेवाताक्षश्रक्षाश्रुःलटः। ।ह्यकाग्रीःश्रुःलिहेटःवहेवःग्रीय। । बैट.च.इश.तर.श.र्च.हिर। विट.क्व.ठचश.चे.ह्च.श.ठवीर। बैट.च.चशेश. र्ये दमाया है। । इसका उर सिंह के हैं दे के सिंह से सिंह के सम्मान के सम्मान स्थाप है है । । मान स

यदादे 'यद्वे कुवा खुका देका देव 'कु 'वेद 'वा कवा कु 'देका या वा का नुवाका यम 'यक दा कु ' श्रेनुषायरावया यराधुवावेगायाररायमणी क्वियायदे सक्वाद्ये सवराव्या स्वादी बै'अ'रेवा'यवा'कवाबागी'बा'वायहेब'बबागुय'यबादे'ह्न'युवे'वुबादे देवुब'अहवे'देव' मुैरिद्वाम्ययामुभवित्रायदे। वत्राक्षद्यम् भूपर्यः त्तृत्रचात्तृः श्चित्वात्त्रात्त्राच्यात्राच्यात् व्याप्त्रः श्चित्रः विवा । दवात्त्रः श्चित्रः देवः क्षेत्रः विवा । दवात्त्रः श्चित्रः विवा । दवात्रः श्चित्रः विवा । दवात्रः श्चित्रः विवा । दवात्रः श्चित्रः विवा । दवात्रः वसादेरायरावश्चितादविसायवे ध्रिरात्रे। वसवा श्चेतावसा व्यतः श्चेता ग्रीयरे पा केन पेंबरे विन केर हैं दिन अदेश खुरार है गया याया वर्षे सवायर री विवासीय हूँ वाषायर बिर्शायव कुश श्रिश हूँ या तर्रा दिन की दूर वाशव की श बिर्शायव . क्रिट्र हो अधार्य अधार्य में अधि । विराधिय विष्य में अधिय प्राप्त स्थार में अधिय प्राप्त स्थार में अधिय प्राप्त स्थार में अधिय स्थार स्था स्थार स्था स्थार स्था स्थार स्था स्था स्थार स्थार स्था स्था स्थार स्थार स्थार स्था स्था स्थार स्था स्था स्था श्रेष्ट्रियायरावह्नवायश् ।वर् हिंदा हुँ रावाद्दा हुं अवे नु हुं वायावे वावा अरायवे ह्मनायव क्षेट्या अहर हिनाय द्रा । श्रुमित्र राजी हिन स्ट्राय विश्व क्षेत्र विश्व दे.व्यंद्रेश्व.त्रच्नाच्चेत्र.क्षेत्र.क्षेत्र.क्षेत्र.विश्व.व्यव्यविद्येत्। दिश्व.त्रच्नाच्यः व्यव्यव्यविद्येतः त.व.श.त.त्व.श्रथ.वी.ध्रेथ.२थ.र्घवाता.वाश.ता.वर्षेवा.तारा। केवा.वे.ट्र्य.वीत. वयान्वराम्युरायाचन्त्ररावराम्युर्यायान्त्ररा नवरावि यायरावन्तराने वेद बुद्र निर्वेश मकुद्र निर्वासिक्य निर्वा वायकेंद्र कुष्म प्रवेश देवे खुवा प्यत् कुषा सुर्वा नेन्नेपणियवेनेरारेपद्वायमासर्थाक्यास्यस्य हर्म्यस्य स्त्रीयाये विष्णु श्रुमायस्य है। । र्वर्ष्यस्य परिदेश में देर् प्रस्य में प्रस्य पर्मा स्राप्त र सहस्य प्रस्य । छेर'रु'र्दरम्बस्याय'र्देश'र्वर'रु क्षेत्र'छेर'र्दर मेंवा छेर'ग्रीमवि अहत रु छ्या

ने'वसुर'वते'र्सेंद्रशर्देद'की'र्देद'वाषवावसेंद्रा दवर'देष'र्सेद्र'विव'र्देद'। र्दिन्यमयादे यमाद्यास्य स्था स्वरं सुरायते स्थार्यायायाद्यर यति या सुरायह्या वी ग्रम्भायानहाराये क्षेत्रमानहाराते हेर्ने त्याची रहा के के निष्टे रहा के किया के निष्टे निष्टे सर्व,रे.मेरेरात्त्रक्षा विश्वत्यमा द्रुशायत्र्रक्ष,येश्वर्थ्यत्यमा द्रुशायत्र्रक्ष,व्रिशायद्र्यात्व्यत्या र्मयानुगुः सुदायायादे प्रतिकानिनायाया सम्भाग्य र गुर्वा से मिया मुन्याय स गुरायमा अियार्थे परे दिन परिवास प्रति । उद्भुष ग्री निर्द् वाननुन्यान्या न्यासेर्णीर्वास्य्राचर्नायान्यस्वर्रासर्रो हैं.यास नुवै दिर दे वहें वश्व प्रवेद शत्र शा वर्षे प्रते स्रम् व प्रते प्रते स्रम् देवसायक्रमभाने,रभारावाक्रमहास्त्रीर देवसाता ने स्वरादा स्वरादा स्वरादा स्वरादा स्वरादा स्वरादा स्वरादा स्वरादा वर्ष्यकृत्याधेवर्ति वेशन्ता देशायाविषायायषागुत्। दिः स्रन्तु कुकः र्रवायायमागुर्। । भूगुःद्यवायादे प्वविन मिनमा । सर्देन प्यर दुर कुवावदे तब्रित्यमा । हिन्द्र पाक्रव प्रमायत्मा कुर्या हिन्द्र प्रमाय प्रम प्रमाय प्रमाय प्रमाय प्रमाय प्रमाय प्रमाय प्रमाय प्रमाय प्रमाय वे रहावदे कुरवायान्। विमाणि हिर दहेव यानुगवाया दिक्ते कुया पायावर वार्विरशाम्ब्रिमाम्ब्रामश्चरशामा । यश्वरामान्य वर्षे द्वास्य र्यास्य । वर्षे शा वे अधर द्या के दिन है। विकासिये रेश हर अके न सुराया विन प्रवान वे दे दश्यमस नेवा विद्वामध्याय प्रायमस मियात्र स्वा वित्र मा स्वाप्त मा स्वाप भुष्यरावर्ष्या दिक्तारवादम्हेवासा ।गुन्धीद्वराध्यावयरावर्ष्या वर्रे द्वर क्वर क्वर वार्ता । देवस हर वह क्वर विषय विद्या । वर्षे द्वर वया हिर्देशसे है। कियानदु स्था किया है सेर देशन न विश्व स्वीया ने श्री स्था निश्व स्वीया ने श्री स्था निश्व

क्षेत्र। दे.क्ष.चेव्र.श्रटश.तत्त्वचाश.दे.ब्रे.चश्चेवाता.चारश.श्चरं व्यवेश.देशचश. वेश। ।शरशःकेशःगःर्यः। त्रमःक्षेत्रःव्रचान्तुःमरःवात्रःक्षेत्रःश्वराक्षःश्वरादःशरशः वस्त्राक्ष्यक्षेत्रात्ते । दिःवद्वते कुवास्त्रमादे प्रदावसाई राष्ट्रमायायानुगयायायेतः गुःरम्यम्यायास्त्रम्यम्यम्भुमार्ड्स्रम्यम्यम्यायस्याप्रम्यदेश्चित्र। ।देःप्यम्पनम् नासुर्यायायान्दार्यानिहेषार्ट्टेवानु वर्षे क्षेत्रनिषायान्दा हिन्यारे सावायक्षेत्र रेसा र्चेन'रु'वर्मे'के'र्नेमयप्रदा ।देसप्यक्चि'समिहिस'वाम्बुस्यस्निर्'दु'वर्मे'के'र्नेम यायदे इस्राम्ब अपमायदेव देव दिश्वामा प्रस्ता प्रमाने । विदेश पाने देश प्रमापाने यवैर्देन मुर्दिर मुख्य केंबर उद्दा यद यम दुम मिन दर देश यद देश यव यम र लेब हो । कुन के अप्यक्षा । रूट नियह रेब के बन निवाय ले। । वा बुट या यह ब याधिव यम पन्ता विश्ववादी वर्षीना यदे हैं है माय्युमा विस्व अहिमायहै व वर्तिर्वरावर्ति । विश्वासीर्यातवृत्तिरा । श्रिसाया । वर्त्रिर स्थास्यार्वा गुन पु प्वर रेवेर में दिये । दिये र से दिर प्वय द्वर क्षेत्र परे पर हो। बि दिर वश्रवायम् देवा स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र विष्या । स्निन् देवा देन वा सेवा यानु सामवि से वर्दिने के श्राह्म अर्था स्वयं श्राह्म । यह विद्यार्थि । यह वि सूर्यक्रित्सुक्षर् । विदेव मे दिने रे दिव के विरादे

क्ष्यह स्र ज्यामा जिस्त पूर्व प्रति देश के प्रति स्था ज्यामा विक्र प्रत्र के प्रति । स्था प्रति देश प्रति । विक्र प्रति विक्र प्रति । विक्र प्रति विक्र प्रति । विक्र प्रति विक्र प्रति । विक्र प्रति

त्रान्त्र स्वापित्र सक्स स्टिन् स्वापिता वित्र प्रते देव वाट व्यवस्य वित्र प्रते वर्गुर वर्ष कु सळद निर वन्या में वाद में निर वन्या देश देश या पेद पर ब्रिम् हे। ब्रिन्यह्मायमा वर्डम्यह्म वन्महि ह्मम् वर्षेन्य प्याप्य परिवादि । नुगमाने। दर्मार्थास्य प्रमान्य व्यास्य प्रमानित वर्षास्य प्रमानित वर्षास्य प्रमानित वर्षास्य प्रमानित वर्षास्य त्रश्चश्चाश्चित्रियादेवार्विवायवाश्चा आर्ह्यात्त्र श्चित्रायदेवार्विवायवाश्चा ह्या यंदेर्देवक्षेमार विमायमा देवे क्षेत्र व र्जे वायर प्रमुद्र। र्जे वाय के सुविमायमा प्राचित्रम्यायदे हिरा चहित्रायह। हे हे सूच र प्राचित्र स्रियाय स्रेयरा स्रेयरा स्रेयरा स्रेयरा स्रेयरा स्रेयरा श्रव द्वा वश्राप ही र प्रकेश प्राप्त श्रव भी जीवा श्रव ता रेचवा वश्रद प्राप्त श्र पवाहेशासुववाहराक्यां वित् द् लुद्दानार मुणेशा हे निक्रनायविष्येत ग्रीशाहित केवा केषान्त्रयम्यान्ययात्वा देवायव्यवन्ययन्ययायवा दियावियायवे यवा गसुस्र-दर्भायवे वा दर्भवे वा विष्य-दर्भायवे वा दर्भे हैं। **उच्यानु कुर्याय अ**र्केट च वा अर्ट्य संश्चर्ने स्वेता राया वाया वर्षेत्र प्रयाप पर. स्रिन् । स्रिक्ष्यं क्रिन् म्रम्यस्यस्यस्य विद्यान्त्रम् । पद्यान्त्रस्य न्या वर्षाम्ब्रभाद्या वर्षायित्रायम्द्रायास्त्राम्बर्णायाः
। । निर्वे वर्षायः
। निर् म्निष्कायम्यायाक्षेत्रायदेःस्वामीकायकायम्निरायाधेत्रायदेःस्वेराने। । पद्मायनिका ५८। मञ्जातात्वा सरामेन मेनायासरायद्वायदिनागातातु विराणी मदासेटार् शूब्र हिर् त सेव तथा पर्दे परिया गे. तप्ती जेट हेव जा यह श के अस्थर है। ग्राम्ब्रिक्या । श्रामु र दे वे प्रकु म् श्रुमाया वे शर्द्व मी देवा मासवा श्रामकु मास्या यर यन् न्य खंदाया नित्र श्रास्त्र से से दे दे स्थाय है वे स्थाय है वे सु स्थल में का

श्रे अञ्च व पा अदः विदा र् श्रे दिन स्थाय मेयायायका मदाळे च अदे दे दिन स्था वर्केर् यार्केश्यकेषा द्वर दुवा । रवादेवर हिंदावाय विश्व के । रवातु द्वाद य.पर्वे.वाश्रेश.तत् । चेश.र्घवाश.ग्री.ह्वेर.तश.पच्च.त्र.प्र.प्र.ता.वाश्रेश.वश्रेश.र्डे.पर्वे. महिषा षायकुमहिषा देवे हिट दुर्देव कुर्देद महायाषायकुमहुमासुरायर कुरायर यास्त्रावस्त्राम्यास्त्रीयायवे सान्त्र् । वसुर्यायावसुर्यास्त्रसान्ता देवे हिन्यरः मु वस्त्रान्ता देवे प्रमास्त्र सेदायं वस्त्राम्युस वस्त्र मु सामित्र पर्वे प्रमास्त्र पर्वे प्रमास्त्र पर्वे प मुक्षायमा द्ये केद प्याद्दा भेषा स्वा हि है वे यादे प्य सुकाया विषा नासुरस्य प्राप्त द्ये के दिर से दिन के स्वर्धिक स्वरतिक स्वरतिक स्वर्धिक स्वर्धिक स्वरतिक स्व गुन 'नु 'र्दिन 'न स हैं है वे स पहु वा सुक्ष नु हो न 'है न हो है हो है प्येट प वका गुर । । न प र ब्रुट्रिप्तक्ष्र्रयापञ्चाविराववेरायबार्ष्युः यहुः द्वाण्यवायायः यथ्यवास्त्रसाग्रीसासादे प्रवासी दिसायहें दे नामया प्रवास सहित्या पश्चित देश मध्यक्तित्रम्यानकुर्यान्दर्भेत्रम् स्थानकुर्यान्दर्भेत्रम् मृत्यस्याते। विन्यवस्यायम् देहे वेषायायदे यापक्षेत्रस्यायावस्यम् षाचकुर्यार्विवाक्षेत्रे श्रेरार्ट्रेन्य प्रत्यायार्वेवायारे श्रेर पुरार्त्रेन प्रतिवासिका महिन अनेशनर विद्। श्रीट्राम्पुर द्राप्त विषय अर्देन पर हिवाय वय या पर्वे हिंदा देश नश्रम्यये भ्रम् दियाद पश्चित्र देशास्त्र मध्य पश्चित्र पर्याप्त मध्य देशा विष् १८। स्वाद्वेब शद्वायाद्दा विस्तर्भद्वे द्वायस्व विस्तर्भद्वे २्योवाः स्ट्रिन्द्रन्द्रम् स्वार्श्वेर प्ववेर् अळव प्यूर्त्रो बावक्र प्वरः बुर रवाः श्वेरः प'र्स्व प'सूर पश्चेर 'रेश'श्रवर 'धुव पश'र्सूर 'पठ्र 'र्ग'पव 'व्यिर 'वैवि'इश'रेवा र्पन्न व्यापन्ता यार्ग्यर केंब्र हेंब्र पर्व प्वापव थे मेब्र हेंव्य पर्व प्वाप्त वार्ष थे मेब्र हेंव्य पर्व प् रवार्ववर्ग्ने स्रवश्रम् वानि द्वेरायाद्वरायाद्वरायाद्वरायाद्वरा । विद्यारायुगारवर त्र तर्वीर तर्व तथा कथा श जीश त वर त्रूर त वैंद्र भी दें। विट , वृंद्र , कुष , तृंद्र , र्वट्वर्स्य स्वायायिक वर्षे वर्षे अध्ययम् स्वयं विष्या विष्या स्वयं विष्या स्वयं विष्या ロイヒ」 「新、ふれれれれてれ、争れ、学知れ、のれ、とロビ、ロジャ、ロ、更ロ、ロれ、よ、島、エ、 वर्षाचेत्र पर्वः द्वेरा देशाया वास्त्र मान्य पर्वे सामान्य पर्वः पर्वः द्वी वा श्चरः दिनः ह्वितः ह्वेरः चतु कि शक्त तार तूर्र है। चसूर वश्व ती क्रूच थ हूं चेश तश है च ता हिर जा वेश. या अद्यु क्व पु शुरू र प दर्भ वा कि र ही वा वा वे वर्ष र प शक्रमायमाने स्रम् हिरायाणे नाये हिरा ने प्यार वासा हिन होत् परा क्रिन हित्या ब्राचर्सुम्बर्स्ट्रियस्ट्रियस्ट्रियस्ट्रियस्य स्वास्त्रम् स्वास्त्रम् विर्द्रम् विर्द्रम् विर्द्रम् विर्द्रम् र् वह्नाम्यये प्रत्मे क्या द्वारा हार्य में की की रायमान्त्र रियापायि पविद्वामु विद्वामध्यास्त्रीं राजसार्या दर्शी स्वाद्माव दर्श । श्वित पवि भुरावद्मा क्रिंयायस दे त्यासाद गुँदे इसमान गा छे दाया प्रकार दि। विदेश या दी। देसाया ग्रास्य यवे श्वरायमार्नेन के वित् नमायामिन द्वारा विविन्द्र वर्षेना प्रमानिन य विव है। दिव भ्रम्य सु हिंद है द अदिव सुक्ष दु है निष यव निष रम द द द न्या म लब्यावे छेरहे। ब्रिंद्य चर्ष्यायमा हि.स्रेद्र दुर्य वास्रुसस्य वायादे स्रेद रु:इसम्बर्गीयाग्रवाम् हिन्द्राम् । देह्राम् निन्द्राम् निन्द्राम् मान्द्राम् मान्द्राम् निवास गुःकुन्दर्भ देशन्यराधेर्यस्य वर्ण्यस्य विश्वनाश्चर्यायये धेरा दिश

यायवि यदे देव में वेद नामवावमा से देवा है। दिद स्रवमा साविद रवेद देश गहेन स्व क्षेत्रणी पदे पर्श हिंद केद अर्देव सुरा दु हैं नहा परि ने सार पर्ण परि परि हिर है। देशेद्रायमा इस्रायर नेमायामसुस्राइस्यायर द्वायवे नेमारवामी सर्देवा पृष्टि स यवै दे दे दे दे ते दे ते ते स्राया से द कि द है। या से द प्या महा कि द प्या प्या दे दे हैं सु द ह । या स वर्षायवे प्रमायका प्रमाने । विश्ववाद्या स्माने वायर प्रमाव वायर र क्रिया वश्रास्यायर मेविया विश्वानश्रुद्धायवे भ्रुत्। दिश्वान्य स्ट्रिम् स्वान्य मेविया केन मु अहूर जन्न त्र अ.त्र वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्ष श्रावश्रातश्राच्च अभ्वेत्राचित्राचेत्र प्रते श्राच्च अप्याच्च अप्याच्च राज्य श्राच्च राज्य श्राच्च राज्य श्राच र्थिन दे। वेनायके कुटनी अवेट प्यमन हिंद हेन अर्दे सुमन् हैं ने मायर सक्टर गुर विराधर में ना के देना ने मुद्दायर खेंद्र या यहित खेत खेत खेरा ना सुक्षाय दी। द्रुयायानि,ततुर्द्र्वे,मुर्द्र्यम्बन्यवायस्यायादस्यायान्तुःक्रियायवे,बुद्रावद्वामी,भुद्रा स्टायाणवाते। ब्रिटायस्याययार्स्टायायवायार्थापुरमात्याययास्टायरायम् केटा देश:संवयशयादा है:स्रेर:दट:युंदे:ख्रु:युट:वया १९:५म:ख्रुर:दुट:वः क्षेत्रा १८.वर्षेत्राच्चत्रकाक्ष्ट्राक्ष्ट्राचेशकाका । श्रीक्षेत्राच्चात्रकाच्यात्र क्रियाम्बर्धरम्यतः द्विरा दिः सर द्विमायाया वित्रारे। दे स्मायहर यम हवा विद् ग्रयदे व्ययव्यात्राचन नु बुद् वहुन निष्य सु वहुष या निष्य है के स् याबुदायह्मार्चियायाथेबायवे धुरा दे यद्वे बुदायह्मायादेशगुदा श्वरायदार् ह्रिदा क्षेर् याञ्च मञ्जा पु स्वक्ष या स्यावना या सा द्वार प्रयास माने वा विस्ता माने वा विस्ता माने वा विस्ता प्रयास तालकार्चेरावदाक्षेत्र श्रेका्री यट्राक्ष्य मूर्वाताला प्रकार्मिता श्रेकाः श्रेट्र श्रेप्राची सहस्त्रिया श्रेकारी हिंगा वालकार्चेरावदा स्वाप्ता स्वापता स्वाप्ता स्वापता स यन्ता हिन्रयम्बुद्व्यम् न्या बुद्व्यम् ने मुद्धियं या प्रवाहि देशा स्

वया गिवर्ड्चर्ट्यं देवर्ट्यं मुक्त विक्रान्त्रे स्वर्धित विक्रान्त्रे विक्रान्त्र विक्रान्त् लट्रवार्द्रश्चिराया विट्रिय्द्वायर देयम्दर्श विश्ववश्चर्यायये भ्रिरा चल्यां । इत्याया बुद्य प्रत्ना पर्वे कुद्र गुःर्वे बुद्य हित्य पर्वे प्रवापा दे वर यधिक है। देवे स्वर्धेन मार्गी देश यायवि यवे देव मी वेद नामायायमा दे स्न देना ५८ में दे देव क्विय ग्री दिसाय देव प्रमान कर केर या या येव प्रये क्विया । श्वर साथ बुर वह्नायदेखर्यर्थेयेव है। ब्रिंद्यह्र्यय्यम्। निर्केटर्ट्यम्बर्गय्यम्। क्षेर्व्यार्ट्स्ट्रिवकर क्षेत्रपूर्व विश्वमधिरश यव क्षेत्र दे दे दे प्रति विश्वमा मानुर वर्षण यादे प्यरायमान्वन यान्यर हिंदा क्षेत्र के देवा है। देवा हा यथा । हुर यह ना हैर वह्र वाम्बर्धाव्या । स्र प्रविव मार वावर श्री पस्ति प्रा महीर हा प्रवे हिर। ट्रे.सं.येंद्रुश्रुक्त्यी.बेंट.जर्बे.तातु.शक्ष्ये.बे.श्रेश्चेत्रश्राचेट.दे श्रेज्येत्.ट्री श्रेजितस्य. र्वाया अर्देव प्रत्या क्षाया प्रता विविद्या पर्वा के अस्ति सार्द्रवा मुख्या प्रता प्रता विविद्या पर्वा के अस्ति सार्द्रवा मुख्या प्रता प्रता विविद्या पर्वा के अस्ति सार्द्रवा मुख्या पर्वा के अस्ति सार्द्रवा मुख्या प्रता विविद्या पर्वा के अस्ति सार्द्रवा मुख्या मुख्या पर्वा के अस्ति सार्वे के अस्ति सार्द्रवा मुख्या मुख् मूर्याकात्राक्षीटकातपुरक्षित्र। विविधकाताच्चे प्रश्नातात्राच्चे तात्वकात्वाटकाश्राञ्चवी तपुर श्चीत्रका याबुदायह्वायादे हेबाइबायाधेबाहे। दिवे कुदाग्री खुन्याय केवा वी विवासकेदा बूट पश्चार्यादे हेश द्वायव यदे हिर है। कुट है सायश हिश द्वापट विवा क्यान्स्रियमा दिन्दर्वर्वर स्थितर ही हिम्मुर्द्वरावेषानम्दि । स्र-बिर्यान्ने जनाकी विद्याचिर्यात्त्रकी हिचाना बेरावर्षाक्रिया क्रिया र्विन्दिर्देश्वरेष्ठाः व्यवन्ति । विद्रायन्ति । विद्रायन्ति । यदेव गहिबाद के रामेद ग्री इवाद के रामेद यह दे प्रति के रामेद प्रति के रामेद रामेद के रामेद रामेद के रामेद रामेद है। दे हैं द वर्षा वर्ष दर केष र र हैं अय वह व यथ। दिर्देश ये वस्य कर र

वर्तेत्र, येशा विश्वश्च केत्र वीश्वर क्रिश्च क्षेत्र विश्वर क्षेत्र क्षेत्र विश्वर क्षेत्र विश्वर क्षेत्र क्षेत्र विश्वर क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र विश्वर क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र विश्वर क्षेत्र कष्ठ क्षेत्र क्

क । वार्षेत्रात्तान्त्रात्वावेश्वातान्ववायात्त्रेया क्षेत्रा विष्या । हिन् याश्चिति समानाना ना सामेराणी श्चिराया से प्रमान प्रमान पर्देश पर परिष्ठी पर गा ठगमि द्वित्यम र्श्वेत्यम द्वित्य द्वयाय न श्वया द्वया है। त्यव या वा स्वयाय व्यव्याय व्या मु र्श्वेर या कु के वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे या वर्षे या दि स्वर्षे वर्षे के वर्षे स्वर्षे स्वर्षे वर्षे स्वर्षे स्वरं स्वर्षे स्वर्षे स्वरं क्ष्वायर र्श्वेषायायायर्दे राळग्षायी र्श्वेराया इस्राया व्ह्रवाय रश्वेरा श्वेरायाळग्या न्यामी हिंदायकी हिंदायवे कु अळव थेंदादी मादा बनादे पदे पाळे दे पेंदे थे मेश भुद्रयायार्श्वेषानिदाभुद्रदर्गिषायानादावेन । कन्ययान्यानुद्रान्यान्यस्व मेशक्रियायानुपरियदेवार्मिया दियान्दर्शेस्रयाक्रयायरानेदार्मिया देखा ध्विन वर्ग वर्देर पेवि वर्षेर का श्वेर का श्वेर रिकेश यदे ख्वेर । दि स्वर द्वारा वा वि वरेर ने अप्यवन्यम् वया क्षेत्रम् नी वर्देन व्यव या क्षुन्यस वर्देन कवास सेवास क्षेत्र यश्रन्तानुष्युरायरान्षुरशायवे क्षेराने व क्षेत्र के दे। दयवा कर्केना वशा दुना पर्दे द्वित्र मित्र प्रतिष्ठ दे दे दे प्रतिष्ठ मित्र म क्रिय्व्यूर्याद्रा क्रिय्वेर क्रिय्वेर विरायायम्य यास्र पर्दे द क्रम्म ग्रीमामान क्षानिक्षामुद्दारम् विश्वद्यायवे स्वित्ते । विद्वाय देव र्येद्रायर विवाय वेद्

वसाग्रदा नद्मिसार्चेद्राय विद्याप्त विद्यापा ।दे थि स्ववसाय प्रदेश में वा विद्या विषानासुर्वायवे द्वेरा देव दुनानासुक्षाना यक्षादु त्युर पर्योद द्वावाना नावन न्तर्भार्षेर् गुर्नि सुना यार् सेन्या संया राज्या स्वाया वेत् गुर्नेत्र र्स्यान्वन्द्रान्यस्त्रात्वान्द्र्वान्यदेष्ट्रिम् देन्नायस्त्रेत्रा वयाने देशपन नवा शासुर देशों वित्र रे वर्दे देशक वा शाया देश देश की शायते. यरे हिंद र हो र खेर ग्री प्ये मेया देर हैं व खेंद श वर पर हो र जु श श ख के लिया श्चित्रवाद्रोत्त्रिकात्रायराचेकात्रकाः क्षेत्रवेद्रोत्रहेत्रकात्रात्रवाद्रात्रवाद्रात्रवाद्रात्रवाद्रात्रवाद्र र्यायस्य देव भ्रेम वर्दे द्वादेश बर्म या विवासी सुरायर वया थे। दर पे सूर ब्राह्मरायायरामुब्रायवे कुराद्वीयायरामया वर्देदाक्षण्या वर्देदाक्षण्या वर्देदाक्षण्या वर्देदा क्रम्बर्वेबर्धरेश्वरा मन्दरण्यर वसरेबर्धदेव सर्पर हेर् से स्वर यर वया देवे कुर वर्दे द कगमा दर्गमा यदे खेरा । विया है। कु यदे व वह व बर्'न'यन्यानु'वर्रेर्'कवायाबर्'पयानियायवे'हुरा विवर यर वर्रेर्'कवाया वसान्चेर् केषायवे वर्देर् क्रग्म दे वर्देर् क्रग्म अळव केर प्रिया प्रेम स्थान लुब्र ब्रु पर्दे क्रिया मिन् मिन क्रिया मिन क्रिय मिन क्रिया मिन क्रिया मिन क्रिया मिन क्रिया मिन क्रिया मिन क्रिया मिन क यन्दर्यम्या धेवावने देवि सेंद्रम्यम्बवन्दर्यहेव सूद्रम्ये यम्याप्य स्था ने पर्देन कमाया येव यदे द्वीर विष्वा क्रिका क्रेन के निष्ट प्रिय प्रेय पेव पर्देन कन्यन्दर्द्व इत्यायन्य प्रति हिन्या हिन्या प्रति हिन्या हिन्या प्रति हिन्या हिन्या प्रति हिन्या हि क्यून्द्रेष्ट्रष्ट्रष्ट्रव्याचर्यस्य द्वार्यात् स्त्रिष्ट्रप्यात् व्याप्त्र व्यापत्र व्याप्त्र व्यापत्र व्याप्त्र व्यापत्र व्यापत्य व्यापत्र व्यापत्य व्यापत्र व्यापत्र व्यापत्र व्यापत्य व्यापत्र व्यापत्र व्यापत्य व्यापत्य व्यापत्य व्यापत्य व्यापत्य व्यापत्य व्यापत्य व्यापत्य व यवे क्षेत्रक्ते । दियम में में त्यका क्षेत्रायवे क्षेत्र पुरा में मान सम्मान स्वता स यवे श्वेर देशक कवा राया वसा हे दे भी वर्दे द कवा रादे वर्दे द कवा रासक के दे

त्रात्र्व विष्यात्र श्रीयश्रात्रश्चित्र श्राच्चेत्र विष्य विषय । विष्य विषय । विष्य विषय । विष्य विषय । यथ्यव है। नियम व ले हिला के साम के मार्थ से मार्थ मुका श्री है है साम के मार्थ मार्य मार्थ मार्य मार्थ मार्य सवात्रका क्रियायवे विष्युत्तर विष्युरायायिक विष्यायविष्या विष्यायायायिक । । श्वेर प्रवेर इस र हे 'दर सक्र रहेरा श्वेर प्राया श्वेर प्रवेर के निवे दर पे हे गुहर नुर्श्वेरयासकेनाद्रा स्नम्यात्रीर्श्वेरयासकेनाद्रा इरायसम्पर्धात्र निवेन्यायवे हुँ न्यान्ता रेनायायस्याव्नायायरान्यायर वेदायवे हुँ न्यावेया यास्यसः हुनियानासुर्यामी होतानी स्यामात्राचिताचा वेतु परु दुनाया वया नेता नुष्यक्षर्भार्भित्यायान्यस्यास्य । क्वित्यामस्यायाक्ष्यास्य क्ष्याः क्वित्यानेस ग्रु'वर्व कु' अळव चेंदि दे। वर्दे द चेंब कु दिन दे ने किया के वर्दे द चेंब वा कर विवा नेषायवे क्षेत्रवर्षा क्षेत्रयका दे द्वार पहेंद्रायवे क्षेत्र विद्याया दे विवासी वर्षाद्र हो। वा विषाययमा विषायेता मेवानु विषायेत्यी वितायान्याया । वि क्षे महिषायाम्बुसान् से प्रदेन गुर हें बासेन या कुषाय देन महुषाम्बुसान् येन हेन की क्षेत्रकार हो ना विश्वेर देश पर होंदि यार हो हिनाय देश पर के कि विना ने महिकारे रे वापार हैं का वरुका हैं का केन मिक कु हैं का केन मासुका नु विना रुषाणु क्षेत्रषार छे वा क्षिर उत्रु छेर यार्वत्रु षार्ता व्यस क्षेत्र रुषाणु र्श्वेद यानिका विकायाम्ब्रेन देशकार्या मुद्रात्तर विकायो प्रत्य विकाय स्र रुक्षियः धुरूर्दिक्षिव विवाधाय पश्चित्रत्र्यापश्चित्रकृत्त्वीत्र्र्याचीत्रवश्चित्रत्र्ता श्रेयश्चित्रव्या १८। श्रु खुषायषात्रेष्रायाविष्यादरा र्श्विचायवे त्रुदायदे त्रुद्धायषा श्रे र्श्विचायवे त्रुदा वह्नार्चिव क्षेत्र क्षेत्र प्रवेर क्षेत्र प्रवेर क्षेत्र प्रवेर क्षेत्र प्रवेर क्षेत्र वचन कथा में शास्त्र शास्त्र या ना मानिया । वस्ता मानिया वस्ता मानिया वस्ता वस् यान्दावरुषायदे क्रिन्याने क्रियावरुषा ग्री क्रिन्यदे अळव के निन्दा वाषा क्रान्त वर्वित्वम् क्रम्मि स्वामा स्वामा स्वामा विव विद्याद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या र्मेश्यापाद्याप्तवार्में द्वारा में श्री श्री के स्वार्थ के ता के विद्या में स्वार्थ में स्वार्थ के कर् ह्या के त्ये के देर हैं अब पर पर्यो परियो परियो के देर प्राथ परियो इ८.२. झैवावबाचरे हिंद्र देवेर श्रेणी यो नेबाळेग होवा दिया देवे ही रापे पासुस यवे सळ के देन प्रेक के विश्व या वा विश्व । क्षित्र या न देन प्रेम विश्व के वा कि वा न विश्व या वा विश्व या न देन निवर्तुः र्ह्येषा स्रेर्णे र्ह्येर् या ह्युया ख्वाया विदर्श की विदर की विदर्श की विदर की व र्षेयमानी वटायासुरायक्षेत्रायक्षेत्रायाणी देवानु कटार्यटा दरा दरानु रेयार्थी सेवासाकसा वर्ह्नायन्त्र हित्तुकुन्दर्थकेत्र द्रश्च केत्र विष्युष्य विषय् ततु क् कूष् की देश तार्ष्ट्र ज्येश तर होश हिंश परश्र र हिंश श्रेर केश त. य. झ्राय्याया विष्यां स्राक्षे स्राक्षे निष्यायह्ने या निष्या स्राज्या स्राम्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या पर्टा हैंबाश्रेर वहिर वर्षित्र र हैं नेबाय केर हर रेट वर्ष मेरन वहिंबा यायान्त्रमाषुना विषयान्यसान्तः विषयायाया । सत्त्रायाया त्तृ बैंच त.त.तृ केंब त. हेर वंशिया शक्र हुर रट र दं ब तृ दे वे रे वे वे र श्रेन् प्रतित्यारत्न्त्यम् कृष्ट्नान् । श्रिकाश्रेन् पहुकायायारत्न्त्यम् कृ गुरुष । रटाषी क्षादे दिरादेव यव पाद र कश में शास्त्री वा शाद में शास्त्री यह या प्राया प्रसा गर्रियेयेगान्व न्मा पावव इसस्य रेपास संस्थित स्वी पान्व वा विविद्ते । वसूर विष्रावश्चाप्रस्थात्रे। र्वीवाविष्राक्वियासक्यानीयरार्ह्वर्र्वाप्तिरा वशा क्वामक्र्याम्। देशास्त्रें सायवसार टार्ज्याप्रदाक्षिताताता के मूर्यार्था हिंसा

श्रेन विद्यान हुषा वा झु श्री सुन्त वा वा केवा वी विदेन व्येत सुन्त न सुन् र स्वा सुवे विदेन । र्षेद्र'व'वेट्र सुद्दु'दे'दे सूट वाक्षेपिक्षेप् प्रति। मुँगप्टर्गा के प्रदेव इटायहरी या स्वासा हो इता या के की विषय के सुटायह माया वा स्वासाय हो ही इता या स्वासाय के स्वासाय हो हो इता साम यायान्युरानु के पाने के प्रवाद प्रमान्य अक्ता के कि ता प्रमान के प्रम के प्रमान के प्र परुषाग्री हिंद्रायद्रा । श्रुप्रायदे हेंद्राय हेंबा केद्राद्रायदे ग्रुद्राय हेंद्रायदे ग्रुद्राय हेंद्राय हेंद्र य मैक हु र्ह्मेष के द की र्ह्हें द यर यम द यदे हिर ले का हिंक के द दे। दे के यदे क वह्रव मी हैं बायके यद्रा क्रायद्रा वह्रव वा वह्रव के विकास के मार्थ के वा विकास के व मैसम्बर्धरस्याचेत्रपदे द्विरा महिसाय दे। मैत्र मुर्खेस सेर ग्री हिर य हेर पदे हिनासारियायादे। विदार्केसाद् साद्दार्याद्वीसादी विविदार्थिसा श्रुरावित्युव किनासा ५८ द्वुव सेंट मी ५ रेस युव गुर देव ५ से महेर या रह देव ५ ५ रेस में हैय व यु द्रमणराष्ट्रातकराबेटा। अत्यायम्दान्यित्रियः ध्रीयामान्त्रिन्यामुग्नासम् क्रम् वित्याया क्रिम् वित्यार प्यामेश गुर्भ द्वियाय द्वारा स्यामेश वित्याय हिम् या ग्रीपर र्ह्ने रुप्त हो। हिराव देश सुर प्वते थे सुर प्वते थे सुर रहे से स्राया पर प्वहुवा है वा म्बेर् क्या ता ही मान कर मुब्र की क्रिया मान कर क्या कि क्षेत्र क्या कि क्षेत्र क्या कि क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र ब्रेरा श्रिकामा । अक्ररावेटा अक्ररार्टे प्याया पर्वा कुर्राट प्याया । र्वा मी मिट वर्षेट्यरेट्रेद्धत्वस्त्राह्मा विह्याः वर्षः हिष्याविषाः श्चित्वर प्रवृत्युत्र्कृ वसः श्चुग्वर्मा

महिश्यित्या । विन्यार्त्य स्थान स्यान स्थान स्य

त्त्रविश्वरात्त्रः द्वर्यावा श्चित् द्वरः अवश्वरहिषा ग्री द्वा श्चित्रः स्वयवा प्रश्नित्वा पा पा देव बबा विचयानु वर्षेत सर्वे सर्वे सर्वे स्था न जुनाय प्राच न प्रता प्राच प् यदःदवाः विवायः हेत्। । रवः पुःवाश्वयः वः हेतः वहवः य। । दवदः धुवा हेतः दर्देतः न्गुरावश्चरा डेशायम्नायास्या न्यराधुग्रामीयाम्याक्राविष्याम्। वि रत्याक्षेत्रद्वीष्ट्रवर्षात्रेयाद्वर्षात्रेयात्वे व्यक्तितात्रात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्रे मु दिन्यावयास्त्र न् पुरायवे न्नन् क्षेत्र निषा नेषा नेषा नेषा निष्णा निष्णा निष्णा निष्णा निष्णा निष्णा निष्ण इटा । अरे. द्वा विश्वाता वाषाचर विवादी जा. प्राप्त क्रिया श्रीत तातु । ब्रिया त्या विवादा विव म्रेर्पर भुर्पेषियायम्भीयायरपत्ववामास्य सरमाक्ष्यायमागुराकेमार्गान् बिटा गिवेश्विकालानेबाद्धान्याचा जिटानविवद्ध्याताबाद्धाना विट्या तत्र्यं केष्ठं वे दुर्व शुर्वा रायमाषायायवाष्ठ्रवाशीया विनेद्यायार वर्वेट. चविःद्रिः द्वित्वी । द्वत्यवाद्वरं की द्विष्याया । ह्विषात्व द्वात्वे विषान् गरावहें वा निकामी देव तत्त्व क्रिया विश्व क्षेत्र क् श्चैमायहेंब्रायदे यहें श्वेमान्ता । स्टाम्ब्रियम्बर्यायदे व्यवस्थान्य ग्रीमा । स वर्रिकें नेप्यावरावश्चवशा दिखेरान्नाया अर्केनादेवानुवाराणीय कुना दियात् नामवार्श्वेव वेनामायन्त्र कु अक्टिंचमा । इसर्श्वे प्यते मुह्दमाया महित्य मा किर्मेवेर्निर्माकुवर्मेन्दरवद्गान्तरम् । इस्रान्ना खुरमी कु.मेवायसः गुनः कुटा द्वारा द्वा यम्द्र'वेद्र'द्रग्रर'ठम् । द्युय'यह्रम्यद्र'ळव'वद्येद्र'यवे'हे'अवद्र'वेम् । वद्रे'व्ये न्वे प्रशायक्या विश्व विश्व हिं के त्वश्व श्वा हिं विश्व श्वराय विश्व विश्व स्था विश्व विश्व स्था विश्व विश्व स

च्यातमृत्र्केथ्वर्त्रेक्ष्या । श्रिक्ष्यं म्याक्ष्या म्याक्ष्या

भ्या क्रियानु में दे ते क्रिया मार क्रिया से प्राप्त प्राप्त क्रिया क्र

चिट्य भीरावा रिशक्रवार्ट र्हूशातार्वात्तर हो राता क्रेर्ड ही ही टाह्य श वृत्रा रिट्या हो श्रेष्ट वृत्य वास हो रुशता वा है र हिंद शतार्टा ने वी शतार्ट्ड हो । हूं श्रेष्ट वृत्य श्रेषण जुर्था। ट्रिट्य वा हुं देश शता जुर्था। श्रेषण श्रेष्ट विद्या प्रिया हुं वा श्रेषा हो । विषय हो । क्रियार्ट्ड । क्रियार्ट्च वा हो श्रेषण जुर्था। हें श्रेषण जुर्था। हें श्रेषण खें श

वर्षाविष्टरायाक्ष्रम् कुः स्ति वर्षायाक्ष्रम् द्रा देः वार्यम् द्रा वर्षायाक्ष्रम् वर्षायाक्ष्रम् वर्षायाक्ष्रम् र्येक्ट्रिन्यायम् करमार्रमार्ट्स्नान्यम् र्यो निष्याया मिन्नामान्या र्येजितिश्रास्त्रिया के विष्या के विषय म्नैयातात्रार्ह्णयाद्रभावेशयायी. जुबे वि म्नियातात्रार्ह्णयाद्रभावेशयायी. जुबे तात्र ग्रव्यायकतः स्वर्षाः स्वर्षः प्रविष्ठाः विष्ठाः विष्ठाः विष्ठाः विष्ठाः विष्ठाः विष्ठाः विष्ठाः विष्ठाः विष्ठा परे.प.जा र्र. इ. श्रुश्वर्थं रेत्तुः श्रुजां जीर प्रवाला श्रुजां श्रुज्येश्चरं रेत्रं प्रवासर्था सम्बर्धन प्रति । सर्गे के सर्वे के प्रति प्रति । सर्वे के स्वर्धन स्वर्यन स्वर वर्षः वर्षः र्यद्रायः दरा र्रोत्रायस्य स्तायम् । वेरेरे के र्रो कुरः चर. में थ. रे. कूंच । जवा ता श्रध्या ता ववा व्या की सिवा की ता ईवा श्राप्त विद्या । श्रेश्य था । श्रेश्य था वि गुन्निक्षाचनसाः निवानिक्षाः । दिवायाः वर्त्ते । विवायम् विवायम् विवायम् विवायम् म्रीमार्झेर् रम्बर्धरेर्ट्र व्याध्व सेंट्र मी पुर क्विप्र ग्री संसम्पर्विष र्य तर पर्य राष्ट्र । विश्व वश्व मान्न या मान्य । विश्व या पर्य श्व र विश्व या मान्य । वर्ष्याद्वार्त्यार्त्त्रार्विश्वरावन्त्रात्वरात्रात्वरात्वेषरात्वेषरात्वेष्यरात्वेष्यरात्वेषरा सुष्यश्चर्कुकिन्दा नायवासुर्जे या नायविन्तुक्ता नायवन्त्यरायी नायवि र्यार.म्। रविश्र.कृता क्रिंश.स.वाट्याराश्चरं तथाई.द्रशावकर.वर्दे वा विव्रः यूव्रत्यध्वर्सूचा,स्ट्चा,क्व्या,येत्वर्षा,स्ता वित्राची,श्वरा द्रमिटाच्येश. र्नुःसदे कर र्नु मुमान वार्ये प्यरायवासी विवित्र वीपनि ही हे पासुवायदे विष्रे भी इप्तिय रेपिने विष्य विर्मित्सर में सेप्त मुम्मिस सी सिर्मि केप्त मुम्मिस सी सिर्मि केप्त मिन्सि सी सिर्मि केप्त मिनसि सिर्मि केप्त मिनसि सी सिर्मि केप्त मिनसि सी सिर्मि केप्त मिनसि सी सिर्मि केप्त मिनसि सी सिर्मि केप्त मिनसि सिर्मि केप्त मिनसि सिर्मि सिर्मि केप्त मिनसि सिर्मि सिर्म

वि.मुंब.रे.हुंबश.त.रटा क्षेट.वि.क्ट्रश.मी.उत्रूर.ज्.श.वर्चा नमेर.ता वि.स्वा. न्यार र्रा के त्या बिका तुर्वा स्थान त्या वित्या में क्रियो मान्या वित्या वित्य ब्रैंर ग्री प्विर ग्री इ.पर्य प्रवे. रैंग ता वि. रूच राषर ग्री ले.प ये. येश भी. इस्रायान्डम्। विष्णुम्दुः द्विन्यायाद्वा ही र्वायदे क्रम् की विस्तर्यो इत्यद्वार्थाः यहिराया विद्वाप्तारमा क्षेण्या बुसर्येद इस्याय उना विद्वाप्त र्धेवारायः है। विरागे बुरारे विवश विश्व बुरारे वे खुवारु वह वार्वे हिराव या दे जिया विगा वे उन्हा विग द्रमा भारत उड़ वी विषय पा निषय प्राचित्र प्री के दि ग्राप्तां मान्यां मान्यां विष्यां विष्यां विष्यां विष्यां विषयां विषयां विषयां विषयां विषयां विषयां विषयां विषय लर कें. यपुर के प्राप्त कें. रे प्राप्त कें. हे प्राप्त कें. विष्य कें. केंद्र द्रभाग्नी क्षेट्री वर्षेत्राम् सिंद्रान्तर्भात्री त्राचित्र त्राची वर्षेत्र त्राची वर्षेत्र त्राची वर्षेत्र त्र र्रासर्वाक्रिम मुन्द्राचार्ता क्षेराविदे उत्विर की रत्या सु कु मिदे मार्ग विद्रा वार्नुष्पेवार्ह्न्यां अर्वेद्युर्वार्व्यस्य स्ट्रिंट स्ट्र स्ट्रिंट स्ट्रिंट स्ट्रिंट स्ट्रिंट स्ट्रिंट स्ट्र स्ट्रिंट स्ट्रिंट स्ट्रिंट स्ट्रिंट स्ट्रिंट स्ट्रिंट स्ट्रिंट स्ट्रिंट स यदे इ'विर कु न्तुराणी कु किये बर न् । त्रा वा वा विषय विषय विषय कि वा विषय के विषय विषय के विषय कि विषय कि विषय र्धुनमायन्ता क्वेन्द्रेवः स्विर्चे न्तुमायी कृतियन्त्रा कै स्विनान्तार स्विमा ह्यू र पुः स्वापार्विषाः हे। प्रतिगायर प्रवित्र खेरि र पुर्वा ग्री र कु र की स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स यमान्यीमायवे वन भीवे नियु स्वे निर्मु य के सामान निर्मे भी में भी मी समे रि ञ्च केरा विषा चे कु प्राप्त कराया प्रविषा है। चुर से स्राया परिष्य पुरद्रिषा पाय स्रा विटा निवानुः स्राम्याक्षेम्रवानेवान् विटापनुः श्चायमानुस्यायमा निमान्यानेवः स्क्रायास्य द्वापाद्वापुकाणिकायम्। देवाक् टार् क्रिक्षात्वाकायवे क्रुवाचीका द्विया यन्ता हित्वायम्बद्धन्यीयोगम्बुम्यायाक्त्राद्धम्ययस्मयारेन्ता गर्डे

त्राक्षानिराजाम्मभावह्याताल्येयाष्ट्री हि.संरावस्थियात्रामभामभाग्नीवाजातरः उर्देशन्तु अश्वरान्त्र वशा बिर श्रेश्वरा उर्देशना वश्वरात्त्र विषर् विषर विषया नेर कुर वर्ष हे देव दवद बीष वुद सेस्र प्रच्या ववष यश्व वरे व विद्या ठव है। देवे के हैं हो ते पु स्वाप्त इस द्वाप्त विश्व समाये विषय प्रेम पेव दे पाय र द यरे हिंद न्याया प्रया विषाया धेन में । हिंद रेवा हिंद की माया हिंद की माया वर्षा विभागत्रम् क्री सवावर्षे र हूँ मार्ग वर्ष मार्ग सुवायम् स्वाप स्वा वयशसु में दे या यदे या युषा मान दे से मान है । हिर दि यद से मान है । स्वयाद्वयात्री वर्त्र्द्वयाचेन्याद्वा द्विरक्षान्त्रा द्विरक्षान्त्रा द्र मिट्यु.इ.योद्धेया.से.युवा.ग्रीया.सूट.येथा इ.योद्धेया.कैं.या.तेया.यथवाता.हैर.ड्रीर.ग्रीया यट्नर्चर्चश्राही देन्द्ररविद्यायदे सक्स्यर्द्रे ब्रया कि. प्रिश्चित क्रिया विद्या कर्रियासदाबर्द्रास्त्रम् कीयास्त्रायारावर्ष्ट्रस्याया सक्ष्यासावर्ष्ट्रम् सेर् श्रीन्त्री क्षेट्रक्ट्यावन्यानेरासन्ना नेव्याद्वाक्षियान्यास्यान्त्रा लासिराम्। श्रमायम्बर्गा श्रमायम्बरामाञ्चरारी नेश्चरामालासिराना सर्व बट्ट प्यर पर्दे वि वे वे सेंट पर प्रथा है महम्ब मार से प्रथा म् ।रे.क्षेत्र.पश्चिमभातराजिट.क्षेट.वियायातारेटा। यथवातारेटा। इसात्रु. रुभातवान्त्राम् स्विन्यर रवन्त्री सर्वा चिर क्षेत्रवान्त्राचेत्र विष्या र्वे.श्व.यटाव्यास्तराचन्याने परे पाक्तियाचा क्रेंट्छेरार्ट् हैराव्याप्याया सु'येव'कुंय'पक्षव'वसा दे'यद्दे'त्रस्यायेव'दे'या स्थित्यत्मितुस्रसेदेम्नद्स्य याक्रेमः विकार्राञ्चनाते वेस्रमाने विकार्राञ्चन विकार वि

मुक्का वेश हे. भर ता. वार्त्र त्रात् क्वा वीश भगीर रे. तविर था तर्रे विवाश यात्र श विभागमुभाग्नी हगाया प्रयापहर प्रवादावि पश्चित सुवार्श्विया भूषाया प्रवादा प्रव र्रेत्। के विश्वाता में जिया ग्री विश्वाता है। विश्वाता स्था विश त्राची श्रांत्रभाश्चराङ्गित्रभात्रा। वर्षेत्रपत्राङ्गित्रभाग्रीमाञ्चेत्रायाष्ठ्रभावाम। तर र्येते कें। महिन् ग्री रेन् मायय येग्या सम् जेन परि सम्बा देन मायय नेते पर्वेन तत्र हैंटा क्र.जम.क्री.जैस.विट.तर.क्षे.रे.हैंज.तस.ट्री जरस.बेस.त.प्रुचे.टें. लेशर्ये हेंन्यं । **इन्यां की शर्यन उना** लेशयं है। कुर ह्या शर्ये हेर श्रेन् न्द्रम्या वट्नुय्य्षां व्याप्याः विष्यायः विष्यायः याख्रुः त्रा व्राप्तः कृषी वात्रस्य सुः त्राये दे हितः प्रत्रस्य क्षेरावादे क्षेर निवासायात्मासाह्मरायावान् ५५ तसुन यामा स्रेसमा स्रेसमानी स्ट्रिंदायावास्त्राची येग्रायर मु पने न अविग ने के। विर विप गु अववि दिव विव ने ने विषय में विद इर.र्ज.त.र्यु.क्री जीवश.र्जुवा.ब्रा.क्रेर.ज्ञ्च भ्रिंग.त.रट.रेश.श्वेश.री । रूर.व्री. सिर्म्, क्षेर्याता जावा जुर्वा वा त्राची त्राची सी राष्ट्र के साम हो हो । सि क्षान्य मान्या विषायां विष्यायं विषयां विषया म्न तार्श्यम् रात्ये मेट या यट त्यर वश्या २८ किर अध्या यविया में श्रीट यद यहे हिंद म्बाराक्यायम्याक्षे विटास्ट्राच्यायास्य विदास्त्रित्ये स्वार् पर्या युवा सूर परे पर विर प्रवेश में निष्य सु द्वार के विर विर है ने निर र् में प्रमान्यावेषायार्गा वर्षमञ्जूषायमावेषायवेष्ठमञ्जूषिषावे रेमायायवेषः र्वे श्री श्री दे देवात्र प्रवायक्षणकायाध्यक्षयाद्रा दे वायुवा श्री विदे हिंदा वी.क्री.भाजभावावयान्य देन्द्राचावर्ष्य वार्क्ट्रान्त्री विद्या विश्वास्त्री विद्या विश्वास्त्री विश्वास्त्री

यंत्री ने स्पृत्ये यने हिंद वी क्षम कुँद ने हैं स्मर कुँद या प्रवित नु। के वा मु पहेंद श्रेषुषायवि देव के विषायक्षावेषायक्षे । श्रियुषायुवायादेव सुगरा स्वारं क्षे वयशणीकर्ता वर्षावेषा सुर्द्राव्यक्षा सुर्द्राव्यक्षात्रीय सेत्रा सेत्रा वर्षेत्र वर्षेत्र सेत्र सेत्र सेत्र सेत् न्ना **श्वयायवासु** विषयानेषा श्वयाया सेवासा ग्रीसावानु या द्वेत रेवास नाया था त म् मु तुर्यस्तु वा सुर हिंद या दे के देश दि प्रदाय दे मिया परि मुवाय दे मिया परि मिय या श्रीट प्या श्री मा इस विकार हिन विकास कि न यार्येगान्यार्थेञ्चा विकाहेकास्यायार्थेन्यवेरस्यां मुक्तासम्या भ विश्वायक्षेत्रम्थिक क्षित्रम्थिक है। कियायकी विश्वायकी विश्वायकी विश्वायकी ग्राम्ये प्रति देव प्रमुव या । प्रदेश ने मार्प प्रमु विभाग परि मा ने किन या निर्मा निर्मा विष्य स्वाप्ति । विष्य स्वाप्ति । विषय स्वित्य स्वित्य स्वित्य स्वित्य स्वित्य स्वित्य रिकेष्ठम् । विषयपषायक्षम् हे। द्वेषायस्य वार्वे र ग्रीका हिराया येषाषायमः अवः रातुःर्भादेम। भ्रात्मार्याम्बास्त्रास्त्रम्भ्रम् व्हरास्त्रक्ष्रम् प्रतिन्त्रक्ष्यायते प्रविक्षाया प्रतिन्त्र ग्रेवित्वाषयादेवाविवायवेत्रुद्धाये द्धाराये दिन्द्रेत्येद्र स्विषायवे द्वारायवे द्वारायवे द्वारायवे स्व यश्चे प्रते देव प्रवे वा प्रशे कुंवा पर्दे वे प्रके प्रते प्रें प्रवाय प्रयाप दें गुपा प्रवर् वस्यान्त्रम् की मन्द्रप्तर्भ कि त्यस्य प्रमान्त्रम् वस्य प्रमान्त्रम् देशक्षक्षत्रमान्वावदेत्वर्द्धाः वार्ष्ट्रक्षाये वर्ष्ट्यमान्यम् वर्षाये स्तर् चित्र प्रमा क्रेर चर पर पर देवे गार् स्था भेरा विकार हिर वका क्रि. वस वर्त्रेटशक्षया विशह्यस्यायार्ट्र्यस्यायीयात्र्रम्यात्रि क रिष्ट्र-प्राथितात्त्रियात्त्रियात्त्रियात्त्रियात्त्रियात्त्रियात्त्रियात्त्रियात्त्रियात्त्रियात्त्र

यवेद्वा विष्यायदिया अळ्यश्याद्वी वसरावावह्नवाया वितिरस्वाक्रिंशाहिकाहिकाहिका विवादायहिका विवाद्वार्थी. म्बर्गेन्योः वर्ति मार्यामिन स्वामिन स भूर विर वुषापया अक्समारेर वकर पर्व वेर वामवा में हिर्च वहन के । वहर केर दिर प्रथम पर्दे प्रथम विषय पर्देश हिए पार्ट हे पर्देश भी प्रमान र्षः विवा येते द्वापर्युर ५८। । विराधर क्षेरावि रेहे हे पत्तिकाया सेवाका ग्री सव्या ग्रिन्'न्'र्वे'पर'हर'प्रविव'न्द्रीग्रायान्न्'यान् द्वीग्'कु'व्ययंत्रेर'र्वेच'ग्री'पर' नरपत्रा हेर विपादन केर र्न् संस्ट रहा देवे हे सास हेर विपायकर। ट्रे.ब्रब्धास्त्राम्यत्माययःद्वाराःक्षायुर्वे रेदेन् म्बर्यायस्य स्वा देवे से हेन् केन र्रायशेर्वेषाक्ष्र्रायवेरवेष यापहर है। वेर्षाययान्य पर्राहर हैर हैर हैर है क्षयान्द्राय्येष्वराष्ट्रायकेष्वरा अवअष्वविष्रे व्ययायर्थायेष्य्यायः या के 'के 'या वार्येत्वा कुर्र हिर 'यहे प्रते प्रवेष 'या यह देव वा प्रवेष विषे के के ले । चेथा.ग्री.क्रॅट.तातीवा.टी.चेबातवायेथशबाक्चिट.क्र्या.ग्रीबाहातविष.पर्ट्रट.श्रा.बेबातवु.क्रैं. युषानी निष्य स्प्राचन्द्राय द्वापा दिष्य प्रदेश समा वेदादे तथा विषय दिन्यम्ययाम् स्थापाञ्चेत्र। विशार्टे श्चन्या। विश्वन्ती प्राप्तिन्ती प्राप्तिन्ती प्राप्तिन्ति। नेया विस्तरा क्रे से न न के मार्थ स्थान के साम मार्थ में न मेरे मेर मार्थ में न मेरे मेरे मार्थ मार्थ मेरे मार्थ मेरे मार्थ मार सर्गर र प्रवेद सायर्ते । वि. त. प्रवृत्य वि. चेर स्था । वि. प्रकृत प्रविर प्रवे न्यार विर रुषा लेश यात्री चरे त्यूंद क्रें सं तर् र प्यूंद क्रें या स्थार क्रें या स्थार क्रें या स्थार क्रें गायर। वित्रावरावर्षाववानगराष्ट्राधेन के निकान्ता ने याचने वर्षेवि के स्त्री श्चेष सक्स्मा भ्रम वित्रम् वित्रम् वित्रम् वित्रम्

वनद्वासा विश्वत्ये क्षियासुस्ते द्वार्येत क्षित् विश्वता स्वार्क के विश्वता स्वार्व स्वार्क के विश्वता स्वार्क के विश्वता स्वार्व स्वार्ठ स्वार्व स्वार्ठ स्वार्व स्व मा विषायाने ही पद्वानी र्से प्यन हो से पदे नवायम से सार्हित वारी स्था ने वा नश्रम्यायां इसामियां श्री में व्यापित व्यापित प्रमायायां या से निया था था वर्ट्य विषयक्र प्रमाना वर्षा स्वापिक विषय है। विषय है। स्वाप है र या पर्धि चतु.येरश्वरात्रधेशकासी.जुध.तुप्र.कु। इंस.की.शू.वकिर.तू.रे.ह. क्षेत्र.सूर्यावात्त्र. लामे वार्श्वयान्य विवया ग्रीयावनाया अयावर मेया प्रति मान्त्रीय वार्श्वया प्रविवया में यथा श्चिमञ्जानी स्मिन्दिन र्या श्चे प्रविमाय स्मिन्दिन रिवा विमाय रिवा स्मिन स्मिन रिवा स्मिन रिवा स्मिन रिवा स्मिन रिवा स्मिन स्मिन रिवा स्मिन स्मिन स्मिन रिवा स्मि यादे। । त्वायवि विद्दे स्थर वर्दे द्रायादे र वयद त्र्यायावदे व्या वयस स्थाय ग्रे विराधर कृत जेनाय थर विराधर राष्ट्र प्राधर विराधित के विराधित ब्रिट.र्टेश.रट.जथ.ब्रैट.क्री.र्टेश.ग्री.विर.तर.रटा विक्र.क्षेश.श्रायविजायर.सेश. तत्र। विर्वासिक्षणयामायविष्यम् विष्यम् विष्यम् विष्यम् । विष्युतिष्यम् वेव दे वा विष्ट विष्ट विष्टि विष्ट व ग्रीमासम् र प्रविद्यापार्य । विद्यापाय र द्वापाय र द्वापाय स्वी । विद्यास्य स्वी यसर् हिर ख्यंत्री क्रेयस अपमा स्वापन पर दे हिर या पहेन न मा ने मानु मा या वर्षात्रात्रात्रात्री विक्कात्वात्रे वद्यक्षे विष्ट्रात्रात्रव्यत्ते। त्रु.लट.प्रूट.वश्वरात्री.है्बाबाबी.यटट.जाक्याबाखेय.श्रट.तर.वी प्रवाकीट. ग्री.क्षेट.प. क्ष्मश्वातायमंबर्शात हूंशश्चरटा वक्षायाता तील विशारी वर्षी या क्षेत्रीत भारक्रें र त्रते तर्ने भेषा त्रवम दिवा हिरामित है र मित्र है र से त्री मार ता तर्ह मा के पर्व.रश्चेनम्य.ता.चेक्च.रट.श्चिम.यमा ।श्चिच.क्च.यम.प्ट्र.चम्यना.क्चे.पम.क्चे.स्चामा

इस्रथान्यत्व। हेन्यादेर्दर्दे चुदर्दे द्वर्याद्वर्याया वस्रवायान्तिः य.रेटा वर्गु.जीयश.रेटा र्रेट.जीयश.रेटा श्रि.येथश.रथ.त.श्रव्हट.थ.र्र्ड्ट. द्वेर्र्, विस्तार्या द्विरासक्सर्या ह्वेर्या देवेर् हिरा ह्वेया ह्वेरा विस्ववेषा राम्या तास्थरायेशकासी. सटायर मिर्म्यातका दे. पर्यंत्र थेशका जुने हे. जा श्रिट प्यट वरदेव मिर्मा हेरा हेरा हिराया वरदे दे हेर है वस की वरदे हैं मुर्ने, भाष्यायर बुरा १५ तमार ति में प्रमाय वर हुत तीमा विराहे यद्वेयायायाद्वेद्यावया श्रियमात्रेव्यम्यात्रेष्ट्या वेयाहेस्यरायाचेद्राये क्ष्वाचीर्यासर्वे र निष्यासर्वे भ विश्वसार्वे स्थान्त्रे स्थान्त्रे स्थान्त्रे स्थान्त्रे स्थान्त्रे स्थान्त्र ने स्रमानुसर्से यस मुगन्तर मिरान्ता हु युषा हेगाय मानव मुग्यें नर्से न सम ग्रीकिवामासवदात्ममाराद्राद्धिराद्धा द्रियामाराष्ट्रीयायाम्बेमाग्रीमानेमार्गदे वसन्दर्ग वरार्देन्दरवर्षेचावसामी प्यमायनादर्ग क्रि.वसावरार्द्रन्दर्ग ही जैयाजानूच्यावादविषात्त्राच्यावायासी.सेयात्राम् हे ही विषयासी.विषयासी हे हे. वकरक्रेन रेवि के वसर शुरू दुर्शिय पर छे दुर्शि । दियय न रेकें के स्वी वी वी दिस्स त्तु विषटे विकास मा हे हुत क्रवाभर देश राय त्वर हु विषया विका वर विश्वायत्रेत्री विग्वित्यस्यात्वाशयाव्यावर्शयत्रेहित्यायात्रेष्ठाक्षेत्र इत्यागु न्मिव यर ह्वर पायनेयागुर कुवायवियह्वरयान् र बिट कुषायापुर देट न्यवस्ययम् रहेवा नवेदी। ॥

क्री विश्व विम्य सर्वे सर्व सर्वे स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्व

अ। ।यदे यन्त्र मुन्यर्गेन संदि द्वा सेदा । सर्वेन सर्वेद पर्वे मुन क्रियाचन्त्रा वाच्या । निक्रेयाय ह्या त्राच्यात्रात्या व्याप्या ह्या । द्वित क्रिया वर् देश्वर्गवर्द्ध्वरवर्गायार्द्ध्या ।क्वायह्गार्त्वग्राधनायकर्यमार्वेरविः की । अक्षत्र द्ये कुत द्वत वित् न्नु पद्वा दुर द्वा । अस्त ब्यु अ के वित्र न का के वित्र र शक्यमात्रा । र.म.बुट.२.५म्बिमायश्रीर.वर.वी । ४८.तीश.३.४शश.हुर. कुट.शू.टच.कचना । शुचा.क्.उट.चतु.धेशन.हैट.उकर.च.शूचना । माप्तशन. क्यान्त्रियाये द्वाराष्ट्रिया । साञ्चना सायदिना वात्रिया मेना वित्रात्रा नेना सित्रा वि.क्रे.याइश्.भूट.कु.बेट.पुषाताक्वा । 2.य.क्ष.येवु.थश्रवाक्षरावक्षरावा । क्रि. विश्वराष्ट्रात्वा विश्वराष्ट्रिय विश्वराष्ट्रिय क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र विश्वराष्ट्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र विश्वराष्ट्र क्षेत्र क्षेत् श्रेरा १ट्ट्रेर.सर्ट्य.स्र.स्य.स्या.पट्ट्य.क्र्य.त.पट्ट्री ।श्रेय.वे.श्र.विम.थथय. र्बेट.तक्रर.त.शूर्याथा शि.विश्वश्चेट.ज.इश.तद्र.स्याश.चैंट.क्री क्रिश.से.जैट. झर मार्यर मार्थर मार्थर दिन द्राया सेना । व्यक्ष है मिग्र में व्यक्ष र विर द्राया मार्थ कर्। शर.श्र.क्ष.येवु.थेश्रश.क्षेट्.तक्षर.य.श्र्वश्रा विद्यावश्राध्यात्रक्ष.वेश.हाश्रात्वु.ध्वश. च्ट्रिका । द्रमे बायबिकायबाका कार्येद्र दिना के द्रिता के द्राप्ति । दे के विद्रास्ति । विकासिका के इर क्ष्मेश क्रिक्त ही विकार कर शायद ते वार प्राप्त हो विन्ता श्रेश शाय प्राप्त व श्रव वश्राम् मार्थ वित्र महित्र महित् क्रेमान्रेर्युषरणुःश्चेरमळेन्रहेनामा विमाळेन्रेन्यमण्डन्त्रास्त्रेर्युषरव्यस्त्राहिन् विवासहवाविद्वित्वासुद्वित्वास्य स्वास्याते । धिराश्चित्यवे पुत्वा विवास स्वास्य श्रद्धा । इब्रान्त्र मुंब्र गुंब्र स्वित्र मुंब्र विद्या निष्य प्राप्त । । । विद्या विद्या मुंब्र स्व क्ष्य स्व क्ष

तार् होट. टे. त्रवश्तात् क्रिं प्र क्रिं प्र क्रिं प्र क्रिं क्रिं प्र क्रिं क्रिं क्रिं प्र क्रिं क्

चित्र निर्मे कुर्ने स्टूर महिरमहिरम् कुरम् कुरम् निर्मे कुरम् कु

Accession No....

h akshita Labrary